

हो समय जैन पन्य साम्रा तुष्य १४

### ज्ञानसार ग्रंथावली

[कोशिसक की प्रश्वको व सम्य रचनार', विश्तृत क्षीवनीसह

<sub>शास्त्रम</sub> महापंडित राहुज सोहत्यायन

सम्बद्ध अगरचन्द्र नाहटा

> भंबरखाज नाहटा प्रकाशक नाहटा ब्रदर्स

४ जनपोइन पश्लिक खेन

वीराव्य २४८४] प्रथमापृति १०००

[मूल्य था)

#### आवश्यक स्पष्टीकरण सानवार मधावती का इतने तीचे वाम वे और इस दंव वे स्वाधिक होने देश वर्ष और दुस लोगों की एक पा शर्दावि होते है। इसे हो वहालिक कि चानों २ स्वाची साम पूरी हो रही है और दुस दस मात्र का है कि किया रूप में और ताम तीमात्री साम तो सह इक्श्वा साह्यम हरना नाइते से, बहुत पा नो विश्वा विधान

कुछ ऐसा ही वा कि इसमें हुने भीर शोक, ये होनों ही करना हुवा है। पर हम अभी ज्ञानसारको जैसे महायोगी की माँति समस्त में नहीं

पहुँच सके हैं। विधि के कारों मनाव्य का प्रयत्न कहा काम नहीं देता. इसका इस मंग के प्रकाशन प्रसंग से खब बानभव हुआ । प्रधीस वर्ष पहले बड़ी उमंग और ब्याशा के शाब झानसारती के प्रभों की पाएडसिपि बडी सगन के साथ की थी। पन्द्रह वर्ष तो यह योंडी वडी रही। बीच में चहों ने भी कुछ सामग्री के पुजें-पुजें करके हमें सचेत किया। परम कंत भद्रमुनिकी (सहआनंदकी) की प्रेरका व क्रवा से अ= वर्ष पूर्व इसका छपवाना शरंभ किया । चारसी विद्यासी पुटों में ज्ञानसारकी की रचनाओं का एक भाग छप कर तैयार हुआ भीर ११२ प्रान्तों में सनका परिचय छप गया । मूल प्रांस के छपे हुए फरमें दक्तरी को जिल्द बन्धाई के किये है दिये गये, पर उसी समय क्लकचे में हिन्दु मुसलमानों का लंधवे हुवा, हिन्द्रस्तान पाकिस्थान

रो उच्छे हो गर। रसारी मुख्यांन था-नहां तथा पश व्हां। पहुत त्योग ही गई. पर पश्ची मध्यम का भी पता न वातों से फरने मध्य मध्ये हों की निम्मण्य पर बीत मोहणा में दें कि एक्सी पाताबात भी एक्से जिल कांगी। इसी बंगन कितने पहारी को परते हिंदे वे बहु प्रांति मो तथा। समय पाताबों यह इस्प्रा-पात हो निम्मा । जम के दुस्ता मुख्य प्राप्ता पर पारी हो के मो मुख्य प्रयान में बहुत अस्य प्रमाण परा। पर पारी हो के मो मुख्य प्रयान में बहुत अस्य प्रमाण कांगी हथा करा हो

सौभाग्य से शक्कबन, किंपित् बहुन्य, चनुक्रमशिका और ब्रानसारकी की जीवनी के फरमें इसरे देस में हरवाने में उसी हैं मंगवा जिये गये और वे बच गये । बाहर पढे रहने से सराव शबस्य हो गये हैं पर वे इसमें क्यों के त्यों दिये ना रहे हैं । इसकी कान-कमध्यका से पहले कितनी सामग्री महित हुई थी क्सका क्रिकरण मिस जाता है। इस १७६ तक की रचनाई तो वर्षों की त्यों पुनम देख हो गई है। उसके बाद हीकासी, बासावबीच कीर तरबार्व तीत वासावयोध को नहीं देकर सम्बोध बाहोत्तरी, प्रस्तादित बाहोत्तरी भीर भाषानिया पूर्व कम से ही वी गई है। किर प्रक्र २६३ में पूर्व प्रकाशित गृह (निकास) बावनी और प्र० ४२६ में प्रशाशित नवप्रदयस दे जी गई है। तहजन्तर तीन प्राप्त की सामग्री क्यांसे वर्ष की गई है जो उस समय नहीं दी या सभी थी। इसके बाद पूर्व देश बर्धन दिया गवा है। कार्यराष्ट्र रचनाओं को हम इसरे भाग में देंगे। वे रचनार्य भी साहित्यक और माध्यात्मक शृष्ट से बहुत सूल्यमान हैं जो शायमग aoo प्रवर्ते की होगी। इसमें आक्षा विशव, कामोद्दीवन, क्या चौपाई,

कावश्यक स्पर्धाकरण		
समाबोचना चौर राक्षाओं के बर्गुनात्मक चित्र-व	तथ्य-सादित्यक	
ट्रांष्ट्र से मूल्यकान हैं और आनंदपनसी की चौबीसी व	झ बालावबीय,	
वर्तो का विवेधन, बास्वासिक्ष मीता बालावयोग, तस्व		
वबीय चारवास्मिक रहि से बडे सहस्य की हैं। इनके		
रचनाएं सैद्धान्तिक या तारिक है ।		
इस श्रंथ के साथ शानसारती के तीन चित्र, य समके द्वारा रचित और स्वक्षितित स्वस्य का पोटो, वि		
पूर्व ब्रह्मशित क्रानुक्रमणिक्षा में पुनर्कुद्रस्य के समय व्यागे को		
व्यक्तिका हो गया है इसक्रिये नई बागुल्लाविका यहाँ ही जा		
रही है।—		
१. प्रावस्थन (पं॰ राष्ट्रक सांग्रहवाथन)	દ્રમાર સો ધ	
२. कि.चित् यक्तस्य	,, ० से १२	
३ पूर्वे लहुया की श्रातकमध्यिका	,, १ से ४१	
४. प्रसय जैन पंथमाता के प्रकारन	,, ૧૨	
<ol> <li>बोगीराज श्रीमद् झानशारश्री (जीवन परिश्व)</li> </ol>	"१ से ११२	
मृतग्रंथ		
१. चौमीसी	शृष्ट १	
२. बिहरमान जिल बीसी	,, १३	

बहुत्तरी यह संग्रह
 जिनमत धारक म्यवस्था तीव वासाववीय
 आभ्यातिक वय

४ ज्ञानसार-पदावती		
६. स्तवनादि भक्ति पद संप्रद	,,	११३
७. भाव षद् त्रिशिका	,,	680
<b>५' श्रात्म</b> प्रवोध इत्तीसी	,,	१४४
६. चारित्र्य छत्तीसी	,,	१६४
१०. मति प्रयोध असीसी	,,	१७२
११. सम्बोध ष्रष्टोत्तरी	,,	? uu
१२. प्रस्ताविक श्रष्टोत्तरी	"	१८६
१३. व्यात्मनिया	,,	२०२
१४. गूह (निहास) बावनी	,,	२०५
१४. नवपद पूजा	.,	२१४
१६. सप्तनोधक	n	२२६
१७. कुंडलिया	,,	२२७
१८. यस्राज स्तुति	19	२२७
१६. जिनलाभसूरि कवित्त	,,	२२≒
२०. पूर्व देश वर्णन	,,	२२६

#### प्राक्षथन

'आसमार-प्रंथावडीका प्रकाशन करके नाडदाजीने हिन्दी साहित्य के कपर बड़ा उपकार किया है। बस्तुतः हिंदोकी अञ्चल्या परंपराधी जिल्लो रखा जैलेति की बेला ल होने पर हमें हिंडी भाषा और उसके साहित के विकास का बहुत अपूर्ण ज्ञान रहता । यक समय था, जब कि हमारे देश केक्बिडान संस्कृत से सीचे डिवोकी अपनि मानते थे. फिर बीचकी कडी अटॉने बाळी-प्राकृतको माना। प्राकृत और आधुनिक हिंदी तथा उसकी भविनी-भाषाओं के बीज की कहा व्यवसंश थी, इस निष्कर्य पर विद्वान पहुंच तो गये, लेकिन अपन्न रा साहित्य का कितना अभाव तथा कितना अवर-परिचय बमारे छोगोंको अभी बाल तक रहा इसका इसीसे पता लगेगा. कि कितने ही जैन भंडारोंमें प्राक्तत और अपभांश दोनों भाषाओं के मंत्रों को प्राक्तत मान कर सचियों में दर्ज किया गया। अपभारा के करा होटे-होटे पह या पद्य-मन्य बौद्ध चौरासो सिद्धों के भी मिछे जिल्हें नहा-महोपान्त्राच पंतित हरप्रसाद गास्त्रीते "सीट सान को दोडा" के नाम से प्रकाशित किया। उसके बाद बहुत बोहें ही से नमूने और मिले, जिसमें से इब्र तिब्बत में शार हवे। क्यापि तन-जर में अनुवादित अपसंश के होटे-मोटे प्रंथों की संस्था सी से अधिक है. डेकिन वनका मुख शायद अब सिट नहीं सकता। केंकिन स्वयंत्र, देवसेन, पुण्यवंत, जोगींदु, रामसिंह, मनपाछ,

िकसा। यही जारी कि कहीने व्यवसंध्य के प्रयानसाहित्य का बार्यो अंकर कुरियाद रक्षार विकेत जाने ज्यादे . याची भी पुराने मेंन अंकरारित किसे हैं, कोल करनेत्वर यह जीर भी वारित्र जिल्ह स्वकते हैं। स्वताना व्यक्त मांचा स्वक्त मांचा स्वक्ता गाँ कर्मी तथाद अवादी शिक्षा वीर स्वाच्याय के तिस्ते महै भाषाओं में भार्मिक-वार्तित्व सेवार करनेकी व्यवस्थकाता गयी। चार्यार

माक्रम पर्य में संस्कृतको ही खदा तथानाता दो. तो भी पाकि-भावता मेरि स्थाम रें एक दे मादायभावी भाविक-मादिव भी अवस्थ कुछ नमा दोगा, केरिन जान पढ़ात है, समझे साम दें बेदा हो सरकार विद्या तथा, तेले साहे केटे पर किये नेजरिके साम करते हैं। बदी सामय है, तो कि हुलबी, सूर, क्योर, विद्यानिक चेटें का नोम्प हमें अरुभाव है हमें हमें हमें हमें प्रदेशी कार्यों में बाद हमें विद्यान हमें अरुभाव हमें हमें

[ 4 ] अवस्रोहा बाट में विस्मानिसम्म इस स्वोदाशों के किये क्यांसे और माहाल्य करफंश में सिके औ लग्न भी मिनते हैं। इससे बड़ी पता स्टाता है, कि सोक-शिक्षणके क्रिये कम से वस पार्थिक क्षेत्रमें कीन अर्थापाओं का बरावर ध्यान रहा, कि अर्दमागवी कीर रंग्यूत से अपितियत जैन गृहास गर-गारिशोके दिने रमधी भागा में बांच हिन्ते कार्च। तम कर्यात माना परिवर्तित हो हर काश्रक्तिक सामाकोंके प्रत्योग क्या में कार्य में अब हो। यो सन्दोंने इस भाषा में भी दिखना इक दिया। बड़ी कोज वी लाय, तो सदस्रश काल के आरंभ ( + बी-८ वी हती ) के पाद किली भाषी होतकी साहित्यक भाषा का विकास विस करह हुआ, इसके स्वाहरण कासामी से प्रति इसाव्यी और दशावार फिल करेंगे। यह दर्भाग्य को बात है कि सभी तक दमारी रहि सम्बदायों से बाहर नहीं जाती, इसीक्षिये जैन कवियों और साहि-अवस्थी की देशें दिनी के विकामों के किये भी कर पोशी की हैं।

करारों में एन ऐसी कि मिला है करा में कर रामा भार में मूर्ति कुलावार को परेशा है कहें, कि हिन्दी कारा मार्ट-गीर और कुर के अपन में हो और है कि हो कि हो कि हो कि कारावार है, और कोर है राक में हमार एक्सार्ट की राम् कारावार के बोरे में यह कहा को हिला कर है, जीर राम् कारावार के बोरे में यह कहा को हिला कर है, जीर राम् कारावार के बार के स्वाप्त कारावार के स्वाप्त कर है, जीर राम् कर है हिला के कारावार कारावार है, कि मार कारावार के स्वाप्त कर है कि यह कारावार हुए, कर है कि हो कर की रीवी कारावा में व्यवस्था कर रहे हैं। क्याओं के दिगांग्य-पुर्वा के की की मीत कर की मारावार कर है कि स्वाप्त कारावार कर है कि स्वाप्त कारावार कर है कि कर है की है की स्वाप्त कर है की है की स्वाप्त कारावार कर है कि स्वाप्त कारावार कर है की स्वाप्त कारावार कर है कि स्वाप्त कर है कि स्वाप्त कारावार कर है कि स्वाप्त कर है कि स्वाप्त कारावार कर है कि स्वाप्त कार

( या नारायम सेरा कि पहते कहें कहा जाता था ) तेरह वर्ष के

1 × 1

कानुका उपराहती बरुकर पुराहत में निका किया जाता। हिन्द क्षानवार हूमें में बंजात उस तथे। इस समय वाधानों के दुस्तर क्षांन की की के इस रही थी। जिसके कारता ही सैताईं अस्पृत्त सताती वाशियों और पुरावकों के देश करने का जीवारण पास करने पर भी स्वराग देश पाना-वाहित्य के पेसिन दर काता। वाहित्य कर्मात के प्राहत होता। हिन्दित विदेश के किया-प्राहत कर्मात के प्राहत होता। हिन्दित विदेश के किया-विकास पीति-विकासों और स्वावधिक क्षांत के क्षांत करने का स्वावधिक क्षांत करने विदेश विदेश में इस क्षांत करने क्षा करने क्षांत करने क्

रहा। आज मी इसी अनिश्चयका परिणाम हुआ राजस्थान के

पूरव बति कारुयो, पश्चिम जारुयो, दक्षिण-त्यद हो शाई।" परिच्या, श्रीवण जीर क्याद जानेने करको आपत्ति बही गो, विद्या भी वहीं के प्रदूर हो हरता रोप क्यों ? विदे पूर्व ( वीगात) में महाधी-बांध सामेक सहुत दिवास था तो परिच्या ( रंतास ) में सहाधी-बांध सामेक सहुत दिवास था तो परिच्या ( रंतास )

इस बचन से ही मातूम होता है-

कारी बांधी करायु भी रकते हो ती लिया होता हुए र क्षेत्रि कार है की प्रकार करने करने कर है कि हुं क्षीत्र के क्षेत्र करने करने कर की कर है कि हुं कर मोदी ती लिया है कि हुं कर है कि हुं कर की है कि हुं कर है कि हुं कर है कि हुं कर है कि हुं कर की हुं कर है कि हुं के की की की की की की की की की हुं कर है कि हुं के की कर है कि हुं है की हुं के हुं के हुं के हैं कि हुं के हैं कर है कि हुं है की की हुं के हुं के हुं के हुं के हैं कर है कि हुं है की हुं के हु के हुं के हु के हुं के हु के हुं के हु के हुं के हुं के हुं के हुं के हुं के हु के हुं के हु के हुं के हु क

कर घर खबसाला, मण्डी साक्षा, यकड़ी वेही पमराई।। पू०।(१८)। केह्मिन करता, मारग भएता, इक हाचे मण्डी ठावे। विक न्हाची भीटें, डेडी मीटें, डेडी वाडी किर जाने।।

र्गभा जब नारी, फिर्भीटर्स, फिर कामें बद फिर नाई/प्यूपर-शिद्द्रशा सम्बद्धानी से केमें के यदी पड़ी हूर स्थापी शाहितक और रेलिहासिक निर्मेचोंको प्रवादमें सामी के नाम किया है यह बदम ही सुत्त है, त्रिपेम कामा संक्रम की रिचार के, शिक्सों सकता है आहम के साम जामा नामी है, साम हो गेरी संक्रम का

1 वर्डि २ मांघ ३ वर्षी काति वाता ४ क्रियक

अपन्यानिक रह जाजा भी अपना नहीं है। मेंने अर्थे सह। था, कि मारासका और साराजीमाध्यक्ते बार्सिय वह महत्त्वमं बाधवो हो ती-तो पनिया निकल्याका वदि देश विदेश के शिक्षास विद्वार्थी और विद्यापीठोंके पास मेज हैं, तो बड़ा काम हो। इसरे देखनियालयों के अध्यापतों और संयासतों का मी इह बरोज है। बाकोर के किये एक तो बियब की सुमा-विश्वाद्ध विशेषका विश्वयः चलावाः जा रहा है । चितावीं जीन quares etal mich fife uerft all a ferfach, to चोका अले ." अनुसंवान करने हैं जिने बढ़ करने हो लेवार नहीं। यदि पश्चित्र और अन्तरित्र सैन भण्डारीको सामगी के अवसंयान करने की मेरमा दो जाय, को साम ए से बहत से जनमें रहीं है। यहां और मुख्यांका हो जाय । यह स्वरण रखना वादिये, कि यादन और तेसडमेर के मन्डारो में बाचीन दुर्कन बरमस्य प्रांथ ती हैं ही, विश्व दयारी उसीमान सामाजिक सन्यत्यक्षी कितनो ही स्त्रुगृहस सरमञ्जो आगरा, कालपी, स्टब्नक, जेसे नगरों के साधारण से समझे जाने रात्रे जेन-पुरवकायारों से भी हैं। यदि वस्तर-प्रदेश के पार भाषा विभागों अवधी, हुन्देको, मध और कीरको के क्षेत्रों हे सेन पुस्तकानारों के जबिनस्थ सुचित्रव तथा करपर विश्वेषणस्था विश्वन विश्वने के विश्वे

कास्तरेत की इन्छ। रखने बाते बार तत्वाों की समा दिया जाय .

#### किञ्चित् वक्तत्व्य भीमप्रवानसम्बद्धे साहित्यके स्वास सम्बद्ध विद्यार्थीकक

है है। लगभग २० वर्ष पूर्व हमारी पर्यानिका सुन्तीय सामानुष्टी है
सीमह की आसानिता संह्राह रचना सुनते को इक्षा प्रकट को।
सन्द इसके करको सुनाने की सुनिता के लिए नकारीन पुनक की
हे अबड़ी एक करनेमें हमाने की सुनिता के लिए नकारीन पुनक की
हे अबड़ी एक करनेमें नकड़ की थी। वह कारी आज भी सुनारे
सास विद्याना है।
है। १९८८ की असान्तर्यक्षी की जीवाचांक की जिता-

**ह**पायन्द्रस्**रिजी यो**डानेर पंभारे और हमारी कोटडी में पनका नातमांस हथा उनके सम्पर्क से अनतत्त्वज्ञान और साहित्य की ओर ध्यारी अभिदर्शि विकसित हुई । समय समय पर सुरिजी से बीधव आलसारमाँ के सम्मन्त्र में जानकारी प्रश्न होती रहती थी । वक बार आएने व्यपने हानमंदार में बीमद के माळावियळ की श्रति के सम्बन्ध में पोधी संस्था और पत्राड़ों की संस्था सचित करने के साथ साथ अंतिम पत्र के क्रुप्र कटे हुए होने का भी निर्देशकर अपनी ३० वर्ष गर्व की स्पत्ति की मांको हो । साका-पिगल सम बदा आकर्षक था. हमने आपको सुचनातुसार उन्ह पोधो लोड दर पति देशी। सुरिजी ने उसके धाद श्रीमद् के मौदी पार्श्व नाथ स्तवन की यह कही भी हमें सनाई थी विससी बनके ६८ वर्ष की उस तक विद्यमान रहने की सचना सिक्री थी।

तर्त्तंतर श्राहित्य शोभ के किर स्थानीय झानभंडारोंका निरी-सम्य करते हुए बीमद्र की अन्य कृतियां भी अवडोडन में समाव रचनाओं से मुन्दर प्रतिने प्रता हुई। साहित्यानेक्या के सारताथ हमार। क्ष्म कुंद्र करने में कोई काने कुंद्र प्रतान साहित्य के प्रतान किए के मंगर की और भी तथा। को क्यांच्या के यांके में गीर हुए इस-विशिक्त प्रतिने के अस-स्वात क्षों को टीचरी व मोर्टी में स्व

बंदों से क्यांत्रिका पहुंचित्रं में मार्थिक कर है में बहु में होते हैं क्यांत्रिकार्थि साम के लोगां में क्यांत्रिक मार्थिक कर प्रश्लेक कर क्यांत्रिक कर कि क्यांत्रिक क्यांत्र

साव्य विक्रते ही इतारों काओं वत्र जिससे ऐतिसासिक सामाणी से स्वतानेक सुमानी मितारी हैं. हमारी अञ्चानना व स्वतान्यानता के स्वतान नव्य हो चुके हैं। सेवीम की बातः २२ वर्ष कु किम प्रतिकों की जेसकारिका वैदास की गयी भी वे इतने होने बात तक अन्यातिक अवस्था में ही पूर्व हों। इसी मेर तीम दूर वाहिल प्रकारकों में अक्षम कारण गए पर कर कर वार मिर्टाम में मुद्रा मां। दश रहें गये हैं मेरू पर मेर्किय मेर्किय मेर्किय मेर्किय हों। मेर्के प्रकार मार्च मार्किय हाँ पहले ने मार्के मारके मार्के मारके मार्के मारके मार्के मारके मार्के मार्के मार्के मार्के मार्के मार्के मार्के मार्के मारके मार्के मार्के

और आपे के पित्र का स्थाक बनवाकर प्रकाशित कर दिया था। अपने साहित्यक शोध के प्रारंभशकों निकार सम्बद्धान्तर संकार्य प्रतिवाद वार्तों के वस्ता प्राप्त करने के जिल्लाकों से की

1 8 1

े १० ने स्वीर स्रोतद् के समस्त पर्दों का सन्धारम कर दिया। अन्धारम क्वान दसरक मंडल स्त्री जोर से असडे प्रकाशन की बात भी

सक चरित्र परिश्वन कर सैकड़ों नोत्स पर्य देशकारियें है चार की बी तमसी ऐसी दुरस्था मेंस्कट एत्य की वहा ही परिश्वन होता है। तोन नामाजिकारी के ब्यावन में गाहित्यक विद्यानों के किन तुन परिश्वन मोदी बेकर हो जाते हैं। मामान :-ई पर्यं, हुन पूच्च जोमहुद्वीवती महाराजने क्यान स्वकट सामाज सी बोर उसरोप्तर करते हुन मीचन्द्र परिप्तानों

अपना जीवन जमा दिया था और रात को १२ और दो हो बते

क्षमभा २-६ पर, कृ पूर्य नाम्प्रमुनावा महाराजन कथा-हिल्क सावमा की बोर उत्तरोग्नर कहते हुए मीमयु की रणनाजों को अवसोकनार्व हम से मंगवाया और उनका स्वायकक कर्षे प्रकारत की बोरो रूप से सुचना करते हुए सार्थिक

कब्दू स्वस्थान जो शहार रूप से सूचना करते. हुए साथिक स्वस्थाना सा उन्हें मी कर दिया। गयुन्धार तोन वर्ष पूर्व सह मंत्र मेंस् में है दिया गर तेम की स्मृतिशादि के कारण नय में व इनते रूपने मरी है प्राचित को प्रदृष्टि के कारण नया में व इनमें रही हुई अञ्चादित्यों और पश्चान विश्वेष के किए हमें मोर्ट के जगावंत्र मां विचे पर दूस निकायन थे। पढ़ते वंश स्त्रीत करा ो नांडे साजन ने ८००) के अधिक देने की जानिकार जाहिर।

जब मुक्तवों ने प्यस्त दिवासी बात नेतानपण नोजनार को
लिव कर दूरे संब को सहायता के किए तो डिवार कर दिया।

र हत्यारा मो कोज बहाता रहा कीर वर्ष क करते वह सह दिया।

पा । किर मी जोगर को रचनाओं का यह एक ही मान है

र हमी कुक्तक अपनाविक स्वतारों हो जब हिल्या पदा

भीवार को नेतानपण नी संताहि इस रिवार पदा

ब्बानों के करवार हवार ही थीर, बारी हवारे पान मेरे, हुई । वा प्रवासित रचनामें में मोबर की वार्तियक वित्ता यो जाते औरबंद रूप से त्रिनिश्चित है। ह्वारा दिवार जीवनशींटा के साम जोवर को दिये कु त्यार दिवार जीवित आसी हों, देश के हैं पर जीवने कुछा जाती हो जाते से वह दिवार के स्थान पर जीवने कुछा जाती हो जाते से वह दिवार के स्थानित वा पढ़ा। जीवहां के जातिक स्थानित हो जीवित का वादेशकारों को भीती पर कालांचन जाते हैं। स्थानित को स्थानित के स्थानित हैं।

ानंदाननों भी चौचीती पर बाजार रोज, बहुत ही बहर स्थान ं स्वेत बारिता बरना में वितान बारपांत है पर सर्वोत्र हरूत दिवान सुरोने के कारत हता वेदारों व मिनिता ने वोद्यों मेचा जा बता। हुईसा विश्व है कि बहुता निर्देश कर से त्यांत करतेतुर, हमरे कित बहुत के नीहरों जो बस्तप्त बन्त-हो जारामु में कार्याया में सीचीती चर लाजुनिक केंगा कर्या मेचेक्स किता है, जो सीचा है मालित होगा।

इमें केंद्र है कि संब में वहततो अहादियां रह गयी, पृत्व सीतद्वपुनिती (कानकक-सदबानन्दमी)वहाराजने जनका हादिपत

[ 23 ] भेजनेकी रूपा की जिसके स्टिप्टस पत्रयत्रीके अस्यन्स शाकारी हैं।

इस मंबने प्रकाशनका सारा श्रेय भी इन्हीं वश्यश्री को है। अतः वड सन्ती के चरणों में समर्पित है। आप अभी बहत हो अकान्ट साधना में सीन हैं, मस्टेथ क्वें पूर्ण सुफलता है यही हमारी मनोकामना है। हमारी इण्ला थी कि पुरुवको इस प्रथा में

दो चार शल्य सिमाते पर आपने किसी भी प्रकार से प्रसिद्धि में आना स्वीकार नहीं किया। हमने आपकी इस्ता के विषरीत अपनी हार्दिक मस्ति वश आपश्री का फोटो देने को चन्नता की है अतः हम इसके दिए क्षमाप्रार्थी हैं।

विश्वविश्व महापंडित भी शहक सांक्रस्यायन ने धापनी अनेक साहित्य प्रकृतिकों में व्यान रहने पर भी प्रस्तुत प्रांथ की प्रस्तायमा प्रेमपूर्वक दिस्स भेक्षनेको अपा की इसके खिए हम खापके असुप्रदित हैं । स्वर्गीय आचार्य श्रीहरिमानास्तरिजी महाराजने

अपने संग्रहस्य गटके से श्रीमट के पटकर पदों की दो दो बार नकळ करा है सेवी इस्तर्थ समका आभार समरणीय है।

सं० २०१०

१ योगिराज श्रीमद बानसार जो (जीवन चरित्र) १ से १०५ श्रीमद् झानसारजी गणवर्णन काव्यादि प्र०१०६ से ११२ १ चौडीमी

कतिनाम धादिपद ५ भी भूषम जिन स्तुपन ऋषथ चिनंदा

९ भी अधित क्षित लक्क अधित क्रिनेसर कावा केसर

३ भी संसव विज स्तवज संबद संबद संबद कहि बहि × भी समितन्दर । श्रवितन्त्रत सम्पारी नेरी

सुमति जिनेसर चरण शरण गहि ५ भी समित जिन --

६ श्रीपयम् " पद्मश्रम् किन सं मंदि स्वामी

अते तुपार्श्वल ल भी मधास विज तावरी

८ औ चनत्रमु ,, ,, मनारी धमण्डयी नहिं स्थले

९ शीवविभि .. .. सबिधि विलेशर ताहरी

३० भी शीतसनाथ .... क्रमण राष्ट्र राष्ट्र बका भी

११ भी श्रेयांच , , भी धेवांच जिन साहिया

१२ भी बाह्यसम्ब 👝 🖰 बासकूरम् जिनसम नी

93 M firms ..... माई मेरे विवक विजमेर वाची

१४ श्री अवल .. .. तं ही अनना अनना हं

थर्म विनेशर तुष्क सुष्क वर्म वर्ग १५ भी भर्मनाथ .. ..

	[ = ]	
कृतिनाम	आदिपद इ	g Geen
पद भी प्रांति 🕫 🕫	चन धन प्रभावयो तन योगी	
९७ थी चुंडुनाब किन स्टब्	म पुंस विकास साहिता	
५८ भी भरनाथ 🕠	वर किन समुद्र सद्भार क्रिका	
१९ भी महिलाय ः	श्रीत समोहर हुन्छ उद्वराई	•
२० भी सुविधनतः ,-	शुरिक्षण रिम पंदी	•
९१ भी निमान ।	नाम विमन इस फाल के संसाही	70
રર તરી વેલિ જિલ્	पेसे वर्धत कवायो नेति क्रिन	7+
९३ भी पार्शनाम »	प्रश्न किन में है कर उपराश	33
र¥ श्री शीर जिल्ला	नीतराय फिल कहि जनमार	11
२५. सत्रक (गीकीया) -	गीरेवाची तें सुद्धि सुवि सुवि दीर्थ	1 . 11
	विदरमान यीखी	
१ भी शेषेपर विन सा	वर किम शिक्षके किम पर <b>ण्यि</b>	13
२ भी दुवसंपर	जुनमंपर (फनराव वी रे	77
३ भी राष्ट्रांकर	बादु क्लिवर वेथा तारी	14
v भी सुमादुः	भी समञ्जू शिलंद थी	1%
५ भी सुकात	मैं आन्यो दिल्ली की हो किन्दी	25
६ धीसपंत्रम ५	भी समंत्रज्ञ ताहरी	15
० धी भूत्रवानर 🥫	दुःसः परावसी परकारी	1.
< भी सन्तर्भाष्ये »	हरा मीठवा हूँ पुर करें	44
५ भी विश्वास जिल्ल	भीविद्यात शिरदाय मी	46
1+ भी स्ट्राय , ,	भी हूं मारी गार्क ताहरी	44
33 सी <b>पलस</b> र ॥	थी सक्रवर हुँ सैंसुख दिलका	۹.
. १२ औं चनासर 🥋	चन्यानन चिन पूर्व तथाई	31

	1+1	
श्रुविमाम	वादियद	व्रष्ठ संख्या-
11 भी पन्तवाह कित स	<b>एवं में जायी महाराज के</b>	33
า× श्री मुखंग्य ्र	सैंतुक द्वय भी न किम ही	9.8
१५ भी नेपवित "	नेम प्रमु द्वित केम दिये	33
३६ की हैशरबिर ,,	भागमध्ये देवहैं दिना दे	3%
1 जंभी वीरसेव 🙀	में पांची अंति गति पक्ती	36
१८ भी देशनका ,	नाव समे पस प्रापति	24
१५ औं महास्य "	में तो ए काओ नहीं हो विनवी	94
	चाहिषयौ + प्रयोदी विहा निरा	नियो १९
११ करण प्रथस्ति	इस पीतृं विजनत विजनाया	ş-
ą	दहुत्तरी पद संग्रह	
श्रादिपद		प्रश्न संख्या
१ वदा मरोवा तमस्र, स		31
२ पूरी शतम तनासा अ		87
वे और चेता सव केल वा		વર
🗴 पर परचनन विश्वाप्ते,		**
५ यन यह यस विश्वा		ŧν
६ फोन पत्त विचारा,		3%
<ul> <li>जब इस इस प्रकाशः,</li> </ul>		15
ं महामा यस नहीं शर्व		14
९ भीर भयो भव पान ।		j.e
<b>ा∘ जाय रेसमर्देन विद्</b>		34
11 मेरा काट बहल किय		35
९२ जिन परणर को चेरे	⊾हंबी=च∙ ···	Y-



४० अपनु सुपति सुस्तिती पानी ¥1 सबन् मात्रम सर प्रवास ४९ मध्य भारत वस्त प्रसार

¥३ समय विमयत वय समारी ४४ अथ्य भैती ब्रह्म सगावै ४५ नेश मात्रम नति ही नवाना ४६ शापी मार्वे देशा श्रीन स्थापा ४० सामी बाई बाहब नात परेका ५८ काची साहै सातम बेस सबेसा

५० काची नाई वन इप मने निर्जा

५९ पायो मार्ग निहर्व केठ अकेट

५३ वर्षे बास संयानक नाए गोर

५४ वर्षे बात पहुर पर विश बहोर

५५ किर सार्थ क्या स्थिते स्थान

५६ बतबोक्ष्य मेरे क्यों न आये हो

५० वसी वनि बदन निहार निहार

ne well it was in each self

we wish as it she made

VS with any way wife and



\*\*

44

44

44

٠.

51

53

"

63

11

..

.

..

..

.

56

11

44

[4]		
बाहिषद		प्रष्ठ संख्या
५६ दिया किर करीय हुईकी ही		**
६० दिया मीर्थु काहे न बोर्ड	***	9-
६१ प्यारे बाह पर दिन, में ही चीवन बाद	***	*1
६२ घर के घर किन गेरी	***	**
६३ रहेतुन भागमध्यी		wit.
६४ रेन विद्यानी रे रविषा	•••	uk
६५ शहो नवहत गीर		- 14
६६ सरकरा करपाने	***	*1
६० येची हूं हरेजी हेजी		**
६८ गरमा ती भाग		w
६९ मरी में चैसे परानिरी	***	44
चर चर केलत मेरी दिया	***	94
५१ शृंही कठन श्लासी, नेस्प्सर-	***	44
<b>चर का इस ग्रुप इक क्योति श्रुरे</b>	***	ot
भ्रः तेरी दात करनी है, गायत क्वी पतिचन	•••	**
🕶 अंद्रशतिये दूरम बाजने कैतिये		44
४ जिनमत पारक व्यवस्था गीत बाल	विषोध	۷۰
<ul> <li>अाध्यास्मिक पद संब्रह</li> </ul>		
१ चोर गयो, चोर भवो,	***	5%
२ भीर भयो अब जाग प्राची		**
३ वड रे भावसा गोह		54
<ul> <li>को पड़ी वाजी पूत निकारी</li> </ul>	***	**

[ •	]	
व्यादिपद		पृत्र संस्था
५ साथ गर्वा वही वर्ष ही आप		50
६ विषय अति प्रीत निमाना हो	***	50
<ul> <li>बोद पराने का की सरकारे</li> </ul>		14
< भीन फिसे को बीत	***	55
९ साम नाम न कवी		55
१० चेतन मैं हूं राश्री रानी		5**
११ बान घराई हो विवेके		1
१२. क्ष्मण प्रपति सर्वत नैरदि सन्तै		1+1
१३ दिया किन एक निमेत्र सहुँची		9+3
१४ अञ्चल नाथ कुं भाग व्याप्ते	***	9+3
१५ अव्यक्ति वैभी बात बहु		1-3
१६ फेरन विन दरियल दी सक्करी		9-8
१० के मत्त्रका स्थले हों की को	***	19+3
१८ भौधन किन के न वर्षिने रे भाई		9+3
१९ दरशया बीटा रे		1-4
२० आश्रीमानै वारी चाद पद्मी है		1-x
२१ है ब्रामी संसार	***	1+4
२२ कुँवरी दुविया जो पूंपरी+	***	9+4
२३ वनकानी समें के ने कदिने वालो	***	5=4
२४ मर मामो बोक्य पर शेप लियार		1+5
२५ आग वर्षु के कान रे मार्ड		100
६६ अने वर्षों, शाय ध्यान नवान	***	544
२७ मूटी साच्यत की सना		1-9



[ 8 ] कृतिनाम वरदिपद 28 धंस्या १ नैवि-राविश्वा बोतव् बोदि विद व्यारे कारा मी॰ १ भीवनेतविकारस्तवर यनेतविकार योजनयो 13. भ क में में माथ अनेता सीधा 133 ५ श्रीरार्त्वराव स्तरन - एक ह्यु सरदाव क्रुतीके 133 १६ .. ., परम प्रश्न कुं प्रीतको 933 10 थी मीड़ी ... वटी मोड़ि वहान, गीड़ो सब 181 ३८ श्रीपार्श्वराय » इसरी अंखियां शति वक्रवानी 124 १९ .. . भेरी भरव है शतकेन सामर्थ 153 २० व्यक्तका , अधिकारी श्रीक अधिन्याची २१ जोगाले जिन सावर दिस्त माना मेंद्रे वर्षि 936 191 २२ श्रीनीची पार्व सावद भीड़ोराम बढ़ी बड़ी बेरबई 194 २२ 🧓 प्रत्योक्त योगो गीशो ने करें 124 २५. चामान्य जिन्न संतन सम विस्ती अन्य व्यवता रे 125 २६ ,, ,, यो शह नो बोनति केंद्रे कहें 93. २० . . इस हो बीनक्य बदास 11-२८ ,, .. सुमा निरक्षों भी वित्र तेरी 133 २९ श्रीमंत्रर मिन साहत | श्रीमंत्रर को:शरम प्रमुखी 933 १० श्रीनीर सामन हे फिरराम चहान करीनू 923 41 .. पांची राजपार वार में बांध 133

७ दादा गरु स्तवन

\*\*\*

१ सुखकारी, विश्वतत सुपुर परिवारी 127

६ सबो पार को, बाद मेरे-



4 am at of one for the faring माप संगति वित की पार्चे १० समीने माहित आहेंने मेरे १९ पुश्चिमें साशी समा नां 13. वारींने सास्त्र नरम की 1) क्रांत पारत क्रिक प्रधानी मेरी 1x कोरा वैवयं गरें वे रे 94. १६ गर (निहाल) बावनी चांच आंख २० पंच सम्बाग विचार २७१

[ 88 ]

स्राविपर

२१ श्री जिनकुशस्त्रहरू सप् अष्टप्रकारी पूजा 305 २२ आप्यात्म गीता बाळावबोध 268 २३ विविध प्रक्लोचर (१) 340

२४ विविध प्रक्रोत्तर (२) 206

२ ४ श्रीनवपदजीकी पूजा 853 २६ श्री नवपद स्तवन 933

२७ पूरव देश वर्णनम 231

२८ परिश्रिष्ट १ अववरण संब्रह ४६६

२६ ग्रहाग्रहि पत्रक 860

# अभय जैन ग्रन्थमाला के प्रकाशन

२-- पुत्रां प्र ३--- शवी सुगावसी

४--विषवा क्रांध्य a-स्थान प्रधादि संगद

६--- विनराय भक्ति जावश ज्—संपर्यत सोमनी साह

८—युगप्रधान भौतिनचन्द्रसृरि

६--वेलिसासिक क्षेत्र कारव संग्रह १०-- दादा सीजिनकुराससूरि ११--मणियारी श्रीकिनचन्द्रसूरि

१४-- बीकानेर केंब केंब संबद्ध

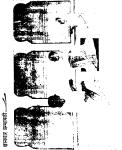
१३-मानसार प्रत्यावर्जी

१२-पुरास्थान श्रीकिनवृत्तापुरि

ŋ

¥II) सप रहा है नाष्ट्रदा व्रदर्स

४. बरामोद्दन महिन



shor avenzel, area nauliffe na absentik ur

## योगिराज श्रीमद् ज्ञानसारजी

सन्त पुरुष मानव समाज के एवं अट्टांक होते हैं। विश्व के प्राणियों को कनकी ब्लुफ्त देन बात होती रहती है। वनक साथ-नामय जीवन मानव-सामाज के जीवनिर्माल व क्यान के लिए समूदा दीपस्टी-सम्बद्ध जोई । कके दुर्गन मान के माथ जीवों के

हरूप में कारार बद्धा करना होती है। अनदी जरानन सुझा से जापित हरूप में भी रातिन का कर्युना होता है। मानार ही नहीं करनी करवा व कुमा करोना तो खुदाखी काहि करोना प्राणित पर भी रकता प्रवाहित होता है, जानी हो बोधी के लिये मानान् पन्तकी ने कराने चीनाहाज में कही है कि किहिसा प्रविक्त से काहियों है। बाता भी मानान्त में कहा है कि किहिसा करियान से काहियों में स्वाप्त भी मानान्त में कहा है कि

प्रमाणित होकर सिंह चौर कहती भी करने आतिगत बैरनाव को त्याग कर एक वाद पानी कीते हैं। कुत से दुह माणी भी कनके प्रमान से सिंह प्रिष्ट क्षम जाते हैं। कर्जी का प्रक्रित कान नव्यं कल्यापाय होने के साथ साथ दूसरों के तिर भी क्षम्याणकरी होता है। कनकी बाजी में जातू कर सा क्षमति होता है, तिसके क्षमण और स्वामाय से ति बाजी में जातू कर सा करते होता है, तिसके क्षमण और स्वामाय से ति विद्यालयों के हस्त मेंन रही कान कर करते होता है। कीर कर्ष-प्रकामी होने भी अञ्चल प्रेरशा मिलती हैं। संसें के सकत्त्व का बड़ा मारी प्राह्मस्व है। महाकवि तुरस्कितसमी के राज्यों में:—

"वह वही काची घड़ी, काची में तुनि काच। तुससी सक्रत साचुकी, करें कोट कावस्था।"

सन्ते वा अपनाम का समान्य एक यन का नहीं, करोड़ों मनों के पार्चे का नारा कर देता हैं। पिर काम्यास के कारण मन सर्वता नाष्ट्र पदाओं पार्च इतिहाँ के

विच्यों को ही जिब एवं मुख्युक्ता सामान्यक काड़ी में ब्हेला रह सामार्थिक स्वयाप के पार क्याकर खों होता। प्रमारक के कान्य का बच्चान न होने के बारण ही स्थापिक्ष न निकाने पर भी जा पर गौराशिक विच्यों की कोर सांक्षित रहता है। चारि है दिखानों के मानुसार मानेही कविक मुक्ताम प्रमार कार्यों के गौरा है, राजुन वाहार प्रमारक का ब्ह्युक्त प्रमारक क्रिकेंच-तीय है। में राजुन वाहार प्रमारक का ब्ह्युक्त प्रमारक क्रिकेंच-तीय है। में राजुन वाहार प्रमारक का ब्ह्युक्त प्रमारक क्रिकेंच-

भी चतुर्वि। जा भी है, वहीं वस शर्मिक शानि कार्नि को सामव सकत है। करा दुवाँ ने करनी सामन द्वारा भी कामानाहीत इस चाहुन सीत निस्तात, वह नप्युच चतुरम था। कामाना जेती निरस्त अधियों में ही करने समझ से यस चाहुतरस का प्रतिविकत् सामवाहत जा निस्ता है।

सन्तों की वाची, कानुसन प्रधान होने से, बहुत ही व्यवधिक कौर हरफराजों होती है । यह बोदनिका में मान भूते व्यक्तियों में सर्थान है। जान है। जान के मौंक दें से माझी आईक्स तक को माने मींक हो जा है, पात्र का आदर है दुन पूरामार्थ के सीम के आदेश है। तहा है, विको कामाधीक स्वेतनार के बात्र पात्र है। तिको कामाधीक पहार ताम के लिए का कामाध्या कर माने है। कर हो के पहार ताम के लिए का कामाध्या कर माने है। कर हो के कामे ताम कहान करी का की वार्च के की का माने की कामों ताम कहान पार्चिक कर हो का का माने की हैंसे के विचार के स्वोत्त कर हो का का माने की की हैंसे के विचार के स्वोत्त कर हो का कर माने की वार्च हैंसे के विचार के स्वोत्त कर हो का कर माने की वार्च हैंसे के विचार के स्वोत्त कर लोक का माने की वार्च हैंसे के विचार के स्वोत्त कर लोक का माने की

( ३ ) नवचेतना व्यागी है। उन्हें ज्यों इस बाली का अबनाइन निधा जात है वह जिलाहा को ज्यानंद विभीत कर देती है कल्पेता परमानंद रखनें

कावियोंत्र पशुर मात्रा में हुआ है। इस्तेत एक होए से ट्रेस्ट होए तक साम जो सका महामा व्यक्तिय होते हैं। ऐसी करका में मात्र कों को शीक्ष्यपृत्ति है—कह दें हो को कार्युक्त नहीं होगे । वे स्कल किसी देश जाति या समझाप स्थित को स्वाप्ति नहीं किश्तु ने सर्गां अधिक हिम्स हैं। सारा में मार्थक्तका से सम्तों भी कई समझाप सरप्तारां

चारा में मार्थनकात से तकते वह बह कालक बरनायां वा पत्री मार्थी है। कामें सावाम आवाले आवेड को प्रकार प्रकार एगोनपर होती हैं पर सावा सकता एक हो मधीन होता है। सारमार्थों निवारित मीटि मियारित सरकार डिलीपर होता है, पर काने स्कारत वह तह हो का कि बीत हुक्का पेनकार परिकारण हो जाता है। इस्तिर्थ तो कहा समा दें कि:—"पन्ने स्कूरण वहाला"। (४)

आतंत्र्व कल परन्या क्राईसिक खूत शिख्य है। उनमें
अगतव्या हो परनार हैं एक वैदिक बरंपा की र दूसनी परन व्यापनाथा हो परनार हैं एक वैदिक बरंपा की र दूसनी परन वरंपा। वैदिक परेपा में कन्य कर्म्युर्त कर परेपाओं का स्वादेश हो जागा है और अगत परना में जीन पर बीक परंपायों का। इन परंपायों में काम स्वाय पर क्रांत्रेश कह हो के की पर जीना वर्णपायों में आपास हो होने प्या है।

बराभंदा कात में कर शाहित की प्रधानाना हो पारार नातर आहे हैं, (र) सिंखों मोर सहसंस्थित की, एन (द) जैने की। किर मोजाता में मंजिलन ने और पहता, कोर शोकारी मंजियानी करन पराप्ता करता हूं। या मंजियाना कार समय में ही करापिक निक्हा हो थां। यांकी प्रधाना कार समय में ही करापि की कुछ स्थानान पर प्रमान से निक्का होता है। है होनों प्रधाना की स्थान पर प्रमान से निक्का होता है। है होनों प्रधाना की स्थीन पारार कार्योक किश्तानी होने हे इस्तान

सामकाय - प्लोकरण हो हो जाता है। हिन्दी सहित्य के जावान सेरी सम्म के निवास का बहुत बहा तेया हम करने के ही बात है। सन्तें की बाधी राह्य के हस्त्रीय से क्या केर काश्मित होने के कारण हो दिन्ही प्राप्ते कार है जब्द काश्म्य कार्यों के परिमार्जिक सम्मा करती हुई राष्ट्र माथा व्ह पर कारीन हो समी है।

जात राज्य राज्य राज्य पर पारायाज्य माना बनाता हुई राज्य माना बार र वास्त्रीय है साने हैं। जीता कि जगर बदा जा पूचा है कि हिम्ती साईटण के विकास में जीता जीता का मानाव्यक्त पारा राज्य हैं। होतायाज्ञ, परस्कान जनस्यादि क्यांत्री सिंहिंग बीडिंग में जीता माने वास्त्रित भी वार्त्या पार्थम होती हैं। एक मी राजानिय से चन्न का की हिन्ही और तैन सन्तें पर धन्तिश्व सक्षित होता है। तिन तैनों विश्वें की मादायाय मुत्तरात्री व राजस्थानी थी, तथा जिन्होंने अपनी क्षेत्री रप्तारां प्रपत्नी महत्त्वाया में की वन सन्ते थी पर साहित्य के प्रात्न तिन्ती भाषा को ही धुना चौर धनी में रप्तारां थी, प्रस्तात जैन कवियों के हलारों की संक्या में माति एवं मायानील्य पर हिनी

मारा में व्यावन्य हैं। ये ज्यू बहुत हो अयुवेशक और हालावराई हैं बाताब्य वर्ष मानस्क्रा बनार होते ही स्कृत्युत्व हैं। यहें वरियों के पर शंपा को काश्रतिक भी हो चुके हैं। व्यावन्तिक्य, करण्या, बाताम, मुश्य ब्यादी हैं व्याव होता, किरावन्त्य, हिमायनाव्याव, सार्वेश्य, सार्थित्य, विव्यविकात, पांगवर्ड में, झालावर, झालाव्य, बाताब्य, सार्थित्य, विव्यविकात, पांगवर्ड में, झालावर, झालाव्य,

पर केंद्र है कि दिन्दी साहित्य के शिकास पर्श तिनिवाल वानंती बहे को होती व प्रमानी में इस दीन वर्ती का बढ़ी मान गिरिए तक सात्र मही दीता। का शिक्सामार के ब्याई में हम दूर दा पाल करियों के शाहित का सम्मान कर हिन्दी साहित्य के शिक्स पर विविद्यास सम्मानी करी में चित्रत पाल क्यांचा हैं। सम्मान शिक्स प्रमानी करी से स्केट ।

हिन्दी सन्त साहित्य का विशंगानतीकन करने पर झात होता है कि सुन्दरदासाहि बोडे से सन्तें को होदकर क्रमिकार सन्त सावारक पहें तिस्ते हो थे, पराठः करके साहित्य में, सावनामय सीवन के

### ( )

कारव माने वो करिकाफि तो मुनद दंग है हुँ है, पर बाका बात की देवें के या करकीर का नहीं नामाद देवा । स्वाप्त की बात की देवा नामाद की देक दाना वार करकीर है। स्वाप्त भी मित्रा भी है, मात्र करती की देवें है पर कामावास्त्रक मी नी हैं। मात्र करता है देवे हैं पर कामावास्त्रक मीजी जैनादी के एकामों के देवां का प्रभाव का मात्राहित किया ना पड़ा है जो क्लाकेट के के तोची क कर होने के साथ कामावास्त्रक मीजी की मात्र की के तोची कर कर होने के साथ कामावास्त्रक मुझा मी थे, कामों के कामों के काम कामावास्त्रक मीजी काम करती।

जन्म राजस्थनकों तार्थन जंगत हैरा भी राजधानी जांगबू? में मोक्सेर राज्य वा एक महितायीन स्थान है। उर्जा से पंच मीत में तूरी पर हिला कैस्मीमध्य में का हिलों की में की स्थानी स्थानी मां जब तो जोग स्थानी करण हैराजीक महितायी में आप स्थानी में हैं। जोक्साम जाति के जी संपोधी महितायी का अपीत स्थान 1 सामन में एक पेट पहिता तक की प्रीयाणी का अपीत स्थान है।

े आपना न एक पर निर्माल कर जा प्राचन का अपना कर है। के प्रति न हैं कि प्रमुख्य कि प्रति के प्रति हैं कि प्रत निवास करते थे, जिनकी श्रांतकों का नाम जीवाहोंकी था। वर्ष १८०१ में कारको दुबरन को मारि हुई, जिनका नाम नाराय, नाराय या नारायया रखा गया को काने चरतकर नारायती वाबा के नाम से परिद्ध हुए'। सामनार इन्होंका रीक्षा नाम था।

हिराता चंचा (११३ वे साराव है जर्मक हुआ जा का था। दिराता किया करों भागे का अपोर्टन है का से अपोर्टन प्राण्या के स्थान कर किया के हैं। का का अपोर्टन अपोर्टन में किया है। अपार्था कर हुआ में हो हुआता है तो, हैं, प्राण्या के स्थान कर के आपन्त हुआ के तेत हैं आपार्था कर की आपार्था मात्र साथय परिताम कर आपार्था कर की अपोर्टन कर में आपार्थ के पार्था के प्राण्या के साथवान की तिकास का मात्र का प्राण्या के पार्था के पार्था के प्राण्या है। वहुंगी का स्थान का मात्र की स्थान कर की स्थान होंगे अपोर्थ के साथवान की स्थान की नियानकर के तित तित्र ने पार्था की भीत का स्थान का साथ ता स्थान कर की

वेकिये इमारे 'ऐतिहासिक कैन काम संप्रत' में प्रकाशित "बानसार अपदात देहें"।
 अनगाभाव से निविक्त नहीं कहा का प्रकात ।

भी कोने, राज्य के कोन भी में बेंबरा राज्यकराइन की क्यांक्री भारति भी पूर्वा में देन १४०० मा हुन १ के हिन अपना स्था ब्या हा। जब साम साम्याद मा दोन १९६६ की पूर्व में देनकोरी से कीव्यानिक प्रीटामें होतिया है। कार्याक्र्य साम राजा १० १००० में के किए सिंहर सीटामें होतिया है। कार्याक्र्य साम राजा १० १००० में के किए सीटामें सीटामें की सामेश्वादी अपने कार्य पद राज्यक्रिय होति होते हैं। जारते सुक्ते विवर्षिकी अधिकार्य के तथा कोच्ये कोर्सी पहिए सिमा सा १०६९ १६० के स्था के अपने सीची सीटाम सीटामें सामा सामा है।

( )

दीक्षा श्रीक्रिनतानस्ति के यस सापन्य विचान्यवन निर्वित कर दिया, नरागुली भी साथ ही थे। पारवदेशर में चातमांस विजयत मि० व० ३ को बिहार कर समस्त यसी पान्त में विकासे हुए चान्यार्थ श्री जैसलोर प्यारे । जैसलोर का दिनों समृद्धिराली चौर जैनों की बाल बड़ी बड़तीवारा होत था । सरिजीने वहां सं० १८१६-१७-१८-१६ के बार बातरीस करके प्रांत्यान का तक शान शिया, शीलीहवाली रीर्थ की यात्रा भी कई बार की थी। वहां से विहार कर सीनोड़ी पार्श्व-नायनोधी यात्रा करते हुए सं १८२० का चातुर्मीस गुढेमें किया । फिर महेवा प्रदेश को वंताते हुए भी नाकोकाशी तीर्व का बन्तन किया । सं० १८२१ का बाह्यभेत वालेत हुका । वहाँ से क्रमरा विद्वार करते हुए १४२१ फारान सम्रा १ को ४५ वर्तियोंके साथ आह तीर्ववादा, सं० १४२५ वैदाल बक्रा १५ को ४४ विश्वीके परिवार यह अधिवारिवासीची बाजा. र्थ- १८३- याप्त्रम्या ५ को ७५ वति यह सर्वत्रम् वाता, वर्ता से GETTE WEST 1-" offelt & one ferrir eter, do 1422 to 40 र को धीनोंकीयों को एवं भी संकेषणती अर्थार आहेत सीवीं भी प्राचा भी भी । सं- १८२० वैशास हाका १२ को सूता में १८१ किन किन्सी की अतिका को तथा सं॰ १८२८ में बिट वहीं ६६ किन अतिक्रित किये । पर-परियों पर विजय प्राप्तर कोन्ड देखेंगें विदार करते हुए सं- १८३४ आदिन हुन्या १२ को बाद प्रदा में सार्व दियारे । बाद अपके कवि भी के बारकी हो चौरीरियां प्रवाहित हैं एवं अनेव स्थान, स्ट्रतियां उत्तावन हैं । अरसी रांबद १८३३ में मात्रामीय समक सहस्तरून प्रम्य भी रचना भी थी। परमराकार यह उ॰ क्षमाकवानको की रचना है, मन्दकी प्रकृति में उनक नाम संसोधक के रूप में भारत है। प्रस्तुत प्रत्य १८३ स्थानों से प्रकारित हो जब है।

कर सुरि महाराजसे निवेदन कर हुम हुङ्ग्लेंबें सं॰ १८२१ के मिर्छ माथ हुड़ा ८ के दिन सिद्धियोग में पाइट संबर्ते आपने दीखा स्वीकर सी । दीखा के बजतर सुरिजी ने आपका गुरुनियक नाम "झानसार"

ला और ज्या परना हिम काल प्राम् एको हिम की दावान कीं ('त्रण्यांत्र) के हिम्बान में हमारे शिक्षि की । आचार्या अने के साथ विद्यार ही कर मूर्ट १ व्याप्तार्थ अने के साथ विद्यार ही की का मार्च कर्यक की भी साम में को में किया में १९ ८९ उस और १९ मोनीन पर्याप्ता करियों के एक्ट एके मार्च हमें ए के प्राप्त में हमार्थ के स्वाप्त में स्वाप्त कर कर हमार्थ के स्वाप्त हमार्थ ए के प्राप्त मुंदर्ग के स्वया भी काल, मार्गियों गाम भी

होकर सं० १८२६ में मेहने में चातुर्जीय विश्वया। चातुर्जीय के कानार स्ट्रिर व्याराज कायुर काररे! भी संघ के दर्ष वर परावसर न रहा। वर्ष काल का सुच ठाट रहा। । अरपुर मानी स्वर्णपुरी ही सो। वहाँ अपको दोश सं- १८०१- मिती अगाद वर्ष १ - को बीकमेर में की विश्वयालकृष्टियों के वर्षीय हुई थी।

केवले हैं के को बाता थे कि का जाती होंगे हुए पूर्वण माध्य कें कोवले स्वाप्त सार्वी का बाद के दिन यह पूर्व सहाय की कावीर वारों कीर कायुर मण्या गोवागोर सार्वी है हरोंगे कि । सूरत में जिन विस्त्र प्रतिकृत पर्याव का कार्याव स्वाप्त किया किमें की वीचा बातों के किया का वार्त माध्या का माध्या का पहिलान किमें हैं विद्या के किया किया की कीर वहीं माध्याओं का निकार के बाता बातों के किया का वार्त माध्या का स्वाप्त का स्

मान में प्रसर्क माना, होनामाँ, स्टानां मार्ग, प्रीवस्त्रास, मंत्रेच्या स्त्रीत् सावरीत सावरकों का दिला सा स्वादी साहब्द होता है कि स्त्रा । वह ती रेते रोजाना भी र हिम्मा क्या स्थापन क्या के हा स्त्री मा गोविक हामान प्रस्त्री के लिए पेदनामांची मानीरी सिक्का "विकास मीच प्रोवस्त्र केवान पाहिंदी" । वह मोम्बुद एक्स का अर्थन समा है लिक्का स्त्री हुए। स्त्राह्मीन स्त्राल करारी है हा सिक्का है।

र पहल के की बरिदास सम्बन्धी है भीष वानने के किए तन्हें देखना चाहिये ।

( १० )
पहिलों की तरह दिन बीते । यांच का मानाम्ब होने पर भी ज्यास्त्री
पूलती जहीं न सम्मद मोना प्रपाद भीर स्वपूर्ण है ए बेट्टी पर सिम्म
पूरीका प्रमादी मोना स्वप्ति क्रियों के प्रसिद्ध स्वप्ति है । किर से १८३६
बात पहिला को ८८ वीती के प्रसिद्ध स्व हुई । किर से १८३६
बात पहिला सुर्वाद से प्राप्ती साहि के पूर (श्वास्त्र से)

( \*\* ) समय सरिजी एं० हीरपर्व, एं० महिमापर्व, एं० रहाराज, एं० विवेख कल्याया पं॰ व्ययसार चौर पं॰ झानसार चादि २७ शया से ये । सं॰ १८२७ हैं। सर १२ को सरत में १८१ कियों की तथा संर १८३८ में भिर ८२ जिल बिन्बों की प्रतिशा खरिजी के कर कमतों से हुई । इस

समय झानसारजी का विद्याप्ययन संचाद रूप से चल रहा था। च्यापके चळ्ट मोती की तरह मुन्दर थे, च्यापके रचित भी पार्श्वनाम स्त्रम सुरतमें ही लिखा हुन्या है—जिसका नित्र इसी मन्थ में दिया जा रहा है। मस्तत शावन भी इस मन्य के प्र० १२६ में महित है। इससे मालाम होता है कि भारते तथ अतियों का निर्माण से वीवनावरूमा में ही प्रारंभ कर दिया था। यह कही वही करियां आपने करूरी परिपक्त

स्टार्ड कर्न, कर्नुत्र का स्थानका वर्ष तथा अस्त्राच्या स्थान अस्त्राच्या स्थानका वर्ष तथा

बनाव में ही नार्यों थे। जारण से हो भागती होने बनानुंत्री के, जार मानो बनावीतिक वांगी के स्थापन वी सीर दिशे मान दिशा। आत्रेलन जैनेतीते बातालेश के आसूध दोता है कि बायने तंत्र १८८६ हो हो जीया, स्वाल्यकारी के कार्य वार्त्यानेश्वास आप्तामिक बात्रिक सामाही जैनेतिकालं वी कार्यान्यास्त्र प्रारम कर हो थे।। प्रारम कर हो थे।। प्रारम कर हो थे।।

वहां से बावक संध सहित राष्ट्रकाय क्योर गिरनार सहातीयों की यात्रा

(12)

गुरुमहत्तव मीरसाराज गरिप का स्वर्णमात यो इसके पूर्व ही हो गमा मानून देन है पर इस वर्ष हात गुरु जीविकासमध्यिकों का भी निराद हो कहा। अधिनासमध्यिकों के विद्यापदा सर्वन हमारे सन्पादित गिरिशानिक कीन साम्य संसद्ध में मामारिस सेहें स्थादि के स्वाचार से विकास साम्य वाचक राजधर्म जी के साध--

सं॰ १८३१ में भी जिन्हामस्रिती के सात शिव्य व्याल करन हुए, तब से ब्याप ब्यपने गुरुशी के गुरुक्षाता बाक्क औराजवर्णजी के साथ रहने जो । संबत १८४० को सीबान्यवर्ध गरि। बी प्राप्त टिप्पनिका' से मालून होता है कि ब्याप वै० व ४ सं० १८४० में वाचक-जीके साथ लूझ लगर में थे। सं०१८५१ चै० व०१ के पत्र से मालव होता है कि ब्याप पाली में बा॰ होरधर्म तथा वा॰ राजधर्म जी के साथ थे। इसके बाद वाक्य राजधर्म भी लागीर बले खादे तथा झालसार जी किसलाइ गये । वहां सं० १८४२ से १८४४ के दीन पातुर्यास विवासर सिर नागौर में बायकशी से निते । होनों के बस्त्र प्रसावकी परिवह की ४ यांठें नायौर में क्षोब कर आप कवडर आवशे। सं॰ १८४१ मिती वैसास क्रम्या १ को तकनळ से श्रीकिनचंद्रसरि जी के दिये व्यादेशस्त्र से माशून होता है कि वस समय बाप जयपुर वे और इसी कादेशसमञ्जूसार तथा फारकती पत्र से झात होता है कि सं॰ १८४k-४(--४७ के तीन पातुर्यास बाषकारी के साथ ही जयपुर हए । सं॰ १८५८ का पातमीस श्रीज्ञानसारजी ने जयपर ही किया चौर वाचक राजवर्मजी प्रकृतस्य जनम स्वर्गवासी हो गये।

जात वाहरू दालकाता पुरस्कर वाहरू स्वाचार हुए गया।

जातवादारी के काब कर हो हो गया कर के काहि परिष्य एकते कल पाने से बात करते बाहुब का अपना विकासी वाहर्ग परिष्य एकते हैं का पानता में पाय के समस्य ताहिनों के एक्युल्य (१) पा 1) निर्धान करते हैं करते हैं स्वीचाने के बेसाने से पानकारिक किसी काहि के ब्लेक्स) हो हिंतानिक के स्वीचान के अन्यान, प्राच्यों हुए हुन सी प्राचीन में (१) 1) नीति केंद्रा करता का सक्त हो के दिस्स के प्राचीन होंगा हुन सी प्राचीन में (१) 1) नीति केंद्रा करता का सक्त हो के दिस्स के प्राचीन होंगा का सम्बाध का नहीं है।

( १४ ) सं० १८४८ में जब चाप जल्दुर में ये, सक्तर्यान चाषार्थ भी नितमकद्रस्तृत्वी ने चाएको वहां से विद्यार करके म्हाजनटीयी जाने का स्वारंत विद्या, चारेरामा की गन्स इस प्रकार है:—

॥ स्वस्ति सी पार्थेशं प्रकृष ॥ मीतक्रयोक कारास्कृत्य । भीतिकामप्रकृतिकाः स्वरिकाः भी व्यव्हा कार्रे पं प्रण । सामकार प्रति योग्यं सावृत्य स्वाधिकी वेदोष सक्तर्य च देंगं । क्या पुत्रके बाह्य भीस्माक्तरोति ने में स्व पुरस्या । पार्था शोमा केया, निकां ने सार्वाक्रय से प्रस्तांक्री क्रिया सी संग्र पानी पर्वे किया

प्रतंत्र्यो, प्रस्तवे प्रव केच्ये मित्रे परमुग मुद्रे १२ सं° १८% रा । मुख्य कुट पर :---१ सा श्रीकित्रकार्म्सिकः। २ थे। प्रा झानसार मुनियोज्यम्।

इस पत्र से ककातीन ओड्नों के प्रश्लेखन रीसी बादि का हुन्त्रर पुरेचय मिलता है।

पुरंचय प्रथला है। पूर्व देख विद्वार और तीर्थ-यात्रा

गण्यन्त्रपण भीत्रपती के भानेरायुक्तार चापने वहां से विहार कर विंवां चौर सं० १८५६ का पातुर्वास महावत्योतीनें किया सं० १८५६ मिति माप हुन्हा १२ के दिन चापने भी सम्मेतरावर

महार्थि की वाताकर करना जीवन करात किया । सं० १८५०-५१ के कार्यांस सम्मन्यः हरिहाकार काजीवर्गशाति में ही किये से ।

( 12 ) इसी बीच सम्मन है कि बंगाल में जहां जहां जैन लोग निवास करते वे व्यापने विश्वरम् किया होगा । पूरम देशके नाना कानुसन्तें, वहां की समाज ज्यानस्था, रहन सहग ब्राह्मिका वर्शन प्रवाही समीव और कर्ज़ काफो "पूरव देश वर्णन झंड़" में किया है जिसे चठकों की जानकारी के लिए इस मन्य के करना में दिया गया है। सं० १८६१ मिती मान शुक्क k को क्याफो हितीय बार की समेत्रशिक्करजी की वात्रा की । इसके बाद बीयून्यजी के कादेशानुसार विश्वरते हुए दिल्ली भाए सं० १८५२ का चालुमीस वहीं किया। इन चार वर्षी में ब्यापने मार्गनियत संबुक्त प्रान्त, बिहार, बंगालके सभी तीर्थी की वाला भी चावत्य की होती। वसका विशेष वर्शन शास होता तो जैनतीओं के इतिहास सन्दर्भी करेक महत्त्वपर्ग वार्वे का पता पताता । प्रवाहिनें संक्षित वर्णन काराव ही शिशा होगा । पर शेव है कि वे श्रद्ध काल नहीं है।

पहुरतां का रोमिनारण: 
पर्व १८२१ में का प्रवास के प्रति शंग १८१२ फर्कन १०

पर्व प्रवास कावूर्य का प्रवास के १८ का भाग अपूर करते हैं मारता वा सुविश्व सीता है कि यात्र प्रवास प्रवास के प्रति प्रवास के प्रति प्रवास कि है कि प्रिता प्रकारोगाला मीतारक के प्रवास कि में पर के प्रति मात्र प्रतास के प्रति मात्र के एक प्रति के प्रति के १८ क्षेत्र मात्र अपूर्व में अपूर्व हों मीता के निकास कर के प्रतास किए मात्र के एक मात्र मात्र में अपूर्व हों मीता के निकास कर के प्रतास किए मात्र के एक मात्र के प्रति मात्र के एक मात्र के प्रति मात्र के एक मात्

बेटों के २+ तीर्वहर मोध क्यारे में अटः महत्वपूर्ण तीर्व है ।

( १६ )

व्यप्तुर में १० चाहामीस :--जवपुर में शे व्याप्ते चहते सी बई पाहामीस किये वे चौर वहा के सक् तथा राज की चीर से मी कारतर राज्य के वराज्यस्य विद्या कीर क्षेत्र कराय कीर साम कीर कारतर महाराज्य मात्रप किंद्र का सामक चीर शक्त की स्वीक्टरा ही कारका जवपर में

व क्षेत्र का कार्यन कर्या । हिन्दी संस्थित है स्थापका तथा है में स्थित है से साम हो से संस्थित है स्थापका तथा है से सिम्प्रका रहना है से स्थापका तथा है साम हो से स्थापका है से हिंदी होते है स्थापका है से स्थापका है से हमें स्थापका भी प्रस्नीक कर है स्थापका है से हमें से स्थापका भी प्रस्नीक कर से स्थापका है से हमें स्थापका है से स्थापका

होजा मांच में हो सबैंदे चयात्व्य हैं।

१ सहाराज्या माजपर्वित्र
के भारत में चयाद्व समाने को समादे वस्त्रीय के हेस्सरीविद्य और
को भारत में प्रचार समाने को समादे वस्त्रीय के हेस्सरीविद्य मोत समाद १६८५ में हुई। एके बाद को इस स्वामीविद्य भी की मान्य मिद्यान्त्र हुए विश्व के १६८५ में देशाता है। चार में के समाविद्य रुपा हुए। इस चार मुक्त १६८५ के ४६ १९ और एक में

प्याद १६८५ में हुई। एतंत्र पर स्तुं जुर पुराशिक्ष १ भई भी आहु त्रिवारणाल हुए विकास १० १६६३ में देश कार्यात्व हुए प्रमा हुए। एक्स प्रमा सम्बर्ध १६९१ तो १० १९३ तेते. एकस्पी १० १६६१ ते १० १६ को हुई १ देश से देश के प्रमा पान्य होते हैं यान पान हुमारि भी है। समझी प्रमुद्धि प्राप्तव्य स्त्र प्रमुद्धार स्त्रुव है कुमार मार्ट्ड एक्स स्त्र २० क्ष्य भी जाकस्पी है। इर एस्से कुप्तित हिर्देशकरणाली दे नाग्य समझित सा से कार्यात्व है। समझित है जाकस्पीत है। इर सभी से एस्सा समझ १०४४ जसपुर के १० श्रामुक्तियों में बचा बचा विशिष्ट सार्थ हुए, यह माराजा वर्ष बच्चे होने के पान पान अनेक विद्यानों के आभवनाता ची वे। अग की बाह्या ने करायी अपने अकसरी व विद्यानी हार्यिक का दिन्दी में महाराष्ट्र हुए ११ देनी अगर बातोंक का सार्थ करीयों के सार्थ कराया का प्रोत्यों का स्में प्रमान कर प्रात्ता दिनों के के जातन

अधिक है।

न प्रकार पूर्वण लगा है के इसारे क्षेत्र करवाये जिनमें जार वीर इकार मीर आगा विचार इसार क्षित्र हैं। लगा के मानिस क्षित्रे हैं। बार के प्रकार के सामा के मानिस में का है। आगा है हाता करने बा यो बाबी बीट या। प्रतिबंद इस्पाइक माहि इस्ते अगीर उपल अस्ति हैं। कमा १८५० मिर्गा आगा झुट १३ को आपके प्रश्न अस्ति हैं। कमा १८५० मिर्गा आगा झुट १३ को आपके वो प्रवासानाय-से मता स्ववना कटिन है। परंतु सङ्ग्रहस्त प्रधानका चौर कामोदीपन प्रभा जो कास्तः १८१६ माथ द्वाहः ८ चौर सन्तर्भ १८१६ चैत्र ह्वाह २ चो रचिन हैं—से इनका कप्पुर मदेश पर बन्धाः प्रधान निवित होका है।

## गुरुआताओं से बेंटवारा:---

संशिक्तावास्त्रीयों के वर्गावा के बत्त वर्ग तक बाद पा पात्र या पुत्र है। के बाद पर है ने व्यावस्त्र रहिता है। क्रांत्रस्त्र परस्त्रकों को कार्या होता है कि साम्त्रकों के दिहान हो। क्रांत्रस्त्र करते प्रित्र कार्याहराजी ने प्राप्ते का परिवाह के स्वर्थ के स्विष्णका की स्वाहित को हिता के स्वाहित के स्वाहित के स्वाहित कार्याहरूम के स्वाहित के हिता है कि स्वाहित के स्वाह

हानम्बर् (८३६ ते। मीतिकारमध्यिती का रिज्य सात्र स्वार हुन्हा जर्दा। चण राज्यमंत्रिती और हानस्वर ! ए होन् मेल एका। चीच्य वेदी स्वीत्र केत्र रहा। व्यो जाते चीच्या रिच्य सेता। चारी हुं ता। राज्यमंत्रित्यों मानीर पड़ा। वं ४ हानस्वर रिक्य-स-मारी जी। जी वेर जानीर पण राज्यमंत्री की वं थे हानसार सम्पत्ती कारीर है हो ही दे चीच्यारी राज्यमंत्री का ४ मोडी ही राजी। चार्च में स्वयुर पीचाल होने होता की तर पड़ा।

और उनके परिवा प्रसासाधि भी पाद हो थे।

( ११ )
पड़ें हलसार चौषौ चौजाव दिस जेपुरहोत रहीं। कर पाचकी
पैहकसा जाव ने देवंका हुआ। करें हात्सार जेपुर स्ं पूरा प्यार चैहकसा जाव ने देवंका हुआ। करें हात्सार जेपुर स्ं पूरा प्यार चैताया करते देव जैपन करती जा सामाज्यानी जीवा हैं। जैपन हैं

भोजाब करने पर देशूट क्यों जा बजारकारी मेंदूर में है जैंदूर रें अफेराने कर हिया और राज्य के जो कर दानों के किया के अफेराने कर हिया और राज्य के जो जा मेंद्रियों हु बुक्तिन कहा भी प्रकारकारी है। होने ही में सामग्री में माने किया है। के प्रकार भी है। इकारण हमें माने हमेंद्र मेंद्र माने किया के प्रकार के प्रकार कराइकारी में पी हमें किया के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार कराइकारी मेंद्र मेंद्र मेंद्र मेंद्र मेंद्र मेंद्र मेंद्र माने के प्रकार के प्या के प्रकार के प्रकार

इसके प्रधान वाधिका तिचिने लिखा है वही व कान्य स्वरूप फारकती पर्को इस प्रकार लिखा है :---

III ये 1 म की नारकारी चेता हरकुल स्ट्रूचल हुए कमावन चेता कारचल की में दहारा जावजी। कमार्चन में में सावक या कमार्च पेता बाता कर्म कार्या की वहीं को की कमारे हुए जोता राज्य वाली हुए में वारकारी कीता होनी काल गेतां कोई कारम पत निम्मी की एएं के। काल कर्म कोई हातों म है, अरावकी राज्यहार्ग में निम्म कीता में का हुए श नार यहन के १८६६ का जिल्हा में असादन कारचल कर निम्मी की कही है।

सास्त्र १ सर्वाधिके जी नी पण्यां हेतु रजु सास्त्र १ पं० जीवस्थितव की नी सम्यां हेतु रजु सास्त्र १ पं० माधिकपन की होन्यां प्रमां में क्की दिली

( 30 ) सास १ वदारस क्रमुख्युन्दर गरिव री धन्यां दोना...... सास १ महता रक्तकन्त्र शोहमा वर्णाः हातार लिकी स स १ झालकात् कामा भयी दोला दानार

साम १ हरफाद चोरविया वर्षी दुः.. सास १ क्समपन्द ( खूपीया )

सह पत्र राष्ट्रातीम वृश्यकेश शेवल पद्धति का सुन्दर अपूना है। ज्ञवरंग में साहित्य प्रगति:---त्याह्यान, स्थात्याय, वर्ष-चर्च कादि के कविरित्त कायका समय

ब्रास्त्रकान्य एवं श्रीसङ् ब्रासन्द्रकानी के प्रत्यों का परिशीसन करने में ही करीत होता था। इस समय आपके साथ शिव्य हरसान (हित्रविजय सं० १८३३ फा॰ व॰ ११ जिलकत्तवारि हीवित ) और क्ष्मानावत' (स्वयंक्त) ये जिल्हा शाम धार्यु क पारकती पश्चें स्ताव है। इस फरसे में संबत्तीकोत्सरह को हुए प्रन्मों में को वपताय हैं सभी व्यक्तिय और शासीय विचारमय हैं। सं० १८६८ जेश सवि ३ को संबोध ब्रह्मोत्तरी, सं॰ १८६८ होबातीके दिन ४७ बील गर्मित

प्यार्थि शरिवित सावन, सन्दर्ग १८६१ पीपहाडा ७ सोमधार की इन्स्वस्थान, मापमें जीवविचार स्थान, मापची १३ चन्द्रवार से त्रवाला स्टान, भी रचना शर्त । यो० १८देश की ३ **रचना**र्वे क्रणान्य हुई हैं, जिनमें मार्गराये कृष्य १४ को देनदग्क स्टबन क्या चैत्रपुर ८ को रचित १२ यन्त्रस्थना स्तरक हैं।

s कीपुरूपनी के व्यवस की वीकायनहीं कहती के अञ्चलस इसकी दोशा सं- १८४५ वि॰ व॰ ७ तु॰ बीबानेद में हुई थी।

( २१ ) जयपुर निवामी गोजाडा मुख्याका को वाल्पकाल से ही जैजनकी के प्रति कृषि नहीं थी। पर ब्याइकी के समझ्या व सक्तंतित से क्वोंने प्रताब्दी से जैक्क्स्तंत्र भी कहा स्वीकार भी स्वीर पड़न

से क्वांने हुत्वाकृति से सैन्यहर्गन भी कहा स्त्रीकार भी भीर पड़न पात्रप स्वात्त्वावर्ग विशेष कर से महा हुए। मान हाणैसी की रफ्ता इन्के सिंग विस्तानम् में भी नहीं भी। एक नार भार जान्युरत्नार से सहर स्वीपेसे स्वास्त्रर रहते को

पक बार पार जारपुरानार से बाद मंत्रियों कारण रहते जो है। पारामा के के किया तमें बाद रहातांग्री में तारण तिर्मेश मित्रा है कर मामाज्य बाद में सिंग जाती होते हैं। पार्केश कर्मा, मित्रा से व्याप्त माना करने पारा करें। वार्मिक कर्मांत्रा से क्यांत्रिय होतर पहले को कि बाद पार्च मित्राओं सामा करें ती में में हे भी तारण हूं। को कि बाद पार्च मित्राओं सामा करें ती में में हे भी तारण हूं। को ति बाद पार्च मित्राओं मित्रा कर्म मामाज्या नहीं। वाराप्तांग्री का प्राच्या प्राच्या करिया कियाना मंत्रियां है। वाराप्तांग्री का प्राच्या प्राच्या करिया क्यांत्रा मित्रा हमा तार रहाई पाराप्तांग्री करिया करवा करवारण स्थाना स्थान करवारण स्थाना स्थान

के बारिएक प्रत्योक विस्तान न मानने का होत्या साम्यावर रखायांक्रीय के त्रीवार ने स्वत्यावा कि स्वत्यावार 'तो इत्याव्याव की त्राच्या का की 1 क्लावर त्या क्रमा कि स्वत्यावार 'तो हात्यावार का त्याव्यावार का त्याव्यावार का त्याव्यावार का त्याव्यावार का त्यावार का त्

श्रीपद् शायपार भी का मात्रप क्रिक्ट बतारदीवाच की की कति से हैं।

सीचवात होनेते जिनाम वा चौर है। स्टानमंत्रीने कहा—स्वावकार में देवी तथा तथा है ? इच्चा माज्यादें । तम मौतार ने भागवा स्वयर द्वारमें "साववा ने परिचल, परिचल के भागवार" रिव्हानके एकान वह वहुए में जो अध्यरा है, विश्वत कावणा करते बतार्थी। काली करांची करांची क्यांची माज्यादा स्वर्थी

नाजता । हमा के समाय नाम वहीं (शां — मास्ता साहा हुत्र हैं समायी नामोंना कर पास्ता को स्थान के प्राथमका अधीर है साहा मिस्ता को करियों हो साहा हो सर संपाती हुन हुद्धारण को करियों को साहा स्थीप साहित्य माम की एपमा माने हीं अपन्न है साहायोंची के विकेश है भी। भी व्यापनाच्या सरामी हत साहाय के सावायियोंट हो थी। भी व्यापनाच्या सरामी हत साहाय के सावायियोंट हो थी। भी व्यापनाच्या सरामी हत साहाय के सावायियोंट हो थी। भी व्यापनाच्या सरामी हत साहाय के सावायियोंट हो थी। भी व्यापनाच्या सरामी हत साहाय के स्थापनाच्या स्थापना

## गुरूमन्दिर प्रतिष्ठाः---

क्षपहर नगर के बाहर मोहनवाड़ी गुम से मसिक बाहा व्यवस्थ का स्थान है। मीमद ने वहां गुहस्तक्षण मीजिन्द्रप्रस्तिनों तथा मीजिन्द्रप्रस्तिनों के चरण, स्थाप्तुत मीजिन्द्रप्रस्तिनों के चरण, स्थाप्तुत मीजिन्द्रप्रस्तिनों के चरण, स्थाप्तुत स्थापन स्थापन क्षाप्त की

दे जिलों के जबसेटि के बाति थे। ये मूलता कारण रच्छ की विध्यमणहरें कार्या के कारण और श्रीवात चाति के ये पर आपरे ये हि॰ विद्यारों के मतरीवा व कारणका मन्यदि अध्यक्त के प्रधान से दिशामार है गये थे। हमार्थी इतियों में अद्धांस्थापक (आयस्था),

मनारमीराज्याका मनारमीतिकात (संगद प्रन्य) प्रकारित है । वर्णमानकात में क्षेत्रणह के ब्रांकानची सामी हम प्रान्य के प्रमुख प्रकारक है । ( 99 )

वनकं प्रत्यर श्रीतिनश्चश्चमूरिजी तथा गुरू श्रीरामराज्ञानीए कं श्वरापादुकं निर्मात करवाके मतिवित श्वरापो थे। श्वापणी के रिज्यतमी भी श्वापणी विद्यानाता में ही श्वापकं श्वरण कम्माकर

रिज्यनपि भी ज्याच्या विद्यानमा में ही ज्यापक पराय कम्माकर प्रितिक किये थे। इन परायमहाकार्योक सब सेखों को ज्याबसरिक होनेक काराय यहाँ दिये जाते हैं। (१) ॥ संबद १८६२ मिले माथ स्त्री एंप्यम्यां मी जनकार

प्रस्तें श्रीहरत् सरतर राज्याशीकार कुप्राच्या यन भी विकारताहरियां । गुप्राच्यान मन । स्त्रीविकारताहरियां च प्राच्यासी श्रीतिकार्यवारि विकारी राज्ये । चे । आक्रास्तर सुनिया कारिज प्रशिक्षास्त्रिये व क्यानेव यून्यानाहुग्वेरात्रः। (२) शेरु १८१२ सिने माच सुन्ते यंत्र्यां । श्री वरणारात्यायों ।

स्री हृद्धसरहर राज्याचीरा यु॰ म॰ श्रीवित्सासस्त्रियां श्री विनक्ष्मस्त्रीयां च पहत्त्वाची श्री विनक्ष्मस्त्रिरि विश्ववि राज्ये पं। झानसार सुनिना चारिकौ प्रविद्वाणितौ च। (३) ॥ संबन् १८६६ मिते माच सुनि पंचल्को। श्री सरसनाः

(५) । संबद् १८(२ मित्रे साप हुनि पंचाव्यं। भी व्यवसार पानव्यं भी हृत्त करतर राखेरा म । भी जिल्लासक्ति दिव्य मात्र प्रवर्द भी रात्रपालयोवां पात्रपाल भी जिल्लासक्ति दिव्य मात्र प्रवर्द भी रात्रपालयोवां पात्रपाल भी जिल्लासक्ति

क्षेत्रिर विजयिताये। वंश झानवार झुनिना शारिते प्रतिप्राधिकत्। (थ) ॥ सं १८६ क्षेत्रे साय सुन्नी पंचम्या। भी विन्त्रपंधार्रित किर्जयराज्ये विद्वार्य भी राज्याक संधि विजय साम झानवार कुने विद्यानस्य पानुसारः। दिश्य बर्गेया कारीता

प्रतिक्रक्षिक्षण ।

यह जाके वस समय के गुरोकार्य कीर पूचमान होने की महस्वपूर्ण सचना देता है। क्ष्मातन्त्व रचित संगानेर के दादाओं के स्तवन से विक्रित होता है कि एकबार काथ संध के साथ वहां वृत्यानुक के बन्दानार्थ प्रधारे । वस समय लुशियागोबीय भागक ने गाँउ की भी जिसका कलेख किय गावर में हैं :--भी संग मिल किहाँ कार्वे, किहां लुप्टिया गोठ रचार्चे रे महां। श्री क्राम्प्सर विश्वराजा, क्यां रा बाजे स्वाई कालारे न्हां श तक बार बायने करपर से द० भी क्षमाक-माराजी ' गरित को पत्र दिया जिसके हांसिये पर त्यात्र किये हुए हैं यह पत्र बड़े उपानय के महिमानकि मन्दार में है वस यह में इस्तागर के राजा के स्वर्गवास होते व पै॰ सु॰ १ के दिन बहादुरस्थित के पुत्र का धनके राही पर बैठने का समाचार है तथा प्र'हताई सरवासबंद के होने का जिला है।

( २४ ) कारकी विद्याना कारकार में परस्पतुत्राकों की अनिता होना

हण्यबद्ध के ६ चातुमांत :-
क्रीयर झाम्बरसी जयद्वर से विशार कर विस्तवाद प्यारे ।
सं १८८१ से सं १८८८ तक के प्यार्तिया विस्तवाद प्यारे ।
सं १८८१ से सं १८८८ तक के प्यार्तिया विस्तवाद में विदे ।
सो भी क्राम्यारी पार्टरांग्य व्यविद के बादाया मार्ग्य हों के हो ।
सो भी क्राम्य में ने व्यवस्थान में नोर्टरांग्य का सहाय कर कामते हुए

1 अने पारा से में को पोतार्त किया से हुए होता नहीं

इससे इपनार से भी भीगद सा सम्बन्ध शासन देशा है।

अंग प्रस्तुत्व हैं।

( २६ ) सावकों को पिन्यामणि पार्शनहरूपी के मन्दिर के जीवोंडार का वर्षरा दिवा। कहा जाता है कि राग में पार्श्यम में मक्ट हो कर रहे) राग्ये राक्ष दिये जी राज्ये (में माम पार्शन करने का विशे किया। माहबों ने मीमह के कामानुसार वार्य कार्यम कर दिया

२१) वस्य रक्षां श्रंय कार कार्य यूजा से काम स्थारन करणे का निवा किया। सावकों मोगान के कारतातुशार कार्य कार्य कर दिशा भौरे बीचे दिलों में जिलावाय सूच संगीन चौर पिकाड़ी से सुर्गीतिम वैचार हो नजा। हुस सुद्धुर्श में काल्यकारीच्या महोत्सव किया गया। इस विषय के बर्गन के निकोच करिय श्रार हुए हैं :—

गया। इस विषय के वर्णन के निक्षेष्ठ कवित्त शार हुए हैं:--सुन्दर सहस स्थान क्षेत्री तम जाग माछ सम्प्रेष्टराया कविक शोमा सरसाई है। मन्दर समा में वों करस मकरिंदु बती

िक्सप्तरी नानाविष रह बरसाई है। उन्हें द्वार दायों मोर सब्द किये बंगला में कंपन के करता पहुंच खाई है। इस्पाद मांक देखी साथु नरावनती, निप्तामाधी रसन् की मणि दस्साई है।।॥

चित्रामधि प्रमूच मोक दूरसाई वे ए ॥ माट मदासन कियें इंद सुर कारानकी पालक नग होर कियों एडरक मंडापी है। चौक चित्रकारी चिट्ठे पेररकर सवार जारी,

मोज रकारी सम पाइन क्वाचो दे । पिनामन हाथ चडो नामी लागां (क्षेत्र) क्रियानम् हाथ चडो नामी लागां है।

इन्यान्स् चीरत को नीरम काली है। सन्दर जैनराज्यू को जीरण होने तहाँ, सन्दर सुवाराय मना इंचर प्यामी है।१%

चित्रवितिः जान्त्रे जस प्रसिद्धः, नाराइन सुनिराजः। सक्जीय तारकः जो, सक्कृषः क्य जिल्लानः। भारत्वतीसी की रचना :---

कान्ने को सारवा होचा कि शिवह वरों में जयहर जिवासी की ह्याजान की रोजाना सीमाई के सामार्ग में साक्षेत जैता कार्योद्ध-सार्या हो हो को । करें, सालवार का साम में कि सा, नवहर में हिलाबर कन्द्र करों में कीर करने ब्यादीन से सामसार का सामा मारसा विचा था, तब मीमाई की सा करन हुआ हो करों के क्या मार कीर हर किया के रहायों को एक करनेवाली "भाव पट्ट-किश्वार" सामान्त्र की कियाबर में सी कार्यन सा में करने हर किश्वार" सामान्त्र की कियाबर में सी कार्यन सुन मोर सिक्या की

पाउं से क्यों सम्प्रसार या जासकीक रकरण मान्य हो गया। आतन्त्रपन चौचीमी पर विवेचन :---इस समय शीयर् कानवारणी को क्यस्था १६ वर्ष की हो गई थी इस्तोर सम्बन्ध १८२६ में शी चानवंत्रपतनी ' खहाराज के स्कर्णों

् संकरण की स्थानमं वे वह सीते से प्रोप्त में नह सामान स्थान सामान सामान

क्याच्या है, जिसकी पूर्व में भीमद् देवपन्त, झालविकालपुरि स सी र जनार की काहि के रचित्र मध्यन कार्यन हैं। कार्यकी सीमी-ी या जिलें, ३० वर्ष जैसा हीपैकाल ज्यांता हो जाते हें सीक्षेत्रकार के हेंतु क्यांत्र सरिवक च्यानक के व्ययोग हारा विश्व विशेषनावय साताववीच तिस्तकर दुशुद्ध जनात वा पर्सा दिल्हास्थल किया। व्य ए एवं प्रथम परोतिनाव च्याप्त्रपाव के जिल्हास करते का चलेल जिल्ला है पर वह च्यानम मार्ट है। इसके प्रयान, कार्यक्षणपार्ट को

ने बालाक्ष्मीध बनाबा जो प्रकाशित हो शुक्रा है। श्रीमह ज्ञानसार जी ने इस बाला बनीय की अनेक बुटियों पर मार्मिक प्रकाश शाला है। इतकों में हो अन्य विशेषन भी प्रकाशित हो चुके हैं जो मनसुरस्तात जी और एं॰ प्रमुदास नेकरहास द्वारा तिये गये हैं । स्वर्मी य मोती-चन्द्र गिरधरदास कारविया भी विस्तृत विवेचन लिख रहे थे। जनपुर निवासी भी वगरावषन्त् जी जरगह ने हिन्दी माधा में भानग्रक चौतीचीचा मातार्थ किया है. जिसे शीश प्रस्तरेश करना आवायत है। सीमय सामन्त्रम जी के पह सहस्ती के जम से स्वारित हो चुके हैं, जिलकी संक्या १११ के जनमन है जस्त्र में कई पर सम्म रॉपक भी कर्मों सम्बद्धित हो गये हैं। इससे संख्य में सापके 15 परों के एक प्राचीन प्रति है। काम इस्त्रोतिका प्रतेनों के बाधार से पा निर्दे बादि करके हम कारके पहें का संबद्ध शीव ही प्रकारित करना बाहते हैं, ब्यापके पहों पर शीवड़ बुदिसागरसूरिओं ने निवेचन रिस्स है जो ब्राप्याल बान प्रसारक संबत से प्रस्तरित हो पुत्रस है स्वर्गीय मोत्रोजन गिरभर कार्याचा ने मी मुन्दर विषेचन लिखा जिसमें से जामना १ पर्रोख विषेचन "जाननपन पर रहावत्त्रे" में बहुत वर्ष पूर्व प्रवर्तरात हुच्या था थान्य पूर्वो वर विषेचन जैन धर्म मधारा में बई वर्षी

तक निकलम रहा जिसे त्यांगिय करावेवण जी शीमही प्रकारिण करने बाले थे पर इसी बीच जारका स्वर्गनास हो गया। जाननवन और बनानन पुराक में भी करावे क चौतीशी और पर प्रकारिण हुए हैं। (२८) कानंद्रकारी महत्त्व पर कारकी काशन कहा थी, कीर काशी मारी का वापके वीकाम काशी मानक पद भाग हक कारवर्षण में २२ कारन मीमद् कारनद्वन जी के तथा २ सकत हक्के दस्ये निर्माण किए हर्ष हैं। कारनी काशी महत्वा व कारनी संस्था

म्परित करते हुए मोजह ने शिला है कि : 'काराय कानन्यण रखी कति तम्बीर ब्यूर

बालक बांह पसार के कहें व्यप्ति मिकार" इच्छान के महाराजा ' भी बारका वहा सम्मान किया करते थें

क्रम्यान्य के महाराजा ' भी कारका नका सम्मान किया करते थे तथा जैन व जैनेतर प्रजा पर कारका करका प्रमान था। यहां के ई

पातुर्वात कात स्थान में श्रीन भीर शाना तुषारस में सरावीर बीते । वहननर शामसुमाम निषतो हुए तीर्थापिराज भी राष्ट्रकय पथारे।

सिद्धावस यात्रा :---

धं । ८८६ मिरी पराहुत क्रवा १२ में हुमारे देश में कुपम प्रमु के हुमें कर कार्याचियर हो थो। में सिहामक के आदि तित क्रवा में बाइची ने करने मरोटा मार्ची को निराहरका पूर्व कार्याच्यों के कर में राहु परदों में निवेदित किये हैं। जिस से निवित होना है के समाने कर हुहारूमा में क्याच्या के स्वतंत्र पर करा परते, जाता क्याचे कही, कुप्यवद्यों मार्ग के की कार्याच्ये, तमा

( २६ ) बीकालेर आगमनः—

धीकांतर राज्य भीजर की जानामूनी होने हुए भी बारान्कात है जानक राज्या पर वर्ष की माह हो जानिय सी बीकांतर काराने का अस्तर तस्य- तहीं का था। ने बीकांतर तहीं नकी काराने का अस्तर तस्य- तहीं का था। ने बीकांतर तहीं कुछ की है जानू काराने वर्षण करिया जीवन बीकारेशों स्थानित करने का विभाग विकास । इसके की काराया है, गुरू हो वीकार स्थानित करने का विभाग विकास हो का है, गुरू का राज्यानी की स्था होटे कीटे साथ. करने

ते साते। जारके बाहर निर्देश समाजन्युमिके निकट बाहकी प्यान समाधि तसाइट शामाद्वासके परम मुक्का क्ष्युम्य करते हुए कर संबक्षरे भागाम से गासित करते हैं। जारत में तपर दे हार्यह रिक्य (प्रकृत ६ पूर, सूर), स्त्री, केन, का स्क्राट में क्ष्य में क्ष्य क्ष्या समाजा है। ( ३० ) इस प्रकारके कई प्रमाण किने हैं तिकारे वह मासून होता है कि भी पार्श्वक (फिन्यानीय वाह) चायके प्रकार में चौर समय सकय पर सर्वित क्रक क्रिकेट माम्बे नाना विधि बाल मोडी वर्ण मून मानिय

स्थ्यनची बाजीलाप किया करते थे। महारहाजा सुरतानिह पर प्रभाव :----बीकामेर नरेरा महारहाजा सुरतानिहची ' ने कारकी करतेगाथा सर्वी और तकहात कारार जिले पित श्री कनिक्षा इन्हों नहीं कि

महाराजा विश्वी सी बार्च करनेत पूर्व कारणी आजा व मार्गीविष्ट तेत्र प्राप्त स्कृतिकृत केरानेत रंगा चारणा नामीत के दुवा वे । तेत्र १४२२ के सुत्र का की मार्गा मार्गा मार्गा के स्वाप्त के के निवासकारों को प्राप्ता प्राप्त हुंचे हैं। आपने आधिक के समयन में सहारोगाच्या का गीरिकार (स्वाप्त कीमार्ग आधी कीमार्ग मार्गा मार्ग का रिवार के स्वाप्त हैं। " "बारणा सहार्तिकृत वा एनक्का कीमी के मानुकान का नवर स्वाप्त मार्गा का नवर का मार्ग का नवर

करने के लिये मोला कामीनाम दिलाई लेका गया, विकास विकास कामी

्रि (प्रश्वकारण) ११ ) विश्वकारण कर्ते थे क्षेत्रक सुरातानमञ्ज के द्वारा मीतिक तथा पर परकारक द्वारा रक्षणीतुल सामिक तथा सर्पनीतिक सामि का समा-

्यक्तिके हुत्या राज्यों कि योगक तथा सामां गांव सामा थान स्थान पार होता । सामेब सार व्यहारता स्थान बाते स्थीत सीमाइ की संसाद स्थान असीत स्थान । सहारताकों होत्से हुए २२ बाता सम्बेक हता। स्थानीकार्य साथे हैं जिलसंदे १८ हमारे संवाहमें सथा थ योग्सुकन्यन देवका के विकास मान्य को स्थीत गांव थाना स्थान स्थान स्थान है

के इंतराय में बहा जाक एकती है क्योंक कोनों से साथ गरीभ स्वतित हो ताने पर उनकी करणा के जिल्ली साववारी का हो। तान है क्यार मेहर एक में हुआ और सार्वित के स्वायत हुई। से अव्यव-माहरण कुतरित है कोनों में क्यारित की साववार हुई। से अव्यव-माहरण कुतरित है कोनों में क्यारित का उनका सब तात निर्मे हैं में हैं की इस्ति के स्वव्य का स्वायत के बीच कर भी हुआ नी रिकार हैं। "अपूराम सुक्रारित का की राजिनेका और अव्यक्ति कर । ब्य

केश अवस्था केश ज़ाना में नहीं प्रशास ना बाद होता है जाता के के का रणवार वा ' को की केश के में मात में किया है जा वा ' कर चंदा पर्यक्त के में दिन में की में होता के की का मात करवा हुए का में चंदा कर का वा ' के मुंद्र में कुतार को परिचे के हुए केशावित का कर कार्योद्ध का जिल्ला कार्योद्ध के कार्य कर कार्य कर कर कर के प्रशास के प्रशास करवारों के किया करवा कर कर कर कार्य के की कार्य के में की की मात कार्य के कार्यों के कार्य की कार्य के की की मात कार्य केशावित कार्य के की की मात की की मात

"कहां बहाराजा में हाने पुत्र के नहां एक हुनुंत्र की था। वह कार का क्या था जिस सराजा असरनंत्र ने अपनी वीरता से अनेक बाद सिहोटी ( ३२ ) जी के फिल्म भी जयकरणजी के पास हैं। इन सास ककों को देखने से भीनद के मी। जाराजा का विकाद, पुज्य भाव, कारण बहुा, कवियन

से जीनद् के प्रति महाराजा का विश्व, पूज भाव, कटल बद्धा, कविषरा मकि, तलक्वर्ति हार्दिक भाव तथा क्रनेक ऐतिहासिक च्हन्यों की स्वट जानकारी होती है।

का हिंदी बीसारेंट राजपी करांचा मात्राज समारेंट भी, राज्य भी कुछ जो है अपना इता समारें था कि दुर्ख्यके किसे विन्यास्था भी कुछ जा। राज्य का अपने मुंग्यें से हुए थे। मात्राराजा बुर्लाकेंट में क्षेत्रें मात्राज का अपने मुंग्यें से हुए थे। मात्राराजा बुर्लाकेंट में प्रमेश मात्राज का अपने का अपने का बात्र है। इसे प्रात्त प्रमोग पूर्व पर ज्यादार पर्ने मात्राज मंद्रिका मुंग्यें पर्व कुछ है। अपना मात्राच में मात्र है। हम बस्केट पर मित्र हैं (त्राजक मात्राच किसे मात्राचा होता है कि सामार्थ के पर्व का स्वाराण का मात्राच होता है।

युक्तें या हैरेकें जाएं कही होते वाकाओं महाराज भी शानकारजी करवारी वा रचन किया और किले तरंज वर (बारदाका) वे एपर का जिल्ला देवर कमानिक किया था वर्ध कई बारदारी के बारवार्थ में भावर और उनशी मुक्ती विकासों पर विकास कर सहराजा ने यह में सरस कता ती के हैं कर अपनास कर प्रायुक्ता में के हकान कर हमा महाराज में अपने हा करा

में सुपान करणा था।" फीमरे एजने उनकीं इसरे चीत नत्म वा मा हम था, क्यार में भी आवहार ताची कहा है हो कोची है चारे, जब जारीमिंग की राजी है और नाम न सीत में बस नाई काल को कारों हम हो हमें हम की बस्ता को हम था। और मांच में मारी हम की स्वाप्त की सम्बद्ध हम था। और मांच

बीकानेर सरेश सालविक

nर*ली*नहीं *३७७३* व

क्रीसभगवर है **रोगा**सी ब्रोसी स्थापन

झानसारु ग्रन्थावली

# ज्ञानसार ग्रन्थावली

#### Ilantimor-

र्क्तवस्टार्ड अमस्तिगरस्वरूपण्डारी सम्त्रीः इक्षाममास्यरिक्तारी जिनसेट्रीनिस्त्रीर नगर इक्का अस्त्रीयस्थितिमस्यस्य जिनस्यानस्य रेक्क्नुस्वरिक्तस्यस्य अस्तिस्यः स्वरंगस्य (नारायकुत्री) की सम्मति ब्याझा या ब्याशीबींद के निना किसी काममें हाम नहीं दालते थे। यह स्वयदार पर सरसरी नजर दालने से मादन दोता है कि सरवरिक्टवीके प्रयोगात सामी मरदारों व यहलेकि कारण घराज्यम, बादि चतेश समस्याओं का समावान चरित्रनायक की सम्मति से हमा था । पत्रोंकी कई मपरी कों कर्जहारी, कर्पेसी पसी सहकारोंपर जवरन बखुनी, रैयत पर बह, शहर की गंदगी, पनवा-पड़गी, निरेशी कर्मपारियों की विदार्द, खादि क्रमेक विपयके अहाचार व मरासकत को दर करानेपर प्रकाश दालती हैं। शीमरके द्वारा काराज (भी चिन्तामधि बक्ष) से नाना प्रकार के प्राप्त करावे जाते थे जिनमें करने वर्त-भव, बनके समाने, इंग्रेजीके राज्य व सन्य से अपने सुस, सिडावंत्र, जाव काहि मुख्य थे। अपनी कुन तथा जीवहर के घोंबलरिकारी सम्बन्धी, एवं टालपर सिच वालेंके साथ महाराजा मार्जिसके कश्चि की सब कराजय स्थाहि ताना प्रश्न पड़े गोर्ड हैं। इसी प्रवार सं॰ १८७१ में दिये हुए ६ तथा सं॰ १८७२ के ६ साम स्कों हैं। इतने दीर्घ समयमें सैकरों ही पत्रों का ब्यादान प्रदान हुआ

( 32 )

होजा पर वे चन हात्य नहीं हैं। भीजा है किहे हो एक पत्र भी मी-तिया में करने स्वयं तिस्ती हो मात हुई है। यह हुतनावना के बाद त्याद्धा महाने स्वयो तैयाने एवं में तिकत्य भी करता नाह्यात्म के करोद मीजा कर वृद्धाने के वा भा नाह्याता करों हुए। मोजिक केन्द्र में में बेच के करोड़ीहिक में वा महाने की एक्ष हैं। हुए के करोड़ीहिक में वा महाने की एक्ष हैं। केन्द्र भी क्षीचार कहीं वा देखा एक करों बादाराता में शुर्विक किया है। हुए के क्षितिक क्षात्र पाना, भावादी केठा व क्षणाया होगके. इस्ता भी क्षीचार की तिक्ष में क्षाती है। हुए के क्षणिय की हुए क्षणा होगके. थी को समाचार फरमाने का लिखा है वे जीमहफे दिल्ला भी स्वासुस्त भी माल्य देने हैं। इनका भी राजदरकार में प्रमान बहुत कहा चहा था।

बौड़ी पार्श्व जिनालयमें नवपद मंडल का बारम्भ :--

बीधजोरके योगा दरबाआके शहर जहां खाप रहा फरने थे, श्री रीडी पदर्जनामजी का जोटामा मंदिर था। स्वाफरीके विराजनेमे इस जन्दिर की बात सकति हुई। स्थापके सामनोंके माध्यम होना है कि आपकी श्रीगीनी पार्चनाथ प्रस पर कायल मक्ति थी । शीफिला-व्यक्ति वस आपके प्रतास में चतः इस मन्दिरनें भी समाचारवाकीपान्वाय भी दारा सं० १८०१ में पद्मताताती की प्रतिमा प्रतिक्रपति की गई। इसी जिलालय में महाराजा की कोर से नवपद मण्डल ' रचना प्रारंभ र्खं जिसके निये तबसे समाध्य प्राजाक राजकीय स्टकाने से पर्शास्त्रक किया जाता है। इसी मन्दिरके विशास काहते में कई क्यौर मन्दिर-देहरियों का निर्माण हुन्या । श्री सम्मोतरिकार तीर्थ-यह काने मन्दिर का निर्माण सं॰ १८८६ में श्रीकानीचन्द्रती सेडियाने महवाथा, जिसकी दीवान यर मीमदश्य चित्र वना हंगा है, सामने बामीनन्दानी सेठिया हाथ जोदे करे हैं। सं०१८७१ महत्त्व विदेश के दिन खाएने सवपद पूजा की रचना की जो इसी पुरुषमें प्रकारित है ।

1 जरिहेत. किट. बाजारे, जाजार, बाज, स्तांत, झाज, सारित और तथ, ये जरवर हैं। इस्ते हराकार येम को विद्वारक जा जरवर्षण कहते हैं। बेच और कावित के अंग्रेज र दिनों में आधिक तब के पास जरवर मोतो का नाराध्य किया गर्जा है। र नार (०१ आधिक) क्रारे पर सा तम सी पूर्वपूर्वि क्रोगी है उसके प्रथवनी करवरपत्रकार की रचना की आती है। ( २६ ) वीकानेर में साहित्य निर्माण :-बारकी वस जनानेने जैनामानेक प्रकारक बिहान थे। स्थानीय सावक व साथ समाध्य यो चायक सानने ताथ करते ही वे पर साहर

से मी मानेपर जादि के रूपमें पत्र चात्रे रहते थे। विहार (जिसे भीवद ने बैरातरी तिस्सा है) दिवाती किसी तिसासु मानको जाएको एक तिरहत महा का नेमा तिस्सा वत्रमां आपने तो पत्र दिया रहा एक प्रभार हो तेमा है जो सं १ ८०५ की हुइत क से कूर्त हुन्या था। बात्रों रहते साहित निर्माण को पारा समझ करतेहरू थी।

क्षे॰ १८०४ मार्गरीचे पूर्वमा को चौनीकी कावन, सं॰ १८०६ प्रान्तान हुआ र को मातापिता (बंदगाव्य), सं॰ १८०७ चैव बच्च २ को पद चौपार्स समाजीकता, सं॰ १८०५ मार्गिक हुआ १३ को विहरमान चीरी सं॰ १८८० ज्यादाह हुआ १३ को साम्यासनीज पाताबयोग, सं॰ १८८० ज्यादिय में नजाविक स्वर्धन्ती, और सं॰

१८८१ मार्गरीर्थ क्रम्या १६ को गुद्धावकती की रचना की। हानों से माताविक्तल व चन्द्रचीकई सम्राज्येचना के क्रांतिरक समी रचनाएँ इस मार्थ्य में प्रवाहित हैं। इस क्रम्य में प्रवाहित हैं। १८७१ स्थानित इस १ को की विद्यानकती की माती महिता हुई कीर

१८०४ व्यक्ति हुद्ध ६ को श्री सिद्धानकती को महती महिमा हु इसी वर्ष मित्री मिमासर सुदि १२ को श्रीमड् ने गेठ की । दशहरे की बलित्रका बन्द :--

दशहर का बाल प्रधा बन्द :-बीकानेर में दशहरे के दिन राज्य की और से देशी के बीत स्वरूप मैंसा मारने की प्रथा प्राचीन करन से कही काली थी। बात जाला है ( ६६ ) कि एक बार स्टब्सरे का मैंसा ट्रट कर दौक्ता हुच्या भीमद के शरकों

कानता । योदे वीदे राज के सिकारी काने पर चानाजी महाराज के यास मेंसा मांग्जे की दिस्तान हुईं । क्मना में श्रीमद् के जरेदा से बहाराजादिशास ने स्था के लिए बैंसे का नशिक्षान कन करवा दिया ।

यतियों का राजसंकट निवारण :--क्या जाता है कि प्रतिशाह के व्यवसेटजी † ने पार्च कर

जाड़ी मंत्रियां के एक को या सर्पात्र के स्थित या नह एक कार व्यवस्थान की स्थापना कार्यों के क्षांचे को कार्यों नहीं विकाद । कार्यापनी की मीत्र्याची में सेकार्य किया निकाद स्थापना पार्टियों कार्यापना की किया में सकता की स्थापना पार्टियों कार्यापना किया के स्थापना की स्थापना की स्थापना पार्टियों कार्यापना किया था जब मीत्र्य की स्थापना कार्यापना की स्थापना की स्थापना की मीत्रियां की स्थापना कार्यापना की मीत्रियां कार्यापना की सीत्रियां की मीत्र्य की स्थापना कार्यापना की मीत्रयां की स्थापना की सीत्रयां कार्यापना की सीत्रयां कार्यापना की सीत्रयां की

• सुविद्यान के बच्चारियों था चंद्र जातान आहलपूर्व सीर प्रीवद रहा है। जाके पार क्यांकित स्वाहित की, तसकी अस्तरकों का अन्य अपने के किये पारत में कोची राज्य वा स्कूतरत हती संख से कुछा। इसके पूर्व तिवास के राजिय जाता अपन अपनेक प्रवाद के बार्यकार प्रारंज है। विशेष स्वाप्त में किये रायानार्थिय वी "स्वापतियाँ सामक प्रशंक हैं। विशेष स्वाप्त में किये रायानार्थिय वी "स्वापतियाँ सामक प्रशंक हिम्मा पार्थित। मध्य भिकारी वास, नरफी जाचे नारका २ १ अझराजा ने वाकी मूल के लिए माधी मांधी हुए बहरका सीटा दिया एवं महियों को हो हो रुपये व विद्यादें मेंट कर वयावय पहुंचाया। जमानोत्र के प्रार्थीका अनुस्

नगरसेठ के प्रश्नोंका उत्तर :--कहिक (संस्थाः जयपुर्वः) नगरसेठ महोदय जो भागके

प्रत्मक में कार्य प्रवेषी तम पूत्रा करने थे क्लंड नगरी दिया कुछ (२) विशिव क्रोचर प्रन्य इसी प्रन्य के एक प्रमुख १३ १२६ का प्रस् है। इसस्य समय सं १८८० के प्रमुख क्रम्युसन विश्वा क्षात्र है किस्सीक संग्री ८८० में रंगिया ज्ञान्त्रामणीया वात्रास्त्रीच्या इसमें क्लोक प्राच्या गाता है। प्रीकृति जिनासन्य का उद्धार और आश्वासना-निनास्य :-

पूर्व बहा या जुबा है कि मीमद्र वहां स्वारानीक निकट निकास करते के जाप ही में मी मीरियार निकास मार्निट था। मीर्वप के स्थ ८८६ में १९००) ज्याब करने इस मीर्वप्ट का मीर्योज्यात कराया गा। प्रतिकृत सावक कीन मार्ग्ट काट्ट मीर्वप्ट का मीर्योज्यात प्रताम वहां काट्र के स्वाराज काट्यान काट्यान काट्यान मार्ग्ट काट्यान मीर्व्य के बहा जब कमी सामा करते हो हम मीर्वप्ट में मार्ग्ट काट्य काट्य

वहां प्रतिहित पूजा करने के लिए काने वालोंने हुए खेके बरकी एक ‡ वह क्षेत्रेय नहीतारों के ५६ में होई में है। इसके प्रमाण में जन्म अबर की विमाजनी भी पहले में नहीं है।

## ( 50 )

महिला भी भी जिसे भीमदुने कह भी दिया कि तरुए कियें को मलनायकारी की प्रतिदिन एवा नहीं करनी शाहिये ! पर वसने मातिके सावेशमें कोई धान नहीं दिया । परुवार बढ़ पता करती दर्व रजस्वता हो गई । इस वारान प्राथवित प्राप्तामाने होने से भी गौडीपहर्षनामारी भी प्रतिमा पर क्या ही क्या हो गये। अधिका दीवी हर्ष श्रीकट्के परखोंमें काई धीर मयभीत होश्वर बडले लगी. कि महाराज । मैं तो मर गईं। इस प्रकार भी मलात सामाजना मेरे डारा हो गयी. आगा की लिये ! स्मापके क्रमेश पर वैंदे पाइन नहीं जिया कार प्रयास कापारी के साथ है। भीमदने क्सी रात की कक्षराजाती से इस कियब में कराब पूछा। बक्षराजनीने बदा---ऐसी ब्यामानना होनेपर व्यक्तितना देव सम्बन्ध ही वहांसे को जाते हैं पर मैं तो बाएक विहाससे सेवामें क्यस्थित हूं। श्रीमको तीर्थकल स्वीर स्वीपयि यहराजधीके द्वारा मंगाकर 'स्वारोक्तरी स्मात्र' करबाया जिससे सब व्यासालना दूर हो सबी। व्यास भी ध्यालप्रवंक देशने से भीगीक्षीयाप्रवंनायमी के विन्य पर थोड़े धोड़े झए के चित्र रागोचर होते हैं।

पूर्णनायों ने अञ्चलि आसातमादि समयों ते ही तहियहीं के शिवे
 प्रतिदिन मूलनायक मनशन की अंगदुला का निषेत्र किया है।

१ तर्किक्ट प्रतिमा का १०४ को से विशेष अञ्चलत पूर्वक अधिकेक करामें को व्यक्तियों काल' करते हैं। तक व्यवस्त, विशा विकारकारि विशेष अपेनी पर स्व विचान किल बता है। तक १०५५ में हुव्यवस्त्र अधिकचनवारियों को बांधा से कानोग उपाधान से काहिर में व्यक्तियों काल विलिए काहि विकारियों के सामानिय में है। गुदडी में धीत जनसरीप :--

क्या जाता है कि एक शर साराजातियां कारके हर्राकार्य पर्यों , बारा भी का विश्व शिवाहम्म तरिक वर प्राव्य हुआ था। बार मोट्टी हुँ पुरुष्त हे निकाब कर का निराहें और प्राव्य एक से बार्वाहाय करने को। साराजा भी नावर पुरुष्ती भी कोर पाई तो रेक्स कि बार दिशोजार स्त्रोंग से संपर पूर्व थी। साराजा में निकास विमा साराजा करने की सामुख्यों के पांच भी अपर फाल है ? बार कार्य है भी मोट्टी हैं ? जीवाह में बाद भी अपर फाल है ? बाद कार्य है हैं भी मोट्टी हैं ? जीवाह में बाद भी अपर फाल है ?

कोठारीजी पर कृपा :--

भीकोर निवादी गिरण ने प्रोत्त में से स्वाचनी में, एवंद कर है। गिरण के किए तहाँ ते संक्रम मानि प्रावदा के बंध नी निवाद के बंध नी निवाद के साथ नी निवाद के साथ नी निवाद के साथ निवाद के साथ निवाद के साथ निवाद के साथ निवाद के निवाद के निवाद के निवाद के साथ निवाद के साथ

"महिवा मत कर गीरनो, हुरवानिये नै देखा। ऐ महरावन वे नामजी, बांरा समझौ सेखा।" श्रीकामेर में श्रीमन् की म्हावियां :-स्वीकारेर में बाद भी के ब्रॉ. क्यांच अवाद शिवाना है। योकारेर के वहे ज्यांच सा स्वतः, देवसंद्वा, हीवानस्यात्व व्यादि व्यापके ब्राव्य के हैं। जाहती की गुमान के काशिया विभागत के दरवाने की व्यादेश देवर कामने से सुकाराय क्योंकि सामने दरवाना नहीं रहते से मामान की होटे बन्द में, या बराह पढ़ते आणि को सहुष्य-व्यादक कीव्यापनि (के द्वारिय) कर में हम निर्मालया

( go )

स्त्रिमिता ) ह्या के दर्शन हो हो जाते हैं। थं प्र. १६ १६ में मितिक भी पिल्लाधीमी (बीक्शोर का वर्ष मार्चन तिलाव्य) के मंदिर हर के होने की पहुंच हाथियां के स्वापन हो गाई प्रकार है। वहा जात है हि पहुंचे के ती नितान क्षितात्वक में में को समाने में गाइर के कियारे और शुरुवान क्यान स्वापन क्षान समाने में गाइर के कियारे और शुरुवान क्यान स्वापन की जाने से हकती होना वह पहुंचे ही जह एक्टिए क्यानुस्वास की जाने से हकती होना वह गाई है। वह एक्टिए क्यानुस्वास की जीने में १९१३ में

Martin att 1

डदरामलर मेहे का प्रारम्म : -भारकोर से ३ कोट की ट्रॉट र रिकार खराज्यार के साथ बृक्त स्थार जिल्लाक्ट्रियों का रायोम स्थान है। सामूने को कोट से में से पार करने को जाना होता है। श्रीमार से 40 १८८४ के तिसी माइस सुन्दे १.३ के हिन कार्ड का "मेक्ट" करना किया। राज्य की कोट से राम मेहे स्थार स्वारी की कोट का साजना भी निक्की स्थारिया केटर कोट स्थार स्वारी की कोट का साजना भी निक्की स्थारिया केटर कोट स्थारी स्थार होता है। स्थारमाइस श्रध्य श्राह्मार सहुष्पर बहु व्यक्तिया, रंबूबा बनानो पात ठावीचा । नेज वस एम इरबार सहार तही, बता से हराया याट बलीजा ॥३॥

दरक पण केवारों हुंग होता हुएँ, तम रेपा परी चर्चण रोक्से किरी मेळ ब्यां जामा हैं ब्याज्य, क्षीत्री काल में नवारी कोलां पट्टा बाता जोता रच्यां कहां बाताय पार्य, मार्थे हुए हालारा कालक मेते भीचा मुक्तिय नाराख पाराण पां, में बाता बाता कालक मेते पार्थ इति तीत करियल संस्था है। कालों ब मार्थित प्रतिचल्लाकों और जीचराजांती से वार्मणों है: में भीनीतंत्वालयि राज्या के बाता कीलांगांती से वारमण करणों

स्मेद या नात की शुरुवासी में कर दिनें अभी शाक्षाओं के याते लोगों ने शासरों कार्य थी। सीरिवास्त्रिय राज्या की प्रका (कोली हार के गण बाता नकता) के निर्माण होने पर मीनार ने निर्माण कीवा हारा स्पन्ना ही भी। इस एक का "फील" राज्य जीनार की लहुता का खेलक है। "बंक प्रका था एक सी फीजकहानी साहियां में एंग्रिय कं नारत हो। खेला करा था एक सीरिवास्त्र ने साहियां की स्वास्त्र से साहियां

## ( ४२ ) सर्वेश पॉनीस "सार रखत विसान निहाल कें, बुराजनसात कें साल स्केट,

क्ष्मित्र कर्तान दिन्ताननी जब, कार्तिक साथ कुनै सि क्ष्मित्र अस्त्रियों कार संतर कर्ष न स्थित मन क्षमा दिन क्षमा दिक्तियों, सीव्यं कार तर्ष गर्म साथ थें. सावत दिन जम माहि अस्त्रियों, इसी शास्त्र के बान जनकर्तित्वों गर्मिय (वीक्त्याव्यक्षित कार्त्र नीत्र राजती) जमा सोवकार्य से मीव्यं का प्रण्यास सम्बन्ध था। मी जिन्त

इन्सम्प्रस्तुत् शान्तमंत्रार में शीमद् के साथ इन दोनों का पित्र मा जिसे हमने पेनियासिक जैन कृत्य संज्ञ क्रम्यों त्रकारिक फिता है शीमर् की रचवारों सम्बंधिक इसी जाननंत्रार में याची गयी थी। हमने उद्यों की श्रीवर्षों से नकतें की भी। केंद्र है कि चन इस मंदार भी अभिने कह तक किसर गयी है।

अभियं पात सिक्स गयी है। चं १८८४ प्रातपंथती के जिल कारणी के फल्टेस्स से हार्किस कोळारी कोशमानती के दुव जोत्यतानती ने पंग दुव पर्ने-क्यूनों के विजेपातक (का प्रदे) कोर निरामानति बुक्स (का प्रदे) के प्रतिको ब्यूनारी भी जो सीनिक्कमान्वस्तुति कानवंशार में विभावन की।

जैसलमेर नरेख का आमंत्रण व बीकालेर नरेख के अनुरोध से विदार स्थमित :---काम को मीकालेर पतारे बहुत वर्ष हो तथे थे। काम की इन्छा

मैं कि सम्बन्धियारण मीकानेर में ही हो। फिर भी कान्यस्थानों

( ४३ ) के मोरोॉ व शासको के आवस्त्राम कई बार विदार करने की

रक्तांसहजी ' जो व्यापके परममक थे, इस ब्रह्मावस्था में विदार करने से काराना काननपश्चिमय पर्यक्त रोक लेते थे। जबसर. क्षितगाड, जैसलोर इतादि नगरस्थ भावको एवं राजामहा राजाओं के एव आपन्नी को तसने के लिये बराबर बाते रहते थे। वीसलार के महाराज्याती श्रीयव्यक्तियों र राज्यका सं॰ १८७६—१६०६) एवं उनके दीवान वरदिया स्रोहता स्वाह भी जोरावरसिंहजी मनगरिंहजी के सम्बर्ध केतवरों वाले कर्त पत्र हमारे संग्रह में हैं जिनमें ब्यापनी से ब्यन्यन्त मिलभावपूर्वक जैसलमेर प्यारने की प्रार्थना की गर्मी है। सं॰ १८८६ मिती नाज सदि ११ का प्रथम पत्र मिता है जिससे साक्ष्म होता है कि पत्र-व्यवहार चहते से चालु था। दूसरा पत्र सं° १८६१ मिलसर बदि ३ का पर्न तीसरा पत्र माथ सदि ४ का है जिसमें महाराजा ने बबर्व बंदना सिसी है. चौथा पत्र सं० १८१३ माप सहि ५ का है जिसके साथ सास सकत भी विद्यमान है। इन पार पत्नों के कारिन्छ ब्बीट कई पत्र नहीं मिले, जो नष्ट हो गये प्रतीत होते हैं। शीमद क दिये हुए फ्लों में एक पहुं सं० १८६० मिति पीप बन्दि ११ का मिला है १ इसका कम्प सं- १८४० में हुआ । सं- १८८५ में अपने विता

नैवारों की को व्यासका सरस्थित और उनके यह कारसका

१ हरका गर्म्म सं- १८५० में हुआ। सं- १८८५ में अपने विशा बहाराजा शहतीवह का स्थानित्र होने पर राज्याधिकारी हुए। में जी अपने विशा की तहा जीवन् के परा मक ने। बहतराज्य के महे जावार म औहत्वीं के प्रति महा नाहर एकते में हरका सं- १९-४में वेहान्य हुना। जिससे प्राचुन होना है कि स्वाप्ति इस वर्ष विदार करने का विश्वस्त होना है कि स्वाप्ति इस वर्ष विदार करने का विश्वस्त की। क्या महाराजा राज्यिक्षणी से हुना यो ने करने मौजूर के बरखों में पासर कर विदार न करने की क्यांक्री से गरे जो समझी के उससे है राज्यों में सामार कर विदार न करने की क्यांक्री का एक का स्वाप्तस्यक क्यांक्र अपना स्वाप्तस्यक क्यांत करों अकारण स्वाप्ति कर जाता है।

"(राजिएराज शक्ती वर्ष १ रे किन को । योगराजनो इश्तू गर्ने इसी पुरायांचे । यह हैं जैसे नहा संग्रह्म , को जबर नमें रही पुन्तों में या वर्ष हैं संग्री कर माम और संग्रांक्ती । क्यें होते १० रे दिन इस्ट्र प्यायों । क्या दि तथा, बिरावे बाते, जब में काव संग्री, साराज किरावें कर्यों । जब दुस्तावों है माने हो गर्ने हैं मीनी, साराज किरावें कर्यों । जब दुस्तावों है से हाम । जब

कुमाती, न कही हा सिहर पा परेशाल करें है सो सर्वाध नक्ता सिहर कोई कप्या देने की। जा में करण कोती, है के प्रेमकेट इस होन बसरा कारों हों। तो तमें तीन बरत करार करें है न परेशा हुए की कहा को को तीनाती नहीं। हिस्से में कहा सिहर प परेशाम हुए की है। जह कुमाती कोरी हुए की। को कर कर कारोचे वार्यु। को में कहा बार करात करी पर म नाती। करार

कारोचे जाएं। को में बाइत बार सरफ करी पर न बाती। जारं-में बढ़ी व्यक्ति पर सिंक निता जानं कों है, जून दिराज्या कों करें, वामों वानी पार से कारणों। कारों बात है। कार के दुकतारों तो केर बैड कार्ज, वह में सरफ कीती, ताहिक्ता की कार की जाएं, जारें पार्च जाप प्लारणा। को मारते हाजी वाही मानार को की किए किए जारं के एक बात में केर कोशस्तं, वार्षी हाजी हाली पार्चा। 18 कारणा है। एक बात में केर कोशस्तं, वार्षी हाजी हाली पार्चा। 18 कारणा है। ( 8x )

महाराजनानी की वाण्डामूर्ति :—
वेतामांद के महारामानी के दुरू में तीव्य भी कौर राज्ये निवे कीव्य है साराद मानेता करते है। बाराणी ने वैता हुएँ एउसे राजि को साराजानी है एवा विकास में गुरू। साराजानी ने जीवाना के दिन काराद साराजा दिया कि राज्ये के दुरू का योग है एर स्थाने के शक्तिक नीजने के सामार में सारा है। मीजा है गरी करों के साराज्य नीजने है एर स्थान कार्ते हुए स्थान, मांगा यह हाएस माने साराज्य काराज्य हों। साराज कोर्स्ट हिम्म यह साराज्य माने साराज्य कार्य करते हुए साराज्य की

िलती हुई हमारे संबद्ध में हैं। इदरामसर दादावादी का जीगोंदार :— ब्दरामसर त्या के गादर हात्तकाद जीतिनात्रकादियों ' का प्राचीन स्थान है स्थाने कारण सम याद्ध सी तपुरता होने के कारण

मंदिर तीचे यह तथा था व्य द्वावात्त्व के चया भी क चे क्या कर प्रतिक्षित्र करों से मायरस्था थी। यह १८८४ के मायरस्था जैसा लोहे के बारकों पढ़तें " थी बराता मेंत्रिक के किया चानीके तीचे सार्वनाव की के मान्द्र में क्यानेशिक्तपानी का महिन्द निर्माण काला कर गीमीचिंद्या करोजिएक वा संन्यान्त्र कर सिद्धाल कर प्रतिक्षित कराया नाथा वैक्शांत्र का संन्यान्त्र कर सिद्धाल कर प्रतिक्षित कराया नाथा वैक्शांत्र काली के प्रतास्था कर सिद्धाल कर

१ देवें हमारा "युन्प्रमान बिनदराष्ट्रिर" प्रत्य ।
 १ वह कानदान राजस्थान में सहा प्रशिद्ध रहा है देवें मैन केक संबद्ध

के मन्दिर का जीविंदार सं॰ १८८६ खायाद वर्ष १० को कराया। मन्दिर को कंपा, च्या कर स्तृष स्थारि निर्माण कराये गये। धीनद् के बच्च से चरवों को कंपा च्या कर स्तृष में प्रतिष्ठित किया क्या। का जाता है कि चाराों के लोधे पर्य प्रतिष्ठ के समय जो कक रका

क बढ़क सं पर्यक्त को क्या करते कर रहिए के आराष्ट्रा क्या ति के परियों के नीचे पूर्व मित्र को कम्मच को बढ़ रखा त्या व्यावह क्षेत्रकुल क्या निक्या । कैस्तरेस कार्यों के संघ के उदर्श के तिले सौचीकिया एवं चीक्तरेर के संघ एवं चीते लोंचे ने करने क्यने स्थान कमारों ।

स्वर्गवानी हो जाने पर वनके पट पर स्वीन चालार्व समितिक सरने

## मन्छमेदः-सं०१८५२ में श्रीपूज्य श्री जिनहर्षमृदितीः के सम्बोदर में

के किसे प्रीविध्य और सावक श्राह्मण में वाची कार्यों है के प्राच्या करना किया है में के प्रीविध्य में प्राच्या पह देने में के कार्या रहा है के किसोर राज्यों ने सावचार पह देने में के कार्या राज्ये है में के किसोर राज्ये हैं कि में किया है किया में किया है है किया है किया

आपने प्रतिश्च की थी। सम्पेतिस्थल, अंतरिक्ष, वस्पीती, हुकेस आदि तीयों की राजाकी। 60-1653 संदोशर में आरक्त सर्वकार हो गया। आप के स्टूपर जीविनयौज्यसही हुए। ( १७ ) स्थिती ' के पात्र में में भी प्रोम्प्रेल के माहरांचा राज्यिकती मीमानेर मातें के पात्र में। मादे बर्चे तक इस निषम में सीमाना कौर दिलारियें पत्रकी पत्ती। इस निष्य के किसी ही निराद पड़, चिट्ठांकी र राज्यारेंत पत्र होनों महियों के बीगूनों के पास व जान-मंत्रारों में सिप्तामा है। मोक्या हुन्यास्थानी में दश जानी के ग्राहम मात्र के बार्योंक पत्रका मी किस होना पर नाम्बल के हो गान्य की में

भागे का प्रयोज राज्य भी किया होना पर राज्यमें हो हो राज्य सीही ही राज्य इसके करार राज्य की संग्रीत राकि किया राज्य सीही (८८७ भारता परि १ की अप्युद्ध के सीकी पं ४ भीरत में भीरता भी राज दिया भी कियाँ केवार इस दिवस के ही समाचार हैं यह राज हरिसामाद्वित्ती की सीहता में हैं। इससे मानूना होगा है कि यह बिलाइ करों कर पता था। स्वर्गावार :--

स्वम्बासः :--इस प्रकार प्रश्वारचना, शासनतेचा तथा व्याच्यान-वारा में

में इतका स्वर्गशाम क्रमा ।

क्रफो जीवन का सारस्य करते हुए ब्याप ६८ वर्ष की दीर्गात में

( % )

साठे बुक्त गठी पा कर बही है, क्यांचिव प्रस्ती सोठी कही । हूँ वी साठा में मानू में में स्पृत्ती करी के पा दी। मित्रा मीतियान बड़ी पड़ी देर बहै। संग् १८८८ में हुवालामा के सारा सामाय कराने सम्माय पार्टी स्थाप स्थाप पार्टी स्थाप पार्टी स्थाप स्थाप पार्टी स्थाप स्थाप स्थाप हो । वीपनामाय स्थापी हो ।

अपीता रही के कहाकर 10 र रदर शित क्योंपन कथा र को गोजराति शियांपास के राते, तो तरारे संबद्ध में है। र रूके माह असम शर्मीचन कथा 13 को बीकारों संबद में के का रहता तोती में मातीन मंत्र दिवा मीनूम भीतिकारीवामान्त्रितों को रूप दिवा मां शिवाने मीत्रा रूं शर्में के अस्तरकात के समाज्य दिवों से, हमके कपर में दिवा हुमा मीतृक्ता का रूप रहारे संबद में है शिवान मास्यक्त करें सर्व महत्त्व हम्या माही है:— "मीरों अस्त १ १ १ ॥ मानोक सद १३ की शिकाने कार्य

इसक कह अगस्य बहु रहे को जाएक रहता कागान्य न अपनी जीवराशिशियांकिय की, किसमें आपका नाम नहीं है क्योंकि इस पूर्व आपका स्वर्गतास हो पुका था।

• ता तरे के नालंकर में से एक क्षेत्रिय कर है। मुख्य कर प्रति के नालंकर में से एक क्षेत्र कर है। मुख्य कर परिक में प्रति कर ता कर है। के मार एक एक में में कर के प्रति कर का प्रति के मार एक है। में मार एक में मार परिक में प्रति कर मार्थ के प्रति कर का में मार एक भी भी एक्ट्रिय के प्रति कर मार्थ के प्रति के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्य के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्य के मार्य के मार्थ के मार्य के

समापि मरश की मरीका में जार विरक्षान से कर्कद्वित के थे, एक्ट बावभावमान में लीन होकर करने मीडिक के का तथा किया। राजध्यन एवं जैन कीर जैनेकर समाज में श्रीक का गया। राजा कीर प्रजा ने करणा निकार वरकारी शिरोहार की दिया।

## समाधि मन्दिर:---

कार का क्रांतिसंस्वर भी कारची किय साध्य सूमि—क्रीनेंद्र पार्वसाम जी के सहित के मित्र किया गया था प्रधान की केत्र जी के कमारते हुए भी क्रिक्ट एक्ट्रॉयम मित्र के क्यूकों में पीते हारिती कोर कारका सम्बन्धिनियर करा हुआ है किसमें सामने कार्त में बात्रकी की परावासुक्या जितिहा हैं, जिनवर निकोक केत्र कर्तनीय हैं —क्यूकों कर हमाना है कि करा निकोक कर्तनीय हैं —

सारकी पादु...... कु अन्तर समाधिनरण द्वाद देखो, सनसार बीनरि बावेखो । † साराजा राजनिवाची को चिर हुए थीड्या सीविननीमासस्परिधी

† महाराजा के एक हो :---

े जान भी रहा है जाती जाइन रहि तथा औहानगर पांच दर पहार्ट में बहेत समझ पोंच पहार्ट था। भी प्राण्ये देशकाद परि उत्तर पहार्ट्य में बहुत के महिल पहार्ट्य है। यह उत्तर है। इस अपने के इसी भी तिम में हुआ भी रहा है। जाइन रहि तिमार्ट्य करा के इसी भी तिम में हुआ भी हुआ है। हुआ है। हुआ है। हुआ है की सामे दे देश पहार्ट्य मार्ट्य है। मिल्ला हुआ है। हुआ है। हुआ है हुआ है हैं। इस रामार्ट्ट है। मिल्ला हुआ है। स्टिंग स्टिंग हो।

श्चिष्य-परिवार :---

कापके हरपुता ( हितकियम ), सूत्रफल्ड् ( क्रमानजून ), सङ्गा-

## ( \*\* )

सुख (सुकसानर) ' आदि वर्द हिल्य थे। जिनमें से इरस्तव (दिश-विजय) तीक्षा सं० १८३५ पा० ४० ११ और सवयन्त्र (क्षमानंदन) भी दीक्षा सं० १८७२ में भी जिन्तचंत्रसूरि के करकमलों से हो चन्ने थी। सत्ताससाओं सं॰ १८६१ मि॰ स॰ २ जासीयाया में जिल्हर्षकारि के पास बीक्रिय हार सं० १८६७ चेंत्र हाक ११ को सुष्पद्वी और स्त्रासुष्ठजी ने विश्नगढ़ से अयुर के आयक गराचन्द्रजी को पत्र दिया था। एक्सार सुम्बन्दनी की मरखांत व्याधियक व्यवस्था में वी

चौतीपार्वनाथ मनवान की क्रमा से शान्ति हुई भी जिसका विश्व क्लेस सीमद ने स्वयं भीगौरीपार्श्वनाथ कारन में किया है जो इस क्रम के पु॰ १२४ में सुद्रित हैं, व्यावस्थल बांश बद्ध त किया गावा है :---करी मोडि सहाय पोडीराय, करीय सहाय। स्कृत्यंद की संद विरिक्षां समय लीनी काय। गौ० ॥१।) भ्रम प्रताप श्रताप मंत्री, त्यीर नाती जस ठाव । च्यांच कीकी चढी क`ची, घूमरी विल्लाव । गी॰ ॥२॥ नींड् अंत इमेग नोंडी, मन न व्यपने भाष। व्यक्तन मिस नेसा इसकिस, माला है जमराय। गी० ॥६॥ सामि कारज करवी मांभी. लाल राखी साथ। मो पनित की शवत भीने, विचय दीप पत्थाय । गी० ॥४॥

१ इन्होंने सं- १८८६ में उदरानसर दादाली में शाल बनाई भी Sewer der en unte ft :-

"वं - म - श्रीविनलामसूरि प्रयोजेंच थे। सुखसागरेण स्थाता सारिता

सं- १८८६ वर्षे वैद्यास सहि ५।

( ks )

सं० १८६५ - ६८ के बीधानेर चलुर्मास दिवरस में झानसारजी को ता॰ ७ तिका है बात: यस नावय जारके शिष्य प्रशियाति विद्यास होंगे। क्यों में विश्व किरवा, यं चतुरभूत यंश्र मेर औ, विश् तकारा ' नाम भी पांचे जाने हैं। मीजिनसीमान्य**स्ट**िजी के पत्र में रिज्य पं॰ चतुरसूत सुनि सपूत हैं लिखा है, इनके शिव्य जोरजी थे जो सं॰ १२kk में स्थरीवामी शुर थे।

सं० १८६८ ज्यात सर्वि १३ को औपुत्थती ने काजीमराज से बीबारोर पं॰ ध्यारकारन, सरकातार को पत्र दिया था। विशी विशास बहि १३ को अमानन्दन ने जीवराशि टिप्पशिका की काल इस समय तक है होनों विश्वमान सिद्ध होते हैं ।

s manus की का उपाध्या नेपाधियों की पील में था, इसके कोई विश्व नहीं रहने से श्रीमद की किया संतति विन्तेत्र है। यही : धीरक्वाचीके कामर की चीहत जनती सभी से क्यार क्रिक-कर्त के

स्तितिक विश्लोक विश्व प्रक्रियों का दीक्षा क्या इक्सफार है :---१ फारो ( चन्द्रविद्यास ) सं॰ १८६६ सा॰ दा॰ १० सीक्षांतर में fareseite effen

९ मैरा (भविष्टि ) तं- १८०६ वा० सु० १२ हु- व्यक्तिः "

( शतकार पीत वि• )

३ साले ( समीतेबार ) से॰ १८७९ या॰ द॰ ९ बीबानेर ... ( आमसार वि+ )

(असावन्द्रत है।• )

n n (nammen fir-)

५ को (बीतिस्य)

नरेशों पर प्रमाय :---

शीकद् वहे सामर्थ्यक्षशी विद्वान, निष्युर, सर्वशोमुकीयनिमासंबक्ष व्यामात्यभंती चौथीकार थे कतः इतका प्रमाय जैन व जैनेतर समाज में सर्वत्र ज्यान था। अयपर-नरेश प्रगापनिक्रणी य माध्यनिक्रली अरवपर के महाराजा आर्जिक जी के ररबार में कापका करका सम्मान था। जैसलमेर के रावल गक्षसिंह जी व बीक्सनेर नरेश मरतिहर जी व राजनिष्ट जी मार्थके परमनात से । जिनके साल सम्बेत प्रशादिका बाद्य कालेक विद्योग पार्थे में बाद प्रशादित से प्रमय साराराजा वर्ष्यों कर बाराओं सेवा में करते थे। पालमें भी आनकारी के लिये महाराजा खारतसिम्रजी के पत्रों के क्रम कारतरण यहां दिये जाते हैं :- "स्वस्ति भी सरव क्यमा विराजमान नाहैजी भी औ भी भी भी 104 भी ताराच्या देव तो में केवन सरवरित्र री कोइ एक इंद्रोत नमोनारायस बंदबा सञ्चम हुवै अप्रेष क्रियापत थाररी भाषी बांचीयां मां नहीं <del>सरवताती</del> **हर्द** भाररे पाये ताना इरसवा बीवां री को प्रापांड हथी. **भा**पती ब्यामा मानक मनला जाना क्रमण कर करी शत में कार न पड़नी बापरी इत्या माफ्ड सारी चात रो ब्यानंद लुसी है नारायश री ब्याहा में फेर सनेर करसी तो धावाओं को नारायस रे पर रो चीर हरासकोर हसी जै से बढ़े व्हे दोवां लोकां तरी हसी बैंने महे जिलोको में ठीव न हैं। जापरी संबंग जाना सता किया सारकारी फरमाने ही जै सं विशेष फरपाबय रो हुकम हुसी, दुजी करण सारी वरमें तु बड़ी है सो माञ्चम बरसी रां॰ १८७० मिनी मियसर सकी रें

"बापरो दरसण करसं पार साम्झं उदिन परम बानंद रो नारायस करसी बाप इतरे पैशा क्टोड़ क्यारसी नहीं का करज हैं हुजी वरें तो सारा माशम है सेवच डावर री तो सरम नाराय(य) ज वा भापन के हती भाप शको निर्मित कां।"

"ब्रापरी व्यवस्थि हमें व्यरम'।"

"बापरी सरात में निवाने में ती भी सरीर रहशी इतरे मनण बाजा कर बसार न पहली चौर महोने तौ परमेहबर संतां बिना दुखी पबर्दे सक्त म होते हैं कोई दुओ होसे तो परमेसर थां संशं ने होत

वैने मार्थ , सो दक्षी कोई ही है नही" "तारावार रो हो सानो सक्त्य चाप छो हमें नारावार न का वांरा

च्या व्यापाल हो गंत हो हा चीताता जो गरावत से सहय है ब्यापरी बारज स' वां ब्राहिकों में सरम ही ब्यापरे इरसन करण से मन में बड़ी कमिताना रहें है सो काप इत्या कुरमायर दरसवा दीवसी जरे इसी च्यापम् जोर तो न है। यनै तो ब्यापरो टावर निजलेक्क जनम जनम री जायांची सेथग जाया सहा किया महरवानी फरमायी

हो जैम्र विशेष पुरमावरा में ब्यासी" जैसलमेर के मुद्राता जोराबरमल बन्ना ने महारावसमी की

तरफ से विका है कि--

"बावरै समें में इस समुख्य योग इसी बढ़ा काकारी है" "बाप सारी नात जायों हो बाएसुं वेशक दुशी झाली न हैं" पाइने यक्ष प्रत्यक्ष : --

भारकी भसभारत योगशकि के प्रमाद से नर और नदेवरों

( kk ) को दो बात ही क्या पर देव भी कारकी देवा में सर्वता नतमकाक रहा करते थे। संट १८८४ में कवि क्याराम ने कारकी स्तृति में

तिका है कि—
"कारा गोरा सम मीर करवा में, पूरण परचा पुंदेने चौतक गोगिन सता गरा है, कह चार हाजर रैने।

\* \* \*

पक्षराज की महर हुई है कमी न रेंगे करनकेंद्र 181
विकासमा समामी सम्बर्गन्य, परचा परचा ये देंगे

स्वातान के बच्च मेंत्रें, हैंत्र कियं कर मों के पीयों भारत मोनीमें च्यांतान कराये रूप माने मुंद्र व्यक्ति में मान में निकारीय व्यवतान कराये के मान रहते हैं व क्या रात्रे के स्वात्त मानेस्वातान करायों के स्वात्त मानेस्वातान कराये मानेस्वातान मानिस्वातान करायों में मीनिस्वातान करायों है। मीनिस्वातान करायों मेंत्रियां मानिस्वातान करायों है। मानेस्वातान करायों मेंत्रियां मानिस्वातान मानिस्वाता मा

"पैत्र पुनि १४ पामली पुरूर होट राज राज्यां भी पेचीहें सक्तराजनी क्ष्मायां मेंदाजी क्षापर हांच सुं क्यां री काजा प्रकारी कुलती क्यों हो सो कीयों. क्यापात पुरमाणी-पूरूण री

( kt ) राष्ट्र कावस्यां अद् इस्त बात से जबाब देखां मांत्ररी तरफ से

हें कारतकरी का सम्या कापरे शाथ राख्यों हैं। जान सभी आप लज्या राक्षी पिछ का राज्या राक्कां हुं सर्व सदी हैं न्हों से पहली राखी सोई निक्रमी हैं। इतरी मैं माहरी का राज करन करी। श्रीम री करमाय गया या चावरहरी सो पुनिस रै दिन ही भाग नोर्द नहीं। एकम रै दिन पांबरती यदी क्षः रात्र रहां क्याचाँ जह में चरज कीनी रावराजी मता राजां रे पत्र री बांदर है भी भरत कराते है, जह प्रत्माधी वा तोष रो इसां रे जोग ही..." हताति ।

आपर्वेद ज्ञान :---ता हो-वाई सी वर्षी में वति समाज में बैक्स उद्योतियारि

आनका कान्यता प्रचार रहा है परागः प्राप्त विपयस कानेको सन्ध बाद मी जैन परियों द्वारा निर्मित क्यलक्य हैं। ब्यवनी हीता बस्या में श्रीवद वैद्युक विद्या में प्रसिद्ध हो गर्छ है। वर्त हेरा यात्रा के समय अशिवादा में अनि जीवराज ने सापकी स्त्रति में लिखा है कि:-

"बैट गरुपेत हेत आणे अब गारी की करन इत्याज वाकी होन कल्याचा जी

कर सब जीवरास बड़ी दौर माति लोडी जम को प्रसारा ताली जारान समाया जी

रायचन्त्र तो के शिक्षि चार्षे मध्यक्षावात

( २७ ) नैयम्ब निवान साथि क्ष्मंत्रीर सो पान जस गण्ड भौराधी साथ स्वीपे सन्तात है।

कानोर में क्षि नेशवराय में में व्यक्ति उत्तरंत्राम स्वीत्तर में बैक्ड, जोतिन, मेक्क्रंस, स्वीत्त व राजनीति जादि में ब्यक्तों निकारत कारणाय है। व्यक्त्यात्वरंत्रीण के पहुर्तित की विधिन्नत का जात्तर क्यों निक्षा जा चुका है। वैधानति नेती तथा विशिन्न हो तथाने के तम कार के प्रमुद्धित विराहद होना द्वित करते हैं। इस कार कार का व्यक्ता नेत्री में जो इंडन कीर जाताने

कला नैपुण्य :—

चारांगी को से सामाज्य होटे सभी कार्यों में सिक्टरण में। इक्टिंगि जाएसी की मुन्दर भी। हानोपकरकों का निर्माण जान करी मानकुर्यों से करते थे। आपके हान से को बूटे, पाटिया, पटमी चारि चाल भी "नारत्यकारी" तक से विकास हैं जो को स्वस्तान म करायुर्ध है। चालों

स्तर्व अपने बिहरमान थीश्टर के १२ में कावन में शिक्षा है कि :--"हुमर केला हाथे कीया, ते पिन चहच वपाये सीवा, जस वपलायी जस व्यूचे थी, मंद तीम ते मंदोहमानी॥ ॥

जस वरणायां जस ख्यूच था, महासाम व महास्थ्या ॥ ॥ स्ति नशसराय ने च्यापके स्वीता में शिक्षा है कि:— "वर्मे विश्ववर्धों थी, हुअर हजार जाके,

हैया में तान सब, जोतिय वंशतंत्र को चालके मध्येक कार्य में कहा का क्यान होता है। सावारण . .. .

को अपने स्वन्धों पर धारण कर पैतृत विश्वरते थे। औ सिद्धापल व्यक्ति जिल सालन में स्थयं—"युद्ध वयी पम पंच संबो पारसक्ती, संदक्ष पीका पत्रात पास्यै हुस्क्ती"—शिक्षते हैं। च्यारके कतिया कित्र भी वासक्य हैं तथा हमारे संबद्ध का एक पत्र इस विषय में महस्तपूर्ण प्रस्तरा बालता है किसमा भागरक चंदा यहां यह तु किया जाता है :---ं ह<sup>55</sup> गरका भी वापाजी साहियां सों बंदना १०८ वार रिस्त्रों की, ब्याप्के शुरामान पात करता है, हे किही कार्य (क) हं नहीं, इन्क्रन क्येंबर हुना करणा तो साथा इसं इस नहीं है कमाया, एक काएके दर्शन तो पत्या बाबी जनम रे गागवा। अस्य यह मुनिन्छा, कल वर प्रसान, स्रोधा क्रों पर. हता में ज्यास क्षमी, दुसक दुसक चात. मुख्ये क्षमा गुल महत्वदिक क्रमेक कालंदकारी भाषमधी माधूरी सूरल क्रम देखंग्य भावा व्यव वहां इरसन पाठना, जो है याया इस अनम में और तो कहा नहीं में कमाया एक यही दुर्शन सर्ज़्य

पाया इस स्थान से जनम अनम का पाप समावा इतना हो

स्वती पूर्व्य कमाया, भाग स्थान में मुक्ते निर्मुद्धि को रखीने तो मैं पत्र्य पत्र्य कहाया सिमाय इसके और कुछ है नहीं।" "'व्य मानाजी भी १०८ झानसर जी नहाराज जी के सरखें में"

चत्र वास्ता मा १०८ हानसर जो सहाराज जा क ५ सपु जानन्द्रधन :--

भागे भागे कुर्विग्रीमा वा भागिकर उम्म प्राथमान्त्र प्राथम के स्वास्त्र में स्वाप्त स्वास्त्र प्राथम क्षाप्त स्वाप्त में स्वाप्त स्वाप्त में स्वाप्त स

स्वर्णन मीज्यसायरब्युरिजी के जिले क्युस्तर वर्षी क्याच्यों ज्यु मानन्यर्ग नाम हैं से सर्वक स्वीर कर्मच्य संस्त्र हो मानूम रेता है। मान्यन्त्रण चीनेश्वरी के रिक्षणा मान्य में क्या मीन्य कर्म श्वरीक्ताय स्थल के रास्त्रात्म में मी इस्टब्सर तिसले हैं:— "मैं झानवार मारी हुई स्वशुस्तर बंग रहर घो विचा-रते विचारों कर रहेंड भी इस्टाइस मार्थ हम्मी रिक्सी परं

में इतरा बरसां विधारकोही सी सिद्ध वर्ष-" बायके प्राप्ति में मी बाय-उपनती वा अमाव रुपह हैं। आस्म परिचय :---

श्रीमद् ने कफ्ती इसिक्षं में करना परिशव मौत हिम्मदर्श के सम्मद्भ में जो लिखा है कहीं के उन्हों में नदेने दिया जाता है :-"वंश उनेश जिस तिस दरस्क, रूप रंग पल भासा प्रयह पंच इन्ही नर हुमर, पूरक मासु प्रवास ।! २ !!

्याप्तर्ग रह र वे पहुँ मंगिय ने अपनी मार्च मार्

भाग रो में चान करते में सहुत्ता वहीं कहानक है। "ह्यूता में सहुता किंगें नाम भी राज्येका प्रतासे सुद्धेक क्षत्रीहैं को को में हिम्म, गीम, देह अब्बाद की प्रतासक होते हुए भी माने के मानी बनेत्र रहु में काम चौर तिका। जो राज्य भी माने के मानी बनेत्र रहु में काम चौर तिका। जो राज्य प्रतास, कहुंद्रीय नामकाने हुँ स्थानक के स्वास्तार करा मानों में, भीगद वर्षे अवदी हो जाय करते किए समाम राष्ट्रम कर्णा तिका हैंहू माने तिकी देंदू में तो पुत्र में तिका हैंहू में प्रतास किंदी में कहुंद्र सिका दों बहु कि सामें हैं;— ( tr )

वंचे प्राप्य में है चप्पेश सहस्वता" (श्रह्भ जब स्वयन प्र०१६०)

'बाब्य कर देखाडी सूच सरिस्ता पणा. शानसार नाम पायो कान मदि गेहरा।

( कार्टिकिन स्त्रांत प्र**०११**४ ) "हूं सहा संदर्ज़दि, शास्त्र तुः परिश्राम किमपि नहीं। नेद्यौ

सोटे सुद्दै सोटाच्योनी बात किस रिरवाय" ( ब्यास्तास गीमा पाता॰ प्र॰ ३१२ )

"हं महा मूर्स शेखर, बर्चा महापंतितात्र" (वही प्र॰ ३२८)

हमसे मैंसे भेपबर, कीच कीयी इक मेक,

( पु॰ १७६ मति प्रशेष सलीकी )

"<sub>सुक</sub> डेब्र्या संचन्नी वास किया कराय दिसानी नै सुग्य लोकोने स्वमत कादरमा कारणें"

( पूरु ३६० विविध प्रभोचर )

"मुक्त जेहबा भ्रष्टाचारियों नी संग्रो शान्ति स्वरूप न पानें ।" ( ब्राजनका चौदीसी शन्ति स॰ बाता॰ )

निष्प्रहताः--कहा आता है कि एक बार क्याप व्यवस्थार पनारे। व्यापके

शतात एवं सिद्धियों की प्रसिद्धि समेंत्र व्याप्त थी। जब मेशक पति सहारास्ता की दुश्रानित (कुमारदित) रायौ ने सूना तो का

देखिये प्रयोगार पास प्रम ४०४ ।

. (६२) मी प्रतिदेन भीमह के चरखें में चालद निकेश करने सभी कि गुल्देव भीदें ऐसा राज शीवित, जिससे महाराखानी को चामसन्ता

दूर हो और मैं जनकी प्रियमम हो आजः। बीवद ने बहुत सम्माना, पर राजी किसी तरह न मानी और ग्रंड केले के शिर विशेष हुठ करने शारी। तथ औसट् से एक काराज के दक्ते पर क्षम्र शिक्षकर दे दिया। राजी की अद्भा चीर श्रीमद की वचन सिद्धि से ऐसा संयोग बना कि महारायाओ की उस रायी पर पूर्ववद् इत्या हो सभी। शीनारायांनी यात्रा के यंत्र वर्शकरण की कात महागायाची तक पहुंची और क्योंने संब के शाकन्य में इन्त्री पुश्चाल की। श्रीसद् ने क्या "राजन् ! हमें इन सब कार्यों से क्या प्रयोजन ।" जांच करने के सिये यंत्र खोलकर देखा गया तो उसमें "राजा रायी स' राजी हते वे नरामे ने चंद, राजा राखी स' हती वो नराधी से बंदे" किया मिला। इसे देखकर महारामाली आपकी निस्तृहता कीर वक्किकी पर वहें ही जनावित हुए। इसके बाह सहाराखा मी चारके चनत्य सक हो गये थे। श्रीसद की इसीयों में महाराया न्यानसिंह भारतिर्वेह गामक कथित तथा क्षतकी वर्ष-िका उपलब्ध है जिससे भी बाएका महारासाकी के हांग से क्ष्मका सम्बन्ध माञ्चम होता है। इस क्ष्मित एवं वचनिका से रचविना का नाम तो नहीं है पर यदि भीमद् ने कनकी रचना की होगी से बीकानेर में रहते ही, क्योंकि महाराखा आन फिटनी का राज्यकात व्यवपुर के इतिहास के बतासार संव १८८१ से १८६१ तक का है का सारव भीगद बीकानेट ही थे।

कार्य विद्या जीएन में सामा होते हुए जी मा होते हुए जी मा हमें हुए के कार्य के कार्य

1 वीमर रेपानुशी का अध्यास व्यास्त्र और अमानुशी का जान अस्त्रम (स्थास का अपन्यं स्थानों में केंद्र मानुशी का जान अस्त्रम (स्थानों में केंद्र साथ का अस्त्रम अस्त्रम

( १४ ) यह है कि भाजेच्य महसूरतों की गुरूत न भागती राष्ट्रता अवस्थित करते हुए विनवपूर्णक अपने आसार तिथे गये हैं। उद्यो सहस्रो

के परिवासको अस्तर देवकटानी क्रम साम्यासकीय गामकांध से कुछ स्परत्य दिवे जाते हैं। "विशी पनदली सम्बा ना अला एवं "पर करतार" कहाँ।

कारणी राज्य जा कीला पर अं 'पूर्व' पत्र पूर्वा विद्वा 'पहरूं'। में परामार को भी पत्र प्रितं का प्रदेश में प्रप्ता के आपना करने के सकते हैं। में मानुवारी कीली प्रवाद कारणी में मान किली में रा मानुवारी कीली प्रपाद कीली मानुवार कारणी केला किली मानुवार मानुवार कीली मीत्र केलामपुर्वाह हैं। तेनी पत्र मानुवाह मानुवार कीली मानुवार कीली मानुवार कारणी मानुवार कीली मानुवार कारणी मानुवार क

क्रीन्त देख्या चार ५-१८ तमा क्रियामानी है जूने आसील स्वतार है भी के स्वतार है जीन अपना ही कार्या है। उन्हें स्वतार है जीन स्वतार है भी के स्वतार है जाने हुं स्वतार है। उन्हें स्वतार है कार्या है। केन्द्र स्वतार है ने कार्या है जाने हुं स्वतार है के क्रिया है है वह साले अस्पाद पार्थक के परिचार है। अक्षार करा कोर्या है कोर्याना है के अपना है कुछ था। के नक्ता है कार्यों के सुर्वेश्व के स्वतार है कहा था। के नक्ता है कार्यों के सुर्वेश्व के सुर्वेश्व क्षार है कहा कर है। कोर्यों के सुर्वेश के सुर्वेश कार्य है कार्या के नक्ता है। कोर्यों के स्वतार है के स्वतार है कार्या है के नक्ता है। है नक्ता क्षार है के स्वतार है के स्वतार है के स्वतार है। मोहामके ही बात किस शिलावर। पर सामय में बाति बाताई में हमां करना संदर्श । किहा निता मोतवा मां प्रमाणिक होता किस लिख्यु जोहरे केदमी किहा । "ब्हाहुत कंगा बना बाता करना बढ़ें।" "की हुत्तरों " मुक्ति हैं कि हुत्यों में " प्रमा में सामा मों बंध किसमी हुद्द राख्य गुंचा है कुतानिक हुन्यों हमी किसमा है। साधुनिक सहिता को में दिवा प हुन्य भी हमी औं पहले केटें करें में मोह प्रमाण को में साध्य हमाराहु "

( ६k ) "प वर्षमान २०० विस्ते परतो मा कल जां पहचा करिरातान कम्प चेत्रा निहास केरच चया, में जायरकों पछ क्षति विहोच हत्ं। ने हुँ महामानहुद्धिः सास्त्र जुं परिकान किमाप नहीं केरची होतें हाँ है

"ख्युण इञ्चलके वे स्थाने कर्ता करका वर्तनी एकता न संस्थि न तिराक्षण प्रां संस्थे तेती "स्युण ख्युण स्था की व्यं पूर्ण ए यह अपना मुंद्री भीच प्राप्त करता है तेती क्याने कारकारक स्थानी क्यूण सामने किम मानी सके चित्र है नहा मुक्तिका बनी महाचीकाराज पर विद्वीवित्त्यात्वीत है" "जेनाक सामना विभाव करती मानी वर्ग पर्य प्राप्त करावारी

महत्त्वच्छाताव र र स्वुधावनात्वाव । विज्ञान कामाने चित्रक करने च्याने, ह्यां चर्च म्यान सुक्तारें, हु भ्यों ने नेते लेकते गुवहरूषी रहतें । ते चल कामा ना सोचा पह में नात्वाही ने दिक्तर साथ, हस्ती हु भ्यों ने तो पता तो श्रीयनीह बारतें गुवहरूपी भी कहा के पर सने ते गुंच्या प्रसाव करने करतें !!

"काक्रीसमीयाया नां खंडिम यह मां कमाह पह ग्याँ काहि ३३ राज्य में निरामाय पह गृंख्यों विद्रां समाह निरामाय य ने राज्य य कार्य एक ही परं मुक्ती काहर प्रमाणे कार्य करतुं, परं पुनर्शक ही ।" मंदि किंद्र विराज्यान है राहा नो कताब रहे हुए है कहानु मर्च कहा हैं। मीतर देवच्यांनी का गाहु समाग ट्राम्प के कालोक्शाकक कालाय वहां कहा किये जाते हैं:— "य ने जो में विरोज्यान से हैं किंद्रिण किंद्रुं पर है जहां निर्दूर्य करते हैं के हो जिसे हैं, अपनी सालांनी महिन्द्रा करते की मीति हैं। कालो मीति हों मानि हैं, पर दिहान कालांगि हिनोसाल करते की

नका लक्षण जैसे रिक्क्स काच्या गाँँ न शिक्स्युं वे चार्तक शिक्स दुं 'चेर गाउं के तेथी शिक्स्ये' "जाई के तेथा किस्से क्ष्म ते तिरोध इति कर्यक हिर्दे "जाई में कह्यूं र इतियह माने चारण ते रिरोध इति वहरूक ते मोक्स्य में एक झुक्ता के तित वाने के स्पत्तक स्वाने में गाउँ, गाउँ भी माने इंक्से पानची जात ने तो के ते ति स्वान के स्वान क्ष्म ते पानची विद्या संवीतांवर्षण विद्याल एक वहा मुंच्याने हे जुक्तीक एक्स संवीतांवरण विद्याल हम्म त्याल एक वहा मुंच्याने हे जुक्तीक

 वर्षी ए बार सुतों न सिम् तो ए दिल्ला बांच्या वाली मूर्ण वेसरावाणी पहराएं किन्नु। गुनरात वां प क्षेत्रत हैं कानंपन रंक्साओं तिनराजव्युरे ' बादा तो कारमवस्थानी, वां परी १ नार मध्यर तरियोग्ड गुमरान को विनयन्त्रद्विती के स्रीपप

और जीवेनसिक्ष्मीयों के किया थे। स॰ १६४० वै॰ सुरु ७ बीकारेर में बोबर वर्वनी चारतीकों के वहां सामक जान हुआ तं- १६५६ वि- हु-11 दीवा और 60 160v में सावार्ष प्राप्त हुए। आप उपकेटि के निदान और प्रवास्थाओं बाचार्य थे । आपने मेहता, शतंत्रय, मानस्त, कीरमा मादि स्थानी में किए किमादि को अतिकार' कीं:1 कारकी नैक्य काम हति, पालिन्द्र शक, गरुहुद्दरात राथ तथा चौरीवी, बीवी साहि अनेक रचनाएं उरमध्य हैं। आरबी शातिका औरवें नासक कृति का चन जनार दशा करतः इतनी वैक्तों इस्तरियंत प्रतियों तथा कई सचित्र प्रतियों भी सभी वाली है। इसले कंदर में भी इसकी दो संबन्ध प्रतियों है। कल्कता निवासी स्वरीय वाबू बहातुरविहानी दिशी के संग्रह में हमको तत्कामीन ग्रान्तर विचार और बहितीय प्रति है को बादी विजया पालियान के द्वारा विभिन्न है। बाप क्याप्टेरि के बारे में आपको उसकार छोती छोती कृतियों का इसने क्षेत्र किया है। ए॰ १६९६ में अपन्न सर्वतन हुना। क्लिप सामने के है। स॰ १६६ न नाम स्थाप संदर्भ देखना नाहिए। हस्ते इनकी जीवनी पर शीवार इस राम व विषय अवस्थित है पाई। विश्ववाद बातिवाहर विशिद्य पुरतक में सरपका असती विश्व है। अपके कामभी एक काम राम का पार इसने जैन सरस्वकार में प्रकाशित किया था। सारके आजनुवर्ती आवार्य श्रीजिनसागरसूरियो है से- १६८६ में काफर्न शासा तथा सरके पहला से- १००० में श्रीकारंपद्रियों से रंगक्तिय (अक्टान्स) समा सत्तर हुई, मून पहुंचर जीविनसम्बद्धी हुए विनासी पहुंचरेचर में चौकानेत के को स्थापन के जीवन जीविनविज्ञानिकारियों विस्तान है।

( ६८ )

विजय ' शनरदुनरिया योगे बाज्यो तेन त्याच्यों, व॰ वेवच्चव जी ने पूर्व द्वान यक हतु तेथी शहरपश्ररिया, मोहन्येननथ ' प्रत्यास ते

े अहोप्यत परिवेचकों के परिवारक के उनक जब के। इस्तें कार्य के जो में तीन परिवारक किया। उसके के। इस्तें कार्य के जो की अंतर्थ प्रश्न किया प्राप्त के तीन के की के जी परर्थ की। का जाता है कि रिवेच-क्षेत्र के कार्य, किया प्रश्ना की के पार्टी की कार्य कार्य हुं है। केक अपन पर के जाता की जाता कार्य कार्य हुं है। के कार्य कार्य कार्य की अपन कार्य का ब्या कार्य है कि की की ती है। कार्य की कार्य कार्य किया कार्य के क्या कार्य की कार्य कार्य की है। कार्य के कार्य के कार्य कार्य की कार्य कार्य किया कार्य के कार्य कार्य कार्य की कार्य कार्य है। कार्य कार्यकर्मिया पूर्व परिवारक मार्टियों। कार्य है। कार्यक किया कार्यकर्मिया कार्य कर कार्य की कार्य

है। सामें जाइतियां पूर्व पारित्यां मार 19-3 में आपीत है। हुव्येष्ठ स्थितियोग्यापत सामें प्रदान के उपनी श्रीता बहुत रहता रिकार के प्रदान के स्थान है भी भी विकार में मी बाराब मारहण है तो है मी हुन है में किया है में साम मार्गित हुन हो। सामें सामितियों है। सामें स्थान में साम है तो है। साम मार्गित है। सामें स्थान में हुन है। साम मार्गित है। सामें साम मार्गित है। साम मार्गित है। साम मार्गित है। सामें साम मार्गित है। साम मार्गित है। साम मार्गित है। साम साम मार्गित है। साम मार्गित है। साम मार्गित है। साम मार्गित है। ३. साम मार्गित हो साम मार्गित हो। ३. साम मार्गित हो महार्थ मार्गित हो।

२. 'ज्यान' मानुनायन वायन्त्रास्य कात्रास्य नाम क लिया दे! क्रांति कं 'अप्तर केंग' एउटे तक को तक मीचड़ें आहि माक इतिने निर्धाप-को। हरकी त्यान परक महत्त्र और रोक्क होने के ब्लाजीय हैं। कं 'अप्टे में रचे हुए चन्द्र राव की ओयद् ने विनये-कोर्ड में स्मार्थकता विक्री हैं। िक्हां बरीको वर्ष वीते वे मारो कृष्ण न बातको, ज्ञार किन्द्र कर्षों तार्रो कृष्ण कर्षी" माने नवारी नावा रे लाहे वह में सामाव्ये सामाव्ये नी जुला रे इंटर्स पर मुल्ली पर से सम्माव्य कर्षों है विमान मिने नहीं पत्र बनोद रहे भी तोने मने पह रो कर्ष करवारे हैं विमान विमान कर्षों के सामाव्ये करवार करवार के स्वार्थ के क्षार्य करवार के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ करवार करवा

ज्ञान विमल्लयुरिजी की जालोचना :भेमद्र भानन्त्रन जो महाराज की पौत्रोती पर भीक्षनसारती
सहरात का अन्यपन कर गम्मीर मा। भानन्त्रनाओं के तफ

क्षान च्येर चात्रमानुस्वसम्य गुरु कार्यो पर विशेषन होना चहुने चात्रमध्ये था, व्यापि श्री क्षामध्यसम्बद्धिती " ने कस्तर हम्बा १ अपर विश्वसारके मोध्यात वाक्षर श्री वर्णा वर्णामध्ये वे दुस से । भारता संभा सं- १९९४ दोशा सं- १७०९, सं- १०२० में स्थाप चर्

प्रशास करते थे प्रश्निक प्रश्निक के प्रश्निक प्रश्निक के प्रश्निक प्रश्निक के प्रश्निक प्रश्निक के प्रिक के प्रश्निक के प्रश्निक के प्रश्निक के प्रश्

क्रमितन्त्रन व्यवेदवर मा हुक तुं देखनुं तेते क्रांबिये ही पत्तरी कोई ऐसे वित्ती ते वाहित्वे पहलूं क्रिकार करने नहीं वित्यान हरीन राज्ये वीत हरीन तुं क्यान ही किम एस पत्तवा में मीती वर्ष मात के मेदे हैं जो जब पुढ़ियें ने परवेदवर मा मुख देखना मां मा मत केंद्रे हम्

मुहस्ते ने तेन कर्य हुई तो सामा व्यामां 'खु धारी कहांमां ते गरीवर ता हुक हर्गन मंद्र कर्म जा मेही क्य पहुं खु बारे पर कंश कर इसमा क्रिकरी सुर्'' बार्मिमा करी करूप, करती न क्रिमी लिचार। तेथी य करना कही, लेख क्रिकरी मंद्रियास। हाश 'वैस्थिति किंग विकासी खु' क्रिकरी ते, महितो सामा सं ंतत अन भेरे तो नह पूलिये स्तु करी कारोम 'र पह मां स्पेक्टर वा प्रका दर्शन में सभी निरोध्या लिये हार्ग सम्बंद अस्पत्र करी तिल्या निर्दा स्त्र मा निर्देश्य किम्मन्त्र सिंग्य हर्गाए, नीत हर्गा ने दिला का का मेरे पूलि कारण क्यूं धारी किरी कारी हुग्या सम्बद्ध कारामार्थ सुक्ता को नहीं, नीतार्थ करी सारा संकर्ष, एक को हुका की सम्बद्धान में भी किरीच्या हुक्त पार्थी जा मेरी"

"हर्श कटाप्युणी से काला को याग हालीपालहरि हम लिक्यु" हैं इंद्र केशल पहांद्र केशन को नहें हैं। मान्य हालाई वाहिं मार्च काल्यें तार्च कार्या मार्च किंद्र की एक हुद्ध केशन हैं कार्य शुर्मित बहारि कार्यों तार्च के की एक हुद्ध केशन हैं कार्य स्वस्तार्थित कार्यों तेता \* \* \* \* \* \* र स्वस्तार्थ केशन स्वस्तार्थ केशन हैं। या कार्यों ते सहन हुती वर्ष कार्यों कार्या (कार्या केशन कार्यों)" (काराय कार्याय)

( प्रक्रितन्त्रत सा० वासा० )

"हाजीपालपूर्व मार परिका हुन, तेनव पर्यान तीवना प्रांचने हुं तो तार्य भार्य पार्ट पार्थम मार ते भार्य कर दि स्थापात स्थापन महत्त्व कर्म, ते हैं हाजपार्थ मार्ट होता हुन प्राव्य प्रस्ता (८२६ को स्थित है स्थाप्ति भारता (६६६ क्षेत्रपार्था कर्म कर्मी क्रिक्टों पर में हरण स्थापित क्षाप्ति कर्मों क्षेत्र पर्य कर्मी क्रिक्टों पर्याप्ति क्षाप्ति क्षाप्

नेकार स सहस्रवर्धी पता पंडिताई नो लक्षण निर्दार कीनी. अर्थ

( धर ) व्यर्थ कर्य समंतित नी निष्ण न निर्मा ("सुविधिकेत क्यान कालः) कुल्कामें रहेला सिन्न नी कप्तना मां "श्रीक व्यक्ति निर्मान रहूना किसे क्या केलेंगे र" ए तमा मं चंच दिक क्योंने निर्मान क्यारी है में क्योंन्स्सा कालेंगाच्ये प्रमुं निरम्बु"राजि

कर में राज्य तीरवान को उपना में ती बाता है दिवार सुत्र वारों ने पार्टिकार पर प्रदान किया है तीने स्थान के सार्थ (दिवार लगा में तिर्चा है । दिवारों तुम् मोंदे अपने हैं दे तिकार देवें हैं में तिर्चा है । विश्व ते हैं प्राच्या भीते मुंदी, तिर्चा विश्व मेंद्र में ती मोंदी हैं वह पर तिर्चा है ने वार्च है तिर्चा किया है मेंद्र विद्या मेंद्र

स्तित स्वान्त्रका तो स्था पारंतवर यो ही या " स्वान्त्र "स्त्री स्वान्त्रे क्यां क्यों को साई त्यार वरी या अंति वरी विकास क्यार ही। सं. सं ते का स्वेत कर त्यार स्वान्त्र स्वान्त्र क्यार सावन्त्र हों, स्वान्त्र क्यार स्वान्त्र स्वान्त्र क्यों से पूजा कि क्षित्र से एक से ते स्वान्त्र से विकास से ते स्वान्त्र से विकास स्वान्त्र से स्वान्त्र स्

( श्रेपोस जिस्तान बाला० )

"अर्थ कर्ता झाननिमलस्री ए गाथा नो कर्ध करतां, इं छु'तो नहामूर्व्योत्तर पर' कांडे तो सामूर थोड्ड'ल विचार्य लगाय है यशा— \* \* \* स्युं संसव परं रागंगी तुं वाद सरवृं ही मलार" (विस्ता किन कावन याला?) "द स्तरन हो कर्य करता कर्यक्रतीयें मत बीज न विश्वाय — धार तरवार भी तौ सोहिली वर्र १४ जिल नी चरशकामा सेवा मां विविध किरिया स्वं सेली. पिती चरशसेवा मां गण्ड ना सेड तत्त्व नी बाल बहर मरग्रा निज काज करवानों स्वों सन्त्रम्य इ फिरी चररासेवा मां निरक्षा सावेश वचन, महा साथा नी स्थी सन्यन्ध ? फिरी देवगुरू धर्म नी ग्रुड वटा नी ग्रुडता, कसूत्र सूत्र मासवा नो, पाप प्रभा तो सन्कथ स्वौ १ वरं परण सेवा-चारित्र रेजा पृथ्ये न फार्च परवासेना प्रशंका भारत तेह थी एक कर्म ने सिक्सी वी मिती एपँत कंप्रोक्ट्य पर क्यानत ल

( 53 )

( समंबंधित स्वयं याता॰ ) कार्यकर्ताचे कार्य करता "देखे परार विकास" कार्र विकास राजे पर्म निधान गरुवो सिक्यो नै काई "निधान" राजे स्वरूप पानि रूप नियान देखें ए कार्य हो। धार्म प्राप्ति रूप निवान कार्य

नपी संगवतुं, ★ ★ ★ एहनी दिश वर्ष बिला है पर लिकवानी स्थानक नवी" (वर्ष जिनसावन स्थान)

ए स्तान मां धर्मकारके कही मन किम परकार्य ए पा नी कर्य करते यन असम्बद्ध यह ने करी पहल परमेशनर भी कहा है।

ए अपन विरुद्ध है। परमेश्वर ने मन्तु मनन न संसर्वे ( प्राप्ति जिस स्त॰ बाला॰ ) सब तेथी चर्चकार्थ काई से चर्च करते मूज की चोड़ी विचारका कीनी फिरो ने "समझे न सारी सारी" पान कर्च किका सार

( ७४ ) युक्तम संपर्यकर्तीय 'नास्त्रे कश्ये पासे' युक्त दुक्त इस क्रिक्टं के न्थिये कोड्स्ट क्राली श्रेक्टं कर ने पूछा जूं ती

रेखारी ने देख जाड़े कर मां इंग्लंग्स इस विकड़ों ने मान को रोग किया पास मोगाई पार मां वहुं जा में संस्था की मानदिवारी में न बजारी की मानदिवारी हैं जाती ने देश मिंगों पीड़ामां का मार्ग ने बहुँ में है केर किने में का बाद किया मोगा में को को देश किये में पायचार्थ का मार्ग मानदिवारी का मार्ग मोगा में की मार्ग में का मार्ग मानदिवारी का मार्ग मानदिवारी का मार्ग बढ़ी में बाद में में का मार्ग मा

"र तकना नो मर्च उत्ते कर्यकारके "परमादे हांदवी जिल्ह भे" कर च तु कर्य पर करियां पुरस्ता नी बहाई भी छावा तथा स्व च्युद्ध च्युप्त नेदेश प्रशासन कीति । काहर शिवार्ष कीत पत्र में ते पुरालंक कर पत्र पत्र पत्र इस्त करीं किया क्षेत्र में में प्रशास कर प्रशास कर करने कर किया क्षेत्र में में मूर्त की क्षा में किया कर बात्री कीते कीत ती पुरा करों मानामी हैं कात्राम हु पत्र पत्र कर बात्री कीत कात्र में मानाम हुन पत्र में कर बात्री कीते कीता कारों में मानाम हुन पत्र में मानाम हुन पत्र में मानाम कारों में मानाम हुन पत्र में मानाम हुन पत्र में मानाम मानाम मानाम हुन मानाम मानाम

करी ने तुन्दारा चरण तते हाथे प्रश्नी ने मुकले राकायों ए स्व

( धरनाय स॰ बाता॰ ) र्वश्रारके योनमी ताथा ने बीजे परे यागर करसाती

( ७६ ) इनका निकां परें वे दिन पर समय नौ (नवास एन्से जे इन्स्तानारी

पार कारकों में बोत पीड़ है बाहे से कह बाह की में पूर्व पार मां मुं जिर हमाँ मार्ग में भी में पूर्व कि की बीत पार पार में मार्ग मिलार में दें पार्च पूर्व में मुं मिरी मा मिली में में मार्ग मिलार में पार्च पार्च मार्ग में में में कि मार्ग मार्ग में मी में मार्ग मार

क्षमें बिक्रड पर विरुद्धपण न बहाच ए एकत गाथा मां क्रण टिकारी

( ७६ ) विवयेशक बचन विक्री गरंजना कर चेक्नेति 🖈 🖈 🖈

य अस्त शिक्कातुं स्त्रुं कार्य व यक स्थानके शिक्युं पर कार्य स्थानके शिक्युं तेरह केरायुं के शिक्षुं पर योदा" ( हिम्मुकात कित सार कारणा कार्यकरोति के से स्थानके से से विस्त्र शिक्युं ते ते मारि तह सुखे मोदायोश कार्य मो कारणान केरतीक शिक्षां पर कार्य

में बिक्टा कर का बाँद पांच बहुं में के बिक्टा को में से का जा तिया कर कर कारी वा वही का प्राप्त के कि को में हुए संग्र कि वही का बेद की की हुए संग्र के वह अपने कर के कि वह का बेद के का जाता के का बाद के बाद के का बाद के ब

( 95 ) लेक्स चाठावर्सी नहीं एक रहरूप विभागुं ज्याय हैं किते मामत पिता परे डिकारों मान सिम्बु हैं ने को र क्याया वर्ष में ने ट्या नो के लो हैं विकारत कारों का कर वास्त्रामा पता हैं जिनकिया वार्स को किया हैं कि प्रतिकार कर्मा सम्बन्धें " 'पत्री सम्बन्धें कर में सिम्बु हैं कि स्वाप्त सम्बन्धें कर 'माम के स्वाप्त सम्बन्धें कर में सिम्बु हैं कि स्वाप्त सम्बन्धें कर के स्वाप्त सम्बन्धें कर स्वाप्त सम्बन्धें

कोचे राज एक बार इसमें कोचे र को वे होप धामके जोचे राज झाने जोचे राज रहे कर्ष हिल्को हुने जोचे है राज्य हुन में जोचा ने कर्ष हिल्कों जो पेमाना तुम मन सुध-में जोचे निरक्ती कांद्र राज्यों से निकारों होते ए समिरात राज्य ही कर्ष हिला मिना उनस्की दूपका रुक्ति हमाने क्लान स्थारा में जोचे हमाने क्लान स्थार में

जोती कर्या करी ने बेमामा महं गया। िरिप्ती एक शुरूप परद्व जोती 'ति शुरूप ए प्रहिएकों में बेपालम सामाना विश्व प्रकार किया रूपा द बाती शुरूप कर्य तोक सी ग्राम्य मां विश्व करण करी भी कार्य तिलक्षेत्र अपूर्वीय तोक भी ज्वादान हुद्ध स्थान पर्द्य प्रकृतिकिक्ते कर मस्त्री हुं मन् ए कस्त्री क्षेत्र क्ष्मा करी कर्या मोही पर प्रवादित करी। (सो मेंनि विश्व क्षण क्षाता)

चन्द् राजा रास की समारोजना :—

कारपूर्व राते में की मोर्जनेजन पर प्रशेद की हुए हैं,
तिस्त्री कीरच रास-चीपार समानाई से माना इतिये नात्र है। ता सील स्त्रावियाँ (१७ वी ते ११ वी) में रासे कर सम् मित के कीया क्या पर राजा के सां "वीयं १९८२ में राज्य में भी मोदिन के कहा की स्थामित्रण नहीं ही दिवालाई और क्यूनं को में सिती है। इस इति के क्रून्युंगा साम्येख्या में स्वार्थ का दिवालिया, मार्थद्वात, क्यांत्रण, क्यांत्रण, क्यांत्रण, का स्वार्थ प्रदान का स्वार्थ का दिवालां का दिवालां की हिन्दी के १९१ में में में शिक्ता में मार्थित इंग्लेश्व में हैं। मार्थित मार्थित मार्थ मार्थ होंगूं में मुख्य मार्थ कोर सोहमें में प्रदान कोरी सेत्र - केरांत्रण क्यांत्रण में मार्थ में प्रयोग में शिवे क्या पर स्वार्थ का मोर्थ

एक पाया कात हूं।

• पारण यह श्रीक कात जातित होती है जब में भी हम पर काव्य रिज्ञा है देशों जब माती का वर्ष ४ श्री- १० ।

• जर्ष करन कारण करी, श्रीहर भंद परिज

वाल परित्र रचना बढ़े, साथ पतायो करत । ३ । सामन्य नी पौर्याई रचना होन दिखालन करना ह भौनाई रची १४ रचना वॉ क्षंतर रचेर साथ लेख जेलको है। ( ७३- ) इसमें केवल दोगों का व्यापटन ही नहीं है कापित कान समस्वीक

हरन करना प्रभा के अप्रान्ति हैं। यह दे असार अप्रान्ति के मुक्त होते थे। यक्षाच्यान बात कर आजोजन रात की दोना में बीधुरी व्यक्तिहाँ हैं। व्यक्ते दंग की वह एक ही रचना हैं और समाशेचना वा व्यव्हर्ग व्यक्तिका करती है पाठमें की जानकारी के लिए यहां स्वक्ते कोई से व्यवसरक दिये

व पाठक चा जानकारा चा तर पहा ज्याक आकृ से अवसराज झव जाते हैं। दात २ पावा १२ वी तृतीय पाइ में—जून जातिका यहै, जक्तों मृथ्यों पर जातिकों राजा किम समार्थ बिद्ध छोटा तेथी यहै, जक्तों सोध्य हती पर बंधि को योजना मात्र खाइक वर्षण सी हैं।

योग्य हुती परंपर्धि की योजना मात्र बहुक हुशि नी हैं। समयक पर पक्ष की, न कर सके किंदि स्वार सो दूमका क्रालंकार को, कैंसे करें मध्या

\* \* \*

इस दृष्य व्यतंत्रार के, विवरण परेन जाय
इस हो ची पटहस कई, कीलों क्रमिक कहाय

\* \* \*

किंद्र फिट् फल, चरित्र को नाम केंत्र कविनाय
चोरी मन्द्रै और कें तो ह सीवन काय

\* \* \* \*

इद कि ऐसे लान दें मेरे जैसी कुछि। होय तबे को ज्यान है, साथी हुद्धाग्रुद्धि अपनी बुद्धिमान वर, कवि कविता कर जेंग। देखत कवि ब्रोडारि सफ, दुण्या मुफन देता है। (८०) आर्थ अपन वायक प्रतयः कामा कर अध्येष

स्वयर पद्ध देखादितक, वर क्षत्र नर तस्त्र तेया । ३। विकार में लागे कुक्तो, विकार में जायी पन्त् को गत्र भोरा को रखी, योरा कीन गयन्द कर्ता कार्समय मी, संगव करें हैं।

कर्त्ता करमंत्रय भी, संगय करें ही। तुरी हीरो नेद नी बरसां नट संग रहे, कामा रहि कवग्रेष केल बरस होरी निमी, समस्त्र बड़ी विशेष ?॥

इस प्रन्य में ग्रुमाणि व रहेकोटियों का भी समाचेदा करने के साथ साथ जमाओं को साधित करने में कपूर्व रचनाकौराज्य व याचित्र का परिचय दिया है।

वर्तिकर नगरसीहात जी के समयसार में बाई हुई करिएय एकान्तवाद व निजय नव सम्बन्धी मान्यताओं की बालोक्ता बाज्ये मात्र बहुविद्यं का तथा तिनम्लाक्ति कालावयेश हस्तीसी

में सुबन सौजन व माशह गुण पुक्र करिताओं में की है। जिसहें पाठकों की इसी मन्य में पड़कर स्वयं झात कर तेना चाहिये। बिडाचा :— भाएमी अपने स्वाय के स्वकादि के विद्यान कीर गीताओं थे।

भागती ज्याने स्वाय के क्यानेति के विद्वान कौर गीतार्थ थे। काराधी थे। इतियों में भागतालाना सद्यास्त्राला व सन्त कारोकार सत्यादि प्रायेक विश्वय का परिवाद सत्याद्वात है। भी तो काराधी इतियों सभी विश्वय की हैं एरानु भागतालिक हरिको गुसुकार्यों को स्मागं भागत करने के सिने सभी ही क्यांगी है। क्यांगी एकार्या में आपन्ती ने पकासों जगड नदाहरण और श्रवतरण देखर विषय को स्था किया है। इत अवतरणों में जीवविचार, कर्मत्र व चैत्ववंदनभाष्य, समयसार, जावश्यक निर्दू कि, पुश्यमाळावकरण, विशेषाबस्यकः व्याचारीयः, स्थानीयः, भगवतीसूत्रः व्यासम्बद्धनः, अमयोगहार, प्रश्नव्याकरण, हेनकोश, अभवदेवसुरि कृत सहा-बीर स्त्रोत्र, सारायत स्थाकरम, तावार्थसत्र आदि आगम प्रकरणी तवा को आजल्यन जी, देवचन्त्र जी, यशोविजय जी, सरपन्त्र पाठक, मोहनविजयजी, जिनराजसुरिजी आदि की क्रुतियों सवा केरबावय, पाणिनी, काळिहास, कवीर, भर्त हरि इत्यादि के बाक्यों का भी स्थान स्थान पर नामोक्डेलर्सक निर्वेश किया है। बायने अपनी कृतियों के अवतरन वो पत्रासों स्थानों पर हिये हैं जिनमें कविषय बहुएम तो आपकी कृतियों में प्राप्त है, अवशिष्ट "मदक्तिये" या को प्रासंगिक है वा वे जिन मन्बों ची हैं वे तत्व जवाय्य हैं। इस मन्य में आवे हर अवतरवों को परिशिष्ट में देखना चाहिए। आपने स्वयं प्रसंगवता सन्मतितर्क, नास्तुराज' प्रभृति मन्यों के परिशीयन का अध्यक्त विविध परनोत्तरादि मन्यों में किया है।

लेको में से ४०० जोड समंपन्ने का उन्तेष किया है। २ मारतीय बास्त्रीयता सम्बन्धी साहित बहुद विद्यात्र है। इस

4

९ इप्रविद्यक्षित तेन विकास स्थित मैन न्यास्का यह प्राविद्यक्षित तेन विकास स्थापन क्षेत्र क्षेत्र प्राविद्यक्षित तेन प्रस्तिक तिन प्

कापका सन्म राजस्थान (रिवासत वीकातेर) में होने के कारण कायकी मातृकाचा शक्तरवानी वी । कायने अपनी कृतियोमि रावस्थानी तथा गुजराती मिश्रित राजस्थानी व हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है। जैन कवियों ने अपने प्रन्यों में गुलरावी भाषा का प्रयोग इसीलिय किया है कि गुजरात-मारवाट आहि सर्व देशीय आयकों व संबक्तो वे रचनाएँ समान रूपसे उपयोगी हो सके। पूर्वकाल में गुजराती और राजस्थानी में बाजकी भौति अधिक सन्तर भी नहीं था फिर भी जैनाचार्यों के लासित्यन्त्र्य

(a)

गुलराती भाषा को प्रमाणमूत मानने का सीमद ने आल्यास-· बास्त्रकोप रश्नारप्, गृह्मस्पर ती वाण । वर्ताचार्ये अति कडित, जाणी करी प्रमाण ।"

शीसा के बाळावकीय में दिस्सा दे :--

स्रापका राजस्थानीः गुजराती और दिल्ही साथा पर तो पूरा

श्रामकार या ही पर बना, न्वातेरी, सिन्यु आदि मावकाों की मी जापकी सच्छी समिहता भी। पूरव देश दर्गन हर्द में बंगका आवा के सम्बंदी का भी निर्देश वित्या है । अब आपकी कृतियों का भाषाओं की दृष्टि से वर्गीकरण किया जाता है :--

क्रिक्ट के कोटे-बड़े लगभग २०० प्रन्य एवं जाते हैं । औरन् ने प्रश्नीतार क्ष्म पुरु ४०५ में बालुराय नामक क्षम के २००० क्ष्मेक सार्व पक्षे का सामेश्वर किया है। इस मान्य में सहिमानि से १६ प्रकारों का वर्णन है।

क्रम क्रिया रिवार रचित न बहा प्रान्त है, सन्वेशनीय है।

कोपना, प्रस्ताविक आहे चरी, कामोद्वीपन, मातापिक्षक, निहाळवानवी, प्रतापसिंह समुद्रबद्ध काव्य, चौबीसी, ज्वानसिंह आशीर्वाद, बहत्तरी। राजस्थानी—संबोध-अष्टोचरी, आस्मनिन्दा, ववपदपूजा, बासठ मार्गणा, हेमदण्डक, आस्ममिन्दा, ज्वामसिंह आशीर्वाद वष्मिका, प्रतापसिंह समुद्रबद्ध काव्य वश्वनिका. विविध प्रश्नोत्तर नं० १-२. पंचसमवायविचार. विषयमानवीसी । गुजराती-आध्यासा गीता बाळावयोष. सावसञ्साय बाळा०. आ-नंबचन चौबीसीबालाः, प्रश्नोत्तर प्रस्य नं० १ (द्वित्वीके प्रमेकि उत्तर): सानत्वधन पह बाळा० साहि मंधी में राजस्थानी सिमित हैं, क्हीं-कहीं तो ग्रह राजस्थानी भाषा ही सिसी है। <u>अहावरे</u>—आंपकी भाषा वडी <u>अहावरे</u>दार यी जिसका यहां बोडा नमना चपस्थित किया जाता है :--

( ८३ ) हिन्दी— इसीसी४, पूरव देश वर्णन क्षंद्र, चंद चौपाई समा- भीक्षाकेर बतातीज बारण काची हो सो सते बीस बरस चवरंत

वे वर जानतिक वरकार को रक्षिते भारते वारे मन्य देशव आधा-को में ही किये। कंक्षत में रचित केवक राहासकाय की पी पूजार्ट क्या भागवासिंद जारतेशीहाक वरकाय है। मुक्ति के कवित्व-भीवन् का हृदय वायाचाक से ही विशेषक्र भागवान के प्रति स्वित्त से प्रोतिकार था। चीचीती, वीसी तक्षा स्वकारित को में सापने बड़े ही मार्थिक एवं में मिल-क्र्मार मगट किये हैं। क्षेत्र रामिक विचार को क्षी कावाम जीर नहीं करेंब्रायं व मार्थिय में बढ़ोंकि वात व्याह्म को क्षी आत्मातुक्व तथा मार्थक संग्य जीर क्षण दक्ष पद की मार्थिकों बहुयां हैं। क्षण की क्षण कावाम की की मार्थक विकार की मार्थिकों व्याह्म की

शामक, संस्थान कोर करका रखत की आसीरांची सहायों है। राष्ट्रपारी में की महा स्वाहरा है। को जासाहरात, केही वारत है। से की उत्तरात होंची के की जासाहरात, केही वारत शत्माकी की बहुत को निवर्शन दिवा है। उत्तरात्म प्रदानक दिये जात, पाठकों से समुद्रात है कि हता हमा में की स्वाहरात हमिला के स्वाहरात हमिला के सामसाहरात हमिला हमिला के सामसाहरात हमिला हम

( ८६ ) चारित्र का परिहार, मात्रविद्धांद्वे इत्यादि विषयों पर खत्तीसीयां

यह और वाह्यबरोधारि आयकी सभी कृतियाँ प्रेक्षणीय हैं। छोकोक्तियों का प्रयोग श्रीवह ने विश्व का त्यह समझने व हेतु युक्ति व प्रमागारि से प्रवाहीकरण के हिमे अपने शंतों में क्षोकोकियों का प्रचरता से

त्रवोग किया है। संबोध क्ष्टोत्तरी तथा प्रशासिक अहोत्तरी इस विषय के उपलब्ध बहादरण हैं। पाठकों को स्पर्य इस मंबों का स्सास्त्रास्त्र करना चाहिते। चंद चौपाई समाक्रीचना मी इस विषय की प्रसुर सामग्री प्रसुत करती हैं। आनन्दयन चौचोसी

त्रवा इसरे मध्ये से कुड़ बोडोफियां वहुत की जाती है :--१ किरे ते करें, बोडो मुख्यां मरे, र प्राणे मीत न मास, ३ सक्य हरन न बजह, दो हत्यां ठाळे. ४ जात करिये तेनी

कार्सनो स्पो. १ परना झरवा परती चाहै, पाडोधन ने पेहा। ६ पाइड वाही पीठे जाँगे, ७ रागेगी नुं नाव सरवुं हो मकार। बबनोक्ति —रीता भर मर्था डुडकार्य, जनभरिया नु

स्त्रीता मर मधा बुल्काल, जनमारचा तु पर मर । श्रुराचे हुकुम निगर रएसतका पत्ता भी हिस्त्रेन न पाने । इरसत का पत्ता भी ठावे हुकम के है क्या मक्ट्र

विगर हुकम दिलें। क्षिन्तु देशीय—"दिक नंदर दरियान, संनी क्यों क्यों क्यों क्यों

बन्धु इशाय— एक जरूर शरपाय, क्षणा क्या क्या हुम्मी मार मंग्राहि, मंग्राही मानक करें, ११। हुम्मी मारण हो सही बद्धां क्षण्यां करूव स्परि हीर गड़ियानी हुम्मी से मारून । १।<sup>7</sup>

( 60 ) थननोकि -हैनाने ने।तर् सतुष्य हैवाने सुरुक्ष पस् छातामत् विदरमान बीसी में भी इसी प्रकार कडावतों का प्रयोग किया है। जैसे--१ "आसंगो किम कीजिये रे. करिये जेडनी आस"

( युगमंधर स्तवन ) २ "जिम गहिनों नो पहिरतों हो" (शुनातजिन स्तवन) ३ "दय विवंती गायनी, सात सद सडै" (चन्तवाह स्तवन )

४ जिम भोजै कामडो रे, तिस तिस भारी दोय (अजितवीर्थ झानसार वे बार चडी नडी कार्ड की रे (नेमजिन स्वयन)

चंद चौपाई समाझेवना के भी बोटे से जनतरण देखिये:---१ "काठा छ। स्रो उद्दि गया, श्रवका बैठा आयः। तकसीदास गढ़ पाछटै। जरा पहुंती आब ।" १ ।

२ "सनक क्योड़े विग कड़, सिंडनी एवं न रहाव" १ "पर्तम बाळा किण्या" ४ वर्षों का लेख: -सुरत देवता तावदियोइ कार्डे रे वानदियोह कार, बारा बासदिया ठंडा मरे ६ खोटा कृदा परणते. छन्दो होत सहाग ।"

कामी सकामें आपही, श्रद्धा पवन के सीर। १। बीकानेर के मन्डाम परगने के तरवृते -मतीरे अद्वितीय

4 "को सुख को दुख देत है, पवन देत सहस्रोर स्वादिष्ट बीर मीठे होते हैं। उनका वर्णन इस प्रकार किया है :— (८८)

• "को जामें संस्था के मीठे होत मतीर।
जो सस्मानक करते होते मतीर।

पहुंचों की बोधी जामने के विषय में प्रचारत कोक कथा:— ८ "दह क्षीका मूंडा बरे, स्था पट मास पिरंत बनमत सिम्लु बूटी दिरे, विद्या बात सम्मन्तः" संबोधबद्दोक्तरी आदि हरियां तो राशिया के दोहों भी

मावि स्वयं ही सुमावित रूप हैं। रचनायें

## रचन

कीमत् ने वास्त्वकात से देवर इद्वालस्या तक सबदा शीवस्य इत्युक्तमात्र में सिवाय था। कमार्थ तिवार-दीवा पुरस्तरंदर-क्षण क्षिताने के तमार्थ्य में हुए से स्थावित कीमा और तमार्थ्य कीमा से स्थावित कीमार्थ्य तिवारा और तमार्थ्य को विचय के कमार्थ व साम्बी का अवस्थावत किया था। सर्वा साथ कर स्थावित कीमार्थ्य कीमार्थ्य कीमार्थ्य कीमार्थ्य विवास विवास की गये। भारत्ये विचय की विचय वाधिकार

था। बात बात एक स्वेती-हुंखी त्रियाशस्त्रपात और समर्थ विदान देवार हो गये। बारमें त्रिक विदय को दिया गरिश्वर पूर्व हेबानी बारमें हिला शार्य हमां के रारियोक्त से आपके गर्द राज्यान, बाल्य, कोट, बंद, अलंकार, ब्यावरण, हरीत, नाम बार्ग ह बारी विदय है बारमेशा और सारामार्थ होने वा बहुव परिचय हिला है। सन बारमी हरीयों का संक्षेप के परिचय करवा बाता है।



🕆 सह प्रत्य हमारी ओर से सं+ १९४३ में प्रश्नाशित हुना था :

मैत्र हुक्छा ८ गावा ११२ (६) ४७ बोडगर्मित भौनीसी सं॰ १८४८ दोरावडी

(११६१ सायन रक्त मक्क था)

( 48 )

( to ) (१) कर दर्शन समुख्य भाषाः —यह प्रत्य प्राप्त नहीं है. एक

बारहें में-जिसमें ४० योजनर्जित चौबीसी के स्तवन व पर भी हैं-निम्नोक संविम काम्य मिछे हैं :--चन्द्रायमी-मद नयह ह सांक्ष्य जीन दरसन छट्टै

क्रीयानीय वेडांच सिर्फ से पर शहै इत पट इ की मिरन मिरन वरनन करें गिरवानी ते बानसार मात्रा वरे ॥ १ ॥

होता :- विस्थानी भाषान्तें, बडी बीच तें बीच । . पूर्य अम्मादसकर्दा, उज्ज्ञ तल अरु(सिर्) कीच ।२। कोय कड़ैगो वावरी, कोय कड़ैगो मह। इसे विसम सिदंत की तूं क्या जामें मुद्र ॥ ३ ॥ बद्ध सरीवन सारते. सगर छेर कर दीन

होरा परान्धों में गविकरी, चौन तथाई कीत ॥ र ॥ नसमन सोघ विचारिये, अति मीसम नववाद षागम की गहगम नहीं, अति मोदी विषवाद ॥॥। तरक विकार विचारिये. बाद विवाद असिवाद बन्भव है रस पीबिये, पट ह की इक स्थाद ॥६॥

१ संबोध आहोत्तरी सं०१८६८ ज्येष्ठ सुदी ३ दोहर १०८ ५० ५१६३ २ प्रस्ताबिक आहोत्तरी सं० १८८० बीकानेर ॥ ११२ प्र० २०४

( 88 ) 3 नद्र बावमी सं॰ १८८१ . . 48 90 963 इसका दूसरा नाम निहासवादनी है। एं० बोरफंट के जिल्ह निहात चंद को उद्देश्य कर इसकी रचना हुई है। इसमें मुहार्थ महेकिकार संक्षित की गई हैं जिनका बत्तर फानोट में किय दिया गया है। वे पडेसिकार बीडिक विकास और सनोरकन का नवयोगी सावन है। छचीसी, बहुत्तरी आदि १ आत्म-प्रयोग कत्तीमी २ मति-प्रयोग छत्तीसी गाया ३७ १७१ s भाव पटनिशिष्ठा सं० १८६५ काo स० १ किरानगढ़ गाया ३६ - पु० १४० ४ चारित्र क्षतीसी नामा ३६ ५० १६६ ४ बहत्तरी पद ७४ प्रकार से बड ६ आध्यारिमक पद संग्रह पद ३७ प्रदर्भ ११२ गद्य रचनाएँ १ जानन्वयन चौबीसी बाह्यवयोग २ आध्यास्म गोवा बासाबबोध सं० १८८० बीकानेर प्र० २८१से३४६ 3 साध्यसमाय (वेयचन्त्रजो कत्) बाळावबोच प्रकाशित बीमद् देवचन्त्र मान १ ४ वशोबिजय कृत तत्त्रामं गीत बाळावबोप 😨० १८० u जिनमत व्यवस्था गीत बाळावबोच , पु० ८० से ६४

( 23 ) ६ भारमनिन्दा प्रव २१८ • वंषसमयाय विवास To 348 ८ शीवाची बालावबीधं To 194 ३ कामन्द्रपन पद बासावबोध (यह १४) ५० २२४ से २६२ १० विविध प्रक्रमीचर ( १ ) ए० ३६७ से ४०७ ११ विविध प्रश्नोश्वर पत्र (२) go yez से प्रश्**र** पूजा साहित्य १ नवपद पूजा २ जी जिनहराससरि सहप्रकारी पूजा द्वः सीविगवत्तासरि चरित्र प्रशासित ए० २५६ छंद निवान माळापिक्कल-पिक्सळ के छंद विकास पर बहाहरण सहित १५४ पद्यों में बह प्रत्य रचकर सं० १८७६ फारगुन कुळा ६ को बीका-मेरमें वर्ग किया। इसकी रचना स्पद्मिप, ब्रुचरक्राकर, चिन्तामधि आहि सन्द मन्थों के आधार से हुई है। सक्करवाधी ( साला ) के १०८ मणकों और मेद के मिसाकर क्रुछ ११० सन्दों की रपना दोने से इस मन्थ का नाम भी 'माळापिङ्गल' रखा गया है। व्यक्ति-रोहा-- श्री वर्राहरत मुसिद्ध पर्, जाचारक उत्साव । सरव छोट के साजु कुं, प्रणशुं भी गुढ पाय ॥१॥ माइत ते भाषा कर्ड, माशार्षिगळ ताम।

सकी बोच बाटक सहै, परसम को नहिं काम शरत

( ६६ ) व्यसंक्यात सागर सबे, ज्यना केंस्रें होता । मृत पूरव पड़दें सकत, है काता हह स्टेय ॥३॥ विश्वासन कमत की, हनमें रही मिठाना । नदीनाम के पेट में, ज्यों सब नदी सवाय ॥४॥

महोनाथ के घेट में, क्यों बार नहीं ब्रावाय शक्ता पित्राव विद्या तर महाट, तातायर ने श्रीव । कोग वहिंद हुई के दुन विश्वाद की स्त्री । शांध बेक्याना वाची रहितः हुनि विश्वाद हें हुई का क्यू दिरूप कानाय की, बंदकता किन स्त्रीत । शांध क्यू रहित्य कानाय की, बेक्याना है हुइखा मंद्र शांध रचना पर्ने सो महित्य सदुवा । स्त्रीत

्षर है जानें सभी, यह साथा को कान। (ता लंज-भारी स्था मेंगा करा, संदूष्ण के हैंग । मंतिय मंत्राय हुंगी, स्थारण की मंत्रिय संकार हुंगा भारी स्थारण की मिला, साथों मोत्री हैए । मोत्राय विकास को, साथा केंग्र विकास (१९६१ ॥ परि सामार्थि की स्थारण का साथा । मोत्रा विकास की साथ हुंगा साथा । १९७० ॥ मोत्राय विकास का साथा ।

जीका पिन दिन विराज्यों, को करि खड़े पायस ॥ १४० कंबुहोंपे मेर सम, जबरन को कड़ा ।। जु सरीरों गच्छ सकत, बरदर राज्य बताया ॥ १४० ॥ गीर्वाच्यामी सारदा, ग्रुख ते महें प्रग्रहः । वाते सरदार गच्छ में, विषा को आर्यहः ॥ १४८ ॥

वाने शिक्षा समान निम्नु, श्रीजिनकामसूरीरा । हानसार भाषा रची रहराज गनि सीस II १४६ II चौपाई—संवत कार्य फिर भय देव, प्रवत्तम माथे सिद्धसिक्षेत्र । प्रमुक्त नवसी उक्रड पक्ष, परिनौ सक्षण उक्ष विपद्यार११०।

रूपदीपते बाबन किये. इत्तरता ते केते सिय। चितामणि ते देश देश, रचना सीनी कवि मति पेस ॥१६१॥ कर्ति बस्तारम कर परित्र, होता सर्वेटिस कियो सह। बायन बालीन पंश्वित लोक, मं स कटिम स्त्रित वेट योद।।१६०।

होता—इस सी कार हो मेरके. बल किए मति मंद्र यातें ककुं भाषियी, नामै माला संद ॥ १४३॥ ॥ इति बास्तरियक संव संपर्णम ॥ समाठोचना :—

चंद चौपाई समाकोचना-कवि मोहनविजय की चन्द राष्ट्रा चौपाई पर मिरान आलोक्सा लिखकर सीमद् ने हिन्दी साहित की बढ़ी बारी सेवा की है । हिन्दों में संमयत: इस दिशा में बह पहला प्रयत्न था। सं० १८७७ विशी चेत्र करणा २ को बीकानेर में ४१३ पर्धों में इसकी रचना हुई। इसका तुछ विव-रण 'समाकोचक' रूप में शीरद का परिचय कराते समय दिया आ पुका है। यहाँ मन्य के आ दि और अन्तिम भाग कहक किये जाते हैं। कादि-प निर्वे निरुषे करी, श्रीत रचना की सांस ।

वंद कर्तकारै निपुण, नहिं मोहन कविराज ॥ १॥

अलंकार दूपन किन् , स्टिबत चढ्ठ विस्तार ॥ ३ ॥ माकृत विचा में निपुत्त, नहिं वाकी यह हेता। प्रथम राज्य दो बानके, एक पढम कर देव ॥ ४॥ ऐसें केते बानके, मात्रा अधिकी देख। यक बानके स्टिल दियों। कीजों सिस्तू अक्षेत्र II ह II अन्त-पट विनषटनी घटवता, घटता विना घटचा। सन्योन्यें सर्वबद्धताः त्योंही चंद्र चरिन्त ॥ १॥ यामें सीनं मधुरता रचना वचन संबन्ध । सगथ छोड़ थाते वहैं, सबते मित्र प्रकार । २ ॥ कविता कविता शास्त्र के, सम्मत अवज देखा। अलंकार दूसण रही, सबते अर्थ दिशेष॥ ३॥ डीनाधिक मात्रा पर्दे, स्टिक्स के के दोष। वंसै गुरु मात्रा वर्षे, सो शास्त्रे निरदोष॥ १॥

पर बावें अंते गुरू केते ही जह होच। हीनायिक साल गई, बहु गुरू मानो सोपा (११) हजादिगाठ: यर विषे कुछ करिया जुरू, नार्ट कर को हेव। परसव पहुँता जोजना, जुरू परीक्षा हेत। १। बूच्या सव वर्षितानि के, मुक्ता निवुष बहुंत । कृप्य सव वर्षितानि के, मुक्ता निवुष बहुंत। ( १६ ) मां कवि को निंदा करो, ना कहुत राजो कान । कवि हुत कविता शास्त्र के सम्बद क्रियो सर्वात ॥ २॥ मोहाजिक दश च्यार से, मस्त्रायोक नवीन ।

देखांकिक एटा ज्यार है. तसायके नायोव । सारतः महारक गाँह, सामतार किस दीना । इ।। मद भय पत्रका मात्र दिकः, साम वाम किस दीच । चैत किसम दुर्शया दिनें, संहाय रस पीच ॥ ४।। से की भोषेद पार्टित संहाय हंगनस्वति काल्यवाहत ततावि प्रसिद्ध मारोधिय मारो चैत काल्योकात्वाविती मारा कार्योद

नीमहाइहरलावर्ष रण्ये पं० बामार्थित्वय मुग्तिस्त्रिक्य पं० कहती. प्रेस सुनिवस्त्र परार्थन किंद्रीय हो। श्री सुरक्षराच्या नावे ।। इस प्रति की पत्र कंप्या ०० नीर प्रोतावर के पत्रि ६० की सुनेरसाववी के कंपर में १। मादर सुन्दर व सुनप्पा है। बाजी के किनारे पर च्या राग की लगान्य प्राणी के बाहरण है। कानेक बागों में कठिन राजों पर दिल्पी मां किंद्री हुई है। सामावास्त्री के ऐसे नादि युक्त के प्रती केंद्राव्यक्ति हुई है।

किये हुए हैं तथा पंकि व गांधा का भी निर्देश किया हुआ है।

जरुंकारिक वर्णन य वचनिकार्षे प्रवासीय स्वतुत्रबाद कान्य वचनिका—वह क्रति जयपुर नरेता त्वासारिक के वर्णन में १२२ रोही में चित्रकरण कर में रास है। जरून में नज़ावना बंद दिने हैं। इसो को बच्चिका काजावनीय टीका बड़ी समुद्द राजकाशी आप में किसी है। कल्मोदोपन — यह बन्ध वि० सं० १८४६ सिती चैत्र ग्रहः ३ को जयपर नरेश प्रसापसिंह की प्रशंसा में बनाया गया था। इसकी भाषा खड़ हिन्दी है, स्वया-लकारों की लटा और कवि की प्रतिमा पट-पट पर महत्वती है। कामदेव के साथ महाराज्ञ की तुखना करते हुए श्रीसडु ने इसका नाम भी कामी-दीपन रखा है। इसमें बो हा व सबैवादि कह विका

( to )

आहि-तारित में चान् जैसे प्रहान दिनंद हैसे, मणिनि में मणिव त्यों गिरिन गिरिंबय। सुर में सुरिन्द सहाराज राज बुन्द हु में, मायनेश नन्द सुस सुरतद सुक्रन्द सू ।

कर १७७ पद्य है।

अरि करि करित श्रम भार की फर्मिन्द मनी जगत को बन्द् सुर तेत्र तें समन्द् यू। आशय समंद इन्द्र सी बंद स्थाकी सदन कर गोविन्द प्रतये ब्रदाप नर इन्द्र थु ॥१॥

**अ**न्त :--संवत सम्बन्धी बोडा :---रस सर अस गत्र इन्द्र फुनि, माधव मास चवार। सुच्छ चीज विव चीज दिनः जयपुर नगर सकार। ७३। वड सरतर सिनलाम के शिष्य रक्ष गणि राजा।

क्षाममार सनि मन्त्मतिः आग्रह प्रेरण काज lest पन्य करी पट रस भरी। बरनन सहन अलंह ।

शहु साजुरिता में सातीत अंस नंत माँ त्याप त्या हुस्तरी सर सार वह पति, तस मोतिन शहरती स्थान स्थान सहीना जान नह, रच्यो क्यारी त्यारा अर्थ-तम सरता स्थान है, रच्या कर्यों रच्या मिक्सा । में या यति को स्थान है, है रम जाने नाम तथी ही मोसप् हुस्स्थलार रमाने थे। या तो सामाय सिवारीयते स्थानीहित्य कथा सम्बद्धां । संस्था हुन्य स्थानीहित्य कथा सम्बद्धां ।

पूर्व हेर वर्षन झर-व्य अथ १३३ वर्षों में है। देवती वर्ष वृष्ट बंगाब का हिनेद कर हार्गिणमार निजे वा मांग किया के यह दश होते हैं सिकार वर्षे ने बच्ची क्रमीका होता और वर्षक होता का क्ष्मणा परित्य हिना की रहणा शाहित व गोत्तरिक वह गोत्तरिक स्वाप्त करता है कर राज्येति असूत क्षमके अस्त्र में स्वाप्तित हर होते वा स्वयं प्रक्र करण मार्गिक हरा होते वा स्वयं प्रक्र

## प्रकाशित कृतियां

सीसपू की इतियों में इस अन्यके जतिरिक्त कवितय श्यवार्थे जन्मन सकाप्रित हैं। जिसमें १ जीविषणर स्त० २ मबताब स्त० ३ दृष्यक स्तवन दसारी बोरसे अकारित कमस्यसम्बार में, ४ देव-चन्नाकी इत सासु सरुकाय दसा श्रीमत् देवचन्द्र भारा २ में स्वा ६ जात्मिन्त्र, रंपशिक्षमध्य को पुरूकों में मुठ त्या हरका दिन्ती महत्वाद भी स्कारित हैं। दादाधाइय को पूजा, सी जिक्तपहर्ष्ट्री परित्र (काराई) में सिन-पूजा-महोदित में महा-सित्र हैं। भीजानन्त्रवस्थी हुत भौतिती हैं अध्यात्वाचे से वहं केदार मिन्त-मिन्न स्वानों से स्कारित हुए हैं। सानन्द्रपत्त चौत्रीसी सहस्वाचे को आवक्ष भीवती मानेक

ने प्रकाशित तो किया है पर बह संस्करण सर्वश्रा धन स्तीत परिवर्तित रूप से प्रकाशित हुआ है। शीमतु ने बाळानबोध की भाषा राजस्थानी मिश्रित क्रिको के साथ साथ इसमें श्री आजंद-पन जी बाहि के पर्दों के अवसरण, प्रसंगलसार भावों के स्पष्टी-करणके हेत स्वतिर्मित तोहोंको "सदक्ति" को संसा से संदक्त देखा कृति को विशिष्ट अवस्कार हुण बना दिया है। इसमें शीमदुने आनन्त्रपन्त्री, जिनराक्षसरि, वशोबिवयती, सोहनविजयती, देवपासकी, कारिसाम और कवीर की नशिवों के सवानरण बदन विशे हैं जिससे साहित्यकी रुच्दिसे भी इसके महस्वमें स्विन-श्रद्धि हुई है पर प्रकाशक महत्राय ने वन समञ्जर विकर्षों को विकास कर काल का प्राप्त हरना कर दिया है समा भाषा को भी वर्षामान गुजराती का रूप दे दिया है। जिससे सत्काशीन शाया. केलतपटति और आसातश्रम तथा तळापती वचनों के बास्वादन से पाठकमध्य वश्वित रह गये हैं। श्रीमदने वहां भी ज्ञानविमस्तुरिजी के बाठावबोध की मार्मिक समाछोचना की है. प्रकाशक महोदय में दन नाक्यों को सर्नमा निकाल है अने ते बाहावचोच प्रदित है। अध्यास्य ब्रान ना शिक्षर करत विश्वसान बच्छा सो सम्मत्यवती महाराज कर तेवारी मेनीशी बाराविह है। दोना कथ्यारा ब्रान थिये सब्दे विरोध क्वापानी कांग्रिय वादशकता नथी। बडी साहर पुरुषे क्यारे तेवारी चीचीशी सन्ते है तथा रेडु अध्ययन करें है लगरे उरत हेमाना अन्यज्ञाल मां सम्पादन हान नो विश्वस

प्रमद्ध बात के चौनोंधी करर ने बातावशोध प्रामीत गुड़राजों भागा मां कस्तरिकों होना थी तेती असुनित गुड़राजों भागा मां प्रमुपयों में के मां जब मां इसेकों हो। कारण के दे प्रमाणे कस्त्रामी सूचमा जमने करिक व्यवशाक्षिणों तरफ भी पर्वेखें हती। दे पुस्ता जमने वालकिक तालावा भी वरकर भी देखें जभा तेता करिक हो को दे प्रमाणे करता गांवाचमांच कहाँ बताबेडों जमान केंग्र मांच या दु करता मां आहेंकी नथी जैसी जमान केंग्र मांच या दु करता मां आहेंकी नथी जैसी

सम्बाधिओं ने हवे झान नो उत्तम एकारे जाभ बचा संमाद छे। २२ स्वयाों के कर्प पूर्ण करते हुर-प्रकाशक दिखते हैं कि— इति जीजानन्त्वनमी हुउ वायशियों। जा वायशिस स्वया नो वाळवयोच झानसारजीर हुण्याह सो रही संबंध १८६६ सा भारतपा हुत 19 सा रोज बागूर्स वर्षों है पतारी आराज कर स्वारा रूप वर्ष हो रहे वे रेपने वे रामणे दे प्रारा है वर्षों हो की बीती कर करन मानवप्रत्यानी या किया है तसने हुता है मोतावास करेंचा हात को देनी कर करा मानवप्रत्यानी हैं के उपने हुता है मोतावास करेंचा हात को देनी कर कार्या मानवप्रत्यानी कर में प्रति हो के पत्र हो के प्रति हो के पत्र हो है के पत्र है के पत्र हो के पत्र हो के पत्र हो के पत्र है के पत्र ह

पासकिन साइरा रूप तुं, चरम जिनेसर।

प्रधापक करोदय में काजायचीय कहां की तरास्ति भी शका-रित नहीं भी सामन है काजियतहाहिकी रह की हूं रहा कालोचवा में प्रधापक कीर कामात्री महोदय को सहीच्या का नंता तिकाक हैने को जिंदत किया हो। प्रधापक कालाय ने तिन है स्वकानों को आजव्यक जी का मुचित किया है में की कालासादती के पाकाबनोय में किसे कहारत सीहा बेंदी करायता की तहा हो।

अनुवार जागा है वंश्वप्रका क्रिया कारण हात है। तैन पर्के क्षा कारण की परिपरित्त कर के आधील हुन है। तैन पर्के व्यापक क्षा हुए। "आवंद्यकों कर गीरिकी अर्थुक क्षा केट स्थापक का तिथा जानक प्राप्त के बंधी है। इसमें क्षात्रिक्शायुर्ध्यों कर गीरीओं कारण जिल्ला है। तर स्थापन में तह अर्थाव्यक्त केट गाँव कर हो है। स्था के अर्थाव्यक्ते क्षात्रीक्शायुर्धि का स्थाप भावत आई किंद्र गांवाल भावती केट कारण है।

शामंदणन चौनीती के २º स्तमनों पर वशोधिकाओं के बाह्यबदोध स्थाने का उसेंक निहला है पर यह सहस्य है।

( 202 ) "चवरमा गुवरुमाना अंत बी सिद्ध में विसे बतागर

अवस्था होय तिम देवचन्य संवेगिये, आतन्त्यम मी चौबीसी महाबोरजी री तक्ता में कहा<sup>'त</sup> —"बातन्त्रपन प्रमु जागे" ( मश्चि जिन स्तवन वासा० में )

"दीय तक्त जानत्वजन नाम ना अहमदाबाद ना अंडाह

साहि थी, दोव कानविमञ्जूरि दोव सावन देवचन्द् संवेगी क्रत देशी ने वारी मति तपन रचना करवाने कहती इति सर्वक [ पार्श्वप्रमु स्त० वास्रा० ] "आनन्द्यन प्रमु जागे" पर को देव चन्द्रजी कत कथर

स्चित किया है वह ठीक आनम्बयन सामासक स्वयन हैं प्राप होता है अतः यह कृति भीमद् देवचन्द्रभी कृत होनी चाहिए। श्रीकानन्द्यनजी ने समासन्भव २२ स्तवन हो रचे होंगे। व महाबीर स्तवन जो जो पूर्ति श्वक्ष्य रचे गये उपलब्ध है, इन्हा यगीकरम इस प्रकार है-णार्जनाथ स्तवन

आदि पद

प्रकाशक-१ प्रवास प्रश्नेकत पार्श्वना या० ७ टहासह स० माणकर्षह मे डामाई (जाल्यामोपनियद्) जैनयुग वर्षर में भी ९ पासमिनताइरा रूपत् या ७ ज्ञानसार टबासह ४० प्रकरण

३ अ वपद रामो हो स्वामी साहरा गा० ८ देवचंद्र मी टवासट प्रo

प्रकरण रहाकर भाग १ माने क्यंद चेळामाई प्र वास मन् प्रमुत्रं सिरनामी शानविमछ टवासह प्रकृतिकार स्तवन नं०३ काटदागा० ७ का छपादै पर इस्तक्षितिक प्रति में गा०८ देखों नवीहै।

महावीर स्तवन

१ बीर त्रिनेसर परनेसर जयो गा०७ दशसद ४० साजक्वेस वेकामाई दशसद ४० जैन जुन वर्ष २ कड्रिकेडयजी दशक २ चरन जिनेसर विगत स्वरूपतु रे गा० ७ सानसार दशसद

प्रकार प्राप्त स्वर्ण होता है प्रकार स्वर्ण स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ण

युन वर्ष २ दू० १३६ श्रीमद्द के वालावचीन को साठ फोरसाई भगवाबदाख ने भी प्रकाशित के स्वतं है पर वह भी भीतवी मात्रक के ज्वास्त्र हो है। तथा नवदाव सहद नवदाव साहित संबद में भी प्रका-शिल हुआ है पर वसे भी गुजराती भाग के सुनि में डाक्स दिवा

नवा है। आपके कई पर कई संबद प्रत्यों में प्रकाशित हैं। आस्तिपूर्ण कृतियें

आत्तपुर कृतय

आवक भीमसी मानक महत्त्र्य ने जतविकास, विनय-विकास और झामीकास आदि का संवद क्षेत्र प्रकारित किया है मिसकी प्रताचना में झानानन्द्रओं के रचित्र झानविकास को सीमद झनमारनी का सुचित्र किया है।

इसी के आबार से हिन्दी जैन साहिता के इरिहास पू० क्ट में सोसड्के विषयमें पं० नाजुरासती प्रेमीने इस प्रकार किसा है:— ( १०४ ) ८ झानसार वा ज्ञानामन्द्—"आप एक स्वेतान्यर साशु थे।

संबग्न १८६६ तक आप जीवित रहे हैं। स्नाप अपने आप में साल रहते है और कोगों से वहत कम सम्बन्ध रखते थे। कहते है कि आप कभी कभी आहमदावाद के एक स्मसान में पढ़े रहते है । सरमायपद अमे साथम संग्रह गाम के संग्रह में ज्ञानविकास भीत बंद्यालांस लाग से हो लिली पर संबद अपे हैं जिनमें हमसे ५६ और ३७ पर हैं, रचना अच्छी है। आपने आनस्यस की चौदीकी पर एक बत्तम गुजराती टीका दिसी जो छप चकी है। इससे आपके गतरे आस्मानमंत्र का पता क्ष्माता है ।\* देवीची के स्पर्य क कथन में कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं. सीमद के कभी भी सहस्रदासाह के उपसानों में रहते का प्रमाध नहीं देखा गया । हो, बीधानेर के स्वसाओं के निकट रहना कहा का सक्छा है। ब्रानसार और ब्रानानन्त होतों श्रिष्ठ-श्रिक्त व्यक्ति के किन्तु हानानन्दक्षी के पहें को झानसारकी ब्रक्त बताने की भ्रमना के अपादक शावक जीमसी जायक है। ग्रेजी जी ने तो अनका अनुकाण मात्र किया है। वस्तुतः **हा**नविसास में झामसारती वा एवं भी पद नहीं है। झामामन्दली काशी वाठे मीमुन्तीओ (कारिजर्नाह) सहाराज के शिष्य और सप्रसिद्ध की चिदानन्दजी सदाराज के गुरुआता वे। झानासन्दकी के कम्मान में हमारा टेख 'जैन सत्य प्रकाश' में प्रकाशित हों क्का है।

कार्शवसन बहोत्तरी टबो—श्रीमद् मुसिसागरस्रिकी सहाराज ने आर्गवसन पर संबद मानार्थ के इ० १४६ में श्रीमद् झानसारजी की इस कृति का इस प्रकार शब्देख किया है।

( 80% )

के वो कहा दो पांची पर सीकड़ या चामावरीय कावकर है वो क्षारी कर के कर उन्हें ने हुई हुई हुई हैं। बामावराधी का व्यक्तित कर पूर्ण एक्ट के कोवारी रूपनार्थी करती जीवन प्रश्नित के अपनेशित था ने भारपांची रूपनार्थी करती जीवन प्रश्नित हैं। सामग्रीकित था ने क्षार्थी व्यक्तित वर्ष रपमार्थी गर राक्तित करता है। स्थापित वा नामग्री क्षार्थी कर रपमार्थी गर राक्तित करता है। स्थापित वा नामग्रीक के रप्तार्थी करता करता करता है। स्थापित करता है। हो सामग्रीक हैं। इस्ति क्षार्थी हो कावकर पार्ची गाँगिय हो कावकर है।

में विभिन्न कवियों द्वारा रांचन अट्राव्हकियों में से योड़ी सी चुनकर यहां दी जारही हैं जिनसे समकाक्षीन व्यक्तियों का भाषके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जो सरक्ष्य वा रगर हो जावता । ( १०६ )

(१) श्रीमव ज्ञानसार जी गुण वर्णन व्हेंचंद्र सत् क्रपत्रयो वियो विधाता स्रोपः। देव नारायम दासम् को असम गति अछोच ॥१॥ अवारे इक्टोतरे, बाक मेंड री बाँद मात श्रीवन हे जनमीया, सांड जात नर सांड ॥२॥ बास जेगसे बेंत सुं, दीवां जनस उदार। बरस बार बीडी गया, बारोतर री बार ॥ ३॥ श्रीक्षितकाशसरीसकः भटारक भवासः। बीकानेर ज वंदिये, चडती गति चौसाछ। ४॥ सीस बदाला बतमती, यह भागी यह रीत। रायचंद राजा ऋषि, प्रगटमो पुण्य प्रबीत ॥ ५॥ तिय पार्ट इस कित तपे. साम्बी मो निरक्षेता। बावें बंबर बीलरें, तरण पसारे तेजा। ६॥ प्रमुपे सरलसिंह पत्रः मिल्बो अनम रो मीतः क्रानसार संसार में, आसे छोड़ अदीस ॥ ७ ॥ सीस सहामस साहरे चलि आहे भी राजा। स्वमे हो मैं सामस्यो सानर दीड़ी आज ॥ ८॥ वाबाकी वायक अस्तै अस्त्रे राहोडी राजः बारतर शुर समजा बासे, रतन बासे महाराज ॥६॥

(२) सोस्टीया दृहा कायम जस कीपाइ, डाहो छीवो छोक में। परव अमुद्र पीकोड, मीको ते होज जारला ॥१॥

( tow ) जणभी घन जायोह, भर तौ जैहडो नारणा। भपति मन भागोह, संवारी सिर सेंडरी तथा

रथ मद चाहर राज, पुण्य प्रमाणे पांमीया। जाउम जोगीराज, छोडे बैठो खिनक में Hall सो बेंद्दो तुंदीज, करणी करडी तुंकरी।

बाबा धरमी बीज, निहन्दे राखे नारणा ॥४॥ मारण कारण न्याय, गृहो तुं भरीयो गुणे। बिर जस कीरत थाया निरमक जगमें नारगा।।১॥ सीत तभी सनुप्रारु सुनिवर मॉर्ने सीज सुं।

अवसर में क्यगार, सदा करीजे सेग सं ॥६॥ जाणे जागणहार, मूरका भेद न जानही।

पांपण रे छत्कार, चित्र में समझे चतुर नर ॥॥। इक थन तेत शिनाय कर, इक पन देत हसंत ।

संसिर करत पत्तमार तर गैडरा करत बसंद ॥८॥

(3)

दुदा:-में बंदन निसदिन कर्स, पछ पछ बास प्रांत । वहे इयाळ नरांन जूसागर जुद्धि सुजांन ॥ १॥

-सर्वेयौ --सीक संशोध समस्तर्धे सागर ज्ञान विवेक गानन के भारे । अर्थ घरम अरु मोख सुगर्चे जोगहुग्त के जानगहारे।। काम किरोध कंसार इटावत कर कवड कवंड तें त्यारे । सभू न सेख्छ लेख निसंह जुहाथ खडन श्रमा वरवारे ॥१॥ क्षमा क्षेत्रर क्षान शुपती व्यक्ति वगतर वारियं। क्ष तरकी मत्त मंदप सथ समाही सारियं।।

( tec ) क्रिय तथी संगाम स्थायी प्रेमपाकर पारियं। सेळ सम रख देश क्षोड़ा पैळ पांच मारिवं ॥१॥।

वहा:--पांच पचीसुं पेतके सेते इसमें द्वार। श्वनहद काले यगन में, जहां संवद्दि रंकार ॥१॥ कंड सदर्भ कं जीवड़े. सो कड़ीये निज सर । मदारोब वाचे वस.साना रदेन नूर ॥२॥ नर चंद व्या भक्ष्य है, सहिस्र किरमञ्जा सुर। मिठवी अंबेरी भरम सन, गबी करम अप दर ॥१॥ गिरवा गोरसनाय क्यूं, दृत्त क्यूं दृरस द्याछ। ऐसे जरी नरानम्, पूरव परम क्रपाछ ॥१॥

परमारव स्वारथ सक्त्य, वचार्वत विश्वसंत । सपत दीप सोभा करें, महिमा कोट वर्मत । १। क्वजूबा पेंई\*\*\*करो, तुम दाता में दीन। मै तो महा मशीय हो, तुम हो वहे प्रशीय । १।

(8) **बा**नी देस नरांपण गुरुजी, सक्छ होक ने समस्त्राया। बहुरुक्त वर्शन थप अली भूपति रे पिण सन भाषा । झा० ।११ देवन के सी खुद्ध किंद्र देखें, मानव भवा की पद्धाया ह उत्तर दिस्मी जुनुष्यकी स्था <u>स</u>ं, नर भय इस्रदक्त छावा। **सा**० ।२। ( १०६ ) देखन में तो जोनी अंतम, पीर पैकंबर सब आया।

श्वामी सन्तारती सुराचय पूरा, चारावह को बही गावा। कर । हा यह चत्रासी में गिरामा गिरासा सुन्त गीनत में गिरा रखा। कर्मा प्रवासी में गिरामा गिरासा सुन्त गीनत में गिरा रखा। इस अरे में शोम नारायच, चर्रावत देवत पूराया। चरण धरण साथा सब डोकन की, जरेहिल दुविर काया। इस अरे ( सुच्यानी संबंद)

बक्क पुत्र परतीन ताय है। कुए में सोबा है पार्टी। इस कहुमां में वर्ड देशका, पार्च बंद है मत्यारीं। काक गोरा तब पीर कहा है, हुया परदार हूँ हैते मोराह मोराह पहुरत कार दर स्वाद हैं, हो माराह हुए हो। सुरू मताय कहा किया प्रशासन कार्य मारा सुक्कारी गारा तीन की बात मार्गी माराह कुछ की की सामान कहानी बड़े बचन के खानी, पहुलीर है स्वादमा में प्रशासन की सहस्त हुए है, कोती में तें क्या प्रशासन की हुए होंगी निस्तासन खानी करपायर, कुछ परपण हूँ हैं। स्वादास की हुए मोराह हैं। इस्ता में तें क्या प्रशासन की हुए माराह है।

ब्रश्यन देक्यां सब मुखकांग्रे कविषण मूँ उद्धरंग करें। हाथी पोड़ा और पास्त्री, सरतर गच्छ कर तेत्र सीरे। संबत कठारें वरक पोरासिसे, कागुन मुद्दी चौदक दिवे। सुद्दी होच विकांगा माहि, क्षपाराम सुति गिर्मे ॥३॥ स०।

( 880 ) (4) बोडा:--आरंभ यारा ईसवर, नर कुण रुसे नराण। गड सरवर पढठे गुमर, ससदछ वनी भोग ॥१॥

सिंद न भावे मीडरा, इदयिया गण्ड छाल। नर पुर सिरे नरागरा, काश्यक यह स्थल कात ॥२॥ दूरव पश्चिम पेक्षीया, जती दीठा सह स्रोध । नारायण नर पुर सिर्दे हको क्षिके घर होथ ॥३॥ सत्तवादी जतीर्था सिया, जत मत गोरस केंग्र ।

प्रनिराजो नारायण प्रयटः निरुपक्ष रेडिसी नेम ।।।।। मायक ओपी तेहरा, तेद च्यार अस सांगा सराज्ञम नारण कोपरतः स्तरम बंस तक ताळा ॥।।। मरायण सर पुर किरे, जलको बीको न जायो। सिथ चेंको रार्था प्रतम, अवतारी शंश बाबो।॥॥

( चतुरमुतजी संबद्ध पश्च १ से ३

(9)

बोबा :- जुल में नारायल वर्तीः सुरकृष्ट राजीसरूप। काता वृक्ष पर बीसीया, शृक्करी नवावे अूप ओ सन नेग अपार बार्ग नहीं रागा विदंग। को पुरत असवार, जग में नारायण सती॥ ओ सम बस्त अपार, हालै कित वादयो हस्रत । इग मार्चे असवार असीया निज सोकड वती।। (१११) भाजा नदी आपत, नर पाइल डांग्रें नदी को अंब खेकड स्थान, जो मेर देवट पैटे लती। पोड़ा:—परममफ किन राज्ये, ज्ञाननार पर्यान। स्था सीडाई पालें सदा, पहुँ तपस्या कोन॥

कवित्तः --पंक्षित प्रयोग क्रान्त सहरो सञ्चद्ध जैसो, काटे अपकंत क्षेत्र, बूर ही गयो रहे। पंचात वारे साथु गुन ही अंग विचारे, प्रक्रित बराग हिरवे क्षमा जीयो रहे॥

शिक्षद्व नराण बरेन क्ष्मा काया रहे। विद्यमान देत है वक्षाम सब झायककुँ, भाली भगवंग सूत्र करवा को हवो रहे। महीचे विचार देखो ऐसी झुनिशक्त कुँ,

बोहा: सामु संवी विद्याल जुड़े वह वह वह नहां हो। बोहा: सामु संवी विद्याल, अयो मानेश्य वह । सुक्क संवीत आनन्द बयो, माने वृद्धित वह ।।हा। अनुस्ता की बूंब कुं, क्यों न कोक टॉक । सेंग्रे सुन के सींग में, सुने हो में बांक।। नवन बचन कर साविका है सबके इस्टीर ।

बहुरता को बूच कुं, तक न कोक टाक। कि साम की साम की

सबैधा :-- शुक्ता में गोपाक कमक में कमक नैन, सेवता में शीताराम वनमें वनवारी है।

## ( ११२ )

केल में बाहारा चेरेकी में चतुरसुन, केवता कताया नारा पाती नारी है।। गुज्या वहां में तिकेश जाकर में जलनाम, मीतियम मदन न मेंदी में प्रारों है। क्ष्म संबदी में शकेहण देवली में केलोराय, देखी नाराण नाम पुत्ती कुळवारी है।। (१०)

( कवित्त बाबाती श्रीनरागजी को कहारे सेवग नवस्ररायकी की अवसेर सम्मे )

सोभव गुण सागर, है बुद्धि को उन्नागर। गुनियन को आगर सो बड़ी जैनमधी है।। सबहो विश्व सायक, है असत से वासक। वे दीवें गण्डनायक, वों कान्त इह रही है।। गंबचंदज के शीश तेरे यशकित दिशा। न सीह संतीप विच. ओपे अविक सती है।। क्षि करे नोठठाठ आक्षी वाणी है विशास । -यो वाता गरुववाल. ऐसी नाशयणतती हे ।। कविता में पुनित ऐसी शीत शतनीत है में। जीव के प्रवस काम, कीव जल बंत की ।। करमें विश्वकरमां सो, हुनर हजार जाके -वैद्यक में बान सब जोवक संवर्तत को ।। भोषि भव जीवनको गीलस मो ब्राम थाने । सान दासराथ जाने वान दिव संव को।। भिमसामसूर चंद्राय शिल राजत यो। निहर्षे नरानवां है भेष भगवंत को।।

-







## ज्ञानसार ग्रन्थावली-खण्ड १ ज्ञानसार पदावली चौत्रीमी . .

?-श्री ऋषम जिन स्तपनम राग भेरव-( थठत प्रभात नाम जिनजी को गाईयै-यहनी )

ऋषभ जिलंदा, आसंदर्भद संदा, याही तें चरम सेचे. कोटि सर इंडा ॥ ऋ०॥ १॥ मरुदेवा नाभिनंद, अनुमी चकोर चंदा,

व्यापरूपको सरूप.कोटिज्यं दिखंदा॥ ऋ०॥२॥ शिव शक्ति न चाहं, चाहं न गोविन्दा।

इग्नसार भक्ति चाहु, में हु तेरा बन्दा ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ २-श्री प्राचित विन स्तवनम

राग मेरव-( जागे सो जिन मक कहावे, सोवे सो संसारी )

मित जिनेसर काया केसर, त परमेसर मेरा।

सेंद्र बद्ध सविश्रद्ध सकि मग. प्रापक है पद केंग । अ०॥१॥

अकल अभूरतीक अविनासी, बातम रूप उजेरा ! मलस निरंबन अकल अकाई, असहाई पद तेरा ॥ अ०॥ २॥ . (3)

ष्पत्र ग्रहती चिदयन ष्पनहारी, व्यक्तिश शब्द घनेरा ॥ । दीनवन्यु हे दीन दयानिधि ! ब्रानसार तुहि चेरा ॥श्र०॥३॥

३-थी संभव विन स्तवनम्

राण भेरव (राम मंत्र भात १ इरे ९, दूर राण कदि ९ गाम जाम कदि इरे इरे ) समय संभय संभय कदि कदि संग्रु साह्र मित कदे कदे । संग्रु सम्भू संभव नामा, पार्ते मान मित करम गोदे ॥संगारि॥

सक्ष स्वस्य समय नावा, यात मन भाव स्वयः यह ॥४०॥८॥ संभव संह सर्यभू श्रीस्ना, इह सङ् भिष्णात सर् । राज्ञिमंत्र निन वर मंत्रा तें, कत्रक घर्दै नांहि लहें ।सं ०।२॥ सम्प्रोत मिण्या परिवालि पर, विट यह असला सहर वहें । ग्रानतार कदि उन संस् में, समयं हव न विश्व कहें ।सं०।।॥।

४-था व्यान्यस्य विकासम्बद्धः
पन् वेद्यावसः
पन् वेद्यावसः
श्रमिद्धंदर व्यवसारी सेरीः, में ह शक्ति विद्यारी ।।श्रमः।
पवित उत्यासनिक्षःमानी, पाक्षी योग (विद्यारी ।।श्रमी।।श्रा।
वेते मृक्षित उत्यार विक्रम व्यक्ति, सेरी वेर विद्यारी ।
पन उत्यारी कमने विक्रम, क्यू नाही उत्यारी ।।सेर्गाः।।श्रा।
पन उत्यारी कमने विक्रम, क्यू नाही उत्यारी ।।सेर्गाः।।श्रम

प्रशासन \* मनेस † दत्रे

( २ ) थोरे करत बढि वात सिद्ध हुँ, क्युंन ब्यालस टारी । व्यवसर समस्री विनती करहुँ, झानसार निस्तारी ॥मे०॥२॥

४-मी तुमित किन स्वायन्य रात मेरा (जाने भो किन मक ब्हान्), धेने भो संसारी ) सुमति त्रिकेसर वरस्य शास्त्र महि, कारख कारख तिरख की ॥ यहिशातमाना स्ट्रोड कारमा, अन्तर जातम आर्थे। विराज जोगें कराय साम्र की, कारखना सदमाने ॥प्रः॥१॥

त्रिन सरुष संत्रीमें आतम, समबाई पुख चीने। समबाई पुख गुल्ड अभिन्ने, आप सुमार्चे लीनें।सु०॥२॥ चारम सुमार्वे आतम परता, व्यापकता सरवेंगें। जानवार कहि परख सारख की, जातम बरवस रोग !!सु०॥३॥

ज्ञानसर कोई चरक संस्क की, जातम ज्ञारक रंगे !!सु०!!३. १-जी व्यवस्था जिन स्वयम् राग देशाज बदम बस्र जिन तें सुंदि स्वामी, तहीं मेरा कांतरपासी ।

षद्भ बद्ध जिन तुं सुं हि स्वामी, तुर्ही मेरा व्यतस्थामी । हुं बहिररतम कुं व्यवरूपी, तुं परमावन सिद्ध सरूपी ॥४०॥१॥ हुं संसारी मवि विवकारो, वें मरमादिक दूर निवारी ।

हूँ कामाहिक कामी रामी, तु निकामा परम विस्तरी ॥प०॥२॥ हूँ वह सेनी वह भिचारो, तु व्यातमता परचित घारो । होत होन तें करूवा कीवें, ज्ञानसत्त ने निव पद दीवें ॥प०॥३॥ ( ४ )

७-भी नुगर्स किन राजनस्

एम देखावस ( मेरे बसी पादिने )
श्री सपास किन राहरों. सच दरसम् चाहाँ।

श्रा पुरस्त । तम प्रकार प्राप्त प्रमुख्य प्रस्ति । व्याप्त । व्यापत । व्य

विवहारी नय बापतां, बत ही उलसाठं (११वी।)२॥ वस्तु मती जिन दर्शनी, तसु सील नमाठं । ज्ञानतार जिन पेव नी, मैं मेद न बार्ठ (१थी।।२॥

--- भी क्याप्य कित स्तरूप्य एक रामिति (इंड्र किन नक्सी क्षित हो न क्सी) मञ्जूषी समस्यापी नहिं समस्ति । ज्यूं ज्युं त्युं दर कर समस्याद्धं त्युं (ज्युं उन्नयं आप-॥१॥) व्यासस्य सर्वे को मारू, ती बांचूरी वृद्धं । व्यासस्य सर्वे क्षेत्रं क्षाप्य होती, वे तक्सी ने तुर्व्यं । ॥१०॥१॥ चन्द्रसञ्ज्ञ की बरेंच साहते, ती क्ष्यूं । बहिन्दर्सः ।

म्रानसार कडे मनुष्मा नै. ती क्य'ही व्यांस्यां सक्तै ॥**म**०॥३॥

वाठान्वर--१ कोई २ सुक्षमान्य ३ सम्मी ।

( × ) १-भीसविधि जिल स्तवस्य दाल (रेजीय जिन धर्म कीजिये) सुविधि जिनेसर ताहरो, मत तत जे आर्थी। ते मिथ्या मति नवि इसै. मत समत न तासी।।स०।।१।।

थापक उत्थापक मती, ए सरव ममची। तिह किया जिन मत देम नै, मति समस्तै समित ।।स०। २।। ज्ञानसार जिन मत रता. ते रहिन' पिछायी।

शद सपरसित पत्मानी, अनवव रस मासे ।।स०।।३।। **१०-श्रीशीतल विन स्तवनम्** 

दक्षमा राष्ट्र साम प्रसामी ११ दर ११ थांद्र' लेखी चोखी राख'. उलमयां उलमख ठाम ॥मना०॥१॥ थां महि छ नहि तुमः बाहिर,शीतल शीतल धाम ।

रांमयौ मिथ्या ताप समावख, जिन गुरू तरु आराम ।।म०।।ऊ०।।२।। शसी जनम धकी मित्राई, सारची है शम काम । शानसार कहै मन माता. भाषी दाखी नाम ॥प०॥ऊ०॥३॥

११-बीधेग्रास विन साननम्

राग वेकापक-( पद्म प्रमु जिन सहरी, सुमः शम सुहावे ) भी भेगांस जिन साहिया. संशु घरत हमारी। समस्य सामी स् मिल्या, रहिया जनम भिसारी ॥श्री०॥१॥

पाठाम्बर —१ रहस्य

( )

राग—वेतावत शासुपूरुष किनराज नी, सुद्दि दरसय सामै । मत-मत ना उनमादिया, याँडि जनम गमाने ॥वा०॥१॥

मत-मद नी उनमत्त्र थी, तरबातस्य न बुक्तै । राग दोष मति रोग थी, पर भव नर्दि धक्तै ।।वा०।।२।। झानसार जिन धर्म नै, सग नय समबाई ।

श्चानसार जिन यम न, सच नय सम्बद्धः । भनुसामी ने संबन्ने, भारतम उकुराई ॥या०॥३॥ १३-वीविमल वित साववन्

??-वीविमल जिन स्तवनम् राग-व्यक्तिगक्षां मार्ड् मेरे विमल जिनेसर सामा ।

आतम रूप नौ यंतरवाधी, परवामै परवामी ॥मा०॥१॥ व्यवरोषी गुस मबीय अमेरी, साधकता नी सिर्दे । तेहिज सकै तुं दृहि तारक, पेतनता नी खाई ॥मा०॥२॥ रूप अमेरी याकी अमेरी, विमस्त विमस्तवा मार्वे ।

रूप अन्य राज्ञा अनदा, १०५७ । १०५०। मार्च। आतमता परकासन प्रयोगे, ज्ञानसार पद पाचै।।सा०।।३।।

( 4 ) १४-भी भनेत जिन स्तवनय राग वेशावत-( पदमपम जिन ताहरी, महि नाम सहावे )

तुंही अनंत अनंत हं, बलि चरण नी चेगी। मानं मेल साहित करवी, ती ही अवगुख हेरी ।।तु ० ॥१॥ चक मरथो चाकर सदा. ते सनग्रहा देखी।

की सेवक स्थापी क्याँ, स्थी गतिसी लेखी।।त'०।।२।। सी गुनदा बगसे करे. स्वामी सलक्षी है। ज्ञानसार नै साहिया, नित पद सौंपीजै ॥त. ०॥३॥ १५-वी धर्व जिन स्तवनम

राग पंचन-(शास मन मोक्क रे श्री०) धर्म विनेतर तक सक्त धर्म मां, मेद न दोय 'क्रामेद रे । सत्ता पढ़ी धर्म अमिन्नता रे. तीस्पी एवडी सेट रे ॥६० ॥१॥

राग दोष मिथ्या नी" परशित है रे. परखमियी परिखाम रे ।

हं संसार तेह थी संसक्तं है, ताहरूं शिवयद थाम रे ॥४० ॥२॥ त् नीरामी त् ही निरमदी रे, निरमोही निरमाय रे । जल जमर तुं अस्य कव्ययी रे, झानशार पद राय रे ।।घ० ।।३।।

प्राथमस —१ मही व २ किटवालां

( = ) १६-धी सांति विन स्तनसम् राग सारंग

वर मद वनम गयी तद चेत्वी पाछल वृही पीठें लागे, थेस्यी सो ही न थेस्यी ।।व० ।।१।।

शब्द रूप रस गंघ फरस में, अबह न्हत अवेत्यी। संदर करणी सुणावां सिरकी, बाश्रव मांडि अमेरपी ॥ज० ॥२॥

संव जिनेसर ज्ञानसार की, मन कवड़ नहिं जेत्यी ॥ज॰ ॥३॥ १७-मी संस्थाय वित स्तवनम् (कडा शक्तामी जीव कं)

कुन्धु जिनेसर साहिया, सुन चरत हमारी । हुं शरखागत ताहरी, तुं शिव मन चारी ॥इं० ॥१॥ शिव मग ने खबगाइतें. तें शिव गति साधी ।

व्यातम गुरा परमट करी, व्यातमता लाधी ॥६'०॥२॥ दीन जास करुशा करी, श्रथ मार्ग बताये । ब्रानसार जिनधर्म थी. शिव पदवी पार्व ॥क ० ॥३॥ १८-भी मारे विन सावनम

(तुं भातम गुरू आस्तुरे लास्तु) व्यरि विन प्रशुप श्रद्धान विधान. सर्वे किया निष्फलता मान ॥६०॥१॥

संबद मार्ग प्रवर्तन समये. ब्यातम रहत पहेरवी ।

तीन तरन भी से ओलखास, तेहित शुद्ध श्रदान तूं वास है<sup>117</sup> बिल उत्सन्न न मापै तेह, बीजु लक्षस एहनूं एह ॥१४०॥२। तीजुं श्रवंचक करणी करें, ते निकश्च में दिहचे वरें। ज्ञानतार शिवकास श्रमुक्, बार जिन माल्यं श्रद्धा मुख्य ॥१४०॥३॥

> (६. जी महिजिन सामग्र राग रामगिरी (भाज महोहद रंग रजी री)

मल्लि मनोहर तुम्ह ठक्कराई ॥म०॥

सुता सर्ये हैं सूप बजाई, पंट सुपोचा देव चुराई ॥म०॥१॥ जय जय पोष न मायो जम में, अनिमय नारकिसे सुख चार्टी सुर वनिजा मिल माई बमाई, सुरदुर में बॉटल बमाई ॥म०॥२॥ इंडाकी वर आंगला नाजै.सर सक्त्यकल खाल बमाई ।

झानसार जिन जनम जगत की, हरख हकीगत किन वरखाई ॥३॥ २०-भी मुनिमुजन विग स्तवनम्

राण नेकानक—(भी महाराज कनानी) मुनिश्चन जिल बंदी, प्रहसम अव्यिपिकंट आनंदी ॥सु०॥ है सदबुई बंदन क्षिता, उदर्वें अनुतन चंदी॥सु०॥१॥ चन्द गर्वे निज जल प्रतीर्वे, पिष्यामवि अति मंदी। इस्राज विज्ञास आतमता वृत्ते, परचे परमावंदी॥सु०॥१॥

कारमा जोगे कारज सिद्धी, हुँ जायाँ मिलमंदी। पदान्तर—१ पंडो ( १० ) ब्रानसार की ब्रानसारता, सम भासे जिस्स चंदी।।द्व०॥३॥

> २१ थी नमि विन स्तवनम् शन थास्या—थव इसं व्यवर प्रण न सरेंने धंबर देहो सुरारी, ए थिए)

निम हिन इस किल के संसारी, प्रत्मल के सहिषारी ॥व०॥ क्या कुम इस दंदन इकन, नमन मान हुए वारी ॥क०॥१॥ प्रदमल सार्वे प्रत्मल पोर्वे, प्रदमल परद प्यारी। प्रदमल सीर्वे इस्ति सीर्वे, प्रदमल लाग सुप्यारी ॥न०॥१॥ संदनादि नो स्थारम पर्येख, निन संदंघ च वारी। सामहार नी सामसरका, निमित्तवर पारिवारी ॥न०॥३॥

२२ थीनेमि जिनस्तवनम्

पर पर बंध जाम—परपानु की ब पहे जुं। तेशे एवं परंत हवापी, हैंगित बित यूर्व पंतर हवापी । परप प्यान विषयों की तमें, तिथ्या तोंच प्रयोगे। विशेष्य बीत पत्ते वर विषय है, तमें बांच्या प्रयोगे। प्रश्ला पाना पुरदेश वर्षों तिथा, विशे जीत न वार्षे देह पाना विश्व पार्षे में तिथा, विशे जीत न वार्षे हैंने पाना विश्व पार्षे में तुं पार्षी काल किन कारें। विश्व पार्थों विश्व पार्षे में तुं पार्ष्ठ किया किन कारें।

परान्त -- १ मारी

## ( २१ ) २३ श्रीणस्ये जिन सायनम्

रान रामिश्ये—( अंबर देशे मुतरी)
पात किन नुं है आ उपसारी, युं है अन उपसारी।
अब उपसारी किन हमादे, जोने बपत समारी भाग-सराभी
व्यवसारी में जो मीदि राखों, यो मीहि हो तारी।
दिस्तें वारी भो मादि तारी, मोदि करने की सारी भाग-सराभी
विकास कार्यात की स्वारी, मोदि करने की सारी भाग-सराभी
वासनार की अस्त सुकति, जास कराव प्रस्तियों ।
सामनार की अस्त सुकति, जास कराव प्रस्तियों भाग-सराभ

रेश गीर किन स्तक्ष्य इस राग मैरव-(अब क्रम काचे नहिं मन डाब) कीतरामा क्रिस कहि क्षप्रमान सबी०स

सन दिवसी चिन समझ राष्ट्र,
हीनाधिक ती ब्यी कविषयान ।शिशाशिक प्रवर्ष च्यूदणाहिक देखी, भिष्य में चार्य सनमान । क्यपनची बळ्ळांचा करती, अराध्ये प्रीत विशेती माना ।शिशाशा मोजाली ने मधिनाती कल, च्यांचे कार्य रोधी विगय वान । क्षानकार में हिष्यन चारी, दो दी देखें न समान ।शिशाशा (१६) क्या - जाती ( अपन्य क्रिके ) स्वा - जाती ( अपन्य क्रिके ) स्वी - जाती ( अपन्य क्रिके ) सीचे पार्टी हैं हैं हैं हैं हैं हैं सुर्प कुछ से सीचे । सुक सार्य हैं हैं सीचे । सुक सार्य हैं हैं सीचे । सार्य - सार्य - सीचे । सार्य - सार्य - सीचे । सीच

efa me

वर संग्तर गत्र रत्नरात्र गांवि, झानसार गुख वेघी । विक्रमपुर मिगसर सदि पुनमः चौवीस्ट स्तांत कीची ॥गौ०॥प्र॥

इति पर्द एँ० अपर मानसारकियगरियः कत चतर्विभिनिका समामा ।

९ सुमधि−४, समध≔७, प्रवचन माखा≔८, सिक्स−१ वि० सं० १८७४

॥ विहरमान वीसी ॥ भी सीमंधर जिन स्तवनय राग--करेलडा घरवे रे किम मिलिये किम परचिये, किम रहिये तम पास ! किम तथियाँ तथना करी, तेह भी चित्र जहाम ॥१॥ सीमंघर प्रीतदी रे, करिये कीस' उपाय, भागी कोई रीवडी रे।

ते देसें जार्च नहीं, मिलपे स्थी सम्बन्ध । चौ निजरै मिलवं नहीं, सी परिचय प्रतिसंधि' ॥२॥ सी०॥ प्रथम प्रकृत में अभिलखी, पाछल करिये वात । ए प्रस्काम जाएया बिना, परिचय नौ प्रतिपात ॥३॥ सी०॥

परिचय विश्व कोई सदा, न दिये वैसशा पास । पालै ही वैसल न दे, रहिवा नी सी व्याश ॥४॥ सी०॥ भी रहिये पासे सदा, ती अवसर अरदास। करिये पिक मोटा कदे, न करें निपट निराश ॥॥॥ सी०॥ को काली सुम्ह चरणानी, सेवा करस्युं साम।

इस काले सभ, बन्दना, श्रीकेज्यो परिशाम ॥६॥ सी०॥ दर थकां कमठी परें. महर नवर महाराज। ज्ञानसार थी राखज्यो, सरस्ये ती सहु काज ॥७॥ सी०॥

पठान्तर—१ फेस ४ जिलाप

( १४ ) २ *भी जुगमधर विश्व* स्तवग्रम् (वीरा चांद्वा। द देशी)

ड्रवर्षण हिन, मस्त दिवास्त दो रे। स्मा दिवास्ता, त्या दिना नहीं होते रे तहुन। २॥ स्व दिना नहीं करवा रे, त्या दिना नहीं तीवा। साम दिना केंद्रिय नहीं रे, त्या देना नहीं तो हो तहुन। २॥ हैंद्र स्व मानी केंद्रिय ते हैं, दिन सामी होते हैं। स्विता दिवा न इसे करें रे, तीव रोज नी सिद्धी रे तहुन। २॥ स्वामीती दिवार ने रे, सार्वि केंद्र ती स्वाम।

श्चगमंत्रर तिनगत सी रे, तुमर्भु निवद सनेह। करवा बांस वादबी रे, किम तुम दासी छेड़ो रे॥१॥

रं भी सह दिन राजनम् (अपवास देवी तो देवे) वाह जिलेशर तेवा शारी, हैं जाने विच हाविषे सारी। इच्च नाव दुवा वे मेरे, प्रथम कामण काम काहें करतेहें।।१॥ मन निरम्पत तिम रुचि यानी, करेशी विच ए न हुवाती। क्षम का इच्च पुता तेत, तेवाने शायिता बांक्षे प्रदा ॥२॥ (१४) कर्सरूपाल मन ना पर्याप, आब दुवा ना अंद कदाय । उपरान चीच सपोगो टार्कें, चीचो पढ़वांचे सद बसावें ॥३॥ ते प्रवचन नी बचन न हेंद्रें, ए शाख्यों जिन पंचम ओदें। किरिया करें समय' अपनारी, बंचकता नी लखब वार्षे ॥थ॥

निमती प्रकंड एक न ताले, ते जिन सत्तम भेद व्हासी। ज्ञानसार जिन पदिमा जेड, जिन सम माने अद्वस एइ॥४॥ ४-भीसुगहु जिन स्तरनम् (लक्षमां भी देशी)

श्री सुबाहु क्रियंद नी, परम घरम परमाख ॥स्वत्या॥ श्रीपी विकरम्ब ग्रुट पी, तिन ज्यागनगम "त्रावा ॥स्व-॥१॥श्री॥ इस विद सम सक्षा महे, दृष्टिहें दो नय या शास्त्रस्ता॥ त्रीन तत्त्व विशेषे भएयी, भी दांसांद्रक च्यार ॥स्व-॥२॥श्री॥ एक विद पंत्र महासते, क्षणित श्रीष्ट विकरण ॥स्वत्या॥

सम विह सम वम तिरवर्ष, व्यह विह प्रवचन माव ॥१७ ॥१।१०॥॥ हरवादिक बहु भेद थी, अमें क्यो विवहार ॥१७तमा॥ निरवय बातम कर थी, उद्दात वमें विवार ॥१०॥॥॥॥॥ वमंत्र में ठदमें हुई, विवहार सक्य ॥१७तमा॥ विवयम संवित्त मन सह, वानसार कर ॥१०॥॥॥॥॥॥ वाजवय-संविद्यां ॥ विस्तवां – विमेत बढ़ी व ॥॥॥॥॥॥ ( १६ ) ५-मो सुजात जिन स्वचनम् बाल-(धियरे जात सुन्न) में आएगो निश्चें करी हो जिनकी, जिन यमें सम नहीं कोण ।

सकत नयासय' आकर्त हो बिन, धर्म जयत ना जोच ॥१० सुख रे सुखाद बिन, तुम्द पर्या समी यह की महीं । दिवा ह्या नव हो सुम्द सरवी एहं क्षै,ह्या विन करें अम में सही ॥१२॥॥॥ जिम चाहिजी नी पहिरकों हो जिन, तिम सह परमा करका

कर्म-रहित करता कहै हो सिन, इम किम मिलीय वचन ॥३॥मु०॥ ईरबर प्रेर्गो स्वर्ग में हो सिन, नरकें जावें बीच। भूत मई केई कहें हो सिन, यदगच्छायें सदीच॥४॥मु०॥ मिथ्या मत मद मोहिया हो सिन, मुगुं जार्शें नय शह।

भूत नह कह कह हा जिन, यदाण्यक्षय सदाव ॥शासु०॥ मिष्या मत मद मोहिया हो जिन, स्पू जार्थें नय बाद । ते बिन कुछ समसी सके हो जिन, 'खानसार' संवाद ॥॥सु०॥ १-वी स्वयंश्य विन स्तवनम्

्र-जी स्वयंत्रम किन सावनम् ( महिर करो जिनमो ) श्री स्वयंत्रम् तहरी बिनमा, विरुद् सुरुपी में कानके।

का स्वयंत्रस्य राहरा । सनसा, १४०६ स्थ्यं । म कालकः । परम पुरस जिलको ।। सेवा सांची साचवे विजक्षी, तेहने ये शिव धानकै ॥प०॥१॥ किपकी – १ नय कासाय । वाकाला – २ स समें। क्युं करि पहुँचुं तुम कर्ने, तो किम सारूं सेव के ॥प०॥कि०॥ चलगां थी ही ताहरी जि॰, चास घर नितमेव हैं ॥५०॥२॥ जी निजरां सन्प्रस रहं कि०. ती फल प्रापत होय के ॥प०॥जि०॥ पंस्ती हो पहुँचै नहीं जि॰, सुन, संभव नहीं कोय के ।।प॰।।३।। इंडांबी ही व्यवधारज्यो जिल्. बीनति वारंबार के ॥प०॥जिल्हा तुम्ह सरिखी समस्य घर्ची जि॰, पाम्यी परम उदार की ॥प॰॥४॥ त्ं जगतारक दितकरू जि॰, स्वयंत्रह जिनस्य के ॥प॰॥जि॰॥ ज्ञानसारनै तारवा जि॰, कीजै वेग उपाय कै ॥प॰॥जि॰॥॥॥

७ सी ऋषभागन जिन स्तरग । राम-(सेरिक सन चानरित वधी) तुक्त परस्रम ने परसम्बं, हं निजरूप नी कर्ता रे। तं सृद्धि साधक सिद्ध हुं, शं हुं सम इस सचा रे ।।

त्रायभानन जिनरायकी ॥१॥ पूर्व रूप में अभिलगी, तो निरस्तुं नित्न रूपो रे। पर परिवास से परवास्ये. हैं कारक सब क्यो रे ॥२॥ऋ०॥ इंबांद्रं अब्द कर्मनै. कर्मफर्लीनी कामीरे।।३।।ऋ०।।

मिध्यात्वादिक हेत नै. परिवामें परिवामी रे। संवेगादिक लक्त्रको. चेतनता नौ रामी रे। हंकर्तानिवरूप नी, ज्ञानादिक ग्रुण पामी रे ॥४॥ऋ०॥ य मुख्य मुख्यित अमेद हैं, 'शिव अनती निरंबाओं रें। अरुब अपुनरावर्त थी, ज्ञानसार गति साथी रे ॥४॥ऋ०॥ ६ वी अनंतरीर्या विव सावत्।

राग-(सामंचर करको स्था) इस मीठवां हुं तुम कर्नी, दो मीठवां व्यक्ति दूर । श्रीनं ससस्य मेलल्यां, चिवानन्द रस पूर ॥१९॥

वान् वर्धक नव्यन्त्र, नव्यानम्य स्त क्रास्त्रः स्रमंत्रदीरत अवचारच्यो, गुपति रहिस नी ए बात । मोटा मरम न दाखबै, तेम पराई जे तात ॥२॥ख०॥ भौ मेण्यां भी सह समी, अन्त्रय सच्छा भार ।

व्यक्तिकी में मेलव्या, बंबम गाँव दातार ॥२॥वः॥ हं तुम मेद न बकता, जी किम हवदी जी मेद । श्रुप्तन कर्मी वाहरें, वर परिवृत्त मी ए सेद ॥२॥मः॥ तुम्म मुक्त श्रंप्त भेदना, हातकरता गुम्म पार ॥ मानवार सम्म क्ष्मता, बेवतता जी व्यवास ॥॥॥॥॥

हानपार युक्त एका, प्रधाना ना प्यप्तार ।। ह *यी श्रिशास निव स्तवन* । राग-(क्ड्या फल है कोचना) श्रीविज्ञास निनराय नी, परम धरम सुपदीती रे ।

श्रीविशास निनराय नी, परम भरम सुवदीती रे। करम नाश में कारखें, ए सम ध्वर न मीती रे॥१॥ अय वय निन भर्म असल में ॥

पाठान्तर—१ त्'।

क्षमशार-राज्यकी १६ शब्द करम नय एक्डा, बांत्र सापेश वचकी है। माक्यों अनंत नाववंत है, तिम माले ते चक्षी है।।शाक्षयः। पक्ष इस हम्म काल ना, मत ममशी उनमादी है। के तक वार्ष उक्षरे, तेंद्र वितंदावादी है।।शाक्षयः।।

थापकवादी इस कहै, जिन पूज नै काजी रे।

कवित्य कत्सवी बीचवी, इस अर्थे जिनसोको रे 1191 तम्य ।। उत्पादकारी कहै, दुख नहीं व्यापरचा रे । रिक्त क्यार्थ बुझा नहीं, जिन प्यो नहीं चित्र व्यापर रे 1191 त्रावय ।। इन्द्र कक्षी ने कतस्व, जिन होनि होना राखी रे ।। साठ दया ना माने हैं, जिन कुषा जिन माखी रे ।। साठ दया ना माने हैं, जिन कुषा जिन माखी रे ।। साठवय ।।

मत बादी मत शायती, धर्म तस्य स्यूं आर्थ रे। श्चानसर किन मद क्या, ते सत ममत न तार्थ रे (१७६१ वरण) १०॥ मां सूरका क्या श्चार ।। राग--(यन रक्षंबंधि सामी राजा)

जी हूँ नावी मार्ड शहरी, ती पिक आकी न माहरी रे। मारम चलतां कार्रे मारी, ती स्पी दला नी सारी रे॥१॥ सप्तकु बिन तुम किम रीकी॥ संप्रकु बं परवृद्धे कीको, अपिकी सेवा आकी रे। जी कोई चक करी ने बससी, पिस इवडी स्पं तासी रे ॥२॥६०॥ जे कोई दास करेसी सेवा, अवसर अरख जसाव है रे। जो बमसेवा नी नहीं मनसा. तौ किम सेव करावें रे ॥३॥६०॥ सेव करावी देवा टाणी, हिस में दांत दिखायें रे। ते स्वामी नै सेव करातां, क्युं ही लाजन व्यावै रे ॥ ४॥ ६६०॥ करिया जी विवहार सेवक ही, करवी स्वामी सारू रे ।

बानसार नी खबर लहेस्यो, तौ सह कहिस्ये वारू रे ॥४॥६८०॥

श्चनसार पदावशी

११ ॥ श्री वन्नथर विन सावनम् ॥ राग-(ब्यावर जीव चना गरा स्नावर ) श्री व जवर स्रं सेंस्स मिलवां, चाहँ छ ' सक्र मद्य श्री । प्रह उठी नै समयसरण में, बांदे ते घन धवा जी ।।श्री०।।१॥ न सक् दुम भी सेंबुख मिलिया, तौ पिस तुमचै पास जी।

व्यास वर्द शिर उपरि ताहरी, तेश वज्र व्यरदास हो ।।श्री०।।२।। बो इतला बीजा नै तारी. समस् मांद्रिसी भलाजी। पांच भेद जिनराज करें जी. चौस्यी करवी सज जी ॥३॥श्री०॥ व्यवसर समग्र करी घरदासें. जो प्रश्वस्पी हांम की।

वहितै वारै व्यास न पूरी, पद्धतादै स्यी व्याम जी ॥८॥श्री०॥

गठान्तर—१ वडी ।

श्चानसार-पदायक्षी २१
पेट बांच ने सेवा सारें, ते गर्साजे दास जी।
झानसार थी सेवा चाही, किम नवि पूरी व्यास जी ॥४॥श्री०
१२-वी चन्द्रानग जिल स्तवनम्
राग—( इव पुर कंवल कोई न केसी )
चन्द्रामन जिन पूर्व उपाई, करम प्रकृत तें उदये व्याई।
व्यारत देश व्यारत कुल पायो, जैन धरम नै सरसै व्यायो ॥१॥
रूप रंग बल लांबी ज्याय, पांचू इन्द्री परगट पाय।
सुगुरु संयोगे संयम लीबी, मन वचने नहीं पालन कीबी ॥२॥
हुभर केता हाथे की घा, ते पण उदय उपार्थे सीधा।
जस उपकार्यो जस उदयें थी, मंद लोग ते मंदोदप थी ॥२॥
पाछलि प्रंत्री सरवे साई, यहवै ब्रुद्धावस्था आई।
ज्वान वर्षे करसी नहीं कोबी, हिव इन्द्रिय दमनें सी सिद्धि ॥४॥
पिक पछतायां गरज न काई, जी किम स्वामी होय सहाई।
श्रह्य समाधि मभ्य शुध देज्यो, ज्ञानसार बीनति मानेज्यो ॥५॥
? <i>३-थी चन्द्रवाडु जिन स</i> तवराम्
राग—( महिलां ऋषर मेह )
में बाएयो महाराज कें, राज निवाजस्यी हो साल ॥रा०॥
बीती सह जमबार है, लाज भी काज स्थी हो लाल ।।ला०।।
सेवीजै तरु होड, ते व्यंते फल दिये हो लाख ॥व्यं०॥

न दिन्दें तो पिक पंची, वीकामी किये हो लाल ।ती०।1१। बाल लगें कर कोड़ी, सेवीकी सदा हो लाल ।ते०।। बीचे हो बालहा ।ते०।। बीचे हो बंगाहीय, संस्थानिक करा हो लाल ।।ते०।। वेचे विकास कर मुख्य, किर हम्म मांन्दर हो लाल ।।ति०।। बनसेवा नी वार, बोक तक मादक हो लाल ।।ति०।।

त्रहर्ने देशा होण, पांक न्यार्थ करें, हो लाल ॥वां०॥ दृव तीयवी गाय ती, लांत चलु सहें हो लाल ॥वा०॥ मच मद योज्य कीती, साम संमारिय हो लाल ॥वा०॥ विव विज तेमा साकरें, किव न विचारिय हो लाल ॥वि०॥शा॥ भौगू न सुम पान, कर्नती च्यद करें हो लाल ॥व०॥

भारति कुम ने देशों, और न फिल मुद्दे तो साल ।।और)। ब्रम्बंदि पर्शर मान, दरावी गासती हो साल ।।इर।। इस तरका कुम नाम, करती दासती हो ते साल ।।घर।।इस निकार स्वामी चिंदर, करतीद तहती हो साल ।।घर।। है रिका अप्रधानी, दें शरिद मानरी हो साल ।।घर ।। स्वन्यताह किन माहिर, निजय भर रासती हो साल ।।घर ।।।॥ सामामर मी और, हुस्त पर रासती हो साल ।।घर ।।॥॥

पाठास्तर—१ साखसी ।

१४ ॥ भी मुपेगम जिन स्तवसम् ॥ (बाज निदेशी रे दीसै नादशी) सेंबुख तुम थी किम ही न मिल सकें , ती शी मन नी बात । कहिये कुण सुख ने धीरप दियें, इम सीचं दिन रात ॥१।सँ०॥ काल व्यनंते जे में दुःख सद्या, तृ आर्यी जिनस्ता । हिव जोनी संकट ना भय थको, राखीजै महाराज ॥२॥सँ०॥ तुम विख किया थी ए बीनति, करूँ की थांशी हुये सिद्ध । ते पोर्त संसारे संसरें, ते किम आपै सिक्षि ॥३॥से०॥ संकट मिटवा कारख सेविया, योता संकट धाम।

इवंता ने बाँहै विज्ञगीये. निहचे दुवे आम ॥॥॥सें०॥ वारचा तारे तुंडी सारस्ये, तुं सारक निरधार । वस्त करूं दिव साम अर्थनन, जानसार में तार ।।॥।सै०॥

१५. ॥ यी नेस जिन स्तवन्य ॥ (फरतां सं तौ शोत सह हंसी करें रे) नेम प्रश्न दिव केसा विधे, धोरत धर्र है।

बौलीसहजमबार, काल किम ही न सरप्रेरे।।

ती ही सेवक ताइरी, अवर न मन गमेरे। विख फल श्रवत विख, हुन, ब्राशा किम समै रे ॥१॥

२४ शानशर-पदावशी वींग बसा कर अवर, देव इस भव करूं रे। ती प्रज्ञ तमची व्यंख, बांख किम डीन किल रे।। पिश डिव इम किम निभसी, साम विचारियें रे। हुक मन भीरज हुय, विम किमपि उचारिये रे ॥२॥ नीरासी जमबार, केस पर वीखियें रे। विख आस्पाय मनुद्रत, जनम किम बौलियैं है। शरकाई साधार, विरुद्र जी धारस्यी रे। तौ हबढी सुग्र बात, तात हिब तारस्यी रे ॥३॥ तारथा केता तारिस, तारे हैं बहुदे। **स**म्क वेला श्रासस कर, देठी संकहंरे। व्यात्र लगे जो व्यवर, देव ने सेवलीरे। नी जगवासी सर्व, देव कर पज्जी है।।।।।। पिस तुम्ह आगम वास, सुसी तिस निंद रूपी है।

थोरी चक किर्तां, अन्न किम ही न पचैरे।

अदा धोरी पक, वासना साटकी है। झानसार वे बार, चडैं नहीं फाठ की रे।।॥।।

† ऋबायें

२६ ।) श्री हैइबर जिनस्तवन ॥ राम-(वीरा खांदवा) व्यापस्य में तेहने विना रे. गति कही केम जसाय। बीडरी विस किम स्तन मी रे.मोल किसी नवि थायी रे 11१:1 किम करि कीलिये, सेवा मेद अपारो रे। किय परि लीजिये, बाहें लबसक नी पारी रे ॥३॥कि०॥

दीया विख दातारता रे, संबे केम लखाय। भोलग विश्व भोलग तशी है. शेव न जासी जाये है ।(३))कि•।। व्याव लगे कोलग तथीरे. वाएमी नहींच विवेक। ते डिव किस विश्व कीविये है, सबस विमासण एकी है ॥४॥कि०॥ दर थकांडी राखन्यों रे. सम्बसेवक पर भाव । तक संश्क्षि समस्य विना रे.कडपैं नहि निरमावी रे ॥४॥कि०॥ बादल विश्व गिरवर तजी रे. छाया अवर न बाय । बर विना व्यक्ति भार में रे. केसीं हम न मरायी ने ॥५॥फि०॥ समस्य बर विना कडें रे. कमलन यन विकसाय । गयवर क्र'ब प्रहार नी रे, सिंद बिना किया थायो रे 11आकि०।। बल घर विश्व सरवर तथी रे, पेट न व्यरट मराय । सवल पवन प्रेरे विना रे. केवें घोर घरायों रे ॥=॥कि०॥ \* सपस्य समुद्र

मन वंश्वित देवां मणी रे, कल्पकुत समरत्य। विम शिव सल ने व्यापना रे, तुं साधी परमत्थी रे ॥६॥कि०॥ श्रीत इन्हेंगी पालिस्यों रे. ईसर जिन जिनराज । ब्रानसार नै ती हस्ये रे. निरचे शिवपुर राजो रे ॥१०॥कि०॥ २७ ॥ श्री वीरसेन विवस्तवन ॥ राग—(हिन्दे बगदगुरू शुद्ध समक्षित नीवी श्राविदें) में मांडी व्यवि गति पसी हो जिनजो. छोड दिया औँ पाय । इस सोटे पंचम भरें हो विनवी, तुम हाथे निरमाव ॥१॥ सक रेडयाल राय, सक्त महिर निका भर निरक्षिये । तुम्क सानिवर हो तुम्क सुनिवर साम कै. मेष अमी वस वस्तियै ॥२॥द्व०॥ ते चोवानो माजनी हो जिनजी. तेहची व्यविकी हँस । कीनी पिश नवरें पढ़ी हो जिनती. कुद वह ती संस्थाशासना आवमती मान् नहीं हो जिनजी, केहनी हितनी सीख

दित करवी नहीं आदरूं हो जिस्ती.

न यह हित सम बीख ॥१॥मः॥

आनसःर-पदावशी देवल देवल देव, पणा जन पूजता, दीटा वस करा कंपन चाशा पुजता ।।२॥ हैं तो प्रवर न मांगूं, को चारित पत्रै, तमस्त्रहाये समस्यान नी व्याशा फली। वहवे अवसर दास ने, आप न आगस्यो, पत्म अनंती रिद्ध मैं, कहिये मासस्यी ॥३॥ थीं पिया सेवा सारू , पिया गिराती नहीं, साम सेवक सबंघ नी, बात न का रटी। गावेवी सम्बन्ध, तो आश निवासिये. देवयशा विन लोक नै मोर्स लाजिये ॥१३॥ के पोते निरंधन, तमने स्वादियाँ, कवडी नहीं जे पास, रीम्हावी स्यं लिये।

पिता जिनराज नी महिर, लहिर एके इस्यें. शानसार संसार-निवास थी खटस्यै ॥४॥ ं १६. ॥ याँ मञ्जाभद्र मिन स्तवनम् ॥ राग-( दिवरे जगत गर )

में तो ए जाएयी नहीं हो जिनती, सुन्क भी इवडी सेट ।

पुरुवोत्तम थई रासस्पी हो विनवी, एडिव सुम्ह मन सेट ॥१॥.

पाठान्वर--१ पूरवा २ वाने ।

श्चानसार न तारपा हा । जनजा, दाल न कर (जनराज ॥४॥क०॥ २०॥ श्री कांगितनीर्थ किंग सत्तनम् स्थान—काशितायी करतार भद्यों सी पर विका

साहिषियों साहिषियों ससनेही फिहा निरामियों है, जे पाल तुम्म छंद । तेहमें प्राप्त ध्यनेती संपदा है, हो तोड़ी मन मन फन्द ।।र।।सा०।। जे नहीं पाली ताहर केवन में है, न धनी चचन प्रमास ।

जे नहीं वाली ताहरी कथन में है, न करी वचन प्रमाख । तेहने व्याप नरक निगोद तूं है, निहमम द्वारत नी साख ॥२॥सा०॥ क्टूं अपराधी विश्व तुम्ह आश्व में रे, सिर पर वारूं साम । इम जाकी ने जो तुम तारस्पी रे,

ती सरसी दुम्क काम ॥३॥सा०॥ जो अपराधी मीड़ी तास्त्यी रे, तुमधी दोरपक जोग । अग्रज कक विम भीते कांगडी रे.

सरव करू तम मान वाच्छा र, दिन तिम मारी होच ॥४॥मा०॥ मीदि रोवि समस्ती नै साहिवा रे, अजितवीरस अग्दास । भीरत न कीते बहिली दीक्षिये हे.

बीरत न कोल बाइला द्यालय ६, शानसार शिव बास ॥३॥सा०॥ - ॥ श्रहरु-प्रशिवः॥ (३॥स — प्राप्तिस्य श्रही, अधिवादा।

इम शेब् क्षेत्रवर क्षितराया, व्यातम संबद प्रया जी। जैन लाम क्रारत परकाराया, व्यात क्षेत्रवम व्यापा जो।ह०॥१॥ रत्नाराज पर्कि गर्कि मण्डि ग्रीसे, ज्ञानसार सुकार्गिर्से जी।

रस्तराज यखि गखि मखि शीसे, ज्ञानसार सुक्रगीर्से जी । श्रायक ब्रावड प्रेरस फरसे, मान सदित व्यक्ति ईसिं जी गह०।।२॥ संवत ब्यडार ब्राट्स तर वरसें, मौतम फेब्स्स दिवसें जी ।

सबद कठार अध्य एर परत, पावन परवा विवस था । विक्रमपुर वर कर चौमार्से, तबन रच्या उल्लासे की ॥ह०॥३॥ इति पंज्यो बानसर्विद्धीय कर पिश्ति जिन स्वति सम्पर्धात ।

ab seferator

## बहुत्तरी पढ संग्रह (१) राग—सैरव कहा भरोसा तन का, व्यवधु भिन्न रूप छिन जिनका ॥क०॥

द्धिन में ताता द्धिन में सीरा, द्धिन में भूखा प्यासा। किन में रंकरंकतें राजा, किनमें इरख उदासा ॥क०॥१॥

तीर्मकर चक्री बलदेवा, इद चंद्र बर्ग्सदा। व्यासुर सुरवर सामानिक वर, क्या राखा राजिंदा ॥क०॥२॥ संसारी जीव पुदगस राचै, पुदगल धर्म विनाशा। या संगति तें जन्म मरख गन, ज्युं जल बीच पताला ॥क०॥३॥

मित्र मान पुद्गल तें मार्थ, तुं अनकल अविनाशा । ज्ञानसार निज रूपे नाहीं, जनम मरश भव पाता ॥६०॥४॥ २ राग भैरन एडी अजब तमासा, अवभू, जल में वासा प्यासा । है नांहि है द्रव्य रूप हैं, है है नांही बस्तु।

वस्त अभावे बंघादिक नी, संसव नहीं अवस्तु।।ए०।।१॥ वंघ विना संसारी अवस्था, घटना घट न कोई।

पुष्य पाप विशा राउ रंक नौ, मिश्र भाव नहीं होई"।।ए॰।।२।।

पाठान्तर--१ कोई

सिद्ध सनातन श्रद्ध समावें, जो निरुवय नय भावें। तो बंधादिक नौ आरोपस, तीन काल नहिं पानै ॥ए०॥३॥ हदय कमल करशिका भीतर, व्यातमरूप प्रकाशा । वाक' स्रोड दर तर सीजै, संघा जगत खुलासा ।।ए०।।४॥ सरवर्मा सरवंगी माने सत्ता विश्व सवावे। स्यादवाद रस नी बास्तादी, जानसार वद पावै ।।ए०।।४।। 3 200-320 धीर खेल भव खेल बागरे, आतम मादन माय रे ॥ भी०॥ ऊपत विनास हप रति एरियाम, श्रद्ध के गत शिल फाय है। व्यविनाशी अनघट चिटरूपी. काली तांन कलाय रे॥ध्यौ०॥१॥

श्चानसार-पदानशी

रोग सोग नहिं मुख दुख मोगी. सनम मरग नहिं काय है। चिदानंद धन चिद्र आमासी.

अनई असम असाय रे॥औ०॥२॥

गज मुहुमासादिक मुनि भावी.

वद संबन्ध विभाग रे । ततस्त्रिण केवल कमंत्रा श्रावित्रस्त

श्रसय शिवपड पाय हे 11औ 611311

इत्पादिक रहान्त पनेरे, केते जी कहिवाय रे। व्यातम तत वेदी तप निघनी. श्रम्य अमरा न कडाय रे ।।श्री०।।श्री बान सहित जो किरिया साथै, आतम बोध समाय रे । ज्ञान विना संयम धानस्मा. भौगति समग्र जपाय रे शब्दी । III । र्वु जो तेरे मुख को खोजें, तो में कह्न न समाय रे। ज्ञानसार तक रूपे अविचल'.

श्रवर ध्रमर पट राय रे ॥श्री०॥६॥ (४) राय-भीखा

पर परशासन विभावे, ज्यातम कता कृपासी न्याये ॥१०॥ मिध्यात्वादि हेतमय स्थातम, सावही बंध छटीरैं। व्याप ही उदयें सुख दख वेदें, गत्यागति बित भीरें ।।प०।।१।। भैंसो मुद्र न अवर अगृहन, आवम धरम न सुके।

सिद्ध सनातन तुं सबकाली, फिर क्यूं करम अरुमी ।।प०।।२॥ सत्ता द्रव्य समाव लखन तें, सम अनादि सिद्ध तं ही ।

निज सुमानमय झानसार पद, काल लब्धि सिद्ध सुं ही ॥प०॥३॥

१ छालका २ पर परिवास सन साथ।

सब' सब धरम विचारा, अवध तब हम तें जब न्यारा । क्षेद्रन मेदन गय गय क्यो, जद के नास विकास । शुन्द रंग रस गंब फरसमय, उपद सटित व्याकारा<sup>९</sup> ॥व०॥१॥ थन्य संयोगी जी सों बातम, तो सों हम सविकारा<sup>3</sup> । वर वरशित से भिन्न भए जब, तब विश्वद्ध निरधारा<sup>\*</sup> ।।ज०।।२।। बंध मोख नहीं तीनं कालें. नहीं हम वह संदन्धी। .शानसार जर रूप निहारयी, तब निहर्च निरवन्त्री ।।व०।।३।।

(v) nn-ires

## frent-१ अब लाम≕किशारे क्या रो धर्म समाग पदाण विष्यंश लें ते पर्स विचारमां में स्टारो चेतनाव पर्स से. तेशो हम से जह

२ वपत्रको. सरित-सङ्खो, चासार स्वरूप ये प्रकृत धर्म है रै भाग्य महांसुं जो जड़ादिक एगा जड़ रा महे संजोगी हवा विवार न्यारो व्यातमा सविवाश-विकार सहित हको.

शब्द, रूप, गंप, स्पर्श से बांधिक द्वांगो। १ तिके बीख न्हें पर परशित के जिल्ला जए, कह जाग=जिलारें तब

. जाम-विवारे, निरधार निरूपे संवाते विशुद्ध छां, निर्मेश छां।

४. निर्मेख स्वरूपवान हुवां छतां महे सनम कीनो नामः:" युक्तिः भि: पर विवर्त मनने " महारे सम्ब सोश तीने कासे ही

(६) राग-भेरव चेतन' धर्म दिचारा, भवथू तव हम तें अह न्यारा ॥	
मिध्यात्मादि चार नहीं कारक, यंकन हेतु हमारें। चेतनता परिखामी चेतन, झान सकति विस्तारें भावे।।१। झान' सकति निज्ञ चेतन सचा, मासी जिन दिनकारें। सत्ता अचल अनादि अवाधित, निज्ञय नय कवकारें भावे।।१	
क्षेत्र में पहुं कि की संघन को विषय ने स्वेत्र में क्षेत्र में किया के स्वाप्त के स्वप्त के स्वाप्त के स्वप्त के स्वाप्त के स्वप्त के स्वप	ां = विशेष स्थान

क्रान्डय करु व्यक्तिके हेतु थी, तुम्ह हम्ह क्रंतर एतो । तु परमातम इं बहिरातम तम रचि क्रंतर तेती ॥चे०॥३॥

यातें दास मात्र खरित वपनी, कृषा करार नहिं की ते । दीनवस्यु हे जन्तरयामी ! हानसार वद दीतें ॥पे०॥ध॥ (७) राग मेरव

जब हम' रूप प्रकाशा, जब यू जमत तमाशा भाता।|जन।| टांमां वस्त्र न सिर पर भारी, तामें भूका प्यासा। सेग जरजी देही जीरख, ऐसे पर फिर हासा' ॥जन॥१॥ रूप रंग नहीं ततुब्तसम्बा, मिखासन नीरासा।

सायुक्तप बनिता चं संगति, किर द्वासै परिद्वासा ॥व०॥२॥ धादिवे ब्दन नदां कुं दासा, मोद क्रक सकियासा । झानसार कदि कथवासी की, चाहिर युद्धि प्रकाशा ॥व०॥३॥ (७) या –सेरक

मनुष्पा यत नहीं आवें, अवयुक्ति रोय दिखाये ॥म०॥ ज्ञान किया साथन वें साध्यो, खावर में न खतायें।

 स्वस्तरचे वास्त्रव अल्वाः वद्भावे वद्भावो अ्तिरेकः । त्' यरमात्रम हूँ वाद्गात्रव तारै सारे स्वं अंधारे क्षिम अंतरी ।
 "भोद शाक श्रवि" नाम=ऽसर बर फिर गई। फिर स्वामा सामञ्

हम्बा। पाठानगर—? त्या २ किर गते पर हाका ३ क्यू'।

बहुत्तरी-पद े
सोवत जागत बैठत ऊठत, मन मार्ने जिह जावै ॥म०॥१॥
आश्रव करसी में आपेदी, गिसा प्रेरची उठ घाते।
संबम करकी जो आरोप्, तो अत ही अलगायें ॥म०॥२॥
नी इन्द्रिय संद्रा है याकुं, पैसवकुं धूजाये।
इनकुं थिर कीना सो पुरवा, अन्य पुरवान कहाते।।म०।।३।।
सुर नर सुनिवर व्यसुर पुरंदर, जो इनके वश आगे।
वेद नपुरा हकेलो अनकल, खिख में रोप इसायें ॥म०॥४॥
भिद्ध साथने सब साथन तें, एही प्रायिक कहावें।
झानसार कहि मन वश यार्क, सो निहचै शिव पार्ने ।!म०॥४॥
(६) रागविभास
मोर मयो अब लाग वावरे।।मो०।।
कीन पुरुष हैं नर भव पायो,
क्युंस्ता अव पायदावरे ॥ भो० ॥ १॥
चन वनिता सुत आत तात को,
मोह मगन इह विकल भाव रे।
कोय न तेरउत् नहीं काकड,
इस संयोग व्यनादि सुगाव रे ॥भो०॥२॥
व्याश्व देश उत्तम गुरु संगत,
पाई पूरव पुरुष प्रमाव रे।

शानसार जिन मारग लाघउ. क्युं हुवै अब पाय नाय रे ॥भो०॥३॥ \$8-013 (cf) जाग रे सब रैन विडानी। उदयो उदयाचल रविमण्डल. पुरुषकाल क्यूं सीवे प्रामी ।।१॥ कमल सराद वन-वन विदयाते. व्यज्ञडें न वेरी दग उपरानी। चेतन धर्म अनादि तुमारी, बद संगत तें सुध विसरानी ॥आ०॥२॥ तम इस्त दोय व्यवस्था पहर्ये. नींद सुपन ए कड़ निसानी। संबार प्रापनी कव तुमरे घर हुमति घरानी ॥आ०॥३॥ सुधि दुधि भूलै निरुपम रूप की. यार्ते घट वह होत वहानी। निरचे ज्ञानस्वरूप तपारी. ज्ञानसार पद निव राजाधानी ॥जा०॥१३॥

(१९) राग-चेकास्त्र भेरा करट मदल विच हेरा। धातमहित चित नित प्रति चाहुँ, न तर्जुसांक सबेरा।।मे०॥१॥ सोरच बैठत ऊठत जागत, याको सरम्य चनेरा।

मरखुपकंठै ज्ञाय लग्यो हूँ, ज्ञव क्युं हित अधिकेता ॥मे०॥२॥ द्वार प्रवेश जित मत संबंधी, क्षित क्रिया अनुसेता । दान शील तप मात उपदेशन, ज्यार साल जी फेरा ॥मे०॥३॥

द्दान शाल तप बाव उपदश्चन, ज्यार साल चा फरा ॥४०॥॥॥
प्रद्वचि निवृत्ति बाह्यास्यंतर्रे, आलीए सुविसेरा।
प्रयट विरुद्ध जिन चरस प्रवर्त्त्, एद स्टरील कुकेरा ॥भे०॥॥॥
दिज्यती—६ 'किंग किंदा कार्यस्टर' नाम किंग से दे के कार्यसर्

हैं किया से हो चतुसराज है नाम=प्रवर्णन हैं किश्चितिक रोज: । २ साधु पामें सामानियात बहुत्ति निवृत्ति इतरे कासु पामें प्रवर्णन सक्कृतीयात स्वस्तानी तो महरि वसर्ती है, पामें

प्रथम त सब्दू शाह ध्वन्यमा वा नहर प्रथम है, प्रथम-पर ध्वन्यनी मृत्यि है। इस्ते हायुर्यक्षे नहरे देखारच-हर तो हैं, पास्त्र हर गयी। ३ एरहेरदरे माण्यों से धानारांगादि में धानुपर्यों से प्रवस्ते ते प्रयक्ति प्रश्ने धानरायें विरुद्ध मण्डु हां। एह साम-तृद्ध "महोश भूकेरा" मानानाहित्व मी मोरीलों हुक मेरे बद लखि सरम धर्म कोठ, आतम तत्त्र उजेरा।
निहर्ष कट तट प्रमट मया तब, ऐसा बचन उपेरा मिनाशा।
करट कदाप्रह लखि सच्छवासै, तज सच्छ बास बसेरा।
हिराह नयम जो नीका निरस्त, वह किंचित अधिकेरा।।मेना।।।।

व्यारम तरव लच्छन नविद्योतं, जिङ्ग तिह मनव पनेरा। झानसार नित्र हप न निरूपो, तेर्वे सन उरवेरा।|मे०||७॥ (१२) राग-चेनावन

जिन बरखन को बेरड, हूँ तो जिन्छ ॥
आमी पीछी तृंदिज तारिस, तो क्यूं कर अबेरो ॥जि०॥१॥
घरमावर्षन बरम फरख दिन, कॅसे मिट्टे भव फेरो ॥
वै स्यं तारिस तं तारक स्यो, जो हं करिस निवेरो ॥जि०॥२॥

र्तुं स्प् वारिस तुं तारक स्पो, जो हुं करिस निवेरो ॥वि०॥२॥ ४ 'जेरा वर्' ग्हारा वर, खिंब नाव=देशन कोई आयी मारा पारे इता प्रवी जुब कुं निराधी वचन निकल्या गी होते से इचने सालवरूप रो निरंब संपाति एवा पट इस में बाहर सभी खायाबहे, पर ए क्यन नावा है, बहरूप

शा सम्बद्ध द्वान कामान्यत्य राज्यत्व वयात एना पट इट में बगार यथी जयावडे, तर ए क्वन मात्र हैं, स्वरूप झानामात्राम् । ४ प्रस्तेव्यर स्वृं प्रयुक्त, "जो हूँ करिश्व निवेरी" नाम—हूँ डिज परमावर्धन करिस्तु, हूँ हीन परम ब्हुरा करिस्तु

हिने चरमावरान कारत्यु , हूं होत चरम करता कारत्यु तो है परमेश्वर त्ं कारक स्थातो ? लाम=केमी, त्ं स्वानी तारक ? "तिमाणां तारवाणं" व विकट थारी स्वानी ?

	बहुत्तरी-पर	84
नित्र	सरूप निश्चय नय निरख्ं शुद्ध परम पद मेरी।	-
ġ.	ही अकल अनादि सिद्ध हूं,	
	बक्तर न व्यमर व्यनेरी ।।जि	ગાસા
ग्रह	ाय अरु व्यविरेक हेतु लखि° मेट रूप अंबेरो ।	7.
qeq	।तम व्यंतर बहिरातम, सहिज हुव्यो सुरकेरी ।।जि	•11811
· ·	"तिज सहत निश्चे नय निरामू" नान=बारो स्पहण नय निरामू तो शुद्ध परम पद न्यारो हील वो व्यक्त सिद्धं को स्थि हूँ हीवा। "पत्रकर न व्यवर क्योरो," बाजर कामर पण क्योरा। न नाम-काम नहींन	धनादि नाम≕
•	बहो परमेरवर । अन्यव हेतु वृत्रो व्यक्तिरक हेतु प तक्क कांस ने, मेट नाम-मिटायो, में रूप मक्किमी कंवे झन्यस सक्कामह—बरसावे सक्कामन्वसः स्तरूप	ते अर्थ सत्ये

तदभाषो स्थतिरेकः स्वरूपामाचै परमात्मता भाषः" मारे विषे स्वरूप नो क्रमानी पद्यो तेथी हैं बहिरायमा तेथी त्

परमात्मा ही। हूँ बहिरातमा खूं तेथी तूं साहिय, हूँ तारी चेरो छ, पर दोनबन्ध तारो विरुद्ध है। तेथी हुमे परित क्रवर महिर निका तो भरांच फर, तह्य तो ''झानसार पर मेरो'' सिक्ष पर नेरो नाम=नैंदो हीज हैं । इति सर्देश ।

४२ शानवार-प्रापती तुं परमातम हुँ बहिरातम, तुं साहिब हूँ चेरो । दीनवन्त्र कर महिर निजर भर, ज्ञानसार पद मेरो ॥जि०॥४॥ (१३) राग-चेलावस क्त कहो इन माने, माई मेरी कत०। किसी वेर कहि कहि पणि हारी. ं प्रगट कहो कहि छानै ॥मा०॥१॥ सममहयेगो सो सिर सबनी, क्या कहिये गईया नै । दुरी वात अपने भरता की, कहियें कीन बहाने ॥मा०॥२॥ डारी बार बार कड़ि संजनी, तब प्रसटी ब्रहिया नै ।

माया मनता क्रमुद्धि कवरी, उनके संग इराने ॥मा०॥३॥ निज स्वरूप बालक नहिं जानै. पर संगति रति मानै । सर्वे स्वरूप ज्ञान ते भगिनी, अपने पर पहिचाने ॥मा०॥।।।। तव तेरे परसम परेगो, क्यू पती दुख मानै। बानसार ते दिल मिल सेलें, सिद्ध व्यनंत समाने ।।मा०।।४॥

(१४) राग-वेकावस

अनुभव हम कब के संसारी । मर जनमे न अनादि काल में, शिवपुर वास हमारी ॥४०॥१॥ राग दोष मिथ्या की परिश्रित, शद्ध समाव स समावें। धनकल अचल अनादि अवाधित, आतम माव समावै ॥ अ०॥२॥ वंघ मोख नहीं तीन कालें. रूप न रंगन देखा। निरचै नय जिन स्रागम सेती; शुद्ध सुमाव परेखा ॥स्र०॥३॥ काय न माय न जाय न भाय न, माय न माय न जाता । श्रद्ध समार्वे ज्ञानसार पद, पर'मावे पर नाता ॥व्य०॥॥॥ (१४) रात—देखाइक अनुसर हम तो गत है कोहैं। फोअबंगत के खरके होकर, बारगिरी में दोरें ॥ अ०॥ १॥ देशविरति जीवाई यामें, क्या खार्वे क्या जोरें । मांठ नत्य वर के घोड बिन, कैसे बार दल तोरें ।। बाजारा। घर-विकरी सब बेचें खाई, हाथ हलावत दोरें। शनसार जागीरी सेकर, कैसे मुंछ मरोरें ॥४०॥३॥ ( FE ) राग<del>ः वे</del>जायन श्चानं कला गति चेरी, मेरी, वार्ते मझ्य अधिरी ।।मे०॥ भिष्या विभिर अमर पसरन हैं.

gramme - 9 femmir

स्रमत नहीं पर सेरी ॥से०॥१॥

या किन तकर न कपने पर की, गरत सकेर क्येची। कि।।।२।।
परमावर्षनादि कारण करं, चाहेनी मन फेरी।
वानसार कर रिट सुतेनी, क्यार क्यार पर होती। कि।।३।।
(1-> ) राग-केशकर प्रान पीपृष् पिरासी, इस जी जान।।।।
वान पीपृष् पिरासी, इस जी जान।।।।

ग्रम भूता इत उत दंदोरू, है चेतनता नेरी।

अनात करत वन प्रमाय अतात, ए आशा नात पाता । १६०११६१। मिप्यात्वादि संघ कारच मिल, चैतनता जह मासी । स्रीर तीर सप्रदेश जयपाक, त्यों न्यातक जिलामी ।।इ०।१२॥

मय परिस्तित परिपक्त काल मिल, पेतनता सुप्रकाशी । झानसार जातम जमूत रस, तुपते मय निरकाशी ॥६०॥३॥

ारणया— १—वह करने मासी, नाम-क्षितित हुई, पर चीर नीर सें, ते सबदेशे सक्यापक हो, ५देशे भिक्तनित ही । बीर रो प्रदेश भिक्त हैं, नीर रो प्रदेश भिक्त हैं रखे कविभाषी हैं वाम-व्यक्तना कहें करने भाषी ही नाम≃क्षेत्रनक ने कह ना दिस्सा न संबोग संबंध है

भाषी ही माम-पेतनका ने कह ना रहित्या न संबोध संबंध है पिछ समयाय संबंध नहीं। २— पेतन हैं विशे पेतनात यहीं तहीं विशे रही पेतनका सो प्रश्नाती 'जह कर निकास पड़ें गई क्षरणवान थहें।

जब कर ने बिन्न गई गई कहरवता थई। ३—बानल ज्ञान दर्शनादि के कर ने त्या थई गया संपूर्ण पासका थी,

(१६) राग-चेलावल .पर पर घर कर माच रही ही ॥४०॥ किती वेर गडि गडि करि खारथी. कैसे अपनी याति कहो नी ॥प०॥१॥ मर अनम्यौ दिरच्यौ नहीं तथ ही. कवडी न परभव संग वसी री।

बायु माड़ी दीनो वेर्ते, तेर्ते तुमक् बसन दयौ री ॥प०॥२॥ त' ज सरीर सरीर न तेरी. सीपार्च निज मान रही ही ।

वानसार निज रूप निहारी.

श्रदल व्यमर पद व्यमर भयो री ॥१०॥३॥ (१६) राग-बेलावल

माधो. क्या करिये व्यरदासा, वे ज्या परक व्यासा ।।सा०।।

मानव जनम देश दक पारिच, जनम दिया जिन खासा ।।सा •।। १।। क्षेत्र सकेद्रा लिंग जिन दरशया. रूप रंग वल भासा ।

प्रसद वंच इन्द्री नर हुन्दर', पूरवा च्यायु प्रवासा ॥सा०॥२॥

वाद्याग्यर-१ इनर ।

हानसार-पश्चानसी याकी महिर बाहिर खीरोदधि, रजधानी चौरासा । (कावनगरी अभिव्याप सोक की, राज दियी रिद्धरासा ।।सा०।।३।। याके अंग रंग की संगति, जग करता सुप्रकाशा ।

श्रानसार निज ग्रेण जब चीने, इम साहिय जड़ दासा ॥सा०॥शा (२०) राग--रामक्सी भतुमव ज्ञान नयन जब मृदी, तब तें भई चक्रच्दी ॥ भ०॥

करण क्याप वजन जोगादिक, सरव विरत रति छु दी ॥वन।।१॥ यल निवान भानादि काल की, मोक समत नाहीं ह भ्रम भनी इत उत रंटोरी', है इह ही की इहां ही ।। भ्र०।।२।। सगुरु क्या करि प्रवचन अंजनि, वाश्चि सिलाई आंजै । हृदये भीतर झानसार गुण, सन्ते सहित समाजै ॥व्य०॥३॥

(२१) शत-शमक्की दीवक विन नर्य महिस न शोमै, कम्स बिना वस वैसी (किंशार)।

ध्यवधु परबी विन घर वैसी ॥ध्य०॥

गृह कारज घरणी अधिकारी, प्राशिमीय पद्म गाउँ। गामैं ऋठ भल नहिं कहिई, सीगन कीसे खावै ।। घ०॥२॥ सरवा कड़ि चलिये समता पर सपरिवार क्टं मिलिये । पिरह इसह झानसार ज्ञान हैं. अपने आश्रम कश्चिये ॥अ०॥३॥ (92) m-massir अवध हम विन जग अंधियाता. है हम तें उजियाग ॥अ०॥ चेतन ज्योत असविहत ज्यापक, अन्नदेश अविशेषे । प्रतिबिधित सरादिक मधिमय, प्रदेशल धर्म विशेषे ॥४०॥१॥ व्यवदेश सप्रदेशी पृच्छा, हैं नांदि है देशा। रूपारूपी की प्रच्छायें, रूप घरूप प्रवेशा ॥घ०॥२॥ रूपो द्रव्य संजोगे रूपी, अवर अनादि अरूपी। ह्याहरी वस्त समाये. अंग संग न प्रह्मी।।स०॥३॥ सता भिन्न समावै जेनी, सरवंगे समगावै। ज्ञानसार जिन वश्वनामुख नी, परमास्य पथ गावै ॥ घ०॥ ४॥ (२३) शाग-सामकारी मार्ड मेरो आतम अवि अभिमानी। में तो मन वच कम रस राती. कीरपि किसपि न चानी ।।सा०।।१।।

व्यासपम तन सब रंग मांडयी, प्रीतम गति न विद्यानी । ज्यु ज्यु हैं दित नितंत्रति चाहूँ, त्यु त्यु करत रूपानी ।।मा०।।२।। कैंसें कात्र निमेगी पर को, क्यू कर निसपति ठानी । ब्रानसार निरवार नियम गति, पथ पानी को पानी ११मा०।।३।। (१४) राग-रामक्ती अनुसर जातम राम अपाने, सो तुम तें नहि छाने<sup>हा</sup>।।अ०।। गर्ये यनादि काल दर पश्ती . सोली तीन खक्षाने ।।घर-।।१॥ पर परिकिति के डाथ आपनी, व'जी स'पै छाने। षटित रकम ज्याप न पूछे, खाता मैल न वासी ॥वाँ।।२॥ बाकी रकम और के साते. कोई वं न सहसी। देसावर व्यासामी काची, सो सो मूल न स्पर्दे ॥अ०॥३॥ कैसे काम रहेगो इनकी, रखे धको नहिं खादै। बानसार जो पंजी संपै. तो लख्जा रहि जावै।।यः।।।।।।

झानकार को पूँजी ब्रंपै, तो लज्जा रहि जाने ॥श्र०॥धी ठिप्पत्री १ हे ब्युजर्प नाम=ब्याजिक श्वरूप विश्वत्रम करवां बुझे बहुमी मेरी त्यस्य पिन्तवरारो शस्त्र है। व्याजायन ब्याजें नाम=ब्याजें बाजा ब्याज्ञ हो हो जुन नहीं स्थ्ये नाम=ब्याजें आजा ब्याज्ञ हो हो जुन नहीं

२ दरपुरती नाम-सात पीडी रा। ३ स्रोजे तीन सशाने नाम-सान दर्शन पारित्र सा।

बहत्तरी-पद (२४) साम्री व्यातम व्यनुभव व्यंत्र को, नवलो कोई सवाद। चाली रस नहीं संपन्ने, जानी गति निरशाय॥१॥ an-mria rassit अतमव अपनी चाल चलीवी । पर उपनारी विरुद्र तुमारो, वाक् 'क्यू' विसरीजे ॥ घ०॥ तम त्रागम विन इनक कवडि न, त्रीतम प्रख निरसीजै । भाव काल भावन नहिं कीजै, कैसे कर बीवीजै ॥ भागार॥ व्यव तो देग मिलाय पिया हैं, किंचित दील न कीजै। द्वानसार ओ न बनै तम तें. तो नी उपर दो÷ दीवें ॥१४०॥३॥

(५६) राव-स्वारंग अनुसव डोसन कव घर आवें ॥वा०॥ व्यक्ति सुख वचनामुत विन केंसे, हृदय कमल विकसावें ॥वा०॥१॥

श्राचि क्षुष प्रवास्त्व पिन कैसे, हृदय कमल विकसारी ॥४०॥२॥ मोहनीय के लस्का सङ्की, हँस हँस मोद खिलावें'। चौमति महिल क्कमति रति रस गति, रमते रैंन विहारी ॥४०॥२॥

+६ और २=११ डोना क्यांत माग जाना।

क्ट्री वात तुमरे वाते, क्षेत्रे कर वत्तवार्ष । सुमता नाग सुमत दीधदमन, माताव कति क्षटि कार्य ।।श्रम। क्षरा क्ष्रें को तुर्वे सपायी, मोध्र मन न मिलार्ष । झामतार क्षाचा पर चीचे, निन तेष्टें ठठ वार्षे ।।घ०।।।श्रा (२०) राग—चार्यक प्रीताब परितास करेंगे न प्रश्लो (।।थि।।

हानसार-परावती

लादी संगत व्यक्ति रित रात्ते, गार्ते हम विस्ताई ॥व्यो०॥१॥ इत्या इंटिल को मोहन संगति, इन वें साम बुहाई । फ्ला कियाक समी व्यासाहन, गरियामे दुखाई ॥वि०॥२॥ व्यंत विरामी सें पर न पत्ते, समक्र सुचेवन राह्यं । भ्रानवार सुमारा संजय पर, हिल मिल व्यक्ति वर्षां॥वि०॥३॥

(२६) राग-सार्कन्यवायक प्रीतम परियां कौन पहार्वे ।

वीर विवेक मीत व्यतुमी पर, तुम विन क्वाहुँ न खावै ॥शी०॥१॥ पर नो छहनो परटी चाटै, पेदा पाडोसख खावै । कवडें न सबरो पर परखी नो, पर पर हैन विद्वारी ॥शी०॥२॥

ए सप संदेसे लिख कागद, अनुभी हाथ बचावी। ज्ञानसार एसे पर नावस. तो कहा रोप बसावे ॥प्री०॥३॥ ( 91 ) rm—mra साथ विकारी पाव विकारी ह दासी वें डिव निव रवि खेलें. यार्वे शोध तमारी ॥ना०॥१॥ घर ऋण्डर सी सन्दर नारी. छोरी सेलव जारी । श्रमख मस्त्रे कर का सकर, त्यों वाने महत्व मारी शना०॥२॥ संयम रमखी रागी ज्ञातम, पर सगत अति ख्वारी ।

देख देख निज वर परखी हूं, प्यार करत व्यवपारी ।।वा०।।३।। समति पदायौ अनुमी आयौ, पर घर परद निवारी । समका घर में जानमार क. स्थायो लगिय न गरी ।।ना०॥१॥

(३०) राज-सारंब

नाथ तमारी तमही वासी।।ना०।।

घर बपद्धर सी घरखी परदर, घर रमणी रति माणी ।।ना०।।१॥

कर पोडन कर पीहर पर घर, व्यवहुँ न कीनी जाखी ! काति काबह परशी घर घरखी, क्य एती अति तालो शतावाश कृत अंत पर बिन नहीं सरसी, निहचै आप विकाशों। श्वानसार वती सुनि ्आप, बीतत दुख विसरायी ।।ना०॥३॥ (३१) राग-स्वारंग

माई मेरो कंत व्यत्यन्त झ्वासी ।।मा०।।

23

पर परिवात से नाता जोरतः तोरत निज वें तासी ॥मा०॥१॥ सुमति विराधि श्रद्धा गुरा परसम, बोलत व्यवसी वासी । भागा ममता व्यविरति कथने, करिय क्रमति पटरासी ॥मा०॥२॥

यार्थं मेरे वैरी ज्यार्थं, मिस्तत क्यापर्वे जास्त्री । प्रार्थे प्रीति क्यार्क्ड केर्सें, झानसार रस दाखी ।।दा०।।दा।

(३२) राग—सारंग अनुसर याँमें तुमरी हांसी॥अ०॥

मीत बनीत रीति नहीं हटको, पानी कहा स्पानाती ॥ध०॥१॥ पर पर कर कर सटेकत जोतत. सैसी पतनी वासी ।

पर पर घर घर अटकत बोरत, कैसी पदनी पासी । कीन पिता कक किनको पीटा संग रमें सो डासी (1980)।।।।।

कान (पता कुछ कि पातास्था— र सामी



तो सौ तारक अधम न मोसी, उधरन कस क्यंना करिये । ज्ञानसार पद राज विगानी, सहितीं मबसागर शरिये ॥प्र०॥३॥ (३४) राग-नासा रामगिरी थवर्ष ए क्षमदा स्रादारा, कोई करण न करगौहारा ॥स०॥ प्रविनी पासी पनन सकाशा, देखल होत अर्चमा । इत्यादिक व्याधेर्यं परगट, दीसत कोय न शंभा ॥वा०॥१॥ या मरमें भूती जनवासी, करवा कारण गारी। फरम रहित तथ करता कारक, कैसे कर संगाव ।।आ०।।२।। फरत अकरत अन्यथा करखे. संवरथ साहिब माथा। षट पट पटनार्थे पुन पटबी, या रच वय निरमाया ॥अ०॥३॥ करवी न कोई करेंय न करती, यह अनादि सभावें। विनस्यी करे ही न विनसे ए जग किन आगम जिल गाउँ गण्य वाराग थ्यमन शिक्ता पंकत नहीं प्रगति, श्रामिक उंज नहीं सीता ।

स्वाकां न हुने फुल्वाईं।, केंसी माणा क'मा।।स्वा।।इ।। कुत निवास ककुत भनिवादी, शाद प्रमाश प्रमानी । ए तत्रक तुमरी कल्कार्य, गॉकर दृश्य क्षाणी ।स्वा।।इ।। स्वन्त कार्य निव तोक न करिस्मी, एक करियत संदासी।। प्रका पढ़े एटना नार्टि संबंध, मामकारी ही प्रवासी।।प्रचा।।आ

बद्वत्तरी⊸पद ४४
प्रथम पञ्जै पुरसा नहीं नारी, तैसें इएडा पंखी।
बीज विरख नहीं पाछें पहिला, है समकाल खपेखी ॥व्य०॥=॥
लोक जनादि जनंत भंग थी, है पट द्रथ्य वसेरा।
यार्के अंते झानसार पद, सब सिद्धं का डेरा ॥ अ०॥ ह॥
(१६) शग—कासावरी
अवयो हम दिन अग कहु नाधी,
ष जगत हमारे मोडीं ॥घ०॥
इम डी नै कीया संसारा, हम संसार की पूंजी।
पांच द्रव्य इनरो परिवास, इम विन वस्तु न दुत्री ॥व्य०॥१॥
उपित नान विति मय संसारा, सो इमरी व्यवदारा।
उपवि खपत थिति करता हम हो, यातेँ हम संसारा ॥ घ०॥२॥
एक कला इमरी इस आहें, सब बग के निरमाये।
वाही कला इस मांहि मिलाये, इस में अगत समार्थे ॥व्य•॥३॥
एक कला व्यापी जो इस घर, वार्ते असंख विमार्गे ।
हमरो सरव कता व्यापी घर, ज्योति अखंडित वार्षे ॥अ०॥४॥
हानसार पद अकल अखंडित, अचल अरुज अविनासी ।

चिदानंद चिद्र्ष परमपद, चिदयन यन अभिध्यासी ॥अ०॥४॥

३० राग---चासा व्यवभ् व्यासम तत गति बुक्ते, व्यावही व्याप सरूकी ॥ व्य०॥

ब्यातम देव बाम गुरु ब्यातम, ब्यातम सिव सिव शिवा । ब्यातम ग्रिवयद करता करती, ब्यातम तरव परिचा ॥घ०॥१॥ ब्यातम ग्राव कारक ब्यारेहरा, वाधिक चारण वितरणी । ब्यातम केरत देशक नावी, व्यावस व्याद पर परची ॥घ०॥२॥ ब्यारित सिक्ट व्याचारण पाठक, साथ संस्थानेता ।

कातम मेरी ज्ञानसार पद, जन्यायाच जनेता ॥क०॥३॥ (३६) राग-कासा

करन् या का के अवसाती, कारणा पार उदाशी तथा। कवार उन्हें रिपोर व मंत्री, दिव जोवन में रैसे । को निस्काती सुत्रा न उदाती, दिस मार्ट उट हैसे ॥स्वारी । पर्यक्ष साम्यात कारणा तो, तोहे रिपरंच नाति । पर्यक्ष साम्याति कारणा तो, हो ती हमात्री ॥स्वारी । कार्योद्ध कर पार्ची कंठित, पर एस्टिंग की सामी । पार्नी संघी तोह सहस्योती, तो व्यास्था नहीं मात्री ॥स्वारी । स्वारी पर्यक्ष होती हमा नहीं मात्री ॥स्वारी ।

आतम परमातमा अनुसर, ज्ञानसार पद पासी ॥अ०॥४॥

जनम मरख गति आगति नाहीं, जिनपद निच बसियारा '।।आ ०।। १।। जिह नहिं रोग सोम नहिं भोगा. अचल बनादि बगाधा । याद्यौ अनिधा ज्ञानसार पद, अञ्चय अव्यादाधा।।अ०।।२।।

(४०) राज-शासा अवयु सुप्तति सुहागिनी आगी, कुमति दुहागिन भागी । अविसंवाद पच फल अन्वित, जिन आगम अनुवाई। ऐसे सन्द अस्य को प्रापति, याको संगति पाई ॥१॥ विश्व प्रतिवेश करी आतम थां. रूप दृष्य अविरोधी ।

ऐसी आतम घरम गहण विथ, ब्रहीयो गहण विशेशी ॥२॥ म रहवा भरम संया उतियाता, तहरात घरम विचारा । **ब्रानसार पद निहम्मै चीना. जनमय वल व्यापारा ॥३॥** (४१) राग-धासा

अवयु आतम रूप प्रकासा, भरम रहा नहीं नासा ।। बा०।।

नहीं हम इन्द्री मन बच तन बख, नहिं हम सास उसासा ॥२०॥१॥

वाठान्धर--१ बास तुन्हारा

श्चानसार पदावजी कोध मान माया नहीं स्रोशः, नहीं हम जय की ज्यासा । नहीं इस रूपी नहीं यद कुपी, नहीं इस इरख उदासा । व्य०॥२। र्थंथ मोश नहिं हमरे क्यही, नहीं उत्तपात विनाशा। श्रद सरुवी दम सब काली. ज्ञानसार पद वासा ॥व्य०॥३। (४२) राग-मामा श्रवपु व्यातम घरम समावें, इम संसार न आवें ॥ श्रव।। यही भरम हम मय ससारा, हम संसार समाये। उदित समाव मानु व्यातम घट, अम तप तें भरमाये ॥व्य०॥१॥ पट घट घटना घट पट न घटै, तीन् काल प्रमायं। जलारधारमा भी सीतातप, यट में कब न घटाये ॥ घ०॥२॥ तैसे बाप धरम वी फातम, कोई काल न जावै। निमरम सदा काल तम्ह मांडि, चेतन घरम स्मावै ॥घर०॥३॥ वल तरंग थी यनचल चंचल, द्वाया इच सखाये। क्षानसार वद मय निश्चै नय, सिद्ध ब्यनादि सुमावै ॥व्य०॥४॥ ( १३ ) राग--मामा अवध जिन मत जग उपचारी, या हम निहवे धारी ॥ छ०॥ सरव मई सरवंगे माने, सत्ता भिन्न समावै। भिन्न भिन्न पट 'मत गम माखै, मत ममत्त इठ भाषे ॥४४०॥१॥

नयवादी अपनी मत थापै, और सह ऊथापै।
एइनै थाप उत्थापक पुढि, इक इक देशें व्यापे ॥ध्य०॥२॥
जे जे सिद्धान्तों में भारूया, क्टमत अंग सुखावैं।
जिन मत नै सरवंगी दाखै, पिस विरोध न जवावै ॥४४०॥३॥
मत्त समत्त वाती न उदीरे, नदशत ऋशुद्ध सुमावे।
वंदै नहीं नंदै नहीं सबक्, यशायोग्य परवाये ॥१६०॥४॥
एहवो निकोधी निरमानी, श्रममाई श्रममत्ती।
तेखे जिन मत रहिस पिछाएयो, बन्प ते मत्त ममती ॥घ०॥धा
ऐसें शुद्ध जिनागम वेदी, ते निज्ञ शातम वेदी।
झानसार भी शुद्ध सुपरसित, पार्व सिद <sup>्ध</sup> प्रसेर्द ॥श्र०॥६॥
(४४) राग-न्यासा
श्रवपु कैसी क्रुटुम्य सगाई, याठी नहि संबन्ध सदाई ॥श्र०॥१॥
मात पिता दियता पैठे दी, सकती सुत मरजाई।
जब केटे ही बाल पिता सल. आरंपी में दर खाई शक्ताशा

कर्तमा आया अवया जनती, मर विष आये माई।

माठा श्रीनता गरिना माता, विष् माठा पुन वाहे । ध्वः।। रा दुव रोहय दुरामें हेकती, कर्तमें किर मर बाई।

संभागि में बाह होकती, चर्च समस्य निर्देश होण्यः।। रा ग्रुद्ध कर्तादि कर हुंगोंचे, जब्द में दुंग समस्य निर्देश होण्यः।। रा ग्रुद्ध कर्तादि कर हुंगोंचे, जब्द में दुंग समर्थः।

६० श्रानसार-प्रापसी

समबाई युन को तुम्ह बस्के, ज्ञानसार पर शई।।स०।।धाः (४४) एत-कासावरी मेरा बातम कासिंही क्याना, सानै कातम हित नहिं जाना।।

भेरा खातम अतिहि क्याना, यानै बातम हित नहिं जाना । काम राग अहित अति हारा, नेहादिक सुदु दारा । मन वप काय करण निन रोपे, स्थापन हार उपारा ।मैना।१॥ तत साक्षम में सम्म रूप जल, सरवर जीव मराया ।

वर्ते कीमति मांदि ममाया, अवहं अंत न आया । मि०।। २॥ अव जिन भरम के शरसे आया, आतम रूप न पाया । हाकतर गुन तेरी कीमे ती, गति आगति नहीं काया ॥मे०।। ३॥

साधी माई ऐसा योग कसाया,याँतैं ब्रन्थ लोक भरमाया ॥सा०॥ गाद्य किया दरसाई साची, अन्यंतर तें कोरा। मासाइस परिकर फिर सोचिस, रे रे ब्राहम चोरा ।सा०।।१॥ संयम पायो पुन संयोगें, पाल्यौ नहीं तै पापी। फिर ऐसी नहिं दाव वर्णीयो, चितवन चित्त अध्यावः ॥सा०॥२॥ . क्या कहियेँ ऋछु कस्रो हुन मानै, रे देआतम अधा। द्वानसार नित्र रूप निहारै, निहंचे हैं निरवंधा ॥सा०॥३॥ (9a) TEC-MAN

साथो माई जातम मान परेखा, सो हम निइन्ने लेखा ।।सा०॥ नहीं व्यवदार संसार तें कवडी, नहीं हमरे कब लेखा। नहीं इनमें खावी नहिं बाकी, खाता खनाई देख्या ॥सा०॥१॥

समवार्थे आतम समबाई, तीन्, काल विशेखा । मिट नवा मरम भया उजियारा, ज्ञानसार वद पेखा ॥सा०॥२॥

(85) SHI - SHIRI

साथों माई व्यातम खेल बसेला, सो इम खेल न खेला ॥सा०॥ वंश्रमोस सुख दूस की घटना, ज्ञातम खेल न घटना ।

सिट सनातन है सब काली. उपत विनाश अपटना (मा०)।१॥ नाडीं पुरुष नपुंसक नारी, शब्द रूप नहीं फासा। नहीं रम नंध नहीं वल व्यायु, नहीं कोऊ सास उसासा ॥सा०॥२॥ नहीं तन्दा सनै नहीं आयी. नहीं उसी नहीं बैठे ।

नाहीं जलें वसन की भारता, नहीं समाधि में देंटे ।।सा०।।३।। ए निर्ने अतम को सेला, इनमें कवड न आए। इम विवद्दारी व्यातम हमरे, अम तम तैं मरमाए ॥सा०॥२॥

सया भरम भया उजियारा, लोकालोक प्रकाशा । शासमान पट सिरूपम चीता. उसका यही समाशा ॥सा०॥॥॥ (४६) राग स्थासा

साधो भाई कम करता कटि माया. सोई हम निरमाया । मिथ्या सँग करो जब तब ही, माया पुत्री आया । जनमत घट पट घटना पटवी, याख्र जग उपजाया ।।मा०।।१॥ कोशादिक याको परिवास, जग व्यापक अखापास ।

उपति सपति मिति माकी संतति, सोई जग व्योहारा ॥सा०॥ १॥

थाव " भित्र वहीं करता में, माया जिन निवजाया ।

उवा माया ब्रं अगत उपाया, ए भूठी अपवाया ॥सा०॥३॥

पाठाम्बर-१, भा

बहुत्तरी-बद	44
करम रहित पुन माया कारक, एह व्यसंभव वाता ।	
खार्च विना इकेली व्यवनी, नहीं पूंजो उपयाला ॥सा०।	1181
कर्लाञकरल् जन्यथा करनी, इम ही हैं सामगी।	
पर पन्चिति से मिन्न भए जब, किचित कर कसमधी ॥मा०।	IIRI
अवल ब्यगांध' ब्रवाधित बञ्यय, बरुत बनादि सुमार्थे ।	
ऐसे झानसार पद में हम, श्रीत निशान पुराये ॥सा०	IIŞII
(४०) रागमासा	
साची नाई जब इस भए निरासी, तब तें कासा दासी । सा ।	1
राव रंक धन निरधन पुरुषा, सब ही हमरे सरिसा।	
निर ब्यादर बादर गमनागम ,नहीं कोई हरख उदासा ॥सा०	11311
राजाकोऊ पांव तो फरसै, सोहू सनक न राजी।	
दुर्वंचने जो कोऊ वस्त्री, तो व्यातम न विगजी ॥सा०	11711
करा बनम मरख दल काया, वार्ते नहीं मरोसा।	
विन प्रतीत को ब्यासा घारँ, होड़ दिया तिथा सोसा <b>॥सा</b> ०	RSR
अव वेफिक्टर खुशी दिस सब दिन, वेतमाद मनमस्ती ।	
यार्ते उद्दे शस्त नहीं कुमें, क्या सना क्या कस्ती ॥सा	11811

भूस विपासा शीत उज्यता, राखे 'ततु व समावे । वळन्तर—१ समावि २ निर्देशक हो ३ सर्वे । सरस निरम लागालाभे पुन', हरस शोक मन नावै ।।सा०॥४॥ व्ते पर व्यातम व्यनुसी गति, मन समाथि नहीं कार्ये I मन समाधि विन बातवार पट. कैसे इ नहीं पार्वे ॥सा०॥६॥ सतो घर में होत सदरई, कीन छटाये आई।।सं०॥ घर को कड़े मेरो घर नाड़ीं, परबीया कड़े मेरी। मेरो मेरो कर कर मास्थो, करबी बगत की चेरो ॥सं०॥१॥ सुरनर पण्डित देखे सब ही, कीन छुड़ावे आई। महादे बाला झाप ही समग्रे, यांच छोड उत मांदि ॥सं०॥३॥ मिट गया केरा हवा सरकेता. आध्यातम वह चीना । केवल कमला रम सब संगे, जानसार वट लीना ॥सं०॥३॥

श्चानसार-पदावसी

(३३) सन-कास साधी मार्ड निहर्चे खेल व्यवेका. सो इस निहर्चे खेला । ना इमारे इस्त जात न पांता, ए इनरा आयारा।

मदिरा मांस विविश्वित को कला, उन धर में पैसारा ॥सा०॥१॥

बर्जित वस्तु विना जो देवें, सो सब ही हम खाउँ। जनी ना फाब अकरापित, घोनमा जल सब पीर्वे ॥सा०॥२॥

पाठाग्वर--१ विश २ दस । टिप्स्यो—बास्तानि स्र्वय इति अप्यासी ।

बहुत्तरी-पद	ĘŁ
पहिक्रमशा पांचूं नहीं सायक, सामायिक से वैमें।	
साथुनहीं बैन के बिन्दे, बिन घर विन नहीं पैसें।।सा	(ell€lle
श्रावक साथू नहीं को साधवी, नहीं इमरे श्रावकशी।	
चर्ची अद्धा जिन सम्बन्धी, सो गुरु सोई गुरुखी ।।सा	1811
नहीं हमरें कोई गच्छ विचारा, गच्छवासी नहीं निर्दे ।	
गच्छनास रतनागर सागर, इनकुं श्रहनिशि वंदें ।।सा	ाशा
थापक उत्थापक जिनवादी, इनसे रीमः न मीजें।	
न मिलग्री न रिंदन बंदन, न दिव अहित न घीजें ।।सा	ાાકાા
न इमरो इनसे बाइस्थल, परचा में नहिं सीतें।	
किरिया रुचि किया ना रागी, हम किरिया न प्लीजैं ॥सा	1011
किरिया बड़ के पान समाना, स्थतारक जिन माखी।	
मोई व्यवंचक वंचक सो ती, चौगति कारखदाखी ॥सा	네티
पै किश्या कारक कुंदेलें, भातम अति ही हींसै।	
पंचम काले जैन उदीयन, एह अंग थी दीसँ ।।सा	ाशा॰
सव गज्छनायक नायक मेरे, हम हैं सबके दासा।	
पै आसाप संसाप न किसम्ं, न कोई इस्स उदासा ।।सा	शारका
पड़िकसमा पोसा न करावै, करतांदेख्यां राजी।	
्ष्वसारे व्याख्यान न आग्रह, आग्रह थी नवि राजी ॥सा	०॥११॥

हानसार-पदायशी वो इमरी कोऊ कर निम्दा, किंचित बमरस बावें। फिर मस में जस सीति विचारें, तब अतिहि पछितावें ।।मा०।।१२।। कोधी मानी मायी लोनी, रागी डेवी योधी। सायपद्यानो देशान सेदान, अधिवेकी अपदोधी ॥सा०॥१३॥ ए इमरी रमचर्या मासी, ये रनमें इक सारा। वी इस ज्ञानसार गुरा चोनै, ती हैं भवदधि पारा ॥सः०॥१५॥ ( ४६ ) राग-शत्र वसना क्यं बाज अवानक बाए भोर. कर मंडिर निजर ललगी की और। परमाय रूप अंधियार तोर, तुसमाय उद्दे रांच के सजीर ॥१॥ अब शह रूप गहिन्हें अन्य, बरिये केवल क्रमला ब्वमण । तव जानसार पद तम्ह सहय, पायो व्यातम परमात्म हव ॥२॥ (४४) राग-शक्त ससन्त . क्यु बाद बत्र वर चित बटोर, इन प्रीत पथ नहिं चलत ओर । किन कहैं निहोरे हेत मांहि, न चले दित प्रीतम आप चाहि ॥१॥ इक डाबै तारी नहिं वजंत, यानत क्युं सेंचत झंत संत । घरणी बिन घर की कात राज, को करिहै जिह एतो समाज ॥२॥ पर घर में क्या काढी सवाद, जिनमें एती लोकाक्याद । यार्ते अपने घर चाल कंत, किहि ब्रानसार खेले वसंत ॥३॥

ध्यन्ते द्वाव प्रकारी क्या हार्योत्त त्राप्ते वह योगा आत त्रांत ११३। १ सुप्ति वावयो-"फित त्राप्ते गाय-वारों लक्ष्य स्व पर क्षित्र कित मुं कर्ष्ट जात्री, त्राप्ते आवश्ये कर्ष्ट्रीय नहीं। हे स्वास्ताराम बर्जार । सारी स्वस्त पर सो बोहत्रे वे दर पर में रत रह्मा हो, तेनी बराज्यत्।

२ पुनः से अवस्य हुनै को हु क्यूही कई, विज ने सुजाय जाएका शका क्यू हो जवाल नाम-क्यु अवस्य हुन को इतरे से विस्त में क्यु प्रवर्ष स्था हो, कि अर्थ=प्राकार सुनिये।

द हा जासा=मा। में अपनी विश्वा झा बधादवाद कुछ की नराजाद वी सार्ट १ से परावे परे माम=महाविक रे परे मदक रहा हो इससे 'बबा सवार' नात=चांद सवाद खाडी छो। गाटसनीत थित रे विवे खादानीय दुख सर रहा हो। १ हे भागोर १ है समझेसी खु, साली इसरीनी न व्हं बिका विदेशी यर घरवी " की एतोपमान, अववांदी " कूं क्युं देत मान । समस्यय वीर घर जान केंत्र, जिंद्र ज्ञानसार खेलत वसंत ॥३॥

(४६) राग—शमास मनमोहन मेरे क्यांन व्याये हो.

बाली री पृष्टियें अनुभव मीठड़ें मीत ॥म०॥ बावें कीन कीन कुं न्याऊं, कीरें नहीं ज़िल साथ।

ममता संग्र रैन रंग॰ राते, मदमाते साथोड़ साथ ॥म॰॥१॥ कबह नेक निजर निर्दे औरे, दातन की कहा बात । गूम कुफ सबढी उनहीं तें, उन येण दिये विकात ॥म॰॥२॥

भकी हूँ ज्वास बूर्ं, पिक स्वारों जो पर ब्लास्स्वादि तिकृती होता नहीं बोह्ं ब्र्ं। त्यपुले सक्वातिक बाई कर्रः स्वारी करास्त जाति ती ग्रुद्ध ब्लाभीक रूप चेरा मुम्लिक्स ब्लास्ता व स्वारी शीमा करें वर्शन करें। ४ 'पर परकी' ग्रुद्ध सुनति जेव्हमी तो क्लासी क्रवसान करी में स्वे

वे बरावायत रिया जायी। ६ 'वरावांदी' जो उस्मित तेहने पटको भाग किस से १ हे बीर भागुमी ! तमे सम्मानी में स्वस्त्य पर से कां म सावा जिंको आनक्षर भागिक स्वस्त्य प्रसम्म किसी क्षेत्रो प्रसम्ब

केली रह्यां है । का विश्व मेरी न तेरी गरज पिया है, राते चित चित रंग। श्रवनी आप सरूप भूतकी, जोर रहे जह संग ॥व०॥३॥ तेरो पिया तेरे यश नाहीं, कीलों करें हम ओर। प्रथम करनलीं प्रीतम जाये, जब जाय मिली करजोर ॥म०॥४॥ ब्रजुमी व्याप पिया समस्रावे, घर ल्यावे धन रंग। प्रगति महिल मिल ज्ञानसार सं . खेलै घमाल उमंग ॥म०॥४॥ (३७) राग-पुरबी सकी स्वि वदन निवार निहार। त्रोपित पति व्यममागम कीनी, विसरी विगत विहार IIछ०॥१॥ गये अनादि काल में ऐसी, दीठी नहींय दीदार । विकास विकार निहार निहारत, रंकिय रूप रिस्हवार ।।हरू।।२।। अंतर एक महरत अंतर, प्यार करी अखपार।

कतर एक मुहरत क्षतर, प्यार करा कवापर। सीनै झानसर पद भीतर, चेतनता भरतार॥खु०॥३॥ (४०) रागणी—परच सातरीर काम रंग नगई म्हारै०॥

सासरीर जाज रंग वधाई म्हारें।।।
गांव गीरवें प्रीतम जाये, च्हारें।।।।
गांव गीरवें प्रीतम जाये, च्हारें।।१॥
भगमस चलीय मिली संयम पर

निस्स इस्स इस्साई जी, म्हांरैं०॥

†भूमि अवसम <u>स</u>्थ पाई।

माया भमता कुबुद्धि कुबरी, रही बदन बिलखाई बी, म्हारे ०॥२॥ चेवनता केवस शिव कमला, समति सचेतन राई जी, म्हारे न।। शानसार ब्र'रस यस हिलमिल, लोने कंठ लगाई जी, म्हाँरै ०)।३।। ( AF ) SIM-IME

शासकार-फावली

विया विन सभी (य) इहेली ही, पि०॥ देर दिरानी साम जिदानी, सब दे राखी ग्रली हो ॥वि०१॥ पिय संगति व्यति ज्याच्यौ को सुख, सो सुख इन दुख भूली हो।

तलफ्र' विन पानी क्य' मछली, विरहें ग्रहमा गहेली हो ।।पि॰ २॥ देर देर के बेर कड़न हैं, विसरम रहयो इकेली हो ।

न सासर न पीहर व्यादर, निर ब्यादर ब्यलबेली हो ॥पि०३॥ कसी कमारी विरहता नारी, सरधा धारेय सहेजी हो ।

द्वानसार स्टं मिलिये यंड्यं. प्रज सवास चंद्रेजी हो ॥पि०।।।

( 60 ) routh - moure) पिया मोबं काडे न बोली दे दे सोने बीट ।। पि०।।

सीतन संग पिया विश्माये, नेक न ओरें दीठ ॥पि०॥१॥

को जानै गति व्यंतर गति की, बाचूं कहा दसीठ। कीलों कहिकहि पिय समस्त्रवृं, निदुर निलव है थीठ ॥पि०॥२॥ बीर विवेक पिया समस्तावे, ता पर बालुसी ईंट। सरवा सुमता ज्ञानसार कुं, जाय मनावै नीठ।।पि०।।३।। (६१) राग - धन्यासी मुख्यानी प्यारे नाड घर बिन, गोंही बीवन आया। प्यारे ।। पिय विन या वय पीहर पासी, कहि सखि केम सुदाय ॥१॥ हा हा कर संक्षि पदयां परत हूं, रूठवी नाह मनाय । थर मन्दिर सुंदर तसु भूतन, मात पितान सुद्दाय ॥२॥ इक इक पसक करूप सौ बीतत. बीसासै जिय जाय । द्वानसार पिय ज्ञान मिली घर, ती स**ब दल मिट जाय ।**।३।। (६२) राग-धन्धामी घर के पर विन मेरी कैसी घर घर मांडि॥य०॥ में पीडर पीया परदेसी, लरका मेरे नांडि ॥घ०॥१॥ कुल कौह नदिता नहि कबहु, जातन निदतन आहि । ऐसे पर कु च ची लागी, जोगन हैं निकसांदि ॥४०॥२॥ वीर विवेक कहें सुग भैसी, एती दुख क्य' कराहिं।

व्यानम व्यावन कीनो भरता नै, झानसार गल बांडि ॥घ०॥३॥

(63) zur- aitez रहै तुम स्थात क्युंबी वदन दुराय ॥र०॥ निय जीवन संस्थित में प्यारी, हारी हा हा साथ ।।१०॥१॥ व्यविरति प्रचट पट ऊथारी, अनुभव प्रस्त निरसाय ।

एते पर भी मान न मेले, मुर्ले ब्याज बढाव ॥र०॥२॥ मव परिशास परिपाक इसे पर, व्याई धाई माय । व्यति व्याप्रह सब ज्ञानसार कुं, लीने कंट लगाय ॥२०॥३॥ (६४) शस-सोरज

रैन विडानी' रे रसिया, आग निखद स बीर के रैन० ॥ मिळ्यो विमाव तिमिर अधियारो, ब्रुर सुभाव उगानी रे रसिया ॥१॥ तुम इल इक उजागरनस्था, छार गद्दो है विराली।

यातें हूं धक्रवृत्व उठावूं, क्यूं सुध बुध विसरानी रे रसिया ॥२॥ सब व्यक्ते पर आप पथारी, अन्त विराजी विराजी। बानसार सं कुमति दहागिन, भाग मई विसंखानी रे रशिया ॥३॥

ं हे ब्यालाराम ! धारे वहीं गुवजावी रो ती बान्त<u>मु</u>ँहत्तं परी थयी सो हो त' प्रमादी हो. सातमे गुणुहानी ही काया प्रवर्ती लहु प जानवी कथ कपमादीशात् हे निवाद ! श्रक चेवना तेहमा माई, अवपन विभागहर विमिर सम्बद्धार

मिट्यो, सुर्वे हर स्वभाव उर्दे धशी।

बहुणरी-बद ७३
(६४) राग—सोरठ
वारो नखरल वीर, कई कीलू॥ वारो०॥
मिथ्या मश्चिका पूजी खाई, दखमे जनम फकीर॥१॥
गई गई सो मलिय रही सो, घर घर मनको 'धीर।
कींखुंधीर मरू धीरक घर, विरहे जनम वहीर॥२॥
माल लाल विन्दी नहीं मानै, ब्याभूषण नहीं चीर।
ज्ञानसार वाली ' ज्ञान मिली घर, तीन रहें कोई पीर ॥३॥ (६६) राग—स्रोरठ। चाल, स्रोपरे रंग राची
सालना लक्षपाने, बाई मीने ।।सालना०।।
् खिरा में रूसवा त्सण खिरा में, खिरा में रोप हॅसार्व ।।वा०।।१।।
सन्तर देदन कोय न दुन्हैं, प्रगट कड़ी हुन आ थे।
शोबै धूर उड़ाय इसे घर, लंगल जाय बसाबै ॥बा०॥२॥
वीरविवेकसंग ले व्यार, सुमता कंट लगावै।
ज्ञानसार प्यारी मृदु सुसकत, परमारम पद पार्च liबा०॥३॥
(६०) राग—स्रोर <b>ड</b>
मेली हूँ इकेली डेली, लगी तलावेली ।
वित्र बीवन सीतन सम क्षेत्रें, यार्ते खश्यि दुहेनी ॥१॥
जक न परत खिन भीतर अंगन, तसकु अति अस्तेवेसी ।
खिल सोव् खिला बैट् उद्दं, जाने जनम गईसी ॥२॥
वाहान्तर—१ इत्थर २ बास्हो (= वस्त्राम)

इतै व्यचानक श्रीतम व्यापे, सेरी व्यतस्य सेली। बानसर स्रं डिलमिल खेले. सरधा समित सडेली ॥३॥ (६६) राग-मोरठ

मरहाती व्याया माया अल्. न बुक्साया । बाहिर अन्यंतर बग सम यू', मानू क्षोग कमाया ॥व०॥१॥ निषद निकामी निषद निराती, निरमोडी निरमाया । ध्यांनी आतमञ्जांनी जांनी, ऐसा रूप दिखाया ॥म०॥२॥ मान छोड़ मद छकता छोडी, छोडो घर की माया।

काया ससरुखा' सब कोही, वडवान सुटी माया ।१म०॥३॥ नगर्ते इक रवेनाम्बर खावकी, सरब शास्त्र में साथा। बानसार है सबतें नघती. माया पांती आया ॥#०॥०॥ (६६) राग-सोरव होसी व्यरी में, कैसे मनावें री, मेरो विवा पर संग रमत है ॥ कैसे॰ सीतन संगरिन रंग रमतां, मुद्दिन बुलावे री।।मे०।।१॥ हाडा कर सकि पहयां परत हैं, पीय मिलावे री । एरी कोई० विरहानल व्यति दूसह पिया विन, कीन बुकावें री ।मे०।।२।।

धमति संग से अनुभी आये. सब परद समार्थ ही।। बारी सक बानसार प्यारी दो दिखमिस, सोरठ गाउँ री ॥मे०॥३॥

पाठान्तर--१ समया।

महत्त्वरी-पत (७०) राग—होरी पृरिया, सोरड मित्रित पर घर खेलत मेरी पिया, कल्ल बरती नहीं अपने भैया ॥प०॥ नक्टोरिन' के सँग नवत है, तत तत ताबेट ताबेटमा । र्चम बजाये माली माथे, कीन बनाव बन्धी दहया ।(प०।।१।) श्वर असवारी चमर मुडारी, श्याम वदन सिर पर वरिया । बिष्टा रमरी जती पम री'. लाल मरत हं में मैया ।।व०।।२।। इह सब चेष्टा पर परश्चिति की, निज पर में रमिट्टें भविषा । व्यातम शोश गुरु द्वय खेली, जानसार जिल में मिलिया ॥५०॥३॥ (७१) राग-नालंगको यें ही जनम गमायी. भेप घर यें ही जनम गमायी।

पूँ ही अनन मामरा, मेंप घर पूँ ही अनम प्रमाणी। संबंध करखी सुषम न करखी, सासु नाम प्रमाणी।शेश। श्रुख हुनि करखी पेट कररखी, रेसी ओग कमायी। देखी जुद पर कमग्री नी पर, इन्हींप गोप दावारी। भोजा।२॥ भूंड हुंताप प्रसदी नी पर, हन्हींप गोप दावारी। भोजा।२॥ भूंड हुंताप प्रसदी नी परि, शिन मति अगत स्रमणी।

मुद्र मुहाय पादरा ना वार, धन मात भाग स्वताया । भेष कमायो नेद न पायो, मन तुरंब वस नायो ॥से०॥३॥ सन साध्ये विन तंयम करणी, मानु सुत्र कटकायो ॥

मन सार्च्य दिन संयम करकी, मान् तुस फटकायी । ज्ञानसार वें नाम फरस्यों, ज्ञान को मरम न पायी ।।वे०११४)। वाजान्तर—१ याने २ इच्होरिन २ वर्गी । अब डम तम इक ज्योति जरे. तब न्यन जोति नहीं मेरी ॥ चरमात्रक न चरम करमा मिल, पाकेसी भव मेरी ॥प्रम पाकेसी । विच्या दोष बानादि काल घट. मिट अम तम खंधेरी ॥४०॥१। सचा द्रथ्य अनन्य सुभारे, चेतनता न अनेरी शबस चेर

बाल लग्बि नहीं सामै जीलों, जीलूं बीच धनेरी ॥४०॥२। तव ही शुद्ध सरूप गर्देंगे, शैली अनुभव सेरी । प्रश्न शैली क्र परिविद्य तह जानसार ता. यस व्यातम पद केरी ॥प्र०॥३॥ (७३) राग- बाफी (शाव-गोतीश का बदाव) (अव) तेरी दाव वरुपी है, माफिस क्यों मतिमान । व्यास्ति देश उत्तम प्रम संगति, पाई प्रस्य प्रमान (तै०१११० कोष लोग वह माना ममता, मिथ्या वह व्यक्तिमान ।

रात दिवस मन क्ष्म वन राती, चेतन चेत सबान ।स्ते:॥२॥ मत मद साद समयी ज्यं मेंगल, प्रमत गति व्यक्तान । जवाद तेरी कहा कारत, जिन मत रहिस विद्यान påo N318 सता बस्त भिन्न है सब वें, सरवंगी सम आता

इक इक देशी सब मत जारी, सब देशी जिल जान ॥ते०॥४॥ सरवंगे सम विन मत साथे, बाथे आहम आहा बानसार बिन मत रति आर्थे. पार्थे पट निरवान ॥ते०॥॥॥

जिनमत घारक ध्यवस्था शीत (५४) राग-चंचम व्याप मतिये मसा मुद मतिये मसा ॥देश। मंद मतिये दसम काल मैं जैकिये. जैन मर चालगी प्राय कीनी। परभव बीह ना बीह ने अवशिक्षी. निरमर्थे ममत रस अमृत पीनी।।आ०।/१।। एक कहै थापना जिन सशी पूजतां. फुल भूपादि व्यारम्भ वासी।

थात परमाण थल कल इसम ब्रासिनै. सर रचे द्रष्टि ते स्थंन जाको ॥व्या•॥२॥

तेह कहि विविध विध विंब जिन पुलतां. . विन ग्रनशा न भारम्भ दाखै।

सवा धाराम सिवजाय निज कर करि. कुल चृंदे प्रगट पाठ मार्खे ।।व्या ।।३।।

केर कहि धरम न' सरम दाली दया.

मर गयां लोश हिंसा न आयो ॥ वांशाशाः

तेहर्म तच्च ते एम आसी। शीव हवातां बचायां न अपसा पत्नी.

ज्ञानसार परापर्स एक कडि जेम मनराज मौतां लिये. तेम करिये न आस्म शिक्षिये। हेय गैयादि जे मन प्रवृति वर्षे. ते सच्ये सिद्धता तेम मसिये ॥ऋगः॥॥॥ केर्ड कहि प्रथम नय कथन विवहार नूं, पारकामिक पत्रे केप भागी। केई कहै बचन मूं आल गंध्यं सबै, निश्चर्ये मिळता जैन दालै ॥सा०॥६॥ विविध किरिया करी विविध संसार फल. कल व्यनेकान्त के गति समृद्धि।

यति समृदियमै भव असया नवि दलै,
तेहः थी सी वर्द आत्म बुद्धि ॥आ०॥७॥
नहीं भित्रचै नमें नहीं विवहार थी,
है नहीं है यथा बला रूपै।

इ नहा इ यभा वस्तु रूप। क्लामरणे कुम्म प्रतिबंद सचा रही, यर सचा रही रवि सरूपी।आग-॥८॥

सर स्वा रही रवि सरूपें ॥आ०॥ जिनमर्वे मनत सका न पामीजिये, मनत सवा रही मत ममर्चें। हण्यता हृष्य में धर्मता धर्म में,
धर्म धर्मी बदा एक वृष्टें ।आ॰।।६॥
बाहिर कात्रमशी परम बह संगत्ती,
सत समर्थी बहामीह सार्या।
प्रस्त कामस्य गुकादास्य बदी धर्मे,
पृह मति बढ़ी बाहिर कारा ।।धर।।।१०॥
कार संया स्वी अर भरी धरारी

परहरी हुन्हें नथा पराई। सम दम लम भन्नो तन्नो मत ममच ने, राग दोषादि पुन व्यास दाई।।व्या०।।११॥

अपनये और व्यक्तिरेक हेत् करी, समक्ष निज्ञ रूप नै भरम सोवै।

शुद्ध समवाय तें व्यारमता परिवार्ते,

झाक नुंसार पद सड़ी होवै॥व्या०॥१२॥

इति यह ७४ पं० घ० श्री ज्ञानसार तित्रश्चि

विनिर्निता हासप्तविका सम्पूर्या

## जिनमत धारक व्यवस्था गीत िवालावयोग ]

राग--वंत्रव भेदमतिए दसम काल नै जैनिए.

वैनमत चालकी प्राप कोनो। परमव बीड ना बीड में सवशिशी.

निरमर्थे समत रस असंत वीनी ॥संदा।१॥

वर्षः – व्यत्प प्रश्चिमाने पंचम कारा नै जैन दश्सनिए जैनमत नाम=तैन दर्शन प्रते, चासकी प्राय माम जैन दर्शन सात नगाभि-प्राई नै व्यक्तवार्थते हते जैन दर्शनिए भिन्न भिन्न एक स्वाधित

क्यान रूप हेद करते हते. जैन दर्शन प्रते चाससी प्राय: नाम=िस

चालकी में बह होर होर तिम जिनसत में चालकी प्राय कीनी । तिहां कारण न्यों ? 'परसव बीड ना' नाम=स्रमेश्वर भाषित सिक्षान्त सी एक

बचर बने तथापीत तो संसार कंतर बनने बननतो परिश्रमण करवू पहरूरी, 'बीह् मैं' नामान्ते हरमें, व्यवशिक्षी मासः:व्यवश्रेती सते. अवगिणना करीने नाम≔न विचारी ने, निरमवे नाम=निरभव थए

वते, कस्मात् कारवात् वासङ्ख्यात्, समत रस नास=समस्य रूप जहर रस में, असूत नाम असूत समान मानी नै पीमी नाम=पान कीयों हैं, विशे फ़लें कंठ सूची समत्व कहर हव रस भरकों हैं कियाँ पक्षमें समस्य ग्रहें वर्ष उनाके ।

## क्षित्रसञ्चारक-व्यवस्था गीत-मासाययोग प्रक कदि व्यापना विव वित प्रशती.

्रक्त घ्पादि व्यारम्य झाखो । सातुपरिमांख थल झल इतुम आंखनै, सुर सर्वे दृष्टि ते स्युन आंखो ॥मं०॥२॥

क्षर्थ—एक सदितां साम=एके केचित एवं वहति, केईफ एकांत-बादी सत्तवसत्त्री सिद्धान्त तु वहतु बचन 'न रंगिरुका स घोष्टरसा' प वचन बहेरी ने स्थान रक्त वस्त्र भाग्या है जिसे ते कहे 'बायना वित्र जिल' लाग≕थापना निरोप थापन कथी जे 'जिल विक' नाम≕ जिन मिला पूर्वे 'पातां' नाक-पता बरको धको फल ध्रवाहि' नाम= पूत पत पूर दीप नवेशादि 'बार'स कांग्री' लस=बारंध्कांश कांग्री, पर्य वचन स्वाम बस्त्रवारी कहै, खड़ो मन्यो बिना खारेंमैं पूता नी भनाव ने निहां भारंभ तिहां थर्म नी सभाव परमेश्वरे संबंधियी कें 'बारोंने नरिव दवा' 'दवा मुझे धन्मे पन्तते' तेशी पूजा व करती प्दर्भ सूरवे एकंत पूजा पत्ती कायांवरी बाक् झटा-होट करती बोरुयो - 'मान् परिसास कस कम क्रम कांग्रजें' सामः परमेश्वरे विद्यमान करे सोडा बमार्ज वस क्षत्र सम्बन्धी फूत स्थावीचै 'सर रचे

जर्म् हुन्दे पर्धन पूरा पड़ी कांग्रेसी याद् हुदरांग्रेड करते गेंग्रेसी-जानु पंदेश्या कब का श्रीकृत पर्धानी मान्यस्टियेसी विध्यान वहीं सेवा प्रशास के कहा कांग्रेसी प्रशास प्रशास प्रशास के स्थास प्रशास के स्थास प्रशास प्

तेह कहि विविध विध विव किन प्रश्ता. जिल व्यनंता ल व्यारंभ दाखे। नवा साराम' नियमाय निम कर करी. फुल पुँटै प्रगट पाठ भागी।।मं०॥३।। धार्य-'तेह कट्टे' नांम=ततुराव्य पूर्व परामर्शक, ते काथांवरी फिटी करमुत्र पहुच' कहै 'विकिच किथि' लाम=सामा प्रकारे सिंव प्रकार प्रवर्ग जिन बातेमा नो पत्रः करवां 'जिन स्वनंता न सार्थम वासे' क्षतंत्रे कालै धानंती भववीसी ना कानंता तीर्वकर तेडावां एकेडी परमेरवरे एह्यूंन चहुयूं (के) समारी पूजा में तमने आरंग बास्ये ने बनते ही परभेरवरे पहलू कहा 'न बारंग दाखे' 'पूचा निरारंभिक' फिरो ते कहै यहबूं पगड पाठ है जिल पूजा लेकिन निमित्ते अवक मवा काराम (निरताव) करावे, पड़ी क्यार सावड सारामें जई फ़तो ना बचो प्रपर बस्त्र मा समार पत्ना पर्छा ने ते इव में बांगी झांटवा थी थयी बार ना फूस फूल्योड़ा (करी-काब पड़ी कोना ना नकता बांगुकियों में बारो ते फलो नै च है। तोदर करना कारण कती जूंटी टोवर करी बारतो भी प्रथम कंडे पहरावे । पमाते दरशन वेशां फ़ल्या फुल वीसी ते बारसी कती कारी-बीचे ते काराबीस २८ सेर एकेक देहरी कारीजती बीधीजती में देखी ने तेकने कोड पूछे पहलू किहां कथन ही तईये तेनी कहे

"शाद पाठ मार्थे" शिद्धान्त में माट पाठ है ते पेतालीस में दीस-तुं नथी। पीजूं ए पाठ है समोसरस में मान प्रमाण विकासन

पादान्तर-१ कारंभ

विस्तात-वारच-द्रयवस्या तीत-कासन्त्रोक तेतका व्यांच्य न् चडाववा न मिले बील मिले जेतला चडाविये, परंजना बात नशांसुं हुत या कती चूंटवो-कतरवी-कीशवी ते मनाव । अन्य पृष्टै पाठ बताबी विधारे तेऊ की सक् महाकि:-यारे कर के समत के, की शर्मा की। ये चारक मह में नहीं, को शिरालय चोर ॥ १ ॥ -:8:--केंद्र कहें वर्ग मं मर्ग माखी दया. तेहन् तल ते एम आंगी। कीव हरातां बचायां त त्रवसा पती. सर गयां सेस हिंसा न आंगी ।। २०१४ ० १

ष्यां--विशेश पर्य वर्शिक नेहिंद तहुं वहीं हैं पियां नू यां भोगानीत मां नू यां । इत्त्यं नांत-वार पालीत देश को नूं हुए प्या माली। विह्युं तक में नांताने तथा नूं प्रताम प्या कोंग्र पांतान दितें मान हैं उपाये, 'तिव हहतां पायां न अध्या कींग्र मान-मान कहें प्रमुक्त ने वा (कहर्त मूर्ण क्रांत्र) कर्या कींग्र में मान कर है प्रमुक्त ने वा (कहर्त मूर्ण क्रांत्र) के प्रताम कर्या की पांत्र मान है ते हैं दे प्याया बाता कांग्री ने दूस पाती किया पाती ! कियार पाया ब्यावारों से मानना मेंने प्रीमाणीतीं

तेक **बहै से बजायज्ञासम्बर्ध भारियों ने मरता प्रायों में बजावतई** कार्सक्**यात जीवों जी दिस्स करी, (कम**़ी ने कड़ी जे प्रायों ने हुई बजावयों ते बायी कारमें योरमें या मैसून सेवरमें ते सर्व-शीवों जी

श्चानधार-पदायसी हिंद्रा बनावना बासा में यस्ते, ए न वनावती तो हिसा ही स्व करवा थाती में बचायता वाली हिंसा नी विभागी स्यूं करवां शाली १ तहर्ये ते बोज्यो. मैं मरतां न क्याच्यो ते कामस्वान वृद्धियें क्षारको । सर्ग सिजाना न' वयम:--कार्य स्थल दाले, प्रदुष्टेश निक विलदायोग ।

इस विद्यक्तो संवित्रो, तिमनि मोनश्रया इति ॥१॥ क्षभय सुपावदांन मोच ना करका कहा माटे

बचान्यो. में तो व सुद्धिये न वचान्यी. व सान वामादि मैग्रन हिंमा करी ए वॉड मारी न हती । तहेंथे ते बोल्बी, बोईंक ना बचारका व बचै, स मार्थ मरे, क्षीत मात्र खाय स्थिते जीवे. बाद्य स्थित

परिपाकाभावें कोई सरतुं न बी । ऋत कः संदेहः तेथी आपके हाय मारप् क्यापप नहीं, ते कारणे 'मर गयां हेस हिंसा न जांचें तेथी जीव इशीजतां न बचाश्यों ते परमेश्वर आवित दसा भी तल गांम रहस्य नांम-सार ए काराज्यी ही ।

केय कडि जेम मनरात मोजां लिये. तेम करिये न आर्थन विकिथी।

हेय गेयादि जे मन प्रवृत्ति वर्धे.

ते सर्वे सिद्धता सेख अक्षिये । प्रंत्राप्रा कर्त्र:--केचित पूत: दर्व दर्शत, केईक इस्वी कहै किस जेडनी जेडवी मर्काव दोय तेह ने कोई प्रसन्न करना बांडी तिवारें तेह्ना महति प्रमांची प्रश्ति बत्तै सरस्र प्रसन्न होच। एसरस-प्रवृति बाला वो क्यान हो पर ए बन वो कोड हो को चंकर, क्यादि हो को चक है तेथा यहनी इसानुसाई के प्रश्ति तेत्र चोरम हो। कर्ष "मान यह प्रस्माणों कारता बंध मोचनी"।

तेथीज मानंद्रपन मालाधींचें पिए इसल कहस्ं:---

जिनमत-धारश्च-ध्यस्या गीत शास्त्रवयोधः यह

चानम चानकार में हाये, नारे किया किम चांडू"। किस किया जी तट करों में तटक', तो काल तथी पर कोम' से 11

ते कारणें ते कड़े 'जेम मन राज मीजां क्षिपै' मांमः जे जे टांगों य मन राक्षा छाने चडको सकी जे जे तरंगी जे जे साझा इरनावें ते ते कार्य प्रवर्णवी मोकार्थी ने कोम्य है। जिम राजा ने . इसम माफ्स प्रवर्शनी राजा राजी वह मोटी जागीरी कार्प निकार विकार राजी क्यों सोचा आसीरी आपें। जिस करिये स कार्यक गिविषि नाम≃मन व्यामा व्यापे तेम करवं, करते व्यारंभ न मानवुं । तिवारे वक्षाक्षीये अस्य कर्यु-हेबरीय स्वादेव बक्षा ते हेयगेवादि स्वा १ तहवैते ५ई 'हेच गेवादि जे सन प्रवृत्तीवर्षे' वासः में बस्त मां मन भी बोबबा भी प्रवस्ति क्वी ते हेब, में जे बस्त मां जाळबांनी अस अवृत्ति वधी हो गेय, में जे वस्तुमां समसी बाहरवानी प्रवर्ति वधी ते व्यादेव 'ते सवै सिद्धता तेरा मरिवरी' मांमः तेत्रती सत्तरी प्रवृत्ति क्षित्र थयां ज्ञतां क्षित्रता नांस≔गोपना धाय. तेत मस्त्रिये मांम=ते मनोमती नागापंथी पाप' कहै है सिसांत पकी प वचन बात्यन्त विरुद्ध हैं।

पापी भारे कमर्ते की उद्दान प्रक्ते न ज जाव प 'करवों सिद्ध प्राचिका मही, सिद्धानक पार्तीच्युं पर्यान में एकूँ ही तेनी क्लोक्टन पूर्व भेट प्रवृत्तिक हो 'क्लोक्ट क्वान मुंजा हुए' क्ले' नांना-केश्विट एवं वर्दति य वर्बनाय वैद्यातीय क्यानों औं वक इन्यानिक मूं कथन ते सर्व प्राचीयों नी सुद्धि कानायकार्य जिनसर-पारक-स्थरमा भीत-बातावचीय अन्यत्म मृद्ध करूप सी हैं तथा तथा मृद्ध हों तेमां सर्व प्राथीमों भी मृद्धि करूप सी हैं तथी जात कहाँ । बाई प सर्व कपन मात हैं। शिवार्ष किसी तैन हाती माम-जीनदर्शन मुं जानिक रहरण सु सै-सिप्ये क्रिकेस सिद्धता हैं। निस्पायानी सिद्धता भी समान, क्रमें सहाक्रमें करी

कार्ते मये सेन्स्रो भिवहार तेथी सी शिवहार वर्ष ? तेथी कार्तत में मयांते निरूपय कामसी, तहवैश सिद्धता यसी विश्व कार्त्यपन कहे 'तिह्ये एक कार्त्या' पुतः 'तिह्ये सरस कार्त्य'।। विश्विष किरिया कही विश्विस संसार कहत.

कल समेकारित कें गित समृद्धि। मित समृद्धी पर्के मंत्र प्रमाण निष्ठ ठलें, त्रेडभी सी यहं स्वाटम सिद्धि।श्लामंत्री सम्बंद-पंत्रिय किरिया करी गोज-स्वामा मकारती विश्वि मृद्धी मां द्वरी । श्वासकाल मा किन दरीको ते शहरी

कि परिवाद करण कारणावाला अवस्थित किरवेश कि परिवाद के अपने के अपने क्षित्र के अपने क्षात्र के नकिन्त्री नाम=पद्रक्रम कोतपनों नी प्रदार्भ अर्द ने प्रदास भोगव्य'। बीजा पक्ष सर्वाय ना वर्ते बडे बोजी पत्र भोगव्य' इम-प्रीज् भीय तहर्य जैन दर्शन वकी गति समृद्धी गति मी यभोवर ठिंदी । जिहा गति जी वृद्धि तिहां भय अनय निव रवी में जैस दर्शन बिना चन्य दर्शन साथ भव भ्रमण टासना में फरफा नथी जागाय' में ब्याल ना जैन दर्शनीको ना क्यन जोते क्षते प्रत प्रपाकीयता श्री हरशकीयता थी सात नयों थी एक नय महत्त्व था होब विद्या नय महत्त्व करीने विधी पोवा नौ सत पुरु बाब तेडुवूं तेडुवूं कहैं तो 'तेडुबी सी वई बात्य-सिद्धी' नांस=तेहवा जैन दशेन यकी कारमानी सी सिद्धता यई ? एतमैं जैन दर्शन प्रवर्शते ब्राप्तार्थे मोश्वतक शामिये में ब्राप्त ना जैन दर्शन सेक्या मधी संखार भी प्रदिता पानिचै ते जैन ती

झानसार-पश्चकी पता हो तहतें धानेक फल भोगवया ना स्थानक धानेक गति उद्दरी ही जेंद्रवा जेंद्रवा चल संबंध भोगनवां नी जेंद्रवी जेंद्रवी गति तेहवी तेहवी वर्ते समन थाय। 'गति ससदो पर्छ मनभ्रमण

44

एइयुं नभी परं सदक्तिः---चातम सुद्ध सरूप की, काल विश्वमत एक । इस से मैंसे केर था. श्रीप श्रीयो क्रमीक प्रशा

प्रभी समी जैन में बचावां हां — नहीं निश्चय नयें नहीं विवहार थी.

है नहीं है यक्षा करन हती।

वन जर्द के विशेषित सका स्त्री रूप स्वा रही रिस सहवें गिरं गांटा। क्यों-तेश र शे वृं वस्त्र केवारात्र है। इस कैवारात्र क्यों-तेश र शे वृं वस्त्र केवारात्र है। इस कैवारात्र क्यों-तेश र शे वृं वस्त्र केवारात्र है। इस कैवारात्र क्या दुरावर मार्ग र कर के विश्वति हो। यहे आदेश हैं क्या दुरावर मार्ग र कर में विश्वति हो। यहे आदेश हैं की व्या है वहीं हैं प्रतिकृत की मार्गाल्यों है कितार का से बीट मिल्टा की प्रतिकृत हैं कित्य क्या दुरावर अनुस्तर है किता कर्मीर आदेश हैं कितार क्या है कितार कर दूर कर कि विश्वत केवारा है कितार क्या है कितार कर दूर कर कि विश्वत का मोर्ग के विश्वत है कितार क्या है कितार का कितार केवारा कर मोर्ग की विश्वत की क्यों की वृं तो हो केवार केवारा है की विश्वत का भी की विश्वत की क्यों की वृं तो हो की कितार केवारा हो की विश्वत का भी की की की वे तार्वत नार्वी केवारात्र केवारा का सी विश्वत की की का का की केवारात्र केवारात्र केवारात्र केवारात्र की की का की की की की की की की विश्वत का सी विश्वत की की स्व ने तार्वत नार्वी की विश्वत हो से सी विश्वत का सी की	जिनमत-धारक-व्यवस्था गीठ-बालाबनीच ६३
करंग-नेपे र वर्ग र कर वे वाचानी हैं। यह वीतावाल करवाया: "भी कर दिशा किया सकतावाल कैयावालां" कर्म रक व्यादावारों को करवाया दिशा के वाद्यावारों कर्म रक व्यादावारों को करवाया दिशा की वाद्यावारों के रुप्त द्वारावार जाने कर वैद्यादी हों। देश का वोचे र के रुप्त रा वाचे को वीदा हों। के व्यादावार के वाद्यावार के रुप्त र विद्याप कारोपों की रुप्ते जाने, वर्ष वारोपकारणां, के रुप्त विद्याप कारोपों की रुप्ते जाने, वर्ष वारोपकारणां के रुप्त विद्याप कारोपों की रुप्ते जाने, वर्ष वारोपकारणां वर्ष व्याद्याप कारोपों की रुप्ते जाने, वर्ष वारोपकारणां वर्ष व्याद्याप के व्यादापां के रुप्त किया की व्यादापां की वर्ष वर्ष है। वे वार्त-नेवा विर्माण विद्याप कर्म की करोवा वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष का का क्यादापां की व्यादापां के व्यादापां की व्यादापां का व्यादापां की व्यादापां की व्	वल मर्थे कुंगप्रतिविंगसत्तारही
कप्पश्चम: "'पेन कप पहिला केवाल, पारत्यकारण केवालामां,' कर पारु कर पे कर सामुख्य के वे कपालाह में हैं के सामुख्य के पर कर साम हमा है के सामुख्य के पार्च कर के प्रकार कर कि कर के प्रकार कर कर के प्रकार के प्रकार कर के प्रकार के क्षण कर कर के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार के क	युर मचा रही रवि सरूपे ॥मं० ॥≈॥
सूर्यं नथी, सूर्यं नो पर्टिष्यं हैं, तेनूं व खतावरा है दिस सात्र के प्रथम सत कहा ते जेन नथी, कथं एकान्य सार्टें, तेव सां	क्यों—तेशे र वर्ष रृं क्यत जैनावाती हैं। तम वीसावात क्यों के प्रकार परिश जिल्ला व्यावकार वेदावातां? क्यों क व्यावकार के व्यावकार (विश जेंद्र के व्यावकार क्यों के व्यावकार (विश जेंद्र के व्यावकार (विश के व्यावकार क्यों के व्यावकार क्यावकार के व्यावकार क्यों के व्यावकार के व्यावकार क्यों के व्यावकार के व्यावकार के व्यावकार क्यों विश्वकार कार्यों के व्यावकार है के व्यावकार क्यावकार कार्यों कि व्यावकार है के व्यावकार कार्यों के व्यावकार कार्यों के व्यावकार के व्यावकार कार्यों के व्यावकार के व्याव
	सूर्व नथी, सूर्व नो पर्टिबिंग छै, तेनूं ज खतावस् ही विस
	मात्र के प्रथम सत कहा ते जेन नथी, कर्य एकान्द्र सार्टे, तेव सां जैन नी पहिस्कि नी सत्ता है, जैनी दीसता झता जैनी नथी

कर्ष एक स्थापेलकातान। 'सर सत्ता रही रनि सस्ये' नांग=सूर्य भी सत्ता विम खर्च ना सहय में रही विम जैन दर्शन नी सत्ता जैन क्टाँन सां रही के का मधानुवाईत्वात ।' विनमर्ते ममत सचान पामीतियै. समत सचा रही सत समचै। दस्यता द्रथ्य में धर्मता वर्ग में. थर्म धर्मी सदा एक वर्षे ॥मंद०॥६॥ क्स्ये—'जिस्सर्वे समतं सन्ता न पामीकिये' नांध=क्षितपत जे किये ग्रम ग्रमत की कचा छत्तापरा म पांसिये प्रत्य कहा सते क्यांतवादी क्रोडकी-क्यां विद्या व पांधीली ? सबसे बेंब दर्शनी लेकें वश्चर धार्पे धनेशांत्रकतात्-सनेकांत्रकृषणा माटे, यमा-नाम वर्शकति 'कत्र कत्र क्षत्रेकांतकत्वं तत्र तत्र निर्मेगत्वं' इति

विद्यांतः । 'स्पन्न स्वास्त्र स्वास्त्र संबद्धाः स्वास्त्र स्वत्र स्वास्त्र स्वास्त्र

विषे परं भिन्ननिदर्शन करचां छतां द्रव्य मूं वर्गे द्रव्यत्व, तेहने विषे रही द्रव्यता, तिम जैन में विषे जैनस्य वर्गे, तेहने विषे रही

जिल्लाक-शास-प्रशास तीत-साकासकोच ६१ जैनवा मंगमादि साथ वये सम्मितिह सम्म तेल चैन पर्मवा जैजल, जैन धर्मवा श्रमां से बेर्ड क्षेत्र मां ही परं भिन्न निवर्शन बरातां बातां चैतावा चैतावा पाने मां रही हो, तिहां समत्त्र साप पक्षी । क्यं व्यनेकांतकत्वातु । में व्यन्य पूर्वे मारुया रोनी एकेक समापेशी, बातपत्र बात समाची तेत्र न विषे जैन बार्मता सभी ते के एक नर्वे करना कानी रहा। ही ते सर्व समाजैन मां शेव ही तेबी जैनी कक्षण है, परे तेक मां जैनता नवी, सर्वीश नचन न सारता श्री 'वसे प्रभी सदा एक वरी', जीम-जैन मां रहां जीतरन चर्म, तेर्म रही जैन धर्मता, तेहनी सता एक क्रुटी हैं। सप नव सर्वची कृति लॉम=बातीयका है साथ ध्वन सात सर विना स है, लेडबा जैनियों की बलिडारी, पर बादि विरसा व बहिर झातन मती परम कह सँगती, अत मनती महर मोड माथी। अमत्त अप्रमत्त गुलटाख वरत् अमे, सुद सति वर्के अविरत क्यायी ।।सं०।।१०११ धार्थ—'बहिर जालम' माम≔ष इवें कहा ते वहिराला है। **क**र्य जिल याचन विशासकत्वास्त्र ('मती' लंग=महिरातमा पर्णा नी क्षत्रि के । क्षेत्र माँ दून: 'परम जाड संगती' गांमळालाह ताव ना कंती सेवड करवा वाला, कारण्य तर संसम्भवि ता वासेवी हैं। पुनः 'सब समापी' शांसच्यात मा समत्वी छता सत साटै सदाई करता किरी, इस च विचारी साचाद क्रमे विकास कथन कर्त हां में किसे तेड़नी बचवात स्वी ? तेई नहीं पुनः ते केड्यायक वी 20 श्चानसार-क्वावशी 'महा मोह' गांम-महामोदी खतां सारंभीया, स्वरिमहीया है। पुनः चेहवा ही 'मामी' नाम=महामाणी हो, ते कपटकृति थी सरागी थया शावको थी वहत् कहे 'प्रवत्त, सवसत्त गुराठास्त बनत् कमे नाम=प्रमादी हुद्दै, काप्रमादी छातमें, शुश्रहाधी कंतर महर्श र गुरुतानें बरतां हां, छत्रवं 'मदमती बहैं' मांमः मसं बढ़ी बका बहुए सबी-प्रस्तवन करें। रहायांचे स्वार क्षण स्वाराज बहुतुं कहे, बहुद यहवाद हुरें, बूधें तो हुआ हीज है किरी बक्र बा गुरा कहैं 'कविशकि' तांग-न विश्वि, कविश्वि विरत साम नथी कर्ज अदा जगनात । ती बढे अवकारकी सी वी विरत क्षे तिहां हिसी क्षम पत्नी सूर्व प्रंभी कावां सिद्धानकथी सरीके सिद्धचेत्रनी सम्बद्धियें नवकारसी पारता में देख्या पत: वसी बेहता 'कपाडी' संग्र=कोडी शामी सोशी सता । आप नंदा करी मन भये बरहरो. परहरी इन्हें नंधा पराई। सम दम सम मधी तश्री मत मधत है. राग दोसादि पन चास दाई ।।सं०।।११॥ सर्थ-५ पर्योक्त ने मत सम्भी क्या कार्ये शस्य जीव कड़ै--हिंदै कमें स्थो मार्गे प्रवस्तिये ? स्वांस बस्तवारी भी देशरा में प्रशासनी ही न पैसे, तेहने सध्यक्तको बतावे, कामांकी स्थासक्तकारी ने ड'डिया मर्से कड़ै तेडमें सम्बन्धों कड़ै, बीजाही एक एक ने परस्पर निर्दे, तिवारे खासारे समझे छ विकार आर्थे--छन अप्रै के

सार्च्या एक बड़े ते सार्च्। अमें स्वी प्रवृत्तिवे, अमारी सी गति,

तिनमत-सारक व्यवस्था भीत बाह्यस्थी स

बनारे 'बाप लंशा करें। मालक्ष्मायता बारवानो बाप जिला करें। । 'भव भवे चरहरों' नांन=भवतत्थार्गातस्य सब वी वरहरो थणा. रे भारता त' जिम प्रकीत स्थापम भी एक स्थाप हीन वा स्थिक स्टरीस ही बामंती अवधारण, हे बाहमा हमारे बारची पहारी, तेनी अधरावी ह 'परहरी मुखेँ निंदा कराइ' नांन≔मुख हुंती छता या काइठा, पर जा ध्यसम्ब कविया परहरी-बोडी ए त्यान्य के सम रस सम भजी' नाम='सम'=राजु मित्र तुल्य मजी-सादरी, 'दम'=पंचेन्द्रिय दशन चावरी, 'सस=चुना चावरी ए चावरणीय, 'तजी नत समत न' नाम≔सत री ममात्र इतपाडी पणी क्षोडो, वतली जिनस्थियांत म' पोलाबो प्रवर्तन विकास दीने तोडी न कोडें. चारमार्थी तेह य कोजी । 'रात कोमाहि' सांमालमा में देव में बादि शरूदे चलड च्यायाव्यासावि में होती । प्रमःनाकी 'बास वाई' नांस व्यास्या वाई बांडी में छोती. य ने छोड़ात बिमा सरव अपने में ।

> ''श्रस्ययें श्रीर व्यक्तिके हेतुकरी, समस्र निज रूप में गरम कोषें। श्रुद्ध समयाय तें श्राह्मतापरिकर्ते,

श्चद्ध समनाय तें आरतता परिश्वें, ग्रान नूं सार पर सडी होयें ॥१२॥मं०॥ क्यां:-- हिंदें जात्मा जेवी कात्मीक सरूप योदे तेहवा जैन वर्तन नों में दीने कमन कें ते रीज जही नवायें। 'कम्बर कीर क्यातिरेक हेल' नांस==एक सम्बय हेत बोधी उथतिरेक हेता ए से हेत नेवरी बराताचे बरातां होय ते स्थन सिळांत वी सप्पारण बसी वाह्य परकाम वे दोने जिस्माई निरमत हुडा ससी ए वे कारखे योगाना ब्र.स्मा मां पोर्से ससी रीते समभ' मांम=समभे- समान्यय क्रम्य-माहाजम् साचे यम् सण्यमणः नाम=स्वर राज्ये व्यासना साणं नाम हुन्य में झान वर्शनावि नी वताच्यां होय ती यक्त सत्वारी सुर्रे सुक्त में बोबो बांबसो गुम्हातात्री तहिरानवी तेई सरी दुद सुक्त है पाया पायमा ग्रुपालका काहरूल्य पर करत बीजा ब्रामका विद्यु होये। पर हैं मारा बाल्या थी बाल्या में विश्वाह ती बाम वसवर्ती हाती, लोग वसवर्ती छती सी सी क्रवेश, स्वी स्थी सफरधीय कार्य से मां प्रवर्ष . ती व असा में पंचमी गुणडांकी मशर्ष ते मुक्तें पोता ना सरानी करवा माटे बतावें हैं। वर ए बाती भी मध्य मांची ठगाई नाच 'किन संपने भरम कोषि' नांसन व्यक्तिक हेतुवै करिनी 'निकश्चन मी सरस कोषि' नांस= थोताना सरूप भी भरम स्रोवेनमापै । तप्र स्वतिरेक सक्तवमाहः — 'तदभाषे तदभावो ध्वांतरेक,' माम-काम, कोघ, सोध, सोधाडि सद्भारं सम. दश, सम, झान, दशैनादि में खमावें स्वमायः मास पंचमादि मुख्यानाच मौ चमावः मैं जे सभी दभी वपसमी दोष ते पोताना सन्दर्भ समश्रीमें निजन्न भी भरम गमायी ने 'ग्रुद्ध समयाय तें' माम≔ग्रुद्ध समयाई कारवें करीने, तत्र समयाय सम्बद्धमाइ:—'बस्समवेश कार्यमुख्यते तसमयाय कारवें'' तामःः चारमा रे ज्ञानदर्शन चारित्रवंश हतीन ज्ञानदर्शन चारित्रावि समवेत मिल्पो यकी जात्मता परिसतें नांग=ब्रालाता न वरायन होय ते व्यात्माने 'श्रामन्' सार पर्' नांम-पुश्चित्रह 'सही होने नांम-निर्मे संघन्ते होने इति सर्वतः । र्वात दूसमकास कंबंबी विकासध्यारको मी विकास

वर्धन स्थलम सम्पूर्णम् ॥ सं० १८६० क्रिकः। पं०। सङ्घः॥

## श्राध्यात्मिक पद मंग्रह (१) राग-भेक मोर भयौ मोर भयौ, भोर भयौ प्रांशी ।

चेतन तुं अचेत चेत, चिरियां चचहानी ॥भी०॥॥टेका। कवल खंड खंड विकसाने. कौलनी सुदांनी।

कंज उपम खंजन सी. नैनां न घरांनी ॥भो०॥१॥ है विभाव विच नींद, सुपन की निसांनी। तेरे ससमाव मांहिं, दोन् न समांनी।।भो०।।२।। व्यारोपित धर्म तैं, सुरूप की दुरांनी।

रूप के सज्योत, जानसार ज्योत ठांनी ॥भो०॥३॥ (२) राग-पट मोर भयी श्रव जाम प्राची.

क्यं अवहं अखियांन घरानी ॥भी०॥ मनज बनम तुं पर्धं नहि चेत्यो. पस्त्र्यानी चिरिया चचडांनी ॥भो०॥१॥ चेतनधर्म अचेत भयो क्युं.

चेत चेत चेतन सज्ञानी।

8,5 बीतौ यात आयु बल बोबन युं, टव टक्कल पुसस्ती पानी।।मो०।।२॥ पर परशित परशानन प्रयोगी. नींद सपन तक मांडि समानी। ज्ञानसार निज हुए निरुप्त, रामें सागरता जीमाजी ।।श्रो०।।३।। (३) राग—पानौ उठ रे भातम्बा मोरा, मयो घट में भोर ॥उ०॥ खजान नींद्र खनादि, न रहि तिल कोर ॥३०॥१॥ नित मान संपद तेरी, पकरी वान कीर ॥त०॥२॥ नहीं रोग सोम वियोगा. नहीं मोग को सोर ॥७०॥३॥ नहीं बंध उदयादिक भी, कोई काले बार ॥उ०॥३॥ गडी भाव भिन्न निश्चें नी, विवहारे छोर ॥उ०॥५॥ हानसार पदवी तुम्ह में, कहुं और न ठीर ॥उ०॥६॥ सिद्ध रूप सिद्ध संपद नी. मोगी नहीं और गड़नाका (४) राग—सारंग, बन्दाबनी हो रही तात द्य विलाई।।हो०।। साऊ झाऊ करती डीसे, ज्यु' बच्छ विख्नुरि माई ।हो।१॥



श्रंग थालिंगन सौत पिय पेखो, कैसें भीर घराना हो । गदी ऊडी बस दोशे के, तेसे पिय बस प्राना हो ॥३॥ क्ष "बाणु निवारी सुवति तिवा क्षे, झानशार गल साई ।"

बात बुर्चना की मनु तमी, करने निश्च बहाना ही। श्रमकार रही। तुरू मार, हिस्त कर दुव रिस्तामा हो।।।। (०) ८० — भागे श्रीत समाने कहा कदि समानी हो।।।। स्वी कृष्णपूर्व करते। बाता उन्हर की के कमाने (होता)।।। स्वार कुर का का प्रकार के कि कमाने (होता)।।। स्वीर हों नहीं मीद सुस्ता, नेपी पपने साथ होता है।।।। स्वीर हों नहीं मीद सुस्ता, नेपी पपने साथ होता है।।।।

६= बानसार-ग्यायसी मैं मन बच तन पिय संग चाहुं, पिय पर रंग जुनामा हो । बदबानज ने विरहानज की, जाप अनल दुख दाना हो ॥४॥

कीन हुने कार्य् कई सत्रती, पट में हो घट मोहि रिकार्य । सायर छोत ठटें सायर हैं, यें उनकी उन मोहि तमायें ॥२॥ इक इक इक सब कार्य सकती, देवहि इक का यं तन आये । वेंचा पटाप स्वामां रही, मिन हुनी तायर कार्य ॥ सहा इन हो आहुत ये मिन सहार, होतुं कर होने से बीनार्थ । ये हम हुनी स्विक्ट एसटी, अपडी खुँ खुँ आत्र मिनार्थ ॥ ।।

कामत जामत उन्नायस्ता होते, ए अन त्याय कहाने ॥२॥ खर्ते हुद्ध भूल गये पर की, पर घर में सब रैन गमाने । जानत होय अज्ञान संयानी, तार्से के कैसे परि आये ॥४॥

एक्ख डाथन वालै तारी, जग जन दोने डाथ वजाये। रैंन दिनां स्टना सुद्दि उनकी, ये विष एक घरी नहीं चारे Hatt विन पीतम पिन्हा तन नावै. सीत समीर इसे संसावै। नो पर दश मिट जाय सपानी, जानसार बिन तेडिटि आवै ॥६॥ (६) राग धन्यासिरी कीन किसी को मंत, अगत में । कीन किसी को मीत । मात तात बारु बात सबन सं, कांडे रहत निर्वीत ॥व०॥१॥ सवही अपने स्वारथ के हैं, परमारथ नहीं त्रीत । स्वास्य विद्यार्थं समी न होसी, मीता मन में चीत ॥ बनार॥ कर चलेबी बाप इकेली. वंही तंसविधीत। को न किसी को त' नहीं काको, एड अनादि रीत ॥अ०॥३॥ सार्वेडक भगवंत भारत की, राख्ये मन में नीता शासमार बढ़े ए बन्यामी; मायो भागम सीत ॥ळ०॥२॥ शांम नाम न सर्था, सां साचै मन ग्रां।साँ०॥ कत्तां करम करम कल कांगी, नांगी नाथ श्रापी ।आं०।।१॥ सम परसामी सामा देखी. उलदित चित्र न भयो ।।सां०।।२।। थन गन गाड रख्यो क्रपक में, दाक केळ न दयो ।।सांवाका ज्यं ज्यं हैं सलमान के धायो. त्यं त्यं उसमा परधी । मां । । ।।।।।

क्क पगढ़ अब बाजी बाई, तब हूँ हार गयी !!सां०!!४!! व्यासा मार्ग गई नहीं मोद्र', व्यासन मार लयो ।।सां०।।६।। आप को भाषो पाप उपायो, नहिं कह घरम किया ।।सां०।।७।। मनसा रोपन सोधन कट की, एक घरी न कियी ॥सां०॥८॥ वैसे सुनी बानसार कुं, साहित निरवहियौ ॥सां०॥६॥ (१०) राग—सोरड चेतन में हैं रावरी रासी । बीर विवेक जर्ड समन्तावी: अंत बिरानी विरानी रे ॥वे०॥१॥ थीर ससी उपहास करत है, सूच्यो नी सेव सहानी। मेरी विवादर सँग रमत है, तार्व बंहर वानी रे ॥चे०॥२॥ वीर विवेक डितुतुमडी से, मगनी डोत है राजी। मेरे पति कु' जाय सुसाबी, कही में सोड फहानी रे ।।चे०॥३॥ 'वीर विवेक कड़े मगनी से. उद्यम सिद्ध निदानी । सरधा सरिव समता मिल ज्याई, ज्ञानसार कुं तानी रे ।।चे०।।८।।

श्चानसार-च्हापती

(११) सान-कर्ष स्थान जगाई हो विषेष, मुद्रामनि । यान जगाई हो । उठ सुद्रामनि श्रीतम थाए, करह दभाई वचाई हो ।वि-।१॥

उटी सुडामनि भरिय आभरसे, हित कर कंड समाई हो । खबर परी जब तबडी सस्या, भसमसि मंदिर आई हो ।विकासा

चारवासिक पत कर बोड़ी कहि सरघा सामी, महिर निजर फरमाई हो । भौगति महिल होर होती क<sup>\*</sup>. बढी याद क्य<sup>\*</sup> व्यर्द हो ॥वि०॥३॥ समति पटायो अनुभी व्यायी, उन सब सद्ध समाई हो । छोर दहें उन इटिल इमित हैं, आयो संग से भाई हो ॥वि०॥४॥ इसे रमें व्यव कोडा मंदिर, समति संचेतन राई हो । प्रेम पीयुष प्याले भर पोवल, जानसार पद पाई हो ॥वि०॥४॥ (१२) राग-कोबी इ.स.स. समित व्यति वैरनि नावै ॥ इ०॥ संग कर दर रखो अति समयो. रंग सर छिन इक पिय न खलाये ॥४०॥१॥ कोड़ विकल करवी मान केर्ड पश्ची कारि कारि विय आवि गमावै। मेरी मेरी मेरी न कवड़ें. तेरी वैश्न सुद्धि पास वटाये ।।क्र०)।२॥ विकल वंभ मिट कटैय मरम तम. भाष आय पर आन वसावै। फेरल कमला निज घर बाबै,

श्चानसार पर चेवन पार्व (१६०)(३)।

505 (13) राग-सारंग षिया विन एक निमेष रहें नी ॥पि०॥ नखद निर्मीनीं सास दिरीनी साके बचन सहीं नी ॥पि०॥१॥ बेठ बिठीनी कीन सर्गोंनी, पिय पद कमल गर्जेंनी ॥पि०॥२॥ माय इतौनी भैन ठनौनी, गिरिवर आप चड़ीनी ॥पि०॥३॥ मोड तबोनो घेप महींनी, ज्ञान पीपूप वियोनी ॥वि०॥श॥ पीय तीय दोनं मक्रि विधींगे. सख अनंत वरीनी ॥पि०॥४॥ (१४) राग-सारंग धनमी नाथ क' बाव हमावे ॥धनः॥ विरम्भा बद्ध करमा क' मालो, वरवा पानी वादै ॥१४०॥१॥ द्यम मति संगरंगते कसटा, क्रमतीदरें आये। केवल कमला अपद्धर सन्दर, मिंदर व्याप ही आवे ।।अ०।।२।। करल नयन व्यानन से सुर्जात्तत, लखित बश्चन सुराहै । पत्तरा चय कटाच पात तें, झानसार पद पावै ॥प्रानाशा (१४) राग-नेव्यवस कल्रहियो कीसी बात कहूँ, करम की कैसी व में हैं चेतन चेतनवंता, एते इस क्यों सहैं । कि।।१॥ कवह नाटक कवह चेटक, साटक कवह रहें।

कवह काटक कवह हाटक, काटक कवह कह ।।की०।।२।।

षराच्यासिक्ष वन उदय उपाय करम चित बंधे, व्यातम दल सहं। पर गुण रुपि निजयुक्त सुधि, संधे सुख गई।।कै०।।३।। चीनर पाय प्रगट परमातम, धातम जोग वहुं। स्रोनसार शुप चेतन मृत्य, नाथ अनाथ लई !!कै०।।४।। (१६) राग-नगरी चेतन बिम दरियाद दी महारी रे ।। बे०।। कोड लतारची माने मारची वे, संग अनंग रंग विक्रुरी रे ॥१॥ आप धुनारी मेरी आकु वे, कंट पकर कर पछरी रे।।२।। भाष ही घारी आप पवारों ने, ज्ञान अनंत गुरा मुंहरी रे ॥३॥ (१७) शग-- काफी बीड मरदता स्यानें हीं ही हो. ओवी ने आव विचारी रे ॥कें०॥ काल ब्यारेडो केडी पत्र्यो ही, मारव्यी थाप नी मार्ग है ।।की०।।१।।

वे तक में है प्यारी नारो. त्यारी थास्य नारी रे ॥है०॥२॥ वर नी रमखी हपखा सारी, परमंत्र सागस्यै खारी रे ॥कै०॥३॥ चेत चेत त' चित में चेतन, नहिं तो धारी तारी रे ।(कैं०।(४)।

बानसार कड़े प्रह सेवा, खैसह ने सुखकारी रे ॥कै०॥ शा (१५ राव - सामेरी श्रीयन किनके न कटिये ने भाई ।।श्री०।। व्याप मरे सब बीगुन ही से, और न के क्या चढिये रे माई ॥१॥

झानसार-पदावभी हुँगर बलवी देखें सबड़ी, पगतल कीन बतर्वे। लागी पगतल लाय बुऋारो, जो कछ तन सुख चहिये रे माई ॥२॥ चाप बुरे को है कम सबही, चाप भले तो भलेडि है। ब्रानसार जिन गुन वर्ष माला. निसदिन स्टते रहिये रे माई ॥३॥ (१६) राग-विद्वान (पवीडा बोल्या रे) दरवात्रा स्रोटा रे. निकला सारा क्षमत उनीसे । द०॥१॥ क्या क्य क्या माई शब. क्या वेटी क्या भोटा रे ॥द०॥२॥ गय इय करवी दो इक वरवी, बया कोई छोटा मोटा रे ।।६०॥३॥

क्या पूरव क्या उत्तरपंधी, दक्षिण पण्डिम भोटा रे ॥द०॥४॥ ज्ञानसार दरवाजै नाष. यासे सिद्ध सनोठा रे ॥द०॥५॥ (२०) शत-सोरड व्यालीमा ने बांरी बाह बजी है. महिलां बेग प्रधारो ॥व्या०॥ व्यायु करम विन सात् की विति.

कोडि सागर इक कोडि गुर्खा छै ।।आ०।।१।!

केतै दिन चितवतां व्यवके, ज्युंत्युं प्रीत वसी छैं।

निरवाहन नहीं प्रीतम हाथे.

निरवाहन भवपाक वर्षी है ।।प्रा०।।२।।

शास्त्रास्त्रकपद १०४
मलो बुरो तोही चल भाषी, अंत तो पर केरो घडी है।
शानसार को दील न की जै, श्रीते व्यंतर कीन भवी है ॥३॥
(२१) रागसोरड
है सुपनो संसार, प्रसु कुं जन भूल बावरे ॥है०॥
मा जग कहुं विष समान है, सकल क्टु'व को प्यार ॥१॥
दुनिया रंग चहरवात्री व्यूं, क्यों सीचे न विवार।
बानसार घट भीतर साहिब, खोजै क्यु घरवार ॥२॥
(२२) राग—सोरठ
प्र्वरी दुनियाची प्रवरी दुनिया।
व्याशा धार फिर ज्युं घर घर, शिटत करन सुनिया ॥१॥
बारिरातम मुद्धा सगवासी, ज्यु संगल सुनियां।
बानसार कहैं सब प्रानी की, वहिर बुद्धि वानियां ॥२॥
(२३) राग—काकी
मतदा नी अमे केनै कहिये वालो ।
विकार को भी विकासिक एक को भी विकार की की विकार करते । 19 11

पुष्त विवयन कारू परान्त, साजैनधी रे बहिबाली ॥स०॥ चैंत्य बंदने दूंन प्रवर्षे, वे हुक नधी रे हुहाली ॥२॥ बोरायर थी बोर न चालै, वेहबी सहँ बारी साली ॥म०॥

रूसक तुसक तारू" शिकाशिक, गिवाती नवीप गिवाती ॥३।

इक सामाहक रूप 'एकान्ते, ज्य' ही दिन ज्य' सत्तो ॥ म०॥ विक वेला उपराठी तुं तिका, संयम नी कर वाली ॥॥॥ द्वर प्ररंदर वर शिर पूजाये, वेद वप्रशा कडालो ॥म०॥ हानसार वी निम पर होती, जोती जे रूपाल खिलाती।।४।। (२४) राग--वसग्व घर आदो दोलन पर संग निवार. तमरो परसों बड़ा प्यार यार ॥थ०॥१॥ नहीं सादि पांति इस को स्वभाव. वतो उनसीं क्या सब माव ॥घ०॥२॥ छांडी क्यों न उनकी संग मीत.

झानसार-पदावशी

बग में भव भव करिड्डै फजीत ॥व०॥३॥ चलिये भारते कल की मरवाट.

कुल छांड कदा काढी सवाद ॥प०॥४॥ भादे पर अंते निल न होय.

नित्र पर सी पर कबहु न समस्त्र जोय ॥४०॥६॥

मन्ते पर पिन सरहै न कन्त. बिद्धि झानसार खेलें क्सन्त ।।यन।।६।।



नित्र स्वस्य विश्वै वय निरसे, तो में इछ न समाया । त'तो तेरे गुण को भोगी, ज्ञानसार पद गया ॥ १६०॥ १॥ (១៤) នាព្រៃញ៉ា--ឃ្លឹកថា कावे हो सबे भोर. भने ही ॥धा०॥ सीवन संग रेन रंग सोवे, आते धारस मोर ॥भ०॥१॥ चीगति महत्त खाट ममता पें, क्यों छोरी कर और ॥२॥ रात विभाव विद्वानी उदयो, सर सुमाव सकोर ॥३॥ त्व पीतम तुम सुमति संमारी, अब कहा करू क निहोर ॥ ।।।।। पै कल करपा की सरजादा, अपने रत की क्योर ॥४॥ तातें ज्ञानसार के व्यामी, उसी बेकर क्षोरा।६॥ (२६) शिक्षी—केलाक सोई ढॅन सीख लै सोई ढंग सीखलैं नी, जो पिया रहे वर मांहि॥ नींम सयानी हैं समकाऊ, तुम कहा समको नाहि ॥सो०॥१॥

घर आये तें आदर पहुंचे, सो चडिये हम मांडि ॥सो०॥

मैं कहा आन' प्रानिषयारे, कैसें राजी सीडि !!सो०॥२॥

मैं वो मनतन बचन वें तेरी, चोरी बिन दामां ही ॥सो०॥ मान व्यवमान समान मान की, आई वीर पठाई ॥सो०॥३॥

श्रंग सुरंग समार साथ ले, सरघा सुबुधि सहाई।।सो०।। प्राथपियारी समिति तिया की, ज्ञानसार गलवांडि ॥सो०॥४॥ (३०) राग—बेलाबल चेतन खेले नी ककरी री, नी ककरी री, नी०॥चे०॥ चरसो थय भर सो शव पावन, याति श्राति उच कर रे चकरी रो ॥१॥ श्रंगरी घेरन " कर्म को प्रेरचो, याति आवति इक मय पकरी री । भर सें " चर बाह चर तें पुनि भर, दोरी पद्धरन क्रम बकरी री ॥२॥ पर भर भव चर भर को करवो, खेलवो नांही इस ककरी री। पास प्रश्न व्यव चर भर वारो, " ज्ञान नमें दो पद पकरी री ॥३॥ 39 TIN-STITUTE षाये मोहन मेरे. बात रंग रही ॥बात्र०॥व्याये०॥ सिद्ध सहायन श्रीत बनाई, समता सरधा की कौन चली ॥१॥ लरका तेंबड पाय परी जब, देर दिरानी खिली। सात सभी समासरस" दीनी, जेट जिटानी दौर मिली ॥२॥ संती महत्र अञ्चल प्रची, सरकी चार चली।

करका ज पहुंचाप था बच्च, दूर हराला । एकता । सात सभी बातासार देगी, केट किउनी दीर किसी पोशा संती वहब फाउटब हुमी, सरकी चार चल्ली। सम दम दिनर दिनेह पिपाले, गार्टुमाई गल साम सिसी ।शा। सम दमित संगर साम हो , चैवनता सु चली।। सातासार में माता महिल में, केले चमाल की प्रधान करी।।शा

१ कर वें। २ मेरन । ३ भर तें। ४ झरो । ४ हामाशिख ।

(२२) रागाः स्थारतः रचियो मारु सीतम रैं वाय हेली, रसियो ।। मेरी कक्को मानत नहीं सजती, बहुव रही इसकाय ।।हे०।।

चीगति महिल खाट ममता वें, रमतें देन विहास ।हि०।।२॥ सीतन संग धूमतो डोरे, ऋांखित सुदृ सुसकार ।हि०।।२॥ सरमा समता सानसार कुं, न्याई जाय मनाय ।हे०॥३॥

(२३) रागयो—कोरठ को करों में रैंन विदानी, नींद न व्यादै। नींद न व्यादे नींद न व्यादे ।

ठर व आतम ज्ञान भरक कें, तात विभाव विदार्थ ।की ।।श्या हिंदी हात मार्थ सहित पहारतें, अस तम कम न रहानें। बच्चा चकती भोर मये तें, हिलामिल मील बढ़ानें।को ।।श्या स्रोम खुक जब भांच मयो तब विदार्श चंद्र स्थितीं।

हानसार पद चेतन पायो, यातें अलख कहार्यं शक्ता शाहा। (२४) अचरित होरी बाई रे लोको, अवरित होरी बाई रे लाला।

मचरित होरी बाई रे लोको, अवस्ति होरी बाई रे लाला। सास गुलास उडत बार्ट की, एहिं मिथ्यात उडाई रे ॥१॥

पिचकारिन की सदसी सनी है, बाखी रस' बरसाई है। चैंग मुद्रंग बावत रूपालन की, अनहद नाद पुराई रे ॥२॥ बह्र मिथ्यामति होरी गावत, इह भवि जिन गुरा गाई रे। काठखंड की होरी अगार्ड, इह कक्ष करम बलाई रे ॥३॥ मद पानी जन मदिरा पीयत, केंद्र सुद्द फेरेन भाई रें। श्चानसार के ज्ञान नयन में, अनुसद सुरखी खाई रे ॥२॥ (%) கூடலில் व्याव रंग भीनी होरी काई। · भनिवृत करना त्रीतम व्यागम की, सरघा *च्याई* वर्षाई ॥१॥ पिय प्यारी की सुचि रुचि चिवबन, दड़ीय सुसाल चलाई।

बाखी वर विवक्सरी हुस्त की, दंपति स्वरिय मचाई ॥व्याः॥शाः॥ वंग मुदंग व्यनादि धुनि की, धुनि मिस्तमिस्त धुनि नाई ॥ व्याप सुरुष व्यानंद रस मीने, सोई होरी साई ॥वाः॥॥॥

काव सरूव व्यानद रस मान, साह हारा साह।।आ०।।३॥ शुक्क व्यान की शुक्क वर्रणे, सुदु हुसकान हुसकाई। बानसार मिल कर्म काठ की. सहिनै होरी जगाई।।आ०।।।३॥

१ जिनवाद्यी । २ कोंद्री । ३ केई अफरिन साई रे ।



बीव जीवन इन ज्ञानसार तें, पिय प्यारी की सब सुधरी रे ॥३॥ (३७) राग-होरी-फाफी माई मित खेले त' माया रंग गुलाल स' ।।भा०।।

माया गुलाल गिरन वें मुंदी, आंख अनंते काल स् ।।१॥

बल विवेक भर रुचि पिचकारी, छिरके समित सचाल स'। रधरित ज्ञान नयन तें खेलें. ज्ञानसार निज ख्याल है ॥२॥

# 

कण्त हानि दस कोहि सुं रे. नामि दिनामि वसि वेह । दोग दोग कोक हमारी गया रेहो, गयानीव परि वेह ॥वनाशाश के सीगा इस मिरवरें रे, सीकस्प केहें और । सिद्धवेत्र प्रसासती रे हो, नामित्रे युस्ती नीव ॥वनाशा पहचे नहीं इस कवियुगे रे, तीरच एटनी मांदि । याप ताप समया मसी रे हो, ए गिरि कुरतक खाँदि ॥वनाहम एक जीभ इस गिरि तसा रे, गुस केता कडिवाय । श्रवासगति भगतें करी रे हो. ज्ञानसार गया गाय ॥भ०॥७॥ ( २ ) भी शहुंबय यात्रा सावन्त्र आवयो भागवो रे हो प्रीतम परम पवित्र समुख नर भागवो रे महे चाल्या सेत्रंजी मसी रे. पिछ पिसा चाली साथ ।

बादनाथ दरसम् करी रे हो, करिये शिवपद हाथ ॥सु०॥१॥ फल चंबेली चंगेरियां रे. भर भर गाना मांता पुष्प नार्दाल पूजा करों रे हो, बादल निव नदी जात ॥स०॥२॥ सगता सगताफल नरी रे, सुन्दर सोवन थाल। संवादी कराठे ठवां रे हो, अनुपम फुल नी माल ।।सु०।।३।। तीन प्रदचका जिम करां रे. विम वस्ति तीन प्रशाम । भाव पत्ना करवा भसी रे हो, वैसं वैसवा ठाम ॥स०॥धा।

शक्तमत शक्ते करवी रे. तिम कर करिय व्याधा । क्रमा वह युई कही रे हो, औसरिये जिन धाम ॥सु०॥४॥ इम बाजा सेजंब तथी रे. करिये बंत कपाल। जानसार पदवी वरी हो. गरिये सगत नो फाल ॥स०॥६॥ ( 2 ) of store for enemy

१ (हो) वास्ता। २ शूरी ।

रण-कविरको नामित्री के नंद से लागा मेरा नेहरा ॥ना०॥

स्वयनावि भक्ति-पत्र संग्रह बदन सदन सख, मदन कदन हाल. प्रश्नु को बदन कियं, समस्य मेहरा', ।।ना०।।१।। चमल कमल दल, नयन उत्रल जल, मीन युगल मानं, उद्युखत सेहरा ॥ना०॥२॥ माल विद्याल रसाल अकल ब्रुति'। शरद शशि मान ब्याटमी को जेहरा ॥ना०॥३॥ नासा थम्प दीप कली, मरली सींगी फली । दन्त पंति कान्ति मान्त", चंद का सा उद्देश ॥ना०॥४॥ केतालो वर्धन करूं, 'उपमा कहां ते घरूं। बानसार नाम पायो, झान नहीं गेहरा ॥ना०॥॥॥ ( x ) श्री बोक्तनेर मध्यन श्रुवस बिन साचनव् राय - बाकी मुरति माधुरी, ऋषम क्रिगंद की ॥मृ०॥ विक्रम सब पुर मुकुट मनोहर, ता विच कौस्तनमधि प्रतिमा जरी ।।सू०।।१।। माग विभाग शास्त्र परमम कर. सपर कारीगर सन्दर वा घरी।

१ मेहरा । २ तृति । ६ सन् चटनी । ४ खोपमा । ४ माहिरा ।

११६ शानकार-पदावती व्यंगी विध विध रंग सुरंगी, देखत खबि अति नयन कमल ठरी ॥स०॥२॥ शान्त संधारस मेख पर परसत. हरपत महि मन मोर नवल भरी। ब्रानसार थिन निजरे निरच्यो. निरसत सिद्ध थानक स्थिति सांगरी ॥मृ०॥३॥ ( x ) भी नेमिगाम होगे नीतम नेमिद्रमार खेलें होरी वे, लाल गुखाल भरी महोरी ॥ने०॥ इत वे काए नेम नगीना, उत वे कृष्ण की सब गोरी ।।ने०।।१।। अवीर गुलाल की मरि मरि मुटें, दारे प्रख दें दोरी दोरी । मर पिचकारी नीर सुगंधे, खिरके मुख कर टकटोरी ॥मे०॥२॥ चेट अस्मा तर तिय सहिं परमों. सब महित क्रिल करे उनकोशी । कार सें व्याह सो कीन करेगी, समग्री नहिं सचि ने मोरी ।)ने ०।।३।।

ऐसे सबन की बतियां झनके, ओर रहे झुख खख जोरी।
राखुल नेम समाई बोरी, थिप मेरे में थिप तोरी।।ने०।।।।।
तोरख आप बखे स्व फेरी, बिन भीशुन थिप क्यों होरी।
संयम यदि वो झुक्ति पभारे, जान नमें दो कर बोरी।।से०।।।।।

(६) में डेरेन्ड साम्बन्ध करते (६) में डेरेन्ड सामित केल एम—डेरी चित्र दिन में देशल सरी री ॥१०॥ किल सुरुमानी सुध दिनसीन प्रत्य स्व सर्वाच परीये ॥१॥ स्वत्य स

गर्वे तीर करणी आंखति तें, हुए पै कचा रेख परी री।
सोख कचा संपूर्व पत्ति को, ग्रह गयो ज्यू सियांत पिरी री॥३॥
संयम ग्रहि मिरितार सिरी पर, पित्र प्यारी दो हुकि बसी री।
भव बस्त वारी कार उठारों, ज्ञान नमें दें। द पकरी री॥४॥
(७) अंधिकत प्रीच्यों केत

एग-काश्ची क्याह तोरख बांदी प्रश्न रथकी रे बाल्यो, एक्तस्युं परि ल्यानीरे मैं मागे सदियां प्रीतम में सममाची रे ॥१॥ हेली स्टब्हो आदम ज्यानी रे मैं नारी॥

हला रूठवा बादव न्याना र म नारा।
प्रमुक्त परि श्रह किरणा रे कीनी, मोपरि महिर घरानीरे ॥२॥
गव भव थी प्रश्च नेद न छोड़', नेद नवस कर जोड़' रे।
गठ गिरिकर प्रमु सदसा रेवन में, संयम साची ग्रम दिन में ॥२॥

नेभि राखन मह झगति महल में, खेल खेलात निवादिन में । झानसार मह दाल समारी, इह भव पार उनारी दे ॥मैं०॥।।।। ( ॥) बी नेक्शिय समिक्ती सेन्द्र

राग-काची वो दिल समा नाल तिहारे ॥नासन (२) वो०॥ फिर पीड़े रच चाले यादन, तब पीउ पीउ पुकारे ॥वो०॥१॥ भेर कारियार्ज क' काफी केंद्रमा स्वतान स्वारो ॥वे॥॥॥

ाकिर पांतु एवं पांचा पा

पण-क्यां बाजिय मोरा ने तमसारों दे, कोदस्ती गीतम सोराः॥ रादुक कई तुम संस्थार समाती, दीर दीर हम असी है। सक्य के ता कोदिया के ता के दे प्रमान है।।शा सिन कीपुत करों साती रिपारों, कोद्रात हर बनाती है। सितामा कर संक्या जीती, केमल कथ्यों करें सारों है।।शा नेम रादुक सिमा हमाने स्कारों, सामाल रहन साहे हैं।।शा

स्तपनादि विक-पर संबद् ११६ . ( १० ) की वेजियान सकिसती चीतर मेंदा नेम न व्याये. पीय मिन क्यों दिन वाय ।।मैं०।। क्यों दिन आये क्यों निश आये. हां प्यारे तरफ तरफ जिय बाय । मैं ०।। दामनि चमके दीशा धमके, हां प्यारे कारी घटा गहिराय । में।।०१।। पिय पिय पिय पपाया दोखे. हां प्यारे मो जियरा व्यक्ताय ।।मैं०।।२।। किन औरान क्यों तजही विवारे. हां प्यारे ऋडियो सब समस्राय ।।सै०।।३।।

पिय नाये तिय चडिय सिरी पर, हां प्यारे उम उम उनती वाय ।।मैं०।।४।।

पति पत्नी दो झुक्रि पथारे, हां प्यारे झानसा

हां प्यारे ज्ञानसार गुरा गाय ।।वें०॥॥॥

्रा नार आवादार दुव्य नार तान । (११) मो वेदिकार प्रीमानी सीव राग-स्मारी-स्ट सिका आवंतरी पीच वारों, मेरो विच आवंतरी कोऊ नारी ॥से०॥

वोरख से तम फेर चले रथ, मोपे कांकी व्यापारी ॥मे०॥१॥

ब्रानसार स्नुनि की ए बीनति, महिर करी व्यवधारी ॥मे०॥४॥ ( ११ ) औं वेकियात सहित्यती तीश्रय माम--- हाकी [ बाज-कोई परियां स्थीरे परियां; गली गली मनिवार प्रकारे सांचे वो गांठरियां कोई० ए० देशी ] मोदि पीयू प्यारे प्यारा ॥मो०॥ बाद अब प्यारी नारी थारी. नवमें क्यों अथा न्यास है ॥१॥ तीरस आय वर्ते स्थ फेरी, अब इस कीन आधारा रे ॥२॥ क्रोर दर्ड रोवी राजुल कुं, आप मये अवाबारा रे ॥मो०॥३॥ षोरी बाऊँ वेरे नांमै, वारियां वार हकारा रे ॥मो०॥श॥ **बा**नसार निज शुख नो समस्य, करहुँ वेर सवारा रे॥४॥ ( ११ ) को समेत्रशिक्षर तोर्वतामा साहतम विक-मिसरी री, थे दिल्ली न्हें चागरे थां न्हां किसी सनेड थे पमकाई - ]

तमेवशिखर सोडामधो, जिहां पुंडता थिन बीस। हुगति रमखी सुस वालहा हो, प्रसुजी सिद्धे पहुंचा ईस ॥१॥

पशुवन से तुम करूवा आधी, इम ध्यवला निरपारी ।।मे०।।२।। राअरिंद्र तथ छोड़ी रार्डिंद, जैसे कांचरी कारो ॥मे०॥२।। सडिसायन वह संयम लेके. नेम चढणा गिरमारी ॥मे०॥२॥

स्तवनादि भक्ति-पद संग्रह १२१ चित्र आदि स्रेतिम प्रस. पारस पारस सार। व्यरवसेन क्रुल दोवता हो प्रश्न. माता वामा सखकार ॥२॥ प्रस शरको है आदियी, सब संजन सगर्वत । जल चौरासी हं सम्यो हो प्रस. दरक्त विन तम वंत ॥३॥ ष्यात्र मसो दिन ऊर्गायो. मेठवा श्री जगनान। कारज सीधा मांडरा हो प्रस. मेळी मन दख साथ ॥४॥ मुक आंगशि सुरतर फल्यो, सुरवटि मिलियो बाय । कामधेन घर ऊपनी हो प्रस. तम चरसे सपसाय ॥५॥ चितामणि सम्ह कर चर्छी, नवनिधि सिड सहय । चार सिद्धि सस मस्पदा, हो प्रश्न चित्रावेलि समय ॥६॥ मुन्द मन तम्बद चरसो वस्त्री, पंकत पटपट जासा। पंद वकोरा जिमि लग्यो हो प्रस. वकवाक जिम जास ॥७॥ पोपक के मन में बसे. चंद सदा सखकार। मोरा मन जिम्ब वन वसै हो. प्रश्ल जलदायक जगसार ॥=॥ संबत व्यटारे इकावने । माह सुदि पंचम सार। ज्ञानसार कर **भोड़िने हो** प्रश्नु, प्रश्नमें पार्रवार ॥६॥ इति भी समेतरिकर तीर्थ स्तवनम

रे पाठाम्तर—न स्थानियोः

( १४ ) की समेक्षतिश्वर तीर्घयाचा स्तवस्य [ दास-मविका सिद्धपक पद पदी० ] सेतंत्र साथ व्यनंता सीधा, सीम्हस्य विश्वय व्यनंता। परव को व्याचारित हवा. कहि गया ए कईतारे ॥१॥ काओं. शिखर समी नहीं कोई । विहां किस पिस इक ऋषम विस्तेतर, समवसरया नहीं सीचा। एडवे मोटे तीस्थ एक जिन, वृधा नहींय प्रसिद्धा हे ॥प्रा०॥२॥ अष्टाबद्ध इक बादि जिस्तेदा, निध्यय पदवी पाया । रेवयंगिर नेमीसर सुखकर, सीवा श्रीजिनराया रे ॥प्रा०॥३॥ व्यापनिर पर एक न जिनवर, सीधा नहीं जगचंदा । तिहां वित कोई नहीं तीर्घकर, केयलबान दिखंदा रे ।।पा०।।।।। इस अनेक तीर्थे तीर्थकर, विडांसीया वेडांनाहीं। करको परगट ठामें ठामें, पाठ हैं व्यागम माहि रे ।।प्रा०।।४।। समेतशिखर पर बीसें टुंके, सिद्धा जिनवर बीस । विस नहीं एडवो तीस्थ अगमे. नमींच्य नमावी सीस रे ।।पा०॥६॥ संवत अदार उपसायचासे. महा सद बारस दिवसे । संघ सहित मली यात्रा कीनी, जानसार सुजगीसे रे ॥वा•॥७॥

स्तरमावि शक्तिन्यव शंपन (tx) भी पार्श्वनाथ सावनत ि दास-पन धन संप्रति साचो राजा **े** पास प्रसु व्यरदास सुक्षीजे, दास थी करुका कीने रे। पापी भीव ने शिक्षा दीवें, एटल कारज की में रापा-॥१॥ कीय कहै जे बचन निगसी, तो तेहनी करे हासी रे। थिए पोतानी मतिनी फासी, ते तो कांच निकासी **रे** ॥पा०॥२॥ **घीठाई मेर्ल नहिं घोठी, ते में निजरे दीठी रे**। सुगुरु कहें हित बचने जे मीठो, गृह मो बांफ अपूठो रे ॥पा०॥३॥ पोवानी, भृ'डाई व आयो, परनी तस्त पिछाणी रे। व्यापसपै हिन पहिले ठासी, सत्तम मोजां मार्स रे ॥पा०॥४॥ दोय स्थो एकरम नो वासी. बतो ऊँथे वासी रे। कही किन कर्म ने सामी धासी, अंते अन्तानक आसी रे ।(पा०)(४)। पहनी रीत आहे नित पड़ी, इक मुख कड़िये केडी रे। श्रीजिनराम डिवं जस लेई. एडर्ने जिवसस्य देई रे ।।या०।।६।। तं सरवे सख दख नो झाता. तं त्रिश्चवन वो ताता रे। रत्नराज सुनि सौ साता, झानसार गुरा गाता रे ।।वा०।१७।। विक-मेहतीया संबर की रो बरहसो । परम पुरुष सू प्रीलदी, कीजे किम किम करवार जी। निषद निरामी साहियो, हं रागी निरधार की ॥१॥

स्तरि अस्त अभूकी मानव्यो, करुवा कर करवार थी। इसी अस्त अभूकी मानव्यो, करुवा कर करवार थी।।सा॰।शाःशाः हैं सेवक बढ़ यूँ धवी, दिव अवधार उतार थी।।सा॰।शाःशाः कर ओड़ी उन्मां चक्की, धवेत सेव सदैद श्री। पित्त बढ़ किसदी न चारते, धवेत सम्तरित हो। पाक्त पहुँचे चाकती, सार्वित सम्तरित पार्थी।

साहित पिक सेवक तकी, गलै नहिं जो माम जी। साहित सेवक नो सदा, किम निरवदती कामकी। मदा०॥॥॥ रम जावी सेवक पर, करो गहिर कृपाल जी। निरामार्ग आवार तुं, तुंही दीनदवाल जी।।मदा०॥६॥ वारं प्रस्त सुं बीनील, करी पक्षा करकोड जी।

व्यांस कीकी चढ़ी ऊंची. घूमरी वित साथ ॥मी०॥२॥

स्तकनादि भक्ति-पद संबद १२४
नींद भंग उमंग नांही, मन न व्यपने भाग।
उञ्जलन मिस नना दस दिस, भग्नला दें अमराय ।।गी०॥३॥
एड मेरे नॉर्डि संगी,संगी पीव रहाय।
माथ जमचो उनहि के संग, चलेंगे उठ घाया।।गी०।।४॥
ए विजन्सा देख मेरे,लगी उरमें लाय।
जरची पिंजर इंस जासी, व्यंस हुन रहाय ।।गी०॥४॥
सुस्त वटा घर च्याप कलचर, इती वरवे आयः।
उरवी विंतर देख पंका,रह्यो उन्हन जाय ।।गी०।.६॥
अम प्रलाप न लाप ऊंचो, त्यौर अपने ठाया।
चड़ी आंख्यां उत्तरी तब, घूमरी नवि खाय ॥गौ०॥आ
नींद रंग उमेंग अंगे, मल हु टहिराय।
चिन पीछे, नसां ठडिरी, अम्म घ्यपने जाव ॥गी०॥=॥
तुम इमारे नांदि संगी,पीठ हू न इराय।
काल थित परिषाक जाकी, व्यांधी में उठ काय शमी०॥६॥
सामिकास्त्र करवी सामी, लाज राखी ताय।
मो पतित की धवल धींगे, विषद दीध धकाय ।भौ०॥१०॥
(१॥) श्री पार्श्वनाम साधनम्
राग—सारंग
हमारी अंसियां व्यति उत्तसानी ।
दरसन देखत चिन्तामन को; रोम रोम विकसानी ॥इ०॥१॥

इरसित नायत नैमनं पुत्ररी, पत्तन मृ'द उपरानी ॥इ०॥२॥ वृषरिनाद पुमन मन कुँदी, अनहद नाद पुरानी ॥इ०॥३॥ मादल वास पलनकी फायन, रोम वार प्रवसकी ॥ह०॥४॥ व वे बीन समाज मिलव सद, ज्ञानमार रसदानी ।।इ०॥५॥ मेरी बर**व है अस्वसेन लाल व**ै।।मे०॥ सेञ्चो सदा बाल साहिव कु. में मेरी वथ बाल स्र ।।मे०॥१॥ वन नामी पारस जिन मेरी, सगन गीवडी कपाल छ<sup>\*</sup>। न्य त्यां राखी ब्रद्धापन की, रहगी सात्र दयास खं ॥मे•॥२॥ में सम देव रूप बन निर्धन, क्या मांगू बंगाल सः । झानसार कुं संपत दीजै, ज्युंपय माता बाल सुंशमे०॥३॥ (२ ०) श्री सहायमा सार्च साम्ब [ वास-जग सोहना तिनसवा ] व्यविकारी वस्ति व्यविन्यासी, शिवपद सत्सुख सुविलासी रे । जिनसमा, तोस प्रस्तर प्रसमें धाया रे ॥ज०॥१॥ उज्वस पुरामस ततु मोहे, प्रस मटके मनद्व' मोहे हे ॥क०॥ पद्मपत्र वरशे प्रश्न दीपै, जगवाल कोडयति कीपै रे ॥वा०॥२॥ उपराम व्यक्ति इस्ते धारी, व्यरि उद्धति कोध निवारी रे ॥ख०॥ मनि सहसफरणा प्रश्च वंदी, दुष्कृति नी कंद निकंदी रे ॥अ०॥३॥

स्त्रपनादि भक्ति-पद संग्रह १२७
सुमताभारी अम्वारी, मन हारी अथकारी रे ॥अ•॥
भड़ कम वारी अमधारी, सुकृतिकारी दुसटारी रे ॥व०॥४॥
व्यतीत व्यनामन ज्ञाता, वर्तमान स्वरूप विज्ञाता रे ॥व०॥
शान्त दान्त मुद्राए साहै, प्रमुप्तसम्यां पाप विद्धोहै 🟃 ॥#०॥४॥
त्रिका त्राता बग अता झानादिक गुण नो दाता रे ॥व०॥
धन धार निवहिये धनीश, शुद्ध गुराधारक सुक्तीश रे ॥व०॥६॥
वामानंदन बरदाई, तुम सुनिवर सुख सदाई रे ॥ज०॥
ब्रानसार कहै कार्यादे, जिन बंदे ते चिरनंदें रे ॥व०॥०॥
इति भी पार्श्वकिन सावनं क्रिपिष्ट्र्यं झानसारेगा
सूरव विदर मध्ये ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रुमंत्रव्यु ॥
( २१ ) भी चर्चे मिन स्वन्ध्
रागसन्ती
दिल माया मेंद्रे सार्द्र, पास प्रश्च विनराया रे ॥दि०॥
तुन मन् मेरो तबड़ि उलस्यो, किय में आनंद पाया रे ॥दि०॥१॥
व्यंतियन मेरी प्रश्च क्रु. निरसत, तत्तवेई तान मचाया रे ॥दि०॥२॥
कर जोड़ी प्रमु बंदन करके, झानसार गुरा गाया रे ॥दि०॥३॥



स्तवनादि मक्ति-पद संग्रह	१२६
पीती भी करें, क्यित संस्ट में केंद्र । राया संस्ट रूद हैं, भी नित्र परती हैता। गोली गीती ने करें, क्यीर दी स्वान्ते करा। रायां कर सम्बंधी संस्त्री, क्या राष्ट्री क्या स्ट्रास्था ॥६ गीत्र में के दीला से, ज्या गायिद्री कीए। प्रीप्त अप को दिर सहै, तिर सक्यापण की ना। मिर उसर पुराग हिर्दे, सरदानी होंगांच। स्त्रीत्रीरण सामा ने, मोट प्रदेश मों आंखा ॥। स्त्रास्त्रीति स्त्रीत सुवार्याण को गाःद्र रूप प्रांत्रित रूप रहमा, भीत सुवारण को गाःद्र	11 (1
राग — वैज्ञावस	
हे जिलाय सहाय करी यू ।हे-।। परंत्रालाल शाहक संदिरी, ज्यूं उपनी त्यूंही उपनी यू शाली तें प्रत्न केंद्र शहरताल, विदासन पड़े नेण भरणो यू भराव करणी पर्वाचीशिक साले, करणाल तह देव करणो यू प्रायमणी जल कींद्र। करणो, तारी विले सार करणो यू परिताउधारण विक्द सुनारी, नारण दिरोगों क्यों विसरी यू	। ॥२॥ ।

230 ज्ञातसार-पदावली ( ६६ ) हो समान्य किन सावन्त्र [ ताल-ईटर व्यांदा व्यांदली ] सम विसमी व्यस-वासतां रे. हित व्यहित व्यक्तियार । ते ते विकाभव में किया रे, तूं जाखे निरधार ॥१॥ जगतगुरु वय वय जय जिवादेव, तारी सर वर सारी सेव । तारी अग जन तारस टेन, तेथी तुंही देवाधिदेव ॥ अ०॥ २॥ सम्यग मिथ्या दरसकी रे, सम विसमी ए बाट। ब्राश्रव संवर निर्जरा रे. डित प्रतिक्रलें पाठ ॥व०॥३॥ नींद खड़ान खनाद नी रे. कारण मिथ्या भाव । तुम्ह दरसस तिस नवि मिल्यो रे, तवुगत शुद्ध सुमार ॥७०॥४॥ एडीज व्याधन कारबी रे, भूत थकी मन भूर ! संवर निर्वर नवि गमे रे. दीसे ज्ञिन गति दर ॥७०॥४॥ भव परशित परिपाक थी रे, तुभ दरसंख भी जीग । बहुर्ये संवर निर्वरा रे, थास्य सुपुरु संयोग।।**स**०।।६॥ श्रद्ध सरूप समाव मां रे. रमस्य आतमराम । ब्रानसार गुणनशि भरी रे. लहिस्यै शिवसुख ठाम ॥व०॥७॥

को सांह मो बीनति कैसे करूं। काल धनादि नहीं मेरो तम विन. मध वन मांहि फिर्ह ।

रतवनादि भक्ति-पद संबद् १३१ श्रव तो त्रिसवन नायक पेरुपो, हरस्रो पाय परं ॥१॥ क्यं कर नामं तो हेत बतारों, तेरा अंवस बड़ी है अलकें। दरसम ग्रुद्ध चरम अनुसर के, परचे ताप शरू ॥२॥ तामें अञ्चल करण बान से, करके ताप करूं।

श्चानसार प्रश्न गुरू मोलिन के, कंटे हार परूं ॥३॥ (२०) रात-केरारो तुम हो दीनवन्यु दवाल ।

फरि क्रम ब्रहे चार चारक, स्वामि विरुद्ध संभास शहर।।१॥ अनम केते उद्दरे तुम, मेरी क्योर निहाल। में अथम तुम अथम उधरख, करही क्यूं न निहाल ॥तु०॥२॥ होड जग की देव सेवा, लम्बी तेरी पाल। ब्रानसार गराव की तुम, करोगे प्रविपास ।।त०।।३॥

(२०) शत- इतली मस निरस्पो भी जिन चेरो ।। छ०।। ससिपून्यी' मिस विन ग्रख देखत'. पुहुष कमलुनी केरो ॥म•॥१॥

निस" पर्से मिस" पून्यं उबरी, प्रश्ल प्रमा निसही उजेरी ।

**१ पुन्यू**' २ दीपत ३ मिस ४ जिल

पंकत व्यम्त सब कमल होत हैं, पुण्डरिक प्रम्न तेंगे । मुनाशा चन्द उदय' मुख सम्मुल निरस्तुं, यार्वे वीच धनेरो । इससिन पुण्डर देलगा देलगो, कमल कमलनी हेरो । मुनाशा

धन्य धन्य मुक्तं नयना' निररूपो, इसर्व "बदन बस्रु तेरो । करवोरी मद छोरी कोइ है, ज्ञानसार' बस्रु पेरो ॥मु०॥॥॥

232

( ६६ ) श्री सीर्गयर जिन रहपनव् राग-सारंग

सीमंबर की सरस सलूली, श्रृरित व्यति मन भाई ॥माई॥ सोचन अभिय वचन अस्तृत सम, नयन अस्तृत मर खाई॥माई॥१॥ व्यंग पंग नम रंग यृति स्त्रस्त्रत, अनंतक्कान स्त्रत्व द्वाई॥माई॥२॥ कानकार मांच भावें परस्यों, स्त्रीन सरूप न पाई॥माई॥३॥

(३०) भी भी(जिल सहंदी सीतर

राजमूदी उद्यान में सब्दि सम्बन्धरण महाबीर। बारि जार्ऊ बोरनी सखि ॥म०॥ नारम जार्क बोरनी सखि ॥म०॥ नारुपर गोपमादिक मला सखि, इत्यारे श्र स श्रीर ॥सा०॥३॥

सराधर मोपमादिक मला सखि, इत्यारे अनुत घीर ॥वा०॥३ ४ वहें ६ तथने ७ कतुरम चन्द्र क्षेत्रो = ताला चन्ना चेत्रो ॥ स्वयनदि अक्ति-वर संबद १ केवलनाशी दंससी सन्ति, सात-सर्वा परिवार ॥वा०॥

मुनिमंडल सं परिवर्षा सखि, चवद सहस अधिकार ॥वा०॥

पंचांगे करें बंदना सखि, क्षेत्र चरख आदेश ।वा।।।६॥ गावी चेलवा करें हैं गूंहली लिंह,गंडा को विंक री पर नार।वा।।। गूंहली गावें गहरादी सखि, हहर सुन्दर नार।वा।।।।। पहेंदगित पूरत साथियों सखि, सरक्ष गीठ नवाण ॥वा।॥ जनरायों केंक करणों सखि, औकत शिक्कल ठाण ॥वा।॥।॥ जनरायों केंक करणों सखि, औकत शिक्कल ठाण ॥वा।।॥

हानसार गुरा मिंक थी सबि, बचावे गुरुराय ॥वा०॥ प्रश्नुस्त्र थी सुनि देशना सबि, बचिकन मन हरपाय ॥वा०॥ह॥ — क्ष्म---

## श्री दादा ग्रुरुदेव स्तवनम (१) राग-फाग

सुखकारी, जिनदत्त सुगुरु वश्चिहारी । संय सकल नो संकट बारी, पंचनदी जिस्रा तारी ॥स०॥१॥

विद्यापीची परगढ कारी, थांनी वज्र विदारी ।।सू०।।२।। सतक गऊ जिन जिनमदिर तें, मंत्रत करीय उठारी ॥सु०॥३॥ बानसार गुरु चरनकमल की, बारी यां वार हजारी ॥स०॥शा (२) राग—सोरठ

गुनहे माफ करो, सुगुरु मेरे गुनहे०। में तो खनी खुनी खुनी, तो भी दास खरो ॥सु०॥१॥

नहिं हुं जोगी नहिं संसारी, ऐसे कुं उघरो ॥सु०॥२॥

नहिं हूं इतका नहिं हुँ उतका, जैसे धोवी को उकरो ॥सु०॥३॥ में हं सदगुर गुरू का भृता, मेरी भूख हरो।।स०।।।।।। ज्ञानसार कहैं गुरुदेवा, मोस्ं महरि घरो।।स०।।॥।।

#### श्री मिद्धाचल ग्रादि जिन स्तवनम् [सपगुण डांचण काज कहाँ जिनसर किया ', ए देशी] भारतम रूप श्रजास न आर्खनित पर्छ।

तेइ थी भव व्यवमासा प्रमार्ख्य पर्स्।। भव भगखा नो अंत संत कहिये हती। तो एइवी अगसरधी हं कहिये हेती।।१।। जैन धरम विश अन्य धरम सरधा नहीं ! साची संका रहित जेड जिनवर बडी !! जिन-पविमा जिल सरियो निहर्च सरदहं । तौ पिख भाव उसास न जिन दरसस सई ॥२॥ तेह थी सभ्र मन भ्रान्ति कत्यन्त समध्यती ।

सेत्रंत्र फरस्यै निद्वी न वर्ड मञ्चनी॥ आधुनकी आचारिज तवना में करें। मध्य विना नहीं फरस्ये विख संका रहे ॥३॥ ख़हा पिवासा सीत उसनता में सही l बुद्धवर्षे पर पंच संघोषसस्य रही ॥

१ भीमद् (देवचन्द्रती के बताबर जिन विहरशान स्वयत की क्षेत्रकी सामा में ।

हरेक वीवा वरा तक वास्ये हुस्तरी ।
केटक वीवा वरा तक वास्ये हुस्तरी ।
करका वास्ये वर देव ने केटि किरी ॥१॥
करका वास्ये वरस्य देना में करते ॥
वरका वास्ये वरस्य देना में करते ॥
वरका वास्ये वरस्य देना में करते ॥
वरका वर्षा में मोदमी हिंसा वास्ये ॥
वरका वर्षा में मोदमी हिंसा वास्ये ॥
वरका वर्षा में मोदमी वर्षा ॥वर्षा ॥वर्षा मोदमी मोदमी ॥वर्षा ॥वर्षा ॥वर्षा मोदमी म

आलस थी पविक्रमणादिक विष नाचर्यू । इक्ष्मं थी चतुराहर्ये उत्तर क्रमर्यू ॥ बरबी सर्वे सचिच सर्वेमा चिच थी। पिक द्वस विह लागी मन बच प्रत्ति थी॥६॥

चौ पर लामलामै समता नादरी॥ सरस निरस आहारें सम इती पर्णः। अति भीरस आहार कदेक विसमवर्णः॥॥॥ देव द्रष्य खावानी मनसा नवि रही।

अभिग्रहीत पस घरनी भिन्ना स्मादरी।

अन्य अखाती देख इरप मायो नहीं।। सेन्युंत गिर वासी आवक साध घता।

कोई मन बण्तम केता अनुहासका।।=॥

स्तवनादि भक्ति-पद संश्रह थावक उत्थापक जिलवादी सम किसा । पूछ्यै प्रश्ने जधातच्य चवन मर्स्सा फल कली कतरख वीधव कही किंद्र कही । जैसा नांमें पुत्राप्तद जैसा प्रसी।।६॥ थापक जिन्हादी श्रावक वत उत्तरे। लिंगी भाषी संयत बंदन परिहरें।। सक्ती बहतें साथ श्रेशक बंदन करया। तुम तेइनें सभ्यक्ष्यंत नहिं बाद्रपृ ॥१०॥ इम कदिसी तो जिस परिमा पापास नी ( मान शहता थी ते किय सम मानती।। श्रोक्षक नं बंदन ए पर्वी संस्थी। ने विका कीर स्त्री किस बंदन संबर्ध । बाग्र कष्ट देखाडी मुख्य सरिसा प्रया। वंची प्रमाध में है उपदेश सहामसा।। जिन वचनं व्यविरुद्ध शुद्ध सह उपदिसै। विड किया मत न कथन विडां ममते फसे ॥१२॥ मत ममती आवक में सम्पन्नी कड़ै। व्यवमत्वी में मिध्याःवी कहि सरदहै।।

: हानसार-पदाव मार्ख जिन मत चोर घापण मत में नहीं । तेहना कटका करणा व्यजैसा नवि कडी ॥१३॥ रुयावद जिनवादी प्रकट कहै इसी। श्रंत्यम बाचारित कहें ते व्यममें इसी ।। लदर भरत ब्रास्त किन दिवासंग्रही। पेट भार ये अस नीत उसक आवे सही ॥१४॥ मत व्यविरोधी देख व्यातम व्यवि उलसै । भगती थी बतलाऊँ पिख मन नवि इसै ॥ जिनमत पथन बिरुद्ध मनसा भास्त नहीं। इम कहितां दहवाये शिखतनमन मई ॥१४॥ विनरागी स् न राग, राग विन वचन थी। जिन वच अविरोधक न विराधक जैन थी ॥ जिस जिन मेंने प्रविशेध विशध्यी वचन में । तिसा जिसा घनंत विराध विराज्यी जैन में 11१६॥ व्याध्य करबी इस सरिक्षी एके नहीं। आराधिक सम संबर करकी नवि कही।।

ए जिन संबर करणी सुन्ह थी निव सचै। तेमें शन्द प्रमांस प्रमांस ए सबै।।१००।

स्तवनादि भक्ति-पष्ट संग्रह संब्रह नय थी ब्यातम सचा ब्यनुमन् । तद्गत गुम्ब पर्याय पसी मन बरशाम ।। गुम पर्यापे धर्म समाव समाधि भी। व्यातन साता चेर्' व्यञ्चाताच थी ॥१८॥ कासादिक पण कारण नी सद्भावता। थास्य व्यास्म सरूपे व्यास्म समावता ॥ तार्यं ते मत व्यात्म उलास निरुषं हुसी । भव्य हुस्यू' सी व्यास्या माहरी सिद्ध वसी ॥१६॥ नौ पिस अपराधि पर किरपा रासक्यी। अपराधी आसी मति अंतर दासाज्यी॥ सम निजर विनसन सेवक निस्थी सह 1 मन मन चरस सरस देज्यौ एहन कहूं ॥२०॥ निथ रस बारक ससि (१०६६) फागुक वद चवदसै । मिद्धविरी फरस्यों मन यच तन उस्तानी ॥ ग्यांनसार निजवर्षा जातम हित ससी । व्ययम त्रिकंद समोर्थे अति रति प्रथ घुकी ॥२१॥ इति भी सिद्धापस जिमस्वयम् संपूर्णम् । lide tout for de ear :

## ज्ञानसार ग्रन्थावली-खंड २ साव षटिकाशिका

बतीसी संग्रह

. भ दोहा भ

क्रिया अनुषता कहु नहीं, साव अध्युद्ध अयोग । मिर तत्त्वम नरकें गयी, इंग्लेम्पक्क विदेश शहा नाम हुद्धता की नहीं, कहा क्रिया की चार । टड्पहार क्षमर्थ गयी, हरण कीनी स्वार ।।२। तासुक्रिया कहुटु न करी, च्येमपेड की नाम । भाव ग्रुद्ध की क्षिद्ध तें, सिंद अनंत समाय ।।३।।

र किया नी व्यवस्था किनार शत नहीं हुती, समस्यवर्ध माप भी व्यवस्था भी 'तर' नाम-वरी ने (मण्ड नी आते ) श्रंदुश स्वयस्था सहस्रो नहरूँ नहीं।

र देवी किया भी खुँ । भाग भी खुँद्धारा भी विद्वा भी। एटवी भाग झुद्धारा भर्षे किया मी प्रत्येत खुँ, एटवी किया ही ज ही, किय व्यवसारी भूतत्वा किया भी अदरूब भाग झुद्धारा भी इसके इस्ती, एरवी अकस्थी किया भी खुँ । माम झुद्धारा इस्त्य अस्पीया इसियों में हैस किये।

२ साधु जी तथ संबद्धारि किया 'ऋषकरती' जान=न करती, सक्देश मान ग्रुद्धनी किंदता मी करत किंद्रों में 'समाय' नाम-नदाबार वर्ष ।

हाई सामन कार्यापुर किंद्र सकारणीयुर किंदा करी दान मरिश हें साम जी शुद्धता को स्तत पकारती किंद्र वसी । पुनर्शय । ४ किंद्र कार्युक्ता तम् किंता, ठेमां जी वशकारणी किंता कर

करवी नहीं ती बहु च्युक्तांद श्री शत हो ती ! किन्नवंद केंद्र इसी कंड्या साथ हे पाट में इसी हंची

क्रमण्डल स्थार का पंचार करा उपार करा उपार प्रमाणकों का पूर्व पर देश स्थार के प्रमाण पर्च के हैं। अर दे बढ़ी पहें जी देश एक पर हैं। हो में पहला किया कर हैं। ऐसी का पर्च हैं, किया कर देश स्थान कर कर की स्थान की को देश को हैं कर है करी हालिए में दिस देश पर्च करा करा करा हाल करा कर हाले क्लिक करा प्रमाण करा करा करा करा स्थापक कर हाले क्लिक सार्च पूचापुर का स्थाप प्रीक्षणंड्र किया हुए करा है। सार्थी हैं के स्थापित कराने प्रमाणका प्रीक्षणंड्र किया हुए करा है।

यथा—सन्तेषु पि ठवेषु कसाय निगद समे ठयो नश्च ज ठेख नागइची सिद्धो बद्दसीवि मुजंती १ ७ महामुनिराज

ध तें <b>'</b> ,	मेल्यो	नस्क	समाज <sup>२</sup>	ı
भयी³.	प्रसनचंद		ऋषिराव	1141

कुरह बहुतकु नरक मित्र, प्रशुद्ध भाव वें श्रीन ।।=।।

६ एक्क कुला क्याद नार थी।

६ एक्क कुला क्याद नार थी।

दे रोधार क्यें आर्थणा मी स्वत्यकी संभ्य, त्याद नाम वामधी नी
६ मान्या प्रशुद्ध के पर दावाये।

हानसार-पशावजी

केवलि सी करवी करें, अभव लिंग संपन्न। पै मंटी मेट्रै नहीं, भाव ग्रुद्ध तें शून्या।आ। पर्व कोड देशोनता, क्रिया कठिन किन कीन।

किया भाव सुध ऋह माथ सद तें सिध

४ सम्. समीरकः ।

क वेशक्यशिया नाम-वरणो करक । तुन्तः जिरहा फ्रांबल तिथेन प्रार्ट्डमेन तंत्र-बुद्धः । येनात ज्यापि, विध्याल प्राणी वेद न्, सम्मणितं क्यं नाम वर्षु न नावें रिव्रति क्रिये-जिमा तो निर्मित्व कराय में । क्ष्मणायाय कारण नाव हुद्ध नाम क्षी, गुरूपत्था मो गंदी केद न माता । त तिया व्यक्त क्षेत्र, स्वय्य हमार क्षेत्र, क्षेत्र पूर्व, इत्ता मोद पूर्व न

क अंतर साथ करत, स्थ्यर हजार अंतर, वर्ष र दूर्व, इसा अरेड पूर्व देशोत, पर्यंत कस्तरवीय किया वर्ती रोह्य हो तरक गया। यथा—वर्षेति सेम कुकाश्वरची, 'दिशामि दृष पत्र च ।

मुख्याचार प्रकश्चिम, यथा राष्ट्रो तथा दिवा ।१। च्या:—ब्रह्म मारेव इक्तिकार्य नत विदेति ।



भाग वट्जिशिका १४३

६ १ स्ट किरिया, २ साथ किया न को किंपित, ३ क्यांकिटो विश्व साव नी साहित्यता ।

१० ४ बाद सी चलावची तदस्य किया पुतरी साथ किया न करी इस्तां विक साथ भी बतलका को केवल पाने शतका दीवार्थत वृत्ति राज :

११ दमक शंक नाम जेनात, नाम निवास दया---"वदा लाहो वहा सोदो,, साहा कोदो वयहत्दः।

होध साम क्याय करतं कोडीपवि व निहर्ड ॥" ह वामहोधानि व्यक्ती सीकी

१२ ७ वर्नरेंसे श्रीन तथा, = बीटन योगीय स्थापता, र ते तथाल सीवित केम्ब करका-शवनी वर्रे-पाने रेड ए तमस्तरण में पोंड्चरां गूकी तातु किया की

बर संगी, ती किया भी खंड



शानसार-पदावसी

परबी रुपेशास साम रहत की सिंह कई । ही मीच परानें काम वो चविकास है । २ v कारोपारी कही कही..... " विषद्वार नवण्डेए तित्यपदेशो तश्चो भग्निशो।"

तेमी मान्त किया में मानी सें, विश्व भाषी में बोलीका करि द्रपन प्रति करवी ते राये सी क्यों वर्ष पिट संस्थाप साथ-(निर्मेश सरहार तंकावी) मात्र ह्युद्ध वी शित्र युक्ति सहैयाने, संदक्

सरकी मा चांचसे केला बर्टन बरावरा । १५ नावनी नवन नावनी हैनो किया शारेई सामेई ए किया क्यों । तेमां लासु भी किया सर्वया प्रकार नहीं । तेन कर्ने अध्यसहसूरी विद्यालको हवा परत सा गल-पल क्यू', ती ए शेरे विद्याल्य' पान्यो ।

ेश तो बान कारणीमून में खिद भी, में वो किया कि द्वकारफा हु वं तो सुधानमें पुणवानार में किया करणवो सुधाने भीतें केवल पोग्ले किशे सोयकाय कर किया में ते सोयकाय कर किया पश्चित्या में गुणी वो समा । नहीं तो सामुख्यिय में ती बेश शे नहीं। (दा पिशी बढ़ीनी खिद्द शरीर ना मांस महुक या अंड करी

'सामु किया सी वर्षी ? तेथी किया नौ स्यू' ?

१८ फिरी क्वीनी सिंह रारिर जा मांच महुक था कंड करी कर्मचुं करें हुमें मुन्त करांची शो बाव में त ती है शुक्तिका बातु हिन दाने हो कि जाया में में मन्य हरने पाम क्यार्विक । कराया, न कोच मही बोई । एकले-म्याच्यक वार्ती महामुख्यक्तराचार्थे क्यारी में ज यह पमम कहा, यहा- "बहुते कानान्य हुक्ले-हाताक जुले नाम हाज्यानांच संक्रम कार्यिकाराण व्यक्तिकार संदेग सास उतारता, साधु किया सी कीच । भव निवास तव माव सुच, सिद्ध शुद्ध पद सीच॥१६॥

128

ठपमती इक पहुर में, केवल झान व्यनंत । माथ व्यग्नद्ध तें निव लहैं, श्री दमसार महंत ॥ २०॥ व्यसंख्यात इन्टान्त कुं, कीलूं वस्सो काय ।

असस्यात रैप्टान्त क्, कालू वस्या माय ! पै जेते सुधि में पढ़े, ते ते दीध बताय !! २१ !! हवें तो पिश हाल, पिश जान ने कामाये तो हुर्क नौ कामाय हीज है

एतले ब्यसाधारण कारण शक्त भी झान है ।

1.4 में वो प्रामान के बिच वृक्ति कारिया हुने थे दिनंदा प्रतिकेत प्रामान किया दिना प्रामान के स्थान किया प्रामान के स्थान के स

सान मां हुण्य कराजो रही गयी, तेथी माधवय द्वाकि कराया । ११ म शंध्या सप्यस्था-इसंस स्ट्डिशंच्यात, नहीं शंयय शिकते न याय परति शिनारी हो नाव्यास देख्या स्प्यानों में नश्चिम करता किम यार पार्थियों, व वासिये। तेथी में मंग्युद्धि मी सुद्धै प्यस्था देख्या नवारी हीमा।

भागंपट् विशिका भाव श्रद्धता सिद्ध की. कारण तीन काल+। किया सिद्ध कारन नहीं, निश्चै नय संगास ॥ २२ ॥ २२ तेची भाव नी सुद्धता तेव सिद्धत् परम बारशी जूत पश्चै

200

तीने ही काने हैं मैं किया सित्र में कारण नहीं। निरूपें नव ने स्मरण बर, चित्रवन कर निश्चे सम व्यवेशाये किया सिद्धकारिका नकी। × तमे साथ कका ते जगत जंग मैं कामेक भाव भी प्रथति प्रकृति रही ही केईक स्त्रीजन नू' तहाकारी परी विषय भागे प्रकृति रह्मा है तिसम इच्टिरागी छता बराबार तहागत स.वी पर्यो प्रवास रह्या है इत्यादि भाव नूं प्रहुण इहां नवी। इहां बी बढ़ बी भिन्न वर्षे चारमस्वरूप क्रमेश, क्रमेश कविना भारी जे गुद्ध कारमस्वभाव न' भावन जिल्लान है भाव न' इडां घटक है। × इहां दोड्डे में पहलुं-- भाव शुद्धता शिद्ध की, कारन

तीम्' कास'—ते जो विभारी मैं बोहवें तो बागदि कार्ले बानंता सिद्ध थवा ते सर्व ने मान ग्रह्मता रूपं, मुक्त असाधारण चारण थया, थारवै ते पिया सक्त कारसी किया पास्त्री में बर्तशान काली पिया एक कारसी सिक्त बार्ट रहा हो से सिक्त से बिधी पिक बार्सनकाल पता' ही सार्थन किया परा, नवी, को नवी ? ती ब्याल्या नी झान तालगु हो मैं किया जह भी अच्छा है। तेथी दहासा क्चर दक्त में कहा — 'विधा सिद्ध कारता नहीं' तेहबी जिल्ले नवती क्षपेतार्थे संभावीने व जोड़बे हो किया सिद्ध मं बारण दीनां काले नहीं, तेथी सिद्ध नां मनकारणी मत जान है । १४८ शानसार-परावशी शान सकल नय साथियं, करणी दासी प्राय ! शुद्ध भावना सिद्ध को, कारन करन कहाय ॥ २३ ॥

हानातम समयाप है, किरिया जह संबंध। यात्रै किरिया भातमा, तीन काल व्यसंबंध।। २४ -२६ तिमञ्ज हाल ने नेनवादि काल वर्ष साथी बोहरे ती राजा अब स्थान, ने संबंधि नमा-पारी साथ करात्री समझका, तेथी प्रस्थापन

चिवान में विद्य में रहा करण में बचा-प्याचारण बरायं करयां, कीई हमें इस बीरती विद्यां को यहुं कमन में बचा-मान विद्यान्यों मोश तथा "वंध मान विव्यान्यों हमा व्याचारों करा, वाली त्यांनी हों, वारावारों के पंचली '''रायुं बिद्धान्या में क्यां हों। त्यें कोई हमें इस कहिंसी, युं किद्यान्य भी विचरीन मानश किम मार्ग में हैं हिंदि विद्या हों। विद्यान्यानुसार्य किस विव्यान्य में क्यांने दक्षाने की

त्व में हुक्शवार व गाथ मूं क्यम हो ते के बाग नुहासा म क्यम में दिख करों हैं। इही तेन्द्री गांवी बारिक्शक हैं। इस ते मेरी बात में हैं तो काश ने बश्चाय खंडल हैं। स्था-कर समर्थक कार्य हुन्यात्वे तक समायत तेथी बाता मां मिलयो बाती झात में किया भी कहा मेरी व्यक्त हैं। सातार दें तीन कार्ति रिया भी क्षात्रक हैं किया भी कहा मेरी क्षात्र के हो स्वाम दें तीन कार्ति रिया भी क्षात्रक मेरी क्षात्र कार्या के तही बात गुर्वे परहण्ये करीं ते तहे के क्षित्रमां हिल्ला सार्वा के ही, निक्सी ने जोईने तो

इमस है।

भाग च्यू विशिक्ष १४६ धर्मी च्यप्त भमे कुं, न तत्री तीन् काल । आस्प्रशान गुण ना तत्रे, तद् किरिया की चाल ॥२५॥ प्रकृति पुरुष की बोड़ है, सदा व्यनादि सुमाव ।

भव कित की परिपाक तें शुद्धाराम सद्भाव ॥ २६ ॥

२१ वर्मी पीताना पर्न ने न बोड़े, तेथी खाल्मा झालधर्मी,
अब कियावर्मी भी चाल भीति न बोड़े। २था नाम सप्रविति—

विषे द्वह बात सुवार्य पहुं बारणा पाने ते तीह किई— स्त्रे नहीं ने बीच भी बजारि दुवारों जीती हैं बचा—क्वारेशक्व स्त्रेश नी बीच भी बात मां जीते | तिव बीच में बहुने ती जीहो | पाने अब भी विद नी कात तेनी परिचायरस्था बाँगे होण दाँ, असी रूपी करने पाने बात बात कात कात कात कात हो स्त्रामां का स्त्रामां मान्य सामात्र सामा सम्यार्थ वाष्ट्र में दुवारणा नी सामचो बाच, दहरवार्थी— स्त्रामात्र सामा सम्बन्ध वाष्ट्र ।

ennur armah शहातम सब-भावता. शहा भाव संकोगः। माप श्रद्ध की सिद्ध हैं, पाक काल परिभोग ॥ २७॥

120

काल पाक कारन मिलें, किरिया कल न साम । पातन किरिया निन पड़े, वाल दसन व्यक्तिशम ॥ २= ॥

२० ते ब्याला ग्रह स्पै भी धाय १ शह जे ब्याला स्वस्त्व भी साव तेजा संबोध यी साम निकाप थी ते भाव नी किञ्चता काल पाको विना नही २८ जिस कासपाक नी सिद्धता थयेँ बिना पास्य कियाचें

धभिराम-मनोहर बालक ना दांत रही जाव । कासो सदाय नियई पुल्ब कर्य पुरसकारसे पंच । समयाण सन्धानं पगंते होई मिच्छतं र ए गाया सर्व नवनी क्रपेसायें जोड़वे तो प वांनेई समबाई बारख मिक्षियां दिना कार्य भी किञ्चल लही. विक विचारी में ओहबै तो ए पांचेह कारयों मां मुख्यता कारता श्री है। तेथी मानन्दपन सुसातुओं एहत् कह्नू:--श्रवसश्चि सह

पंत्र निहालका" तेथी काल परिपाक मुख्य कारण मिला जोडचे क्या - मरुदेश, राज्यहार, भरतादिक में काल परिवास धारता ती सिद्धता वी सिद्ध यह में बील, साथ किवादि न बारता है। बारगीशन विशेष न हु'तु' काल पाक कारण मिले तौ विशेष किया कार्य व्यंहें नवी ।

किम सम सतमिया देव में ही कालगढ़ खारश म बिल्बी, नहीं वी केवस पानी में सिक्षेत्र जाता। तेवी ज सुक्य कारता कारही में ज गाया में प्रयम 'कालो सहाव निवर्ष' वहलू' गु ध्यू' ।

भाग चर्जियका १६१ काल पाक को सिद्ध तुं, सिद्ध सिद्ध हूँ आय । पिन बरमा छुन्नै फुन्नै, जुन्ने वस्तरण ॥ २६ ॥ भागपरिस्तृति परिकक चिन, भाग छुद्ध नहिं होय । प्रतिकारणी कर सम्क पति, हार चहुरह दोष ॥ ३०॥

क्रिया उपायी सर्वेषा, बंद्धक किरिया चार। यै बंद्धक खचन रहित, तो तम ह्युच कावार॥ ११॥ र तेथी कावशक मी स्थिता वर्षी कहा तम्यात क्रिया किया है विद्या हो नाम कहें॥ चया वित्त वर्षा नेट् बरास्य वित्त कुल कर्ते वहित वक दुरु ही नहीं कुष क्राराय हुँ ने बनाती ने कुल सक

सामार करात नवीं नवारों से पूज को रिवा कालाक कार सामार मित्रकों तेतन सामायक में सिवाज बिना देश दिश्य कोई लोने पूजा संबोधी दुनोराल कांन वाई ने देद में ? हिस्स कोई लीकी युनोरालि को बंदे : रिवा पात काला नी दिल्हा मित्रने सिवाज पार्ट, प्रचारित केक्सा पढ़ किलां, स्टाम्म प्याप सिजयानी जाने को को देश, देर निकास मार्थियां नी चारियाल कारण सिवाज किलां निका स्था सामार की स्थान की मार्टियाल कारण की मित्रका सिवाजी

२०, २१ तियाज मार्थास्त्री नी परिपाद काराय शिवार्य विश्वार सम्ब काराय भी दिखा नहीं, युद्ध मार्थाची में दिखानी विद्यानी, तैरशीक हाक्तिस्त्री मंदी हुस्तक रूपनें का दें हुं हिन पहेंच कर पात्रिक्ष कात पाक काराय र तिमाची तेथी नुस्त काराय र दी। इस्ते कोई स्व बहेदसे पंत्रीक होई दिखानुमें पिछ सुद्ध के में किया कथायी ते बोब सहित किया स्वत्या है। दिखा मांद्रा यहित किया निष्यास्त्र में सोबा रिद्ध किया स्वत्या कामपार्ध में

बील' कारब सिद्ध नहीं, तील' उपन खेद। यट कारज की मिदि तें, उद्यम खेद निषेप:।।३६॥ भाव छत्तीसी अविक तन, मावे सत नित माप। (नज्ञ समाय सबद्धि तिरन, नई भई सी<sup>\*</sup> नाव ॥३७॥ सर्' रस' सत्त' ससि' संवर्ते, गौतम केवल लीन×। किसनगर्दे चीमास कर, संपरन रस पीन+ ॥३८॥ खित रति आवक आवहै, विरची माव संबन्ध× । रत्नराज गणि सीस+ ग्रानिः ज्ञानसार मतिबंद⊕ ॥३६॥

8383

।। इति भाव चर्जिशिका समाहाः ।। अवर्तती चार्च रीट्र न्यान म प्रवर्तसी तेथो जो चुमाये, समपरसामी बती १२ मानना रूप धर्मणान थी सन शुद्धे ब्याप्स स्थमाव तेमे मायजे, विन्तवजे । तो भारमा नौ शुद्ध स्थमाय कारमा मां सहित्री नि:प्रयासे संपत्तवी, पानवी । २६ े घट बार्वेस्ट श्रम्म केर जी क्रिकेट जनता ।

२० " तरव से हई। ३५ ÷ गौतन योत्री इन्द्रभूतें केवस याम्बी×दीवसाक्षिक्षा दिनें ।

३६ ♦ ब्यायना रागी जे अवस्त-ने ब्यायह थी. विशेष राज्यी मान नौ कथन ! शिष्य ⊕मंद्रमदिखें।

÷ जैनगरें गोहादा गोत्रे सुसक्षात आवर्षे बाजन्य विशयत सरागिये छुद्ध वृत्ते जिनदर्शन चादर्थी । पश्ची हूँ किसनगढ भागी तिपार समयसार जिनमत विरुद्ध शंधती क्ष्य ए रची में मुंबी

तेकर ए बांची नै बांचयू मुंबी दीम् ॥

### जिनमताश्रित त्र्यात्मप्रवोध बतीसी

व्यथ संगत कथन रा दोहरा श्री परमातम परम पद, रहे व्यनंत समाये। ताकों हूँ बंदन करुं, हाथ जोर श्विर नाय ॥१॥ व्यथ स्वतासा वर्णन्स ॥ वर्णाः—

भव द्वारामा वज्रुतम् । नया:— . आतम् अनुभव असृत को, जिन जिय कीनौ पान । ताकौ हों वरनन करूं, अनुभव रस की खान ॥२॥

गका हा परनन करू, अनुसद रसकास्तानाः स्थ्य ग्रह्म स्वरूपी बर्जनस्। वधाः— स्वया इक्तीसा

आर्के घट मीतर झान मान मोर मयी, भरम तम जोर गयी, जागी श्रुभ बासनाः। कामको निवारी, मान माया कों उल्लार डांगी,

स्रोभ कोष कों विदारी, श्रंदर प्रकाशना ॥ स्रातम सुविस्तासी, 'श्रुद श्रुद्धमों को अभ्यासी, श्रुप्त रूप' की प्रकाशी, मासी ऐसी वासना ॥ श्राप्त दशा सामी. पर परस्थित ह अश्रुद्ध स्थामी.

ञ्चात्र रूप<sup>°</sup> को प्रकाशी, नासी एसी वासना ॥ ॥न दशा वागी, पर परिवाद ह अग्रुद्ध स्थानी, ज्ञानसार अयौ रागी करत उपासना ॥३॥

पाठान्तर—"भावना १ एकीभूत २ स्वरूपवितःनी ३ उत्वतः ४ सेवा ।

क्रतेता ब्राजस्का वर्म की विकासी कड़ सँग सौं उदासी, तती कास दासी क्रातम क्रम्यासी है। अस्य बाहार हारी। मैनह की नींद टारी. कर्म कला आरी व्यापा प्रकाशी है।। प्राकायान को प्रयासी पंचेन्द्री जय काशी <sup>क</sup> . भाग को विकासी ऐसी दका भासी है। साय द्वा धारी अूव धर्माधिकारी, वानसार वशिहारी <u>श</u>्च युद्ध सासी" है।।४॥ क्षय करात् " राजात्मा पर्यातम यथा:--வின் க்கிய<sup>்</sup> मंद्र के मंद्रद्वा वनवास के वसद्या, प्रस्तान के करदया, व्यक्तान विस्तारयों है। े खादारी । १ श्रावायाम 'प्रायायम लास प्रस्तास रोघनं २ जीत्या है तिया ३ प्रगटी ४ स्वभाव संबन्धित धर्म ना॰ सम्बन्ध, ब्रास्म तत्त्वनी कविकारी, पारक र तत्वज्ञ साहसीस ६ माप्त मर्माल मयम व्यक्तव यमें बारक परचात श्रद्ध घमेंशांति तस्य ७ केई बाचार्थ इकतीलें स

सबैये ने क्षिण करें, ने बेर्ड सपय संद ने कथित संज्ञा करें ने और

भारत अवाय क्षणांना	(40
पान के सहद्या मध्य भूर' के चब्द्या,	
राम नाम के स्टब्याश्रम पूर तें भरयें	है।
ताकी अम रूप तम भूर' दूर करिये की,	
श्रापा श्रुद्ध झान भान निरादाध रस वरवें	181
ज्ञान दशा आगी वच अशुद्ध परशिव स्पागी,	
<b>ब्रानसार भयी रागी समतारस मर</b>	वी है ॥४॥
क्रम कश्यास सत् कथन	
दोहरा—	
ओ जिय <sup>9</sup> ज्ञान रसी भरयो, ताकी वंश नर्व	न <sup>¥</sup> ।
AC	A-9

250

कति विकास में, सीन सयी श्यों श्रीव । तार्की मकि न होंदिसी, सदी इचडी बीब।(७)।

थय ग्रुद्ध जिनमद कान

बोहरा निश्चं श्रष्ठ व्यवद्वार हैं, नव भाषी जिन्हराज।

सापेचा इक " पक्सीं, करें विनासम मार्क् ॥=॥

चौतीसँ तांड सब नै सबैयो स फड़ै। १ प्रचर २ समस्त ३ झानी

की मोग कमें, निर्दाश की हेत हैं पहनी कहे ने जब में बगन रहे, ते प्रतर कथन ४ ध्यवोगी ध्यवन्थक ४ तुन्छ ६ समैसार गदी कड़ै

७ व्यपेता वांह्र = रहस्य ।



चास प्रकोध सत्तीमी श्चस्य प्रत्युचर कथन दोहरा:---स्यादवाद के जिल्लान क्रमत. प्राप्तिताहितता करा । ता बिन को कैंसें सखे, आतम शुद्ध सरूप॥१४॥ पुनरपि तदेव मत कथन चौपई:---जो करता<sup>3</sup> सुगता नहीं मानों, प्रातमहत्व प्रकरता ठानों 1 मुखदुसस्वक्रियाफस हो है, बिन व्यातमफल सुगता को है ॥१४॥ थस्योपरि जिनमत प्रत्युत्तर श्रथन चौवई:--करता करम करमफल कामी, भासी त्रिञ्जवन जनके सांमी । क्रिया कर अकरता माने. सो जिनमत की मरम न आने ॥१६॥ ध्यय स्वादवाद काल सक्त्रीया इक्तीय:---शुद्ध साधु मेप घर, अवंचक क्रिया करे. संत्यादिक दशौँ विधि, यति धर्म भारी है। को सी परी. मधनेपी को खरी। यहच समयसार वालो कड़ै हैं किया ने । १ स्थादकनं स्वादाद २ स्वादक्ति सास्ति । ३ थे को ब्याल्या में कची भोता न मानी तो ग्रामकर्मे तन्द्रे क्यू प्रवर्ती हो। एना ग्रुम फल नी, बाल्मा ने दी ग्रुम फल नी मौग वंज नहीं तो श्रम करकी करक कब शबन नी परे निपद्ध उहरी।

क्षकारकृत्वान् ४ त्यापी, तेश्री जैसी नृ' प्रस्त, तौ किया क्यूं करी ४ ग्रह्म शब्दैव-'न रेतिकता न योकस्वा' इत्यापारांने कारवात्। स्कर्यान पट पांच' महातत घरें, खड़े काय रखा करें. महा मैंसे वस्त्रधारी, ऐसे जो भिएयारी है। वाय लों विहारी, परीसद सहै भारी,

जीवन की व्याशा टारी ' मरख भय निवारी हैं। बानानल कर्म बारी, शुद्ध रूप के संमारी .

ऐसे बान कियाधारी, सिद्धि अधिकारी हैं ॥१७॥ होस्स

धान किया दैं सिख के, कारण कडे जिनंद। एक ब्रान तें सिद्ध ह्वै, भाषे सो मतिमंद ॥१⊏॥ क्राम कियोपरि दशान्त कथन दोहरा:-

बान एकड सिद्ध की, कारण कदे न डीय।

एक पक रच नांचलें. चलें मिले जब दोय ॥१६॥ पुतर्शय तदेश सत कथन दोहरा

सदा ग्रद्ध तिहुँ काल में, आतम कर न अशुद्ध । इम तम है संसार सो प्रत्यव किन्द्र ॥२०॥

भी निराकरण कर वृं। १ कीवी कास मरण भव विध्यसकके

२ प्रस्यवकारी । २ वे सदा बारमा ने ग्रुद्ध मानी औं ती थांडरे म्हारे बारमारे

नाम :	अप्यातम	यापना, ह	्व्य क्ष	व्यातम	द्योर।
भाव	ब्रध्यातम	जिन मर्ते,	सार्धे	नाता	जोर ॥२१॥
		( 4	तैपाई		
व्यातम	पुद्धि गद्धी	कायादिक, व	हिरातम अ	नी थयः	हपक ।
काया व	सासी अंश	ार आतम, ह	ह स्वरूप	मई परम	ातम ॥२२॥
सदा श्र	द जो भा	तम होय. ती	थातम त्रय	मेद न	होय'।
यातें स	- दाकास न	ही शह. कर	म नाश तें	होय वि	श्रद ॥२३॥
	<b>पुनर</b> ि	तदेव मतोपरि	जिनमद क	थन दोहरा	-
पुद्गल	संगी ै	यातमा, य	शुभ प्या	न में स	शीम <sup>3</sup> ।
तिवी :	वेर सघ	मांनिही.	सो मिथ्	पशिम	तीन ॥२५॥
	0117	कि तरेच गत व	क्रांच लोक्स	alleran -	

emm naha andai

कटे न' लागे कर्म, करे प्राथमाराम सीं। हद मिथ्यामति अर्म, बंध मोख है व्यातमा ॥२५॥ कर्मन सामा हुँत ती संसार में स्वै कारफ की मानता, तो ए कात मनतक विरुद्ध प्राप्ते प्रशासामानत् । तेची तारी कीची तदा दुद्ध प्रत्यास्य विद्यान्त विश्व विश्व अहिली । समा—मासाइ प्रमान वह वन्तिस्कोतः। सम्

ध्वय विस्त्र वात् । र तो बास्स नी एक परमाना सेद ही अंहती। र मिल्पी वसी।

३ विषय सेमन कारी, जिला प्रवर्तन कारी । ¥ "सिद्ध सरातन सी बहुँ ती उससे दिनशं कीन।" पुरुषि —"शुद्ध रमध्यी को बहुँ, पत्रय क्रोब क्लिए । न पर संसरी दता, पूच्य इह मिथ्यामति छोड, जीव अकर्ता कर्म की ॥२६॥ क्रम क्रम्य वजीवरि (अस्तान क्रम्स शेवरा:---कर्म करें फल योगयें, बीव द्रव्य की भाव'। द्यम तें सम व्यामें व्यास, बीने कर्म प्रमान ॥२०॥ मान्य सर्वेमत किंपित कथन होहरा:--

श्रीव कर्म की ओड', है चनादि सुमान सीं।

नित्यानिस्य केई करें. स्वया तें केईक ।

के ईश्वर प्रेयीं कहे, केई कहे अलीक ॥२८॥ बदच्छा केई कहैं, शृत-मई कहैं कीय"। असहाई आवम दरवं, नित्य अरुपी सीय ॥२६॥ श्रय श्रद्ध स्वाद्वाद प्रवर्शन कथन करहत्तिया:--घर में या बन में रही, मेच रूप बिन मेच। तप संधम' करबी विना, कोई न लखें बालेख' ।।

को न लखें वलेख, विना तप संयम करगी। ब्रान किया ए दोय. उद्धि संसार विशरवी''।। र "काकोपलात पराय पराय तथी, जोबी कार्यात समाव ।" । संस्थात

द कारचै । ४ हैरबर फेटो नन्धेट स्वर्गया स्वत्रप्रेयका ६ वेई की हेरबर प्रेमी की हो प्रस्तुत र देवें सर्वे अञ्च बालानी रच्या गर्ने रिय ।

वेडे की फाला क्वी बदाई है ह नहीं, चेतन क्वा ही दंबवत हुई है ।

a पुर्तिशी हूं बाक्य, सदाय कोई से नहीं पाला प्रम्य से 8 बार्ने इन्द्रियां से दाल १० भवस ११ सम् ।

चामा प्रवोध वसीमी एक द्वान ह मोख, मान कारख क्यों मरमें। तप संयम है धरी, लखी अनुसत्त पट पर में ॥३०॥ ( योजना ) घट घर में अनलख लगी, स्पादशद ते श्रद्ध ।

स्याद कथन विन प्रसास कीं, सबी कीन विश्व बढ़ें।। रूप सबी बळ बस्त महीं '. श्रामक सरुपी क्यों आय । स्पादाद बटमत भवी.' यासे प्रगट समाय ॥३२॥ ध्यथ जिल्हाल प्रशंका कथन होत्रा-

जिन मत विन त्रयकाल में, निराबाध रस रूप।

स्तरी भीन विष व्यातमा, कातम श्रुद्ध सरूप॥३३॥ भन्दायणी — पूरवा पुरुष संयोगे जिन मन पाइयो । स्थादवाद" परसाद, शह ५६ साहयो ॥

र बक्ता बाध्यस्थ्य निर्दे, कार्तेन समाय र हे तुल्ला ( वर्गा s "क्ष्मी को हो कब नहीं" ( स्वतनसाहितस्थान —"स्ट दरस्था" क्रिन

बार ब रोजे" उनमें बारी जैस दार्गेंट बार बार वो हर। ८ स्तिमान माम स्वामाना -शेका सीट प्राची मही प्रातिक-

स्थल स्थ से समो। खारी शुक्रामण वर्षे शस्त्र हु तसपु ६ सच्चे 🕶 मैनाहि स्वातसम्बद्धाः स्वीतः।

स्याद कथन विन' शब्द, रहिस की सांनिहें। परिहां या बिन कहि इम जांन्यी, क्षे नहीं मानि हैं ॥३४॥

#### कीय करें सब बापने. मत की कर प्रशंस। निमता विन शक्ष वचन रस. पावे नहीं निरस 113 प्रा

बक्त वह वसी इहि ॥

थानक बाग्रह सौं करें, दोहादिक पटतीस। ब्रानकार दथि सार' जीं. ए ब्रास्य छत्तीस ॥३६॥

# ।। इति क्षी चारसम्बोध स्त्तीसीक्षसन्पूर्धम् ।।

१ तेन विना २ निर्मेशस्य ३ निर्गतीदश्) कस्ताद्र स कि(**स** कासोर्थः ४ सम्बद्धाने थी। • हैं बाहिर बनोची उपायय बोह मैं बाय बैटो बाद शास्त्री काली मतें बास्त्रदातें समें कहां वे किहाना बांची ती दोन कही

हैं भी कालं. बद में सब्दी हैं तो उठा स्वयन तुत्र सोवूं खंजद तिथी

चक्क' सबैकारकी सिकान्त नांची। अद में चक्क' सबैकार किनानत नी थोर के तिकारें कक्;्रं-हैं। सक्तरशार में चोतों की तर्ज दिखाओं रिक्रों बावन संदर करें "बानवा ते परेशवा परेशवा ने बाहवा" ए विकास वंदर पर मही में मे कोरी होते है अलोबी में बडी ने सब्बी

#### ॥ चारित्र छत्तीसी ॥ (का)

ज्ञान घरी किरीया करी'. मम राखी विश्राम<sup>र</sup>। र्षे चारित्र के लेख के. मत राखी परिखाम ॥१॥ जो सौ हम पूछ क<u>ै</u>. स्रेज्यौ संयम भार। सयम करणी नहिं सुगम, संयम खेंडा धार ॥२॥ चारित विन जो सिद्ध की, करवा पूछी कीय। तों विन चारित सिद्ध की. कारण अन्य न होय ॥३॥ यो चारित ब्हें सिद्ध की, कारण सो कक्कु और। भी' वारित ती सिद्ध की, बाधक' कारन ठीर ॥४॥ सार्वेडन चान्तिकी. म भरो मन मैं प्रीतः। जिन चारित तै सिद्ध व्हैं, मो नहीं इनमें रीत ॥॥॥

जैतलकोरे तिषयी कर्ते मोहकोर्य चारित लेकानो चरवाग्रह क्वे,
 ए क्वोंको एपी । ज्यों क्षेमी वंचक मिक्स क्षे वरियान करता था,
 तेनो वंचकरणी व्यक्त देशी लोबी, तेनो चारित व लोबी;

र सक्तर बान भी, अवंतन किया की र शक्ष सकी

<sup>ा</sup> प्राप्तकार सरक्त्री ४ स्टिट जार्ग में ग्रेक ४ क्षाप्रकारीय में

भी चारित' सो भीर है. औ चारित तो भिन्न । दन्त दरिद" देखन लुदे, खाने के सो व्यत्य ॥६॥ दीसै परगट आप ही, इन उन चारित बीच। धन्तर रैनी धौसको, उज्वल क्रल घर कीच ॥॥॥ मारन शुद्ध चारित्र की, कैसें सहियें शुद्ध। शुद्धातम अनुभी सदा, व्यातम गुण व्यविहरू ॥ ।।। शुदातम अनुमी मई', ज्यो सदुमाव' विश्वद्व । सो चारित इन काल में, पाने नहीं प्रसिद्ध ॥६॥ वो जिन काल नीपजें, सो उन काल होचा विन वरपा वरपामई', पाइप ग्रद्ध न होय'॥१०॥ तारी इन कलिकाल" में, उन चारित की शदा। करिये पे वेसे हुये, जो इन काल विरुद्ध''॥११॥ १ माल स्थल सच्चानों, २ द्वित् = हारी, इ सामाणकांट भारेती महाम इस शक्क ४ हाजाला मी सहमी बोजारी तह पर समे इस किसे तह अमार्थि किसे, तह न दोने ४ कराया ह माइनकी पार्शियों है अवह ही न दीते। हैं पामेरच ही बच्च हैं. पर' पत्नो तो त्यन न हैं। चार्तियों संजनात्य बार्त्य ने ती न क्या हैना बुहरिकको मां हरने । ७ वीचे कारी ट. स्वीकाल सम्बन्धे । क्षा वर्षे नहीं, उस ती क्षा, इस कार्रे सम्बन्धि पारित और पार्च ही सड़ी मां तरशब क्या माम हुए कृदि मधी न बाप। इति सर्वता १० पंचम काल है ११ इस कालें सहस्रक

चारित्र हत्तीसी १६७
का पै सीसन बाहर्ये, चारित के बाचार।
सो आपा भूल्यो फिरें, संयम को व्यवहार॥१२॥
तातै नहिं इन काल में, संयम लीनें दीर।
घर बैठे किस्या करो, म करो दौरा दौर'॥१३॥
पहिली यार्की आनियें, गीतम को अवतार।
आसेयने कर देखिये, व्यति अशुद्ध आवार।।१४॥
चौबे कारै की किया, चौबे ही में होय।
पै पंचम में चाहियें', सो वीसें नहिं होय'।।१॥।
भारति में दूस पानी प्रित्त में ति हैं कि हैं। हम हो में हम हों हो कि हम हो हम हम हमिले हैं जाए हम



१६० झानसार-पदावशी

र पंची पन काकास, पुनर्सय । २ सक्की देए ४ एपाची बो वरें केन कारेक वू' कु कार्ड बनाग । ४ सार गार कारिक विना त' क्षेत्र अवर्तन पार्थ केर्र प्राथी इन विगाने । चात्र पंत्रवक्ता ना

पारित्यों मा ते कारियां मा कारिय हुं तेश ही में ही की 'नहीं क्षित्र १ हेतो "बिक्कोडा क्रिक्सावा" झपाबि वसी स्रीत । v ant में क्या कर केरना करिया औ पार्टिक अर्थन में है

बनवी कर क्षेत्री कियां हो संबोधी स्वर्गाद अवारी से मीन की। भारते बहुमा में। ७ सरका नो मोप शान तेहने। सायु भरम की सीख दें, कों पर्ने की युष्ट।
याती सीख दिचारियें (ती) करें वर्ष में की युष्ट।
याती सीख दिचारियें (ती) करें वर्ष में सुष्टं।।२०॥
भाषा गुन शरद करन, भी चारित आचार।
व्यवन बुद दिचारियें, तार्थी मिबाचारं।।२१॥

व्यातम गुन परमास हुँ, श्री पारित रिव रूपै। बी श्रहत्तम अनुमवी, व्यातम श्रह सरूपै ॥२२॥ या चारित्र व्यनंत गुन, व्यातम समति असेद्रै। बरखीनी सिद्धान्त में, सत्तर मेह दश मेह ॥२३॥

र बाहु ही काम इक्षिण शीक दें, तीतें वर्ष रूपने व्यक्ति वर्ष हूं पुर होंग ही बीच क्यूंदीयों। तिहा तिह्यूं में काम कारित हा चरित्र देवनें तान दिल्दों में। तान तमान वर्ग वर्गम्या स सामनी त्रेमों।

२ स्वस्त्य प्राप्त पारित युं निमाण्याची मी। ३ भी नाम पीचे भारी से पारित वात्मक्त्य प्रकारा में इने रूप होज की।

सूर्व होत्र हो । ४ को नाम को पार्टन हाइट उलात माल्य नी महत्वसी विनाद

ही—स्तुते किस कामग्रहानः।

५ ते चारित नयी माह्'। धाल व्' हुत्व स्वस्य हीन की।

६ सामा रे चारित कर यह सकते माहराणी चेत्रीरः।

श्री शाहित जो पाईचै. सपल करने ती होट'। तन पारित को खेड सों. आतम कर शकेड र ॥२५॥ उवा संयम दिन सेस ज्यो. साध लिंग की प्रप्ट। चायक माथे थ्यो हुएँ, व्यंतर व्यातम इच्छ ॥२४॥ ब्यन्तर व्यातम दण्ट सीं, चायक माथ विरुद्ध ।

सो पंचम कालै नहीं, आतम गुरा व्यविरुद्ध ।।२६॥ यथाख्यात चारित्र की, कैसे वरनी आय। भनेतकाल या जीव के. एक वेर ही बाय ।।२७॥ सरवंदिरत प्रति रूप क्यों, देशदिरति कत्ररूप । गिडी बर्ड ' पै ज्यो हवै. सो चारित्र अनुप ॥२८॥ नाम दरस पिस जीव कीं, पुरस फल की सिद्ध । या विन क्यहें हैं नहीं, सो सब शास्त्र प्रसिद्ध ॥२६॥

श्रायी ताहि निभाइये, नवे न करिये होंस । इनमें बहु नकी नहीं, देव यस की सींस ॥३०॥ हम हैं ती अनुवान में. जीनी संयम बार। संयम कळ पल्यो नहीं, भाषा मार्थो मार ॥३१॥

o सर्वेद्य केट की व कारियोगी ४ तीव काल में ४ चाव काम करक यन परिवृति पाताची पात' व काम्बासाई व कावित कारा ए कारव और में कांत्रकार्ट क्षेत्री नार न मिर्ट ६ क्वी ॰ नहारे पारित में नकी नहीं = सहित करवी

पारित्र हसीबी रातें पंचमकाल में. म करी चारित कात। घर बैठे संबम' घरों, ज्यु ही दिन ज्यों रात ।।३२॥ पैयेन्डिय की जीसकी. मन रासकी विश्वादा । सो विनराजे अपदिश्यो. संयम सदा सग्रद्ध ।।३३॥

सों संयम जीलों नहीं, वीलों निष्कल खेट। बाह्य किया ती कप्ट है, यह अशीं भू वेद ॥३४॥ कोच मान माया तजै. लोग मोह कर मार\*। सोई सुर सुख बलुवरी, 'नारन' उत्तरे पार ॥३५॥ विन विपडारें निक्यई, निष्कल कही जिनेश । सी ती हम विवहार में." वाबी नहीं लग्लेश ॥३६॥ ।। इति श्री चारित्र क्रुचीसीक सम्पूर्णम् ।।

र इन्दिर दसन २ सुद्धु शोमना शुद्ध स्थाप्त २ सम्ब स्ट मी क्षेत्रं बरम्', हेती सबनी बाद। संबंध अंबि शिक्षर पर पहलूं, हे निज पान नाम १ योग किया नीत तेत छहर १२ नामना में छहा में तेथी शब्द दृष्टि भी काफी मालब क्रयों में तेथी 'मालबा ते वर्तन्या, वर्तन्या से ब्यतन्या' सिद्धान्तोक्तन्ता ४ कम ४ महारे पारिध-पत्य स्थ व्यवहार में ६ वाफी हुद्ध पारिस्ती ।

· • जेसकोर वासान्य शिवती योह देनां रूपसालको सै संदेशक वासे बाडीय क्षेत्रोंने निकारी ते दश्की करो ।

( केशसदेर वासाव्य शिवतं सन्दश्चलको की क्षी मोद्र . चेना संचैतव पहीं दिया देती हूं योग्य नहीं आध के निकास करी, उसाव हुए उससे ड क्रियुड समस्त्रावद में यू पारित वादीशी करी।) (अवन् मीन)

#### मतिप्रवोध इत्तीसी (शेहा) वव' वप वप (वप) क्यों करी, इक वप आतम वाप।

बिन तप संजमता मजी, कुरमदूऔं आप॥१॥ इक तप तें इक ज्ञान तें, कारज सिद्ध न होय। झानवंत करनी करें, तो कारत सिद्ध होय ॥२॥ यथा सकति तप पड़वजैंै. संयम पालें श्रद्ध। क्यों इत उत हु इत फिरे, घटमें प्रगट प्रसिद्ध ॥३॥ खंघ वडायें तनय कुं, हेरत फिरी विदेश। सरत मई तब संमर्थी, पत खंध परवेश ॥।।।। खंध चढ़ाये फिरत हूँ, हेरत मत मत देश। व्यातम खोजै व्याप में. श्रद्ध रूप परवेश ॥४॥

१ इंटक सम्बन्धी कथन २ महा हमिराज २ व्यापा स्वरूप स्व

३ चंगीका करें ४ म्बेत रक्त पढियो बहुक में ४ प्रदेश । ● क्न्यासरी— ड'टत हारी रे, हमियत वार्ड गाम । ड'०

। चन्यासरी — इं दत हारी है, श्वनियत वाहूँ गाम । इं ं∘ मिल इंट्या तिन शक्त्वी है, महिरे पानी देंड । डैं में नी इनत करी, सहिप किनारे केंद्र । डं∘ ॥

मरिप्रयोग श्रुतीशी				
व्यातम सोर्जे पाइये, शुद्धातम को रूप।	_			
तप तीरथ नहीं योगमें, आतम रूप अनुपादा।				
है तप तीरथ योग में, शुद्ध आतम की रूप।				
वें जब है तब समत बिन, भावें ब्यातम रूप।।७।।				
धरम नहीं मत समतमें, समत माहि तप नाहि।				
दया नहीं मत ममत में, धर्मन पूजा मांहि ॥८॥				
घरम नहीं जिल पूजना, घम न दया मस्टार।				
है दोन्ं में ममत विन, बिन भागम ब्रह्सार ॥ ॥।				
है तप पूजा पुनि दया, मांहि जिनेश्वर धर्म।				
निमता विन शुद्ध वचन रस, को पार्व मत मर्म ॥१०।	1			
चपनी अपनी उक्ति की, मुक्ति करें सब कोय ।				
में बलिहारी संत की, जो द्युद्ध मापक होय ॥११।	ı			
विरत्ता शुद्ध नार्षे वचन, विरत्ता पांते शील।				
निर्लोमी बिरला बगत, विरला संत सुशीस ॥१२॥	i			
( सोरत )				

निर्सोमी विरसाह, निर्फपटी विरसा निपट।

चमावन्त उच्छाइ, वस्त्रै सो विरला प्रसट ॥१३॥

क्या यंत्रम चौथे व्यरे. ए विरला डी सोय। शीतकाल में पन पटा. कोडक बरवे होय ॥१४॥ तैसे निरपेशक वचन, अपनी मृति अनुसार। मार्थे जिनमत से विरुद्ध, तसु बहुली संसार ॥१५॥

सत्रऽतसार कडै गचन, सापेतक निरधार। ते सचवासी संव जन, ज्ञानसार पलिहार।।१६॥ मापै उत्स्वत्रक वचन, किया दिखाँवै कर। बाढ़ी तप संयव सरव. कयाँ करायी धुर ॥१७॥ इम सरिले इह काल में, किया दिखाने शुद्रुच। पें वंचक करणी जिली, तेली सरव असिद्ध ॥१८॥ निरवंचक करवा करें. सो ती संवर भाव। हम वंचक करणी करें, सो आश्रव सबुमाव ॥१६॥ किरीया बढके पान ज्यां, भाषी विश्ववन साम । स्वतारक वंचक विना, वंचक' सो निकास ॥२०॥ निरवंचक करनी करें, ज्ञान गुर्खे गम्भीर। बिलहारी उन संत की. सम दम सरल सचीर ॥२१॥

हान क्रिया दो सिव्ध के, कारश कहै जिनंद। एक एक तै निवृधता, भाषे तो मतिमंद॥२२॥

किया कर संयम घर. निरविकार निममच। मास्त्री सापेचक वचन, हैं विलहारी निच ॥२३॥ धातम अलगी के रसिक, ताकी यह स्वरूप। ममत होर निममत कहै, जिनमत शुद्ध स्वरूप ॥२४॥ जे ममत फन्दे फंसे, ताफी बन्ध नवीन। होंति नहीं कैसे कहें. के मत ममत प्रचीन ॥२४॥ मारे मत के ममत के, कर लराई थीर। के श्रवने मत में नहीं, **कहें** जिनायम चीर ॥२६॥ वै करोरता की वचन, कामी कहिनी नाहिं। विज्ञा जान शहब श्रमध मति, कैसेह न कहाई ॥२०॥ त' बाद से कठिन श्रति, वचन कदित क्यों नीर । विना ज्ञान को जान है, कैसी जिनमत " पीर ॥२८॥ केंद्र लीव दयामती, पूलमती केईक। लिंग समचता की वचन, कीन कहै उहरीक ॥२६॥ याते केसे पाइये, बिनमत सुदूध सरूप। क्षितमत वित्र कैसे सर्थें. श्रातम रूप प्रमूप ॥३०॥ इम से असे अप घर, कीच कियां इक अक ॥२१॥ परमव डर ब्रुंडे निडर, अब सब दिनी डारि। सर्वे सीस पट डार कें, निरमय खेलें नारि॥३२॥ आतम ग्रुंड सरुप विन, केंसे पार्वे सिब्देव।

किन जिन कारवा कार्य की, याई माई सिद्ध ।।३२।। यादी मत धर संग तें, घरम रूप ज्यो रत्न । केसे हुन्मीई यादमें, कोर्यट करी को यत्न ।।३१।। यादी वर्ष सेंट कों, ज्ञातन निया ज्ञाप ।। सम दम सम की सप कती. क्यों पंच पर खाय ।।३॥।

सन दम खम की तथ कती, बची पंच पद बाव ॥१३॥।
पृष्ठि जिनमत की रहित, दमा पुत्र निममत ।
मनत सहित निफक्त बऊ, यहेँ जिनामन तथा ॥३६॥
मत्रकोष पहुर्षिशिका, जिन आगम अञ्चलत ।
"क्षानसत" मात्रा सहै, रची बुद्ध आगर ॥३०॥।

॥ इषि मदश्योच क्षत्रीसी समाता ॥

## संबोध ऋष्टोत्तरी

प्रसिदंत किट प्रानंत. आचारित उत्तकाय वित । साथ सकल समर्रत, नित का मंगल नारखा।।१।। परमातम स्रं बीति, कडी किसी पर कीजिये। वीतराम भय वीत, निमै केस विध नारखा।।२।। स्तौ कांग सचेत. अयो प्रात भगवंत अज। विडीया कीनो चेत, नहीं रेख चव नारखा।।३॥ स्तां समस्यौ नाहिं, आग्यां घंघे सं कम्यौ। मातो ममता मोडि. निरंजन भक्यी न नारवा।।।।। ध्यावै कदेन याद, मरखो सगलां ज्यं मर्ने। इल ग्रनी थावाड, नहीं खबर तक नारवा।।५॥ छाया मिसें छत्तेह.. काश पुरप केटी पडयी। ज्वान बाल छड जेड. नितका निमले नारका ॥६॥ इल में कीन इलाज, नहीं कला धोपद नहीं। थळा काल शहराज, न वर्षे काया नारणा ॥७॥ हिन हिन होडे आय. पांगी ज्यं पसली तसी। चड़ी घड़ी घट जाय नित की छीजग्रः नास्मा ॥=॥

पुरस किई परभाव, दीठा वे दीसे नहीं। विषम कालरी बात, न कही बार्वे नारखा॥ ६ ॥

स्वत्य कार्या वार, बारा किर क्याची हुर्दै। सर विषय बार्चे साथ, नाली अनियल नारखा।।१०॥ नाई क्षेत्र नाई जाल, नाई ठाव किर कुल नाई!। बीवन अरब्धी बाल, न मुंखा बायां नारखा।।११॥ जूर्य दीवें कोल, क्य पर में लंप्या नामें। उदयो अरब उद्योज, न रहें तथ नामास्था।।१२॥

पुने को बादत, वेरी वन वृदे परन । सहदे रे बादत, न वर्षे हर कर बादवा ॥२१॥ इन्दे ने मोकी पुन, यूपकी बादव मामकी । बादा रहे न क्याद्व, तर पुरुकारो नाला ॥२०॥ दूसका पुने बादत, तर पुरुकारो नाला ॥२०॥ दूसका पुने बादत, तर्दे हर्षे मामका ॥२२॥ दहस्य को दश्यर, कार्य तर स्पृंद्ध बीरों । इन्दर्स क्यां तर स्पृंद्ध बीरों । इन्दर्स क्यां तर स्पृंद्ध बीरों ।

. संबोध प्रप्टोत्तरी १७
व्यगनी देत उलाय, पांची एक पलक में।
स्तामी बढवा साय, न मुमी बल स् नारसा ॥१७॥
वांनर तको विनोद, कदे न कीधो कांम री।
प्रगर्ट नहीं प्रमोद, नीच सहावस नारसा ॥१८॥
ंडी उदांच व्यथाह, थाय न पार्चे तेरुको ।
राजनिया है राह, नर हुन्छ जानों नारखा ॥१६॥
थन गाडी पर' मांडि, खरचैं नडीं खावख निमन ।
ममत लीयैं मर जाहि, न दिये कोडी नारखा॥२०॥
दोय कला हुवै दोज, विल दिन दिन वचती वर्षे।
सरवर इसे सरोज, निसपति दोर्डे नारवा ॥२१॥
पानक तर्ज न पांचा, सो बगसा बस में सह ।
मुरख तबैन मान, निस अधिको है नारका॥२२॥
बाजीगर बातार, दुनियां समक्षां देखता।
नर व्यं करदे नार, निजर वंध कर नारका ॥२३॥
सीयाओं व्यक्ति सीय, पास्त्रो दस उंटर पहुँ।
मांखें करें घरि प्रीच, न भरें दूभर नारका ॥२४॥
जल में बैठ जहाज, पर दीवें पेरे पवन।
करी मस्यासी काम, न मर्रे हुमर भारता ॥२४॥

र यह २ पथि

श्रवि दुर्गन्थ बाहार, वरते वस्ति मैला वसन। मृत विये मन मार, न मरे दूसर नारमा।।२६॥ विश सेवटियें वाय, चाम्यां नाव न चालयें। कारण कान्त्र थाप, नीत जगत में नारणा॥२७॥ करिवर केरी कान, तरल दु'छ तुरियां तथी। पीवल केरी पान, निवल्या रहे न नार**णा ॥२**८॥ मर्ग क मेर्ज मांन, बाबहियी तलहर विश्वा । वरी रही वा प्रांचा, न पिये घर जल नारचा ॥२६॥ सब संसार असार, सार नहीं विख सोधतां। मरिये दश भंदार, नहीं सुख खिक नारका H३०॥ कटारी रो काम, कद होने किरपांख खं। ब्र<del>ापति इंटी नाम, न रहे रोदा नारखा ।।३१।।</del> क्रम क्रम व्यामें जाय. रात दिना रीरी करें। कवटी मिली न काय, निरमागी नै नारखा ॥३२॥ हीनी दोय क्रकांम, सो मोगवर्ता सीडिली। विश कीचे बदनांत, नित दर सामें नारवा ॥३३॥ इट इट जिहां इसंत. प्रस वियां बैठी प्रवत्त । मामो होय निर्वत, निरसक आर्थ नारका ॥३४॥ मारम में मिलियांह, वनता बतलावे मति।

गुमीली गांसपांद, निमय न मेली नारणा ॥३४॥

संबोध बागेसरी मोला मैंस तसाह, मेदां व भारत नहीं। यन विक घरट पकाह, न भरें सरतल नारका ॥३६॥ उद्यम विद्वसी आध. आफे. घर आसै नहीं : भीख बम्पां विन पात, न वसे कदे न नारका ॥३७॥ कांशी निषद करूप, कलदशा कटल बलदशी । इस्यी प्रस्य व्यतस्य, नहीं पाप विन नारखा ॥३८॥ कीदा परे कपाल, नासा ईलड नीसरे । कठै फिर कंडमाल, नहीं पाप विन नारका ॥३६॥ वाता चढवा तुरंग, मांव मांव मोजन मला। सबरा बीर सुरंग, नहीं प्रवय विन नारवा ॥४०॥ चादर करें अपार, शत सराजा की का करें। व्यति सन्दर व्याकार, नहीं पुष्या विन नारका ॥४१॥ श्चति ऊंचा स्थानास, चतुर चितेरे चीतरथा। व्यवत दवल व्यारास, नहीं पुष्प बिन नारशा ॥४२॥ निपट निरोगी काय, पान सान सब ही पर्य ।

श्रति सम्बी है आय, नहीं पुरुष बिन नारसा ॥४३॥ पत पद्यो परिवार, सालुकुल सुन्दर सह ।

निषट कर्यों में नार, नहीं पुरुष विन नारवा।।४४॥

झानशार-पदायकी बोले छंचा बोल, नीची कर ताक नहीं। रात दिना रंगरील, नहीं प्रस्थ विन नारखा ॥४४॥ घडिम ससै चडियांड, गिश्विया जावै नहीं गिश्विम । व्यविद्वर घर अदियांह, नहीं पुरुष दिन नारका ॥४६॥ लाई स्थाने लोक. कर सोट सास्या करें। सदा ससी नहीं सोक. नहीं पुरुष दिन नारणा ॥४०॥ श्राटो देवे बन्न, पूत मीठो देवे घर्या। फील्क हमा कपस. नहिं दिये दानी नारमा ॥१२८॥ सुल पृक्षी सुबास, व्यति दुल हुंत व्ययांख मैं। पढियौ बत्रुंक पुरांख, नर समन्दें नहीं नारका ॥४६॥ सिंह सदला साथ, बाधां बर फार्से विल । मोग करम भाराय, न हवे किया सु नारवा।।४०।। माथा मिली न सूल, काया सी कसरों कस्यी। श्रंद शिल्या श्रणहरू, निहचे वाणी नारणा ॥ ४१॥ ऊरी बरज वेक. लाखे गांनी लोपमा। निरस्यो बाय निमेष, नहीं तेव सी नारका ॥५२। पटरीजे पर प्रीत, खाइजे भवनी सुशी। शक्तींने ए रीव, नित का सुख वह भारका ॥४३॥ करिवर इंग प्रदार, सींह अध्या सिंहस करें। नर जनस्यां सर नार. न घरे घर पम नारखा ॥४४॥ कारत न करी एक, राते भूखी ना रहे। परमार्थे भर पेट. नहीं दक्ख कव नारवार ११४४।। व्यव फाटी साकाम, बाट कानी बीनी कर्ता। प्रकट भिचारी पान, नरपति आर्थे नाश्या ॥५६॥ इक नस्पति इक नार, स्वास्य रा दीन् समा। विश्व स्वार्थे विमार, न करें संगति नारगा ॥५७॥ नरपति हंदी नेह, स्वास्य विश श्रवर्धं सूएयी। दीठी किया घर देह, नहीं जनत कहि नारका॥४८॥ नरपवि वसी निराट, व्यासंसी खासी नहीं। विगमीवारी बाट, न्यारी वेंद्री जारणा ॥५६॥ नीचां तथी निमेप, संबत न वहीं साध जन। दीठी नहिं वी देखि, नाहर माटर नात्या ॥६०॥ सैंपति विश्व संसार, मानै नहीं मकीस नै।

परत न लामै प्यार, निरधन सेती नारखा ॥६१॥ बगला ज्युं ध्यखबोल, मीनी हुए मांखस रहै। मन में दया न मूल, निकमी समली बारवा।।६२॥

श्चामसार-पदावसी निकसी पर धर नार, फिरव न लागै फ़टरी। विस**ों** सहै विगार, नीच संग स नारसा ॥६३॥ का नारी संप्रीति, की घो कहैं न कायरी। ब्रीर न इसी ब्रामीति, नित दरवी रहे नारवा ॥६४॥ मरिये पेट मंडार, धनी ही लामें सुबस । श्रम कीचे बाहार, नहीं बसती बग नारखा ॥६४॥ मत बतलावे मूल, मृरख छ मतलब विना। मरम न कहि मां मूल, निकमी आखै नारका ॥६६॥ राका रांगा रंग, वादस सु विकास वर्जे। समकी करवयी संग, ानत मन सेती नारखा ॥६७॥ श्रावे श्राय श्रसेद, मुकती सकत्रां माससां। निगुषा भीर नसेद, न मिलैं किम ही नारणा ॥६८॥ कंडर तमों कपाल, परा मोला मोती वसा। प्रयताफल गलमाल, न मिलें पहिरन नारणा ॥६६॥ चितारी चित्रांत, कविषया पता कविता करें। त्रीक सरकी टांम, निहर्षे आसी नारणा ॥७०॥ **टीथी बाय न दांस, श्रम कारण धन मांगतां।** नां विशायारे नांम, नहि नाकारी नारसा ॥७१॥

संबोध धरोत्तरी नीमा नेइ निवार, वैंग न कीती विविध विधा कनी दहै अंगार. नहीं स्थाम रंग नारखा॥७२॥ ध्यारतिवंत धरोह छ, तिन सं दिन नहि तोक्रियें ।

दीवें धीरत देह, नरपस कहिटै नारशा॥७३॥ सुगर्खा तको सनेद, नित नित नवली नीपर्ज । निसका इंदी नेह. निमै न कीनी नारका ॥७१॥ व्याच तथी व्यतंकार, कदैन कीनी कांम ही। रावसः री परिवारः। न रहयौ राख्यौ नारका ॥७५॥ संपद तसी समझ, कीली ही पिस कारमी।

केइट देसो छेह, न चल साथ नारखा॥७६॥ व्यान व्यापणी मेह, देखेंतां होसी मिली। तत समपख री तेह. निकमी दुनो नारखा॥७७॥ सन्दर रूप सहात, मन मेजीह महिला मिलै। इसटा इसव इतात, निवर न मेले नारखा ॥७८॥ बारतिनंत बर्यास, सरसा दोन समक्रियें। पर दुख री पहचान, निषट न होवे नारणा ॥७६॥ संपद तथी सनेह. निसा संपद में विशासियें। निरथन हंदो नेड, न मिट कदे न नारखा॥=०॥ + प्रमेर † बस्थर 5 मेल्

#### पंडित सु असप्यार, भृग्स स् मनिकरि मिले । तलटी जम आचार, निमय न मिलेक नारवा। ॥८१॥

प्यार करें श्रशाप्यार, कार्ट मन मेली किसन । नित प्रति संग निवार, नीच जांख नै नारखा ॥६२॥ हाथी ह'त हजार, जाख पाय गरि जॉंडर्वे। लंपट और सवार, न करें संगति नारमा ॥⊏३॥ मरम न मार्खे मूल, पग्हरि निद्या पारकी। सोवे साथर छल, न हुवै दुख किम नारखा।।८४॥ फटकें बोधो प्रस. उसी आप व्यक्तल में। सांच कहें करि सूंस, न मिलें कमा इक नारवा।।= ५॥ मोटा पैटां मोहि, राखें जो सोई रहै। सरमी पेट समाय, नव मया नीरयो नारखा । द्रद्रा। बैठे वर वे हाथ, ठठता आसम की । मार्जे देख भराव. न रहे व्यवस्थित नारवा।।=७।। वसियें जिस देवास, तिन सुंदरेन तोडियें। ध्यस्वकार्ये सावास. तां शीर सकीते तारमा ॥==॥ हांसा मांहि हसार, कोह वर्ष करचन। कही। विरचें मन बिंगवार, न सुर्खे एको नारसा ॥=६॥ हाथ्यां हात्रर होवं नेय मधा बांध्यो नाज नित । शिखियौ पार्वे सोय, न वटे रती न नारखा ॥६०॥

मंद्रोच धहोतरी थमल न कीर्वे एक, नकी मूल किया में नहीं। क्षीतें काया केक, निजरा दांसें नारणा। ६१॥ सुबरम तमों मुधेर, अलगी कीमी ईसरें। इन्ता संपद हेर. न कियो नेही नास्या ॥६२॥ दावी दाया इंग, फोक्यं विख ही फुटशी। भाउ अंबली अंब, नित पूरी इवें नारखा ॥६३॥ काया किशरे काल, मुलां से मासस ससी। निरस्तो निपट निकान, नरकी काया नारखा ॥६४॥ दियदां मांडी हेत. आस्या दिन न पटे अलब्ह । दिल दिखलाई देत. वयबां देख्यां नारसा ॥६४॥ कामां तखा कथाल, क्या मै ज्यांक ही कुटवै। बारख सिंहग्ररुवाल, बिररुवां बिरके नारखा ॥६६॥ नेनां इंदो नेह, क्रीबै नहीं हुमाससां। सपुरस तथी सनेह, नित को कीवें सरशा ॥२७॥ नियुवी अपनी नाड, सांसी इरूप न सास है।

नेनां इंदा बेद, कीवे नहीं इन्यवानां।
बदुष्त कवी सनेत, नित को कीवे तारागा। 2001
नियुक्ती अपक्षी नाह, सांनी दुरूष न बात है।
चाहै विक सी चाह, निरूपों कीव्ं नारागा। 2011
धरुवस इक्से आव, नोरागों पर बीरच हों।
सदस मुख्यों दे साब, निदयों निक्या नारागा। 2011
भीचों देरी नेह, वास्तवानी सेवी सक्यों।

सबसां द्वं संसार, दाठ्यां विशा आफे दरें। पूरम तथी परकार, निभरम बांखीं शरखा।।१।। सवला तसी तनेह. निवला ग्रं सोहै नहीं। व्यविहर लोह जबेह, निर्दे कुछ नहीं नारणा॥२४ संपट चीर लगर. कटवां ही कारल करें। गुषर दोल संदार, निव क्रद्यां विन नारशा ॥३॥ वटी बरोपे बंस. चटके से नटनी चडि। इद स्वी मयहंत. न भर दमर नारशा ॥४॥ आयां आउंधार, जान कहे घर जावतां। नित की संग निवार, निक्रमी वांगी नारखा ॥४॥ नीर न्याब इक रीति, मोडी क्युं स्युं ही सब्दै। म गिर्के नीति अमीति, मरपति सु टै नारका ॥६॥ श्वारथ तार्गी समेह, विज श्वारथ में विकासियी। नांचशिया री मेट. नांगी बाधी तारणा ।।७४३ इदर्वे उपनी रीम, बहारे सहस्रों। वेठ सकत तिच तीज, निरमी सरतर मारखा Hell संकेष व्यतिकी इतिर्देश र्वका १९४२ वर्ष निती मासड सहि ७ अंक stant mil som er u

# प्रस्ताविक अष्टोत्तरी

व्यातमता परमात्मता, सच्चतार्थे एक । या तें श्रद्धातम नम्यें, सिद्ध नमन सुविषेक ॥१॥ निष्पुद्ध राजा रक्ष्य सीं. बात करत न दवात । नगन प्रत्स सी प्रत्स सीं. लंड्यी कथ न मुनात ॥२॥ मन निसम्य शासोवतां. सब श्रवराच समात । च्यों कांट्रे की वेदना, निकसत दुक म रहात ॥३॥ को निसदिन खार्य पिये. वाकीं वाकी चंप। जेसँ अपने देस की, सागत पास अनुप ॥४॥ वरपा अस मरु देस सब, ऐंचत अपनी ओर । बैसे हटे पतंग की, खंटत सब बन डोर ॥४॥ मोल लियत दिख्या दियत. संयम कहा पलात । ज्यों संख्या के मृतक कीं. कोलीं रोवत रात ॥६॥ त्रिकाम कात ससिद्धता. कहा जंत्र घठ मेंत्र ( विना पूपम चाले नहीं, ज्यों गाडी की अंत्र ॥७॥ प्रबद्ध करत गुन गुनिन कीं, बसत दर दर पास ।

श्रंगरी तें निरक्षावडी, ज्यों तारे श्राकास ॥द॥

१६० अनसार-पदावकी साध संग विन साध जन, न करें दृष्ट प्रसंग। मीन तरल वल क्रुटल गति, उद्यलत तरल तरङ्ग ॥६॥ ं विंगल की फवितान में, डिंगल कोन अमेज । सारिन में कबहु न हुवे, चंद किरन सी तेत ।।१०॥ पहिली सीच ानचार कें, कीजे कारण खेद । पी पांनी वृन्हें कहा, होत जात की भेद ॥११॥ पार्धे पिछताचा कियें, गरजन सरिंडे कीय। मंत्रा फिर नहीं भावही, क्या सोचैं क्या रोय ॥१२॥ भाषुदोर विन तलुगुडी, उडै न घर पर बात । बैसें द्वटी डोर की, प्रतंग हाथ न रहात ॥१३॥ सला लियत कारक करत, सो कबहू न ठगात । सीसा मसतवा नींव कीं. कब प्रासाद दिवात ॥१२॥ सन्दर्भवा दांनें दियत, कहा वात्र परखत**ा** . सम विसमी निरसी नहीं, अलबर बर बरपंत ॥१५॥ विनापाई सब दी मिली, चाड़े कछ न मिलीत। बालक सुख बोरावरी, माता माता देत ॥१६॥ बोर्सी प्रदाः ना वर्ते, तीर्सी पुतक विश्वयाः . . ज्यों सुपने की वेदना, ती लॉन इक्त आराग ॥१७॥ .

प्रस्ताविषः धारटोत्तरी माता करें बराहार कीं. वासक वीच सहंत । च्यों खिचड़ी में दोकली, बाफ हुवें सीवंत ॥१८॥ र्थात सीतल सुद क्थन हैं, क्रोधानल प्रक लाय । व्युं उत्प्रसारी दथ कं, पांनी देश समाय ॥१६॥ मत मन पूर्व गति अति चपल, निष्पृह ते ठहिरात । ज्यों सद क्रोपभ क्षोग तें, चंचल हु जमजात ॥२०॥ कोच बचन कोषी पुर्खे, सुनिसुनिशीतल होय। ज्यों मुंसे बुलगार के. अगर्ने अस्त नकीय ॥२१॥ रोचक पुढ़ें सन्त नर, एक सर्ने ग्रा वैन । सीप पुटें मोती हुयें, स्वात बंद तें ऐंन ॥२२॥ थन घर निरधन होत हो. को बाहर न दियंत । ज्यों सके सर की पश्चिक, पंक्षी तीर तजंत ॥२३॥ वधे करम जिन जोच नें. उदयें व्यावत ताहि । ज्यों सी मी में बद्धरिया, चंबत श्रवनी माप ॥२८॥ पीछे प्रथम न प्रकृषि जिय, है जनादि की मेल । सदा सत्रोगें मिल गडी, फूल सुवास चंपेल ॥२४॥ व्यातम रूप उदीत ते. मोहप्रकृतिस्वयं जातः। क्यों व्यथियारी रैन बी, दीयक विनन पटास ॥२६॥- 84.5 **श्चनसार−पदावसी** गुर इस बार्से बसत श्रुमि, चुकत ही ठहिरात । देव पथुनी प्रतंग कूं, गोव सात रहिजात ॥२०॥ बान किया दो मिलत ही. सिथ कारज सिध हुँत । ज्यों भरता संयोग तें, सबि तथ गर**न** घरंत ॥२⊏॥ क्रमपर्वी के होस जिम, ऊंच नीच गति जात । वैसे पथन प्रयोग हैं, चिहुँ दिस यजा फिरात ॥२६॥ बरसत हैं केवार हं, संगन कर परनार। त रावचा दशांत सवि, बुभत क्यों न शिवार ॥३०॥ षाहत सोई मिलत तव, या सम खसी न और। मेहागम धुनि सरव सुनि, ज्यों चित हरवत मोर । ३१॥ रावरंक क्रंसम लखें,क तिल न इरप मन कंद । क्यों निकले पट पर कछू, ठहिरत नहिं जल बुंद ॥३२॥ बैसी देखत कुटल तक, वैसें जीम फिरात ।

दोर महार हाथ है, ज्यों चक्ररी लुटवात ॥३३॥ व्यंगी जेते व्यांस दिन, सहै व्यंग की भार ।

विन कावल कीके समें, सोरें तिम सिंगार ॥३४॥

हुँ सुनिवर तद वी निवर, (तुः) नृपते व्यरव करांहि । पतरी बदरी हैं. अरफ, सुख समझस निरस्नांहि ॥३५॥

संबोध भट्टोचरी पराधीन साकै बऊ, भूठकई सो सांच। ज्यों बाबन की गति बजत, नचति ताल पर नाच ॥३६॥ सिस अनमत माता मरत, फिर अभार न रहात । हींद्वा हुटै समन दें, नर घर पर पर जात ॥३०॥ राजसेव तें राज की, सेना रीत शलाय। शब्द साथना विन सधै, सबद करच न कराय ॥३८॥ तीखी चितवन चितवर्ने, राग विरामी दीठ। तिय गर्में माता कार्ये. शय निजर कर पीठ ॥३६॥ कात अकात न लोग वस. गिनत न दस संताप । क्यों द्वित पहला दांन तें, मोल लियत पर माप ॥४०॥ नव पह्लव सनराय सथ, विज व्यवधरही नांदि । सम्बन सडल बादल करें. क्यों परवत की छांडि ॥४१॥ रोस पोस नरपति बद्दति, ऋतुष्य आव न होय । द्धाः अदै ऋति संद दृति, ज्यों ससिवर दय तोष ॥४२॥ खल ते सी उपयान कर, मानत नहिं इक सोय । विसदर दूस फिलाइये, सोड़ विषमय होय ॥४३॥ मन काटै कूं सुदु बचन, कहाँ करन उपचार ! टक्ट इक कर जुडन कुं, टांका देव शुनार ॥४७॥

१६४ शामसार-पदावसी
वदरायनि दीपवि हुवति, भृख लगत विहवार।
करत हुड़ाई मां गहै, वैदां किये करार IISVII.
रकम ट्रक कर साम स्रक्षि, दुक दुक सौदा लेता।
रिजमारी दरजी करत, ज्याँसीवन के वेत ॥४६॥
कोन दीयत कार्कृक्षु, करत पुरस्य की मेट।
सस्ति ज्यांने समद की, इम हैं भरिहै पेट ॥४७॥
भी अचेत चेतत नहीं, दिन दिन होतत आव !
इक रंग पल ठहिर नहीं, ज्यों लोहे का ताव ॥४८॥
तपत्रन चारित पडिक्जै, व्यातम निरमल होय ।
र्ज्यों मैंसे बसर्ने करत, घोची ऊनल घोष ॥४६॥
डाकी डाकसा पुरस विष, प्रगटनिवर नहिंदीठ।
अवि सुंदर सिसुबदन पर, दिसें दिठौना दीठ ॥४०॥
समै प्रथम सच वचन कडु, व्यंति गुरुनि कै हेत ।
ज्यों माली जाना दियें, तरु निरोग संकेत ॥४१॥
उदर मरन कारन सकल, गिनत न काल व्यकाल ।
चेबै पर तुटत परत, व्यीं तीतर पर बाज ॥॥२॥
सघुष्टस्य मोटी कत तें, नकीन देख्यी बांख।
मरम्पुपकर्ते व्यावही, क्यों चीटी के पांस ॥४३॥

फाटा चीर सिवाहयै, रूठा लेह मनाय । मोर्ते छाते पतंग कीं, बिन्छकी दियें बचाय ॥५ ॥। बात बात सब एक है, बतलावसा में फेर। एक प्रवन बादल मिली, वर्के देश विक्षेत् ॥४६॥

मंबोध बच्चोत्तरी

चीटी चीटी लरत तड, दीजे सकर ख़ुहाय । अगन कर्शी की लग्न कहा, सब्द्ध बन देव अलाय ॥५७॥ सन अन्तर की प्रीत कीं, मैंन दिखाई देख। धनमाला की माख कीं, बनमाला ज्यों हेत ॥३८॥ वह पुरस दरवचन सुन, सूत्तट फ्तट दें मेट। भयों क्र'म मज़की नहीं, व्याचा सज़की मेट सप्रधा टोटी केते सरक की, बात करत घर महांस । इत उत दोऊ' दिस सटत. ज्यों फउएँ भी व्यांस ॥६०॥ सरखता मन धन मिटत, ह्व सदगुर संजीम । चंबल अंबलता घटं, ज्यों सह श्रीपत्र होग गहरा।

अपन लोक देश्त फिरत, मीना रूपा सिंड ! स्तोभ इसा मनला मिटत, नव निष ऋहि समृहि ॥६२॥ 848

शब्द न्याय अलंबार धन. सबडी करत अस्वासः। पै परभव की सिद्धता, न करत ताहि प्रयास ॥६३॥ भूदी माया जगत की, परुदी: साच समाज। कबहु न हुव फल सिद्धता, ज्यों सुपनें का राज ॥६४॥ तत समाय क्यह न लडे. जीव मिन्न हो जांडि। कल सुभावे मिन्टता, हु कहरसका नांहि ॥६४॥। तीळन रुचि करतेम दिन, मोह दुर्रहन होय । करिवर क'म प्रदार की, कारल हरि तें होय ॥६६॥

रागी के मन प्रांत ते. रागी वस्त प्रधाय । मृत मरते की वांख ज्यं. माय माय कछ गाय ॥६७॥ पर काने कृत कनिता बहुत, नई करन को हेता। मरन होंदि तें जोजना, बुद्धि परीचा देख।।६८॥ वर्ड प्रस्त के उदर में, बढ़ी बात रहिवात । वर्षी करियर के पेट में. नी महा नाज पनात ॥६०॥ मन प्रदेश जासौँ मिसतः स्टूटे क्रिनक न क्षटात । क्यों कराकसः पारद करतः, विपत चिपत विपतात ।१००।। सज्या जीवन मृत सय, सज्या ततु, शृ'गहर । खप सीस पट दार दें. निस्में सेलवः नम् ॥७१॥ धनमो धमत पांन ते. मिथ्या ताप मिटाप । गद सद बोबद बोम बस. तज तें तरत बटाय ॥७२॥ मोल मिलत नहि यस चारत. आस कर हित दिसरात । पर नारी दग निरक्षियत, कौंन नका हुय आत ।।७३।। गाल ज्वांन पुन पृद्ध वय, मिस्र क्यमित्र क्यमाय । मीतकाल में मीत की, भूलत नांहि सुमाय ॥७४॥ हेत सरस लांद्रन रहित, हेत्वामास कहाय । करम रहित करता कहै, श्रजा कुपांशी न्याय ॥७४॥ केई कछ केई कछ, कहे आतमा राय। जिनमत बिन सब मत कथन, अंध मयंदे न्याच ॥७६॥ एक एक ह परसपर, अपने मर्ते असाय। छेदत यस इक एक की, संद पंसदें न्याय ॥७०॥ एक कथन वांमें कथन, इह लखन है न्याय। पुष्ट करत थापित थलें. कटंब मकलकके न्याया। ७००। सिड संसारी मान दो, है अल्योन्य अमान। देहल दीपें ज्ञान दग, मासे शुद्ध समाव ॥७६॥ माली और कड़ाड़ की, तरकारी तिसपति ।

संयम नांमी संज्ञती, इह निसपत्ति विपत्ति ॥=०॥

• रण न्यत स कित्र कान्यक वीरोडी शक्तवोव से से किंवा है।

मन चाहत सो मिलत नहीं. त्रिसना तउ न उम्हाय । जो चाइत सोई मिलत, तब कब घटत बलाय ॥=१॥ आद मध्य अरु अंत वय, विसमन सम सब जात। सान पान निरोग ततु, पुरस्य लक्षन कहिलात ।।⊂२।। खात न सरचत विसासयत, दांन दियन को बात। दुरवय सोम अवित गति, सचित धन मर वात ॥=३॥ प्रंड बीज रु धूमगति, सहित्रै छंची हुँत। करम रहित तें सिद्ध की. उत्थ गांत क्षोकांत ॥८४॥ नव अंग टीका वर्ष कूं, चहियत तर्क प्रसंग। विनां खटाइ नां चर्दी, ज्यों कसंग की रंग ॥=॥। विग्रा सब के पटन की, धोची पड़ी सार। साख चढे बिन नां चली, ज्यों भारा तरवार ॥=६॥ पंडित मृत्स बात के, बरन खरच इक लेख। विना समारे नां हवे. मैनां काअल रेख ॥=०॥ कलम करत तरु देर कं, तब निरोग फल होय । सारतार्वे विन गदह की, ज्यों मस्ती नहिं होय ॥ 🖂 ॥ दिश्वत यंद शुख की महतक, यूंबट मीनै चीर।

स्रोट तियत बतलावडी, तिथ निवादी की बीर HERH

१६.द शनसार-पदावसी

प्रस्वाधिक बच्दोत्तरी १
उप्यकाल में प्रात की, सीत समीर लखेत।
वडी मध्य दिन संग तें, ध्यमन रूप फासंत ॥६०॥
दुष्ट संग विन दुष्टता, कैसे हूँ न स्तसाय।
प्रगट देखपैकी गरव, कांबी दूध मिलाय।।६१॥
सुरिजनफल क्रंकाटिये, तो तक्तों बला जाय।
जी फल र्वे फल विस्तिस्ये, तत्र तरु हरित लखाय ॥६२॥
सुकृत या मन में करत, सन भव कल दिखलात ।
र्ज्यों मलेर के पेड़ मैं, सीचत बल फल बात ॥६३॥
पुरुषवन्त नरकी प्रकृत, उल्ली तक सृदु डोय ।
ऊंडे सर दुरगंघ धर, धनधारा सम बोय ॥६४॥
है संसार अमादि सिद्ध, करता कृत कहि कोय।
विन वसन्त वनराय सब, क्यों पन्तव नहि होय ॥६४॥
देखें सोगा जैन की, घित्र मन होत ससोक।
वरमा ऋतु तरु इस्ति लखि, जात व्यासा स्का ॥६६॥
चंचल मन बिर करन कीं, निष्प्रदता उपचार।
द्बीमवधित पाक की, तोती नदि संसार॥६७॥
जिनसाम दिन जैन मत, फीडी लगत व्यवार ।
भरता निम सोमै नहीं, ज्यों तिय ततु सिंगार ॥६८॥

वर्षों समृत के पांन हैं, सबर होत सब सब्ह ॥ १६६॥ सब्दुपात केतिल करें, समझ्य साधु परि । विश्व विश्व । विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य

गरभ वेदना निकसर्ते, विसरत वगत तमांम । रति समर्थे पर प्रसद दुल, भूल बात ज्युं शंम ॥१०२॥ ब्रह बुरुष हित सीख है, सो नहि मानत ज्वान । कदक लगे जर मै कुटक. छ ज्यं गुख करत निदान ॥१०३॥ स्त्रास्थ के सब करात क्या. स्त्रास्थ तिल लाहे हेत । प्रसवत क्य पराजात गी. सात सर्वे महि सेत ॥१०४॥ तन दीपक दित कायधित, वाती निसदिन मेला। वय दीयक उजियार में, तेल जहां जों खेल ॥१०॥॥ महा-विष्णु महेश कहि, पैदा पोक्क नासा उन विन व्यव हैं ही रहे. इह विरोध व्याशास ॥१०६॥ हकम विनापचा हिली, पर्ने क्या सकदर। क्यों साहित नहि कर सकें, इह पस जम मंजूर ।।१०७॥

Rot

याद कियें अन सबन की, क्यों नहि मरिहें पेट ॥१०८॥ श्रादि प्ररुप हम राम की. जो चरखासत जेय।

प्रस्ताधिक व्यक्तोत्तरी

सैं देही बैकुएठ बसें, क्यों तुम घारी देह ॥१०६॥ जोग रोध तें करत जिय. प्रकत प्रस्य निरस्रंस ।

धातु मिच्न सबही करत, ज्यों नाहरें की मूंस ॥११०॥ सत्ता प्रवचनमाय दुग, त्यौं श्राकास (१८८०) समास ।

संवत आद्धमास पुर, विक्रम दस चौमास ॥१११॥ इक सय नव दोहे सगम. प्रस्ताविक नवीन ।

खरतर भट्टारक गर्छें, जानसार ग्रनि कीन ॥११२॥ इति अस्ताविक श्रद्धोत्तरी सम्पर्वेष

## **आत्मनिदा** १ व्यामा ११ वेजना १९ वेडप्टी, ९ इव्यामा, १ व्यूवर ऋति, ५

समुद्रीस्था, हे कोटी कोटी रूपी। वामार्थक दोष पदी बात में हूं का रिकार का [स्पर्दी, वृं कम्बस्तुस्तारत में, क्यारी दूं, क्रिया कोटली में, क्यारे, ह विश्वास कोटली में, क्यारे हुं क्यारा में, क्यारी दूं क्यारा में, क्यारे हां रिकारा में, क्यारे हुं कुछ में, क्यारी हुं क्येरत में, क्यारे हुं

कारों हूँ विषय करन में, कारों हूं (अस्पादर्शनाया में, कारों करीं हैरे करोगा होगा कारे की हैं कारों हमें माने सावकार दोगा कार्य किरी हैं। हुए कार्य 1. बाहबूपी, बहु हुएकों, को हुं हैये किर व महस, रें हुँ तम् हुमेंक्स, रें हूं हैएबर्टर, रें हुँ कोर तम ए क्याहर, रें हूँ हुए राविच्छी औह, अर्थ हों कोर्य करेन्द्रक्षियों औह, अस्पादक्षियों कोड, अस्पा, होंगे हैं

- भारसनिंदा	२०३
योच्या बारम बारे सवी वहाँ, 'सुदराको बारे पाठको	
भीवं इच मानी नहीं, तृत्वा रह मारे मिटी नहीं, सन्दर्भ स्व	ग्रह्मता
बारें मिरो नहीं, दरिश्वर वाता फिल्होल व्यवते हु'सारें	
स किन्त्रोत ब्यव समार्थे, दूंतो किस करें थे तो इत्य सर	
वें। मीर्प हम दं कोत यो लेवें करनी, उस्त वर्ष करे के	श्रिया
करी लो तो कार वर सीरवी वर्गको बी।	
इ. देशन समझ सीत न थें ते बादो, क्षेद्रे आर्थे ते सहा	
ने स्वयंत्रस्य समान, राज्यात, आदी, व्यंत्रती, समान, आंव,	वगस्
रा धींग क्षेत्रे मानिया; मामश्र मारी कटे सूरवी हुती ।	
हे मेरन हूं पुरश्त हैं बातों कित <b>र्श एक पाकुल स्था</b>	
<ul> <li>म्य स्था सी, मोडी मादरे पारत ध्वार, न्हारे श्वर ।</li> </ul>	
न्दारै सन्द्रमो, न्दारै सत्तक्ष्य, नियमेत, ब्हारै कपूत	
ना देश्त में बत्त करूँ, वा पास्पाद होबार्ट; वा शाका हुआने	
तेरु हुनांर, या तेनावीत हुनार्थ, क्रिय हिम पर पुरशह	
करं, रेबापसः । मारे तो ए मार्जन्यन्ते हो उपने इ	
- राजा ने ही क्षेत्र नी परिवार कही, ती रे मध्या भारी ती	
्वत्ते द्वांसरी : देवेतर द्वांद्वंबन में विशव लड़ो की, व्यती मा,	
मिता, ग्हारी माता, ग्हली प्रत, ग्हारी करान, ग्हारी प्रदमता । य	
चोरको फिर्नो साम वर करतो किली, वंशार में न किया	
र्धन कोई बागे, रे चेतन ! मार्गतो हो हूं तस्कति देख, केई क	
सिता पर्ये, केई बार इब क्वें, वेद बार इसे वर्षे, क्षेट्र बाद हती वर्षे,	
नाय ती देता। उनसे केटीक्की मो हे मताओ ! हे पिताओ ! है	भारा





२०६ शाममार-पदावकी ' सामायक' मन हात्र' 'कारे नियानिकथा यह बरहरो बाएँ तो समाधक वा बै--समायक मन चशुद्धै को, निर्दा किया बहुती को। पद्मे क्ष्यो बावस सप करो, जिल सब्हानम लीका हरो । हाँ बारक शरूब री सब करें हैं, हैं हो यह बान नो बहमांन न बोहो. अञ्चारको से दुवयो न कीथे, तर पारै मानासायी हे संबक्तर पक्ष पर गयो । मुख्यानमी से फाराधन करें है, मुख्यानमी से बहुबान करें हैं, स्थाय प्रांत पर्रंत परित्र दिवंश हुने ही ह विकार रेकान से बात क्षेत्र विकार रेकान "स्वतावार्यन से अपन हरें- विकार व युक्त करवी की पांचिमत्य हुँहै । "विश्वत प्रते दिने सुश्रीय, बोपतीना खेली क्य जगाय । वेहने प्रत्य न वर्षे जैतातो, सामायक क्षेत्रा वेताते " रिया चेतन ! तुं स्था मरोते असे माँ। मा भारी समायक तथा बड़ी मार्हे। या शामायक हो त्याब औरते ही मार्हे । यह वासायक वार्थाट, कारपेंच, संख, पुण्यत है, पुरवदात हैंड, परापांतक रामारी । दूं 'हवें मरोसे असे भां । रे चेरून ! बारी तो हामायक चा चै-चाम काम चर ना विश्वे. विदा विकास कर क्रोफ

स्वापन था है—स्या नात पर ना पितने, निरा निरुक्ता सर कोड से । बाल सर चौन दर बो, ते नायान निष्मा करें। नारी हो स्वापन स्वापी सरसी पित्नी, क्षेत्रन परवार समावद धरें। साची थोड़ों गमती मर्दी, ते नामायक सूर्य करें।।

चंद्रावरंतक राज्य जेद, सामापक तर पाल्यी तेद । रे फेल :स माला नी मती चार्द, पर माला मी तरे वार्द

श्चात्वनिवा 200 को तैयर प्रामानो इतो न यक्षा स्वः प्रकृत से इसे होत प्रक्रो । रे पेतन : तुं लंपन ही तो बांबा रामी, परसा ने दूर वर्षी, स्थारी बाती क्स पक्त प्रकर्ता, कोई कंपन से प्राप्त हुने नहीं। रे पैतन, तुं तो क्याबाद हो केल तही हैं। रे पेतन ! तुं पारों तथ संबारें ही बनेदों से, बन्ततो थे । यमती है, 'महेतां है, <sup>4</sup>महिनातो है, दे तूर' मही द्राव संगति हो से अर्थ | भीते | भीते | चे बादा द्रवस्त्व, है मारा सकता हे चेतन ! क्रम ,श्रुको दुस्थय, क्रम्म मारो सकत, हे चेतन ! बार्रे तो बाद वर्म स्थाय तर, देशे हो। अपनि ए' हान स्थापि इंग्रह दंशक शतास्त दे, जुंबरी बाला में बात तरें। बोही ! हु साव इंके बाला हां। वर्त रामाण सं: के कोई सावी कोने संस्थ

पदी होत्र दोनें हो। प्रापित हैं मार्थ कमान्य दोहां हां, वहीं हो धानीयां सान दोडो को,**सरो** । रे पेतन । तंत्रासण्डलो काकी छ---सूची ही बात बोटी ही बरवड़ा (- तंप तथा क्षेत्री सावका ।

वेरी वाधावर्ष हो मादा आया सकारती हो वेसी सामसी। दोडाः — प्रातमनिंदा आपेनी, ज्ञानसार सुनि कीन।

इति भी च्यात्मनिदा संपूर्णम् ॥ संवत् १००० वर्षे । शुक्रमवतुः संवत् रक्तार वर्ष चैत्र मासे कृत्या परो शिसतं । बीकानेर मध्ये । धी रस्तः । धी कत्याग्रामस्तः ॥

वे त्यातम निंदा करें, सो नर सुगुन प्रशीन ॥१॥

### श्रीमव्ज्ञानसारकी कृत ।। गृह् ( निहाल ) बावनी ।। (निहत्तक्य रंग गीरका रे से हं रंग मारव से स्वरं ) ।। रोहा ॥

चांच आंख पर पाउंखग, ठाडी अस्वति डाल। हिलत चलत नहि नम उडत, कारस कीन निहाल ॥१॥ हाथ पाँव नहि पीठ सख, भरत स्थान सी फाल। पीठ लगे विन नाक चले. कारण कीन निहाल ॥२॥ धम शिखा नाँड काटाँडे, जरत(:) आग्नि की भारत । पानी सिंचत ना बुभहत, कारबा कीन निहाल॥३॥ हिलत हिंदोग पेग तें, पहलो तरु की दाल। इत्तउत चलत न श्रांगुरी, कारख कौन निहाल ॥४॥ वडी सरोवर जल मर्थों, वडी पश्चिक खग वाल । पानी बुंदिक नहिं मिलत, कारण कीन निहाल ।।।।। घटा बीज क्रमधार स्त्रस्ति, दौरत★ परियन वास×।

पर प्रस्त कृष्ट न परत रक, कारखा कौन निहास ।।३।।

- वरी पवड () भगते ★ पोल × पाल ।

१ भिन्न की । २ वरी की । स्वयमक की । ४ भिन्न की ।

र पाली अभिने की । वरित्र की ।

आत काल पिय आवडी, सुनि विस्त्री मई वाल ।
मात पिता इरवित अप, कारण कीन निहाल ॥१४॥
मात पिता सुत बनम तै, इरपित होत कंमाल ।
सुते निरक्षत विस्तक्षित मए, काग्या कीन निद्दाल ॥१४॥
तिय सुन्दर सुकमाल गल, पीक दिसत रंग लाल।
दाद मांस लोदी न नस, कारख कीन निदाल ॥१६॥
हाथ पीठ पर पांच बिन, चलत देग गति चाल ।
गेरत तहवर घर गडनि, कारस कीन निहास ॥१७॥
कहित हवारों कोश के, समाचार विहाकाल।
वदन रदन रसना रहित, कारबा कीन निहाल ॥१८॥
व्यांक नेप तर ताँउ विश् प्रथम करें। बता मान ।

गद्र (निश्चल) यावनी

Rot

विना सहारे नहिं उड़त, कारण कीन निद्वास ॥१६॥ तीश्री चितवन दम महत्तक, सलित दिखाई सास । लाली करम के तर चली. कारण कीन निराल ॥२०॥

१६ ग्रही । २० प्रयः शर्विता गायिकारो सकती ।

शाबी होतें हो पीछ । ३७ व्यवप (प्रायम्बन्दरण) प्रस्तु । एव चराय ।

१४ ल्डीरे समस दिसस ऋदुरो थे । १६ पुत्र कोडी । १६ प्रॉप दे राजी हुं बार्र काल से काम से सीकी लात होता सबसें हुने तथ है वृद्धि चंद्रको देने समध्य स्टब्स स्टब्स कोनी ने करता सीती रे नहीं में साम रंग

## ससि बदनी ससि पूर्व लखि, मेट दिटीना माला। हरस नवत हम पूतरी, कारख कीन निहास ॥२१ बळ्री जुंखावडी, इह समाव सब काल । मात शुवा न चुंखावही, कारब कीन निहास ॥२२॥

दावानल यन वन जले. यर॰ तहवर परादाल । ववस्थिय त्या इक ना बसत, कारण कीन निहाल ॥२३। 'फुल पान कड़ पेड दिन, सुकी तरु की राजा। फल चासे मों को जिये. कारण कीन निहाल ॥२४।

शीश पेट कर पांच विन. श्रिजस स्वाति÷ विश्वकाल । अन प्रेर करह न चले, कारम कीन निहाल ॥२॥। वृदन बलामों भा विकत, पहुँसे विकत प्रसास ।

यह प्रथरजस्य अगत गति, कारण कीन निहास ॥२६॥ Personal Professional २१ राति स्वापता हं तकलंड न्हरी कदन चंद्र मिक्संड तास हवें । 🚁

बाय समर्थी हो दूस हो उस गई । २३ समर वर्षा सस्तरे हो । २४ सम्बी हो क्या < र तीन रो नेको । २६ इति क्यो सभी देख दुवे मोख के, सकी कुट ही नहीं :

गृह (निहास) बावनी प्रगट रक्षम घट वट दिसता. समां घटत नही वाल । मास मिती सम विसम नहीं, कारण कीन निहाल ॥२७॥ ट के किते इक नग सर्वे, गिढे सपन अविसाल । . भर नारी ठाडे चवत, कार**ब** कीन निडाल ॥२८॥ याज बीज बिन घार बल, ताल भरत तिह ताल । पट बढ़ बुंद न होत इक. • कारण कीन निहाल ॥२६॥

शीश पाँठ, कर पेट बिन, बेस चलति अति चाल । हद कर मेरति ना÷ स्नगति, कारवा कीन निहाल ।।३०।। चरवा बीस कर पेट बिन, सिखा कान सिर माल । थंगरी एक चले नहीं, कारवा कीन निहास ॥३१॥ घट कर इक लक्ष्री पक्षर, हिलत चलत नहीं चाल । बीक उठावत बहुत मन, कारण कीन निहाल ॥३२॥

पर न शीश पाँव न उदर, चलत चलाये चाल । तपत होत मानिस÷ रुधिर, कारख कीन निहाल ॥३३॥

<sup>।</sup> २० किसी से खेंदी १ २० दाल को बन -पाक्की से पानी क्र'व में भरें थें। १० प्रक्रम परना १० mail वीतर्थभी : ३९ ताच्यो । ६३ तत्वचार को धार ।

११२ झान-सार-	वदावसी
दिन दिनकर दीसत नहीं, स्प	ी निसीकर मिसी काल।
इस दिस तारे व्हिगमिगत, का	रग्र कीन निहास ॥३४॥
वाल सरयो जल देख की, दीन	
पानी वृंदिक ना मिलत, का	श कीन . निदाल ॥३४॥
विन पांसे उद बात सम, उत	र जात पातासा
देत सहारा तब पसत, कार	
व्याट पाँव सुर पशु नहीं, पुरू	
हाड़ होंहि नहीं माँस नस, फार	
तिय पिय के संयोग विन, मर्न	थरयो अति यास ।
मयो पुत्र पट् सास में, कार	छ कीन निदाल ॥३८॥
कठिन होंडि हुक भीकर्ते, बस	विन• निरम निहास ।
व्यति व्यवस्य देखत हुव्यत, कास्य	इ कीन निद्वाल ॥३६॥
परव दिवस सब तिय मिली, बाय	त भीव रसास्त्र ।
· c	

98 PF . २४ शसूर्वं सूर्वे शहरा १५ हम हम्बा १७ एकी । २० विस-विको १८ शोर संबंधित मोशी। १६ शोहे से बाब (पकारतर-प.व) ४०

श्रीवित कर वाने महीले स्वर्ग चल बात ।

गृह (निहास) बार	मी	484
बटा बीच गंगा चलत, सिंह	विद्यार्थै	सास ।
लक्य शङ्कर शिव नहीं, कारग	कीन	निहास ॥४१॥
चार हाथ तें शुस्त पकर, पानी	वियत	पतास 1
उलट व्यात उलटी करत, कारण	कौन	निदाल ॥४२॥
कार्तिकेय नहिं पट् बदन, च्यार	तु इर्वे	चाल ।
सान पान एक इक मुखै, कारम	कीन	निहाल ॥४३॥
सोस पांव सं ना चलत, चलत	वसाये	पास ।
ष्यंगुरी एक सिसै नहीं, कारण	धीन	निहास ॥४४॥
पग⊹ दिन उट थकाश में, गिग्त	न स	मे ताल ।
विद्याधर वर सुर नहीं, कारया	कीन	निद्दाल ॥४४॥
साज बच्चत संगीत तें, ताल	चयक	चीवास ।
नियुख नटी पग सुरू घरत, फारख	कौन	निहास ॥४६॥
•वोष् नवर । १९ ४१ बार्यबर उदा देशे हर जल कोने शि	ध्य अभी त'	ते संबद्ध में पानी
गर्मी । ४२ चनत (कोस) क्षेत्र देश करें केस		

सरा बांचे नवत करी उपने करण् बहै तो च्यार राष नयतुं बीतरी शुश्च नाथी

सर्वेजी क्रिया छ"। ४२ मध्यवद्वस महिती। ४४ तोते तानी मान्हे री तिके छ" तोहे

वत परको । ४४ इवर्ष ४६ वरी मदिस **क्यो** ।

सरका खनम विन जीव हैं, कारक कीन निहाल ॥ ४०॥ तरत दसन दिन चन भसे, सरद करत तिह काल । पेट मस्त नहीं पुरसतो, कारख कीन निहाल ।। ध्या प्राश नहीं हुस इक रदन, अदन विशाल रक्षाल । हदन मृत हस में करें, कारख कीन निहास ॥४६॥ च्यार सठी घट कर पकर, उन विच वेंटे वासा। देव सहारा नम फिरव, कारख कीन निहाल ॥ ३०॥ प्रात समत संध्या बगत, सुदू कति शुन्दर बास । वंच्या प्रत्र दर्फ नहीं, कारण कीन निहाल ॥ प्रशा विन पैडी चवदे चढ़े, समयंतर कर काल । मरम होत ही उद चलें. कारम कीन निहाल (1991)

२१४ शान-सार-पदावशी प्राचा दसी स'\* इक नहीं, ज्यांन चूद नहीं पाल ।

मध्ये प्रवचन मांग दूस, सचा आद ह आंतु । मिगवर वदि तेरल गई, गृह बावनी कंत ॥ ४३॥ खरवर भद्रास्क गर्डे, रस्न राज गर्खा सीस ।

माग्रह तें दोषक रचें, स्थानसार मन डीम ॥५०॥

—वृति विद्यास सम्बंधी संपूर्वपः —

वस्ति वाई वंभागतः। ६२ विद्वः।

• वस् में ।

४० तिहासमा। ४० पारी । ४६ पारी । ५० डोलर होती । १९ बमहनी मुं प्रन्तेत्रप्रवासन, शर्म पुत्र नहीं १महनो सुं स्थल नी

## श्रीनवपदजी पूजा वोद्याः—स्थार पाविषा श्रव करी, जेद बया मनर्गत ।

स्रमस्याय पढे शहिर, कन्ं ते व्यहिरमा। १॥ रेशो-सूकी सरीवा मी। व्यवित्व में स्थितिक स्वत्य तेष । सांच्यी तिक वित्व नाम, एग भव स्वंद एव ॥ राव क्षत्री स्थवरिता, पत्री स्वत्य सम्बन्ध स्वत्र अध्यत् संत्र हम्म, स्वार्थ सांच पत्र ॥ १॥ वाच्या महोत्सम करना, दिग्डिजनी हुए हर्ष ॥

भावे दक एक भी कागळ इरल भारत ।। यह राज गाउठ नागें, सुर इक्टी सा तुम्द । मेर सिवार नमपोर नागें विकास सिवार ।। र ।। कोक काहेरक देदे मानियार होगें क्यार । वीत्र सांग भी गोन कोचा भी करियार ।। यह मागारी कम मिहारी हुव मयागार ।। र ।। प्रवेत मंत्र कमानार मार्गे में महामार ।। र ।।। प्रवेत मंत्र कमानार मार्गे में महामार ।। र ।।।

ान काम वा नाम साथ ना कर प्राप्त । वज आमारी का मिहारी कृष सद्यार । संव दंश स्थानर । सा संव दंश स्थानर स्थाम के स्थानर ॥ सा मुक्त भाग ने स्थारे, स्थापन सांक स्थाह । सुक्त स्थान में स्थान स्थान के स्थान । केवल दंशका मोंथी सुद्ध सक्ती स्थात । चोडीसे सहस्य दुव सरिहरत देव विक्यात ॥ सा

प्राविद्यारिक शोभित सेवित हर विद्यारना । भू पीठे बांची गुण भी भव बोह अपना। व्याजीवन वर्श्वसम् जगपञ्ज कर सांग । बार बार जिकरण शुर्वे साहरी परवांत ॥ ४॥ द्वति चारिक्षका दक्षत्रका । दोहा:-बाष्ट करम दल निरदशी, भए गुरा ऋद समृद्ध । क्रम सर्य भव निर्भेषी, नमुं धर्मता किछ ॥ र ॥ देशी (सरवी महीवा नी) क्रक्तिक का सामग्र केवलि का समयाय । सकत समुद्रभाती दीहेशी कर्णे पास ।। सम बच तम से रोपें बोग निरोधी होय। लोग जिलेची केवल संत्री कहिये सोच ॥ ६॥ क्षाय सब की दो इन चरन समें रहि सेव । बहुत्तर तेरै प्रकृत सपाने दिन नहीं सेप ॥ चरस चल्ल चारगाहरा तीले मारी अंख।

चहुंता रण समय सोमंति विका समृत्या। ।।।
पुत्रम क्योग सार्वेग सार्वेग सेपाय होर ।
पृत्रम समये चार्वेग केपाय होर ।
पृत्रम समये चार्वेग केपाय सोमंत्र।
स्वरी प्रमाण पुत्रमी चर ऑस्ट्रम (मा मा स्वरा ।। ।।)
सेच कार्यंग सम्पुत्रमा स्वराग सम्बन्ध ।। ।।
स्वराग सम्बन्ध सम्बन्ध ।। ।।
स्वराग सम्बन्ध प्रमाण स्वराग सम्बन्ध ।।
स्वराग सम्बन्ध प्रमाण स्वराग सम्बन्ध ।।

ज्ञानसार पदावशी

275

सीवक्ष्यतं की पत्रा समय पश्चिम सरव दृष्त गुख पर्याय सुमाय ! चटन' विचटतादिक से वांग्री पार्स भाग ॥ ६ ॥ गण इवासीस बहगण सिक बर्गात प्यार । जैब बचांत बचांचर उपमांनी न प्रपार ॥ सासय चिटवन बार्गांट सिद्ध सर्वे संबन्त । पहवा सिद्ध ने होक्यो मस प्रश्चिपत्त सुभित्त ॥ १० ॥ र्शत सिद्ध शुनना ॥ दोद्दाः—ते ब्याश्वारत नित तम् पानी पद्मापार। गुंख पैतीसे स्वदिशी सम्ब भवी दिवसार ॥ १ ॥ वेशी (तेक्षिक) काचारता क्षानाविक वद्य विवा काचार। प्रगट करें सह जन ने कारण इक क्यार ।। वे बापारित देशाहिक बहु गुरा संपत्त । तेहकी जंगम अनवस्थांनी कोयम कुछ ।। ११ ।। कापमचा अवस्था विकास केंद्र बिरच। कोहाई पर पश मन्त्र क्लप्सें सत्ता। सारे के निज शब्दें जिला वयरी व्यक्त । साराय बादमा चोदमा पढिचोधनाची जिला ।। १२ ॥ पद्मांनी को कारवा सत्र करचना सार। पर खपनारै विकय भवि बांचे ज़ितार॥

श्रद्धधानिये जिल सूद् केयल करतासिये तेल । प्रस्टे सर्वे प्रवार्ध कामादित दीपक जेल ॥ १३ ॥ १—महन । वाप मारे कातिराव भारी काता भव कर । पदता ने जिलाहे के बाधार सहय।। मावाहिक दिव रास्त्री सारै दिल यो करंप । तेदवी व्यविकी दिव कारण सारै निकास ॥ १४ ॥ जे बह कद समिदा साविसवा सारांद।

राय समा शासन वन इतित वस्य भू श्रंद ॥ वित शासन कक संबन संध्य पारीप्रस्य । ब्रानसार निर्देशसमें समिनय शारद चन्द्र ॥ १४ ॥ इति भाषाये स्वयन्त ()

दोशः :-- हाइशांग सुसल्य ने पढे पढामें शीशः मुरख में पंडित करें, मर्मु नमाकी शीश ॥ क्षेत्री (वेद्रीहरू)

बारसंग सुचरक ना चारग कारग जेड् । समय फिल्पार सर्व कारमधार्ये लाग्नग रह ।। में शहांचा समांच शीस ने सुप्र नी धोर। पाट पती से पुसक करद कोक मधार ॥ १६ ॥ धोर सर्व इसमें गठी चारम साम। तेह सचेवन चेवन में बरे चेवनवांन ॥ व्याप चनार्थे पीकित के प्राची ना शंखा। मन क्योरे के करें साल करूप ती सांच ।। १७॥

रायभर्ध मंत्रस् यस गय दमसंहरा जे नांख । देवें बड़ा अदिवां से जीवनवा सब कांग्रा।

शीतपश्यकी प्रमा क्षेत्र क्षांत दिल मान्य क्षीबित<sup>े</sup> सो सार्गी करंत ( सुय नांगी से खंत न सांदी सह ने दित। रूप। व्यक्तानंत्र सोच नै सस्यव प्रश्न ते शक्त । तेखें बाब क्वार निरोगी करहें नेत्र॥ पाप साथ भी सोक तत्या जे भारत राप। जीत करें बाक्क चंद्रस सम शीतक ब्याप ॥ १६ ॥

जयराजा ने तत्व सुरि पहती ने बोस्त। राग्र भी तार्ते प तत्पर बाबवा है शिष्य वर्ग ॥ पारद थी कंचन करें तेहनी ऋषिरित्र थाय। व पारश बी रत्न करें प्रयानं तस पाय ॥ २०॥ क्रीत स्थानकाय स्थापमा ॥ बोहा:--बोन् विश्व विवरिपदी, मैंजै मैंसी गात्र।

नावा वंश्वय श्रास्ति रूप रववाचय प्रक साधी जे हुआ मर्मी सायक कहिये एक ।। तम ध्यांन के बाते रीड्रें बिगत करंत। क्रमें शक्त में स्थापे दक्षित शिका सीक्षंत ॥ २१ ॥

शीने गुप्ते गुप्ता भारत कीलूं शास १ पाली के जिपनी में बरबी तीन साल !! श्रीविड (बिरड) विगद्द किरचा च्यार क्याय नौ त्याग । च्यार प्रकार समें पहले रस वैराग॥ २२॥

र—बोधित । ६—समें ।

770 शानबार-पदायशी निक्रिय पंचेन्त्री से सम्बोध पदा प्रमाद । वाले वांच सुमवि ने बाठ वहुर कप्रमाद ।। बय दाय मा पीहर हासाई रूड मुक वाशास्त्रास विस्त्रागादिक पानै वस दक्त ॥ २३ ॥ जे जिय सत्त भया गया बाह भया व्यस्तात । अब बच ने पासे, सब ग्राचीयें ग्रा ।। खंत्यादिक दश विभ वर्ष भस्म शुद्ध पालंत। बारस विद्व पविचा में वक्त विचें जनवन्ति ॥ २४ ॥ मृतंबन्त संयम पांगीची जेड्नी श्रंग। क्रक्**रों** वार्था कार सहस शीक्षंगत वनर कभैभूमें विचरतां सुधा साधा ते सह साथै वांदं मन वच तन व्याराथ ॥ २४ ॥ प्रति साथ स्थाया ।। दोहा:-कड़ी अनंते केयसी, तीन राम बच वर्ष । शक मने ते सहं है. सन्यत दर्शन मर्थ ॥ १ ॥ बेशी (नेक्सिन) जे शब देव घरस गरू नवतृता नी संपत्ति । सददवा रूपे सेंबवे पार्छ सम्बन्धा

सहरवा रूपे संस्थे परावे सम्मतः ॥ कोड़ा कोशिंग सागर कम्म ठिई नहीं ग्रेष । साम कालम पार्च ग्रही शक्ति क्विया । २६ ॥ मण्डुपाद्य परिषट्ट मण्ड मण्ड कि निवास । वे मिण्य भिर्मा गीठी नी नहीं होने नाता ॥

सीलवपद्त्री पूता	२२१
ते सम्बद्धान ना तीन मियांन समय परिसिद्ध ।	
क्ष्यसम् चय स्वसम क्षायक परिकामनी वृद्धि ।। २७ ॥	
प्रकारा स्वयम साथ स्वयम होय स्वसंग्र ।	
चायक एक बार थी अवधिक न समये <del>संस</del> ा।	
धर्मदुखनी सूक्त धरमपुर नांदि प्रवेशः।	
धर्ममनन भी गंड घरम आयेष विशेष ॥ २०॥	
रुपराव रस भी भागम से गुज रवज विश्वांत ।	
हुद्ध सक्त परम वगरी बाधार समान॥	
वे विश्व निषयञ्ज चरव सांग्र ने विश्व ध्वप्रमांग्।	
जे वित्र मोजन कार्यए सिद्धन्त प्रमाय ॥ २६ ॥	
ने सदस्याकास्य भूष्या पसुदा भेदः।	
वरणीजै सिद्धमी वयन्र कांच एक झेड़ा।	
ण्ड् मोच्र भावी क्षिया गांठी बांध्वी होच ।	
ते निर्पे यी सिद्धमतै तिश्व बांह्ं सोय॥ ३०॥	
इवि दर्शन स्तवना ॥	
दोशाः - सर्वेझे प्रस्तितागर्मे, जे जीजादि बदार्थः।	
निम २ इक एक नै, लांग्डै शुद्ध परवार्थ॥ १॥	
देशी (तेदिज)	
सर्वेही प्रश्चितागम तस्य चयार्थ श्रमांख ।	-
ते ग्रुड व्यवबोद नांग साहरै परवांगु ।।	
नेखें मच्यामच्य जांसीते पेय ध्यपेय।	
गम्य कागम्य वस्तु कृत काहत यहथी नेया। ३१॥	

२२२ सर्वे किया नी मृत बद्धा भाश्री जिनराज । श्रद्धा मूर्ले सांग्र सदा सदगारी व्याजा। सेमय भोडी मध्यपक्षत मांची सन्तिगुद्ध। केशन मांदी पत्र विद्या समये संविद्य ॥ ३२ ॥ केवल सहा क्षोकी मा वयग करे तथयार। तेइ वहत्त्वा सव सच भी साहरे आधार॥ निरुपय भी सूच नांची हादरा चंग करप । सोक कात पिया पार्ने यहकी हात स्वरूप ॥ ३३ ॥ नेक्स्सी पद्मै पदाने है निमुखे कृतपुरुष। पुष सिद्धाय सहाय करें ते भन्य वी भन्य। काप्यक्ति आर्थी जनम कर्ते तिव स्रोय विभार । करतत कांबल भी पर प्रगट पश्चे निरमार ॥ १४ छ होने जेह बसार्वे पुजनीक एड सोय। यह बसाई सर्व अना मी चंदिक होय। तेइबी ए अप्रमांग्य करें ते अवि महिसंद। क्रान नमंसन विदेश पूरक सुरतक केंद्र ॥ ३४ ॥ इति झाम स्तकना ॥ होता :- केश सरब विश्वि पर्यो, गिडी अर्थ में होय। ते चारित्र सदा कवी, शिवपद प्राप्त सोव ॥ १ ॥ दास (तेहिय) देश विरवि स्पे जे शर्वेदिरति सहय।

क्षेत्र शहीय वर्ष ने ते चारित्र मनूप।।

श्रीनवपत्रकी प्रका नांग दर्शन पण संपर्श पल शलाबड । एडवी ह्रौ परिचर एडनी सह समय प्रसिद्ध ॥ ३६ ॥ जंभ जईंग्ड बहुत्तर ऋथिक २ फल दिंत। सामानकावि भेद चारित्रे ने पद्ध मनवि।। बिखवर पिख बादर पाल्यौ सुधौ पारित्र। सम्बद्ध जेख पारल्यी, श्रम्बी डीश विचित्र ॥ ३० ॥ दःसंबाग् मसंब राज क्षोडी पक्रमचै। दर्भर तेहवे संक्षिप वत पाल्यो वत रक्त ॥ प्रमा सरिसा परा रांक चरश पालंता जोस । क्ष मांनके थापी सांदे पूत्रे सोय॥३०॥ पारिच पासंता पारित्री में सामृद्धा पाय नहीं रोजेचित तम का बर सर इंद ।। ने पारित्र सनंद गुकी पिस सनरे मेद । बरवीजै सिदानो तिम पद्मना दश च्छेद ॥ ३६ ॥ समिति गुपति कह यस्य में स्मादि मावनापार । काचै जेडनी शुद्धें ते शुद्ध **चर**गांचार।। दुर्थर दीव चडी में से चारित चांति। ते वह मैं सम मन भार्षे प्रश्नपत्ति करंति ॥ ४० ॥

इति चारित्र स्तवना ॥ होहा :-- दल बाद बर्स १ बाद नै. जेह बार्सन रहतेत ।

यथा शक्ति तप पहचले, कामबाई मति मंत ॥ १॥

t - 84 1

258

देशी (सरती मढींनानी) बाह्य कारकरण वार्ट स समय भेड अगांत । ते इन इनसी बाह एकर गण वृद्धि वर्रत ॥ ते । प्रव किन्न जवांने प्रश्वतादिक किनावा । । ।

तीर्वंदर थप कीनी कर्म निवंश काल ॥ ५१ ॥ व्यापन तर्पे कंपान की माही किस पीर्टन । भीव स्वर्ते मी कर्में सेश तपदर करते।। केवल स्रक्रिय सामाची सान्या सन्ति विशेष । तेहनी सक कारण य, यहकी होय करोग ॥ ४२ ॥

सरकह सम पहना पूज देव सुर ऋद । बास स्वस्प संबर्ध चित्र शिवकत सिद्ध ॥ ते बारवान बासान्य सोक में साबे बास । की मैं तरह सहिवासी तप कांत्र रति परवांच ॥ ४३ ॥ द्वि दुवीसुख संगत्त कारण स्रोक प्रसिद्ध । ते थड में पडिला मच्य मंगल सविधद ॥ तप कारक इत्यादि सम , याजी भव भीड ।। ।। ४४ ।। संबद तिकाय-नय भय विसयति प्रयक्त साम । परम-सिद्धे वद क्षेम गर्ते ए खंक शिखाय ॥

बाइय वांव तेरस ते रस संसवदर सीस। बीकानेरे झालकार मुनि तक्या कीय ॥ ४४ ॥ इति नक्ष्यर पुत्रा संपूर्छ ॥

2-R1

ध्यन बहित प्रस्त् कृत पुत्र चर्चा सुमार।
चना विकासिक से सार्थे के की सार 18.11
पुत्र इसकीत कष्टुमुख दिव कर्वन चर्चार।
तेव बचाई कष्टुमुख स्वास्त्री म नगर ।।
सावत्र विकास वार्याई किंद्र सुद्धे कंपना।
बद्धा किंद्र में होने सा तार्युपत्र पुत्रिका। १०.11
देशा किंद्र में होने सा तार्युपत्र पुत्रिका। १०.11
देशाः—के प्रतिकार कर्वा वर्षा किंद्र सुद्धाना।
सार्वा विकास कर्वा कर्वा कर्वा कर्वा सामार।
सार्वा विकास कर्वा सा कर्वा कर्वा कर्वा सा ।।

देशी (तेडिक)

शीनवपद की पता

भाषाया आगाहित कहा विधा सांध्या । जार करें पूर्व का के प्रारम् इस्त कारा। वि कारा करें पूर्व कारा कर कारा। वि होंगी अंत अपनार्थी में मेण्य दूर्ण १९२१। भाषाया अरच्या क्विया कहा हिएस मोदी कर पार्थ प्रस्त प्राप्त ॥ मोदी कर पार्थ क्विया प्राप्त ॥ मोदी कर पार्थ क्विया प्राप्त ॥ मोदी कि पार्थ क्विया प्राप्त ॥ मोदी कि पार्थ क्विया क्विया विकास । मोदी कि स्वाप्त क्विया क्विया । मादी कि स्वाप्त क्विया । मादी कि स्वाप्त क्विया । मादी कि स्वाप्त क्विया क्विया ।

ज्ञानसार-पदावती पाप मारे कविशय भारी पढता भव का । पक्कों ने निस्तारे के बाजार सहय ।। माताविक हिरु रासी सारै किंग जो बांग । तेहची कथिकी दिव कारत सार्ट निकास ॥ १४ ॥ जे बहु सब समिक्षा साविसवा सार्वाद । राय समा शासन थन इदित करण भ इंद ।) विन शासन कुछ मंडन कंडन वादीपृत्द । ज्ञानसार नित् प्रधर्में क्रभिनय शास्त्र चन्द्र ॥ १४ ॥ इति भाषायें स्टबना ।। बोद्या:--द्रावशांग सत्तस्य में पढी पढाने शीश । मुरख में पंडित करें, नमूं नमापी शीश ।। देशी (तेदिक) बारसंग सत्तरक ना भारत बारत जेड । द्याय किथार वर्ष वतस्मानी सवाग घट ।। ने पहांका समाण शीश ने सत्र में। धार । पाट घडी जे पताच करद लोक समार ॥ १६ ॥ मोर सप्पे डस्वे नाठी आश्रम झांन। तेड अनेतन नेतन में बरे नेतनवांन।। स्याध चनार्णे पीक्षित से प्राणी सा शंका। भुत क्रमीरे ने करें बात्व इवस्त्व मी शांख ॥ १०॥ ग्रामधी मंत्रस महा तथ द्वस्तांच्या के जांचा ।

देवें कवा सदियां ने जीवंदया सन मांक ॥

शीनशब्द वी पूर्ण सेस दांन दिन मास बीचित रे वो वाकी चरंत । सुव कोंदों के चरंत न बांकी खुद में दित ॥ देन । स्वामांन शोक ने स्थानस सुक्र के राखा । तेची बास कार किरोगी करहें नेता ॥ पार वार भी सोंक तत्या ने स्थानस प्राप्त ।

पाप वाप भी सोक तत्या जे कातम ताप । शीत करें वाक्त परंत्रत सम सीतक साथ ॥ १६ ॥ जुपराका ते छुत्य सुरि पदमी ने योग्य । गया भी छात्र 'ठन्टर काव्या हे दिशाय की ॥ पारद भी कंपन करें तेहती काचिरिक माय ।

पर प्रवस्त्र की राज के त्यामुं अव गया ॥ २०॥ इति क्यान्यय स्वन्य ॥ वीदा:—होगुं किय विश्वतिक्षां, जैसे मेशी यात्र ॥ वीदा: के हमाच का द्वार क्या ना यात्र ॥ १॥ वीदा के हमाच का द्वार क्या ना यात्र ॥ १॥ इंगी (तिहिक) नाया पंथाय चित्र कर स्वन्याय क्यां

नाहर के क्षण के तुरु के परंज ना गा ता ता ता विकास विदेश विदेश करें हैं की विदेश के विकास के विकास के विकास करें के व्यक्त कर कर के व्यक्त कर कर कर कर कर कर

च्यार प्रकार पर्म पहले रख वैराग ॥ २२ ॥

श्यार प्रकारे १—बोरिन । १—वामे ।

हानकार-न्यापणी

निश्चित पंचेश्यी में वक्तीय पद्म प्रमाद !
वासे पंच सुमित में बाठ यहर कामाद !
इय काम मा मीह दे बाठ यहर कामाद !!
इय काम मा मीहर दासाई कह यह वा वायाववान विस्तापादिक यहि यह सुझ ! १२ ११ के विस्त क्यों भेगा क्या सह माना कामांच !

ब्रह्म वब ने शहै, नव गुणीर्वे गुज ॥ शंशादिक इसे दिव जो कम्म ग्रुद्ध वर्णातं । बारस विद्व परिमा ने क्या जिमे शुव्यक्ति ॥ २४ ॥ मुहेबना संपम पांत्रीये नेदाने संपा । बहुवें यांशी काटर काइस दीलंग ॥ वसर समेनूमें विचारता सूचा साथ ।

यसर कारनूना विचरण सूचा जना है। ते खडु खारी वांदूं मन बन जाराय ॥ २४ ॥ इति खाशु स्वच्या ॥ दोडा:—चडी स्वनंते केश्सी, तीन ठल सब पर्मे ॥ हाद सने ते सर्दे हैं. सन्मा दरीन समें ॥ १॥

हात सन त सह ह, धन्यन दशन देशी (तीहन)

में हात देव पराम शुरू नवनण भी बंधित । शहरणा रूपें सेंगयें बरणें बम्मल ॥ कोड़ा कोड़िंग सागर काम दिई नहीं रोध । शास माताम पांच एवंचे साहित रोध ॥ २६ ॥ शाम गुराक परिष्टु मुख्य अन रोध निकास । ते किया विकास गोठी भी नहीं होंचे नाश ॥

श्रीमपपदकी प्रजा ते सम्बाहन ना तीन विचान समय परिसिद्ध । नवस्ता चय प्रवस्त साथह परिराजिनी वृद्धि ।। ६७ ।। प्राच्या स्वयम् अव प्रवस्त होव स्वर्थतः। कावस्य प्रस्तान्त्री व्यक्तिन समयै संस्ता। धर्म बच्च सी सस्त बस्स पर संब्रि प्रवेश । भारी काला भी क्षेत्र सरका स्थानेक विशेष ११ २० ।। स्प्राम रस मी भाजन जे गया स्वया नियांन । श्रुद्ध सहय चरत कारी कावार समान॥ जे विद्या निपद्धत चरण नांग से निश् धात्रमांग । जे किस सोचन कार्स ए सिखमा प्रसादा ।। २३ ।। जे सहद्वता समृत्य भूषया प्रमुद्दा भेद । वरगोजी सिदानी च्यार पांच पता क्षेत्र ॥ यह सोच भावी किया गांठी बांध्वी होय। ते निरुपे थी सिद्ध मने दिए बांई सोय ॥ ३० ॥ दनि दर्शन स्तरका ॥ होता:- सर्वेडी अग्रितागरी, जे जीवानि वदार्थ ( भिन्न २ इक एक ने, आंग्री द्वास परनार्थ।। १॥ देशी (तेडिय) सर्वती प्रणातासा तस्य चवार्थ वर्माता । ते द्यव व्यवदेश नांच माईरै परमांख । केरी सरवासरव जांगीने पेय खपेता

गम्ब क्याम्ब वस्तु कृत काकृत पहुंची नेय ॥ ३१ ॥

१११ सर्वे किया नो मुल सदा भासी जिनस्वा । कद्वा सही मांग्र सदा चपवारी व्यावता केमब कोडी मगुपकार नांगी सुविशादा। केवल गांची पद्म विद्या समये समस्ति ॥ ३२ ॥ केवश मस्त्रकोडी नावधस्त्र करे स्वयार। तेइ व्हल्या सव सब नौ साइरे धाधार॥ किल्बर भी सब संग्री डायरा श्रीय प्रश्रद । कोक ब्याज विख पार्में प्रदर्श श्रद्ध स्वस्त्य ॥ ३३ ॥ तेत्रको वद्भै पदापै वै निसनो करापस्य। पुव सिद्दाय सद्दाय करें ते धन्य थी धन्य। कामवि जांची जस्स वर्ते तिय सोय विचार । करगत कांवल भी पर सगट वर्गी निरुवार ॥ ३४ ॥ होये जेड प्रसार्वे प्रचलीक एड कोया पत्र प्रसार्टे सर्वे कर्तानी वंदिक होया। नेक्सी व कार्यात की ने सनि सरिक्षेत्र । क्कान भर्म सम बक्कित पूरक सुरतक क्यू ॥ ३४ ॥ इति शान स्वयना ।। कोडा :- वेश सरक विश्वति वर्ती, निक्री आई में होय । ने पारित सहा जयो. शिवपर प्रापक सोव ॥ १ ॥ दाल (तेडिव) देश विरवि स्पै जे सर्वेशिशति सक्य। द्रोय नदीय बई ने ते चारित्र धानुपा।

शीनवस्त्वी पृजा
नांग दर्शन पण संपूर्ण फल दाता हुदा।
एडथी है परिकर महनौँ सह समय प्रक्रिस II ३६ II
संच अईसा सहसर व्यथिक २ फस दिंत।
सामायसाहि भेद चारित्रे में वस मयति।।
विकार पिता सावर पाल्यौ सूचौ <b>भारित्र</b> ।
सम्बद्ध जेया पहल्यी, धान्ये दीघ विचित्र ॥ १७॥
हासंबाय मसंब राज होड़ी पकवर्ती।
दुर्थर तेहुचै सुसिए अत पाल्यो जब रकः।।
ग्रम सरिका परा रांक चरवा पालंगा ओय।
रुष सांसद्धे वापी सांदी पूत्रे सोय।। ६०।।
बारिच वासंता चारित्री ने सार्चह।
पाय समें दोसंचित तत सर सर इंद ॥
ने चारित्र कानंत गुणी विश्व सबरे भेड़।
बरवीतै सिद्धन्ते किम पहचा वस च्हेर ॥ ३६ ॥
समिति गुपति वह यस्म में श्रांति मानगाचार ।
कार्य जेडमी शर्द ते शह करखांकार॥
काय जरून शुद्ध त शुद्ध परवाचारा। दर्धर दीव बाढी में के पारित्र परिता
दुधर दाव कडा स ज नारत नगरा ते सह मैं मुक्त मन मार्चे प्रणुपत्ति करंति ॥ ४०॥
इति भारित्र सावना ॥
होहा :—दुष्ट बाठ वर्म े बाठ नै, जेह बागनि हप्टांत ।
थथा शक्ति तप पहचनी, व्यममाई मति मंत ॥ १ ॥

1 - SE I

वेशी (सुरती महीनानी) बाह्य कावन्तर वार्रे स समय मेद भरतन। ते इस इसभी अह क्तर गुख दृद्धि करने॥

ते इस इसमें आहु 'कार राज हांद करता। को 'मन सिद्ध जानेते क्षमाशिक विज्ञासक ॥ हार्यकर एन फीनी कर्म कियो काम ॥ श्रेष्ठ ॥ काम तमें कंपन थो गारी मिम पीटता। कीम स्वर्ण भी कर्म मैस कर बुर करेव ॥ केसम साम्य करना क्रमां सिम

प्रशासक स्वयंता ॥ ॥ इति नक्ष्य पूजा सपूर्वे ।

33%

भीनकप्रदेश दूखा २२४ मारती ॥ से में ननपर् सारति श्रीसे, श्रवत मंत्रक कर्माय करीते । पीक्षी भारति भरितन विद्वा, महित्य विद्व भरीन परित्या ॥वैशाधा भीती स्मार्थित गुण चारों, संस् करूत मी से सामारी । मीती समार्थित गुण चारों, संस करूत मी से सामारी । मीती, क्षत्रस्थाः वासूनी, सुबस् क्षीक्ष से सोई सीमा मीत्राशाधा

तीन क्ष्य सरहस्या रूपे, भीधी कदारे मन कूपें। गंपमी क्षेत्री मिलागान, तर रक्ती तेदनी तिन व्यविगत । विनाश्था इंडी देश सर्व चरिती, कदार्थ हुप काम मुश्लेश की महिर धर्म्मात रच मारे, कहारी चारित वारे गये । मिलागान में भवि सार वार्याल कहारे, हुद्ध मन द्वित दूर निवारे ।

क्षानक्षर नवषद् चाराचो, क्षेत्रमाहिक शिव वह साथी ।।वै०।।१।।
।। जय नवषद स्तवन क्षिप्यते ।।
।। पार पेसावल ।
भवि पूजा भावें करी, नवपत्नी सार ।
।

तार (प्रवाशः)
मिर्च पूणा गाँव रहे, प्रकारते वार ।
अपाण प्राप्त मार ने, प्रकारते कार ।
अपाण प्राप्त मार ने, प्रकारते कार निवार मार्गामा प्रमुक्त गुरू कार्यने नो, मण्डण स्थारत ।
यह पानेशेषणारिके, निक पाला विचार ।।यन।।च।
स्थास्त्रका अस्पर महे, नवस्य प्राप्तका ।
स्वयम् पाने परिवारी, निवारी नो स्थारता ।।यन।।व।।व।
स्वयम् पाने परिवारी, निवारी नो स्थारता ।।।व।।व।
स्वयम् पाना सर्वित पाना, निवारी ।।वस्त ।
स्वयम् पाना सर्वित स्थान ।।वस्त ।



भाक सांध भाके पहुँ, सदे विदेशन जांज ता सदे विद्याल जांज, मीत में मोतन पश्चि है। सी भी कुछत मानाव, मांग देशा पट्टा मित है। कही नात्व कही मीते, यह सो जान कह हुआ । क्यापारी ज्यापर स्टे, पट्टा, राज है जुला ॥१॥ २. (पत्ती चीर हुमित) प्रश्नी जांक क्षार्टी कर कर किस्ता

्या सह हानिस्तर की, रित गर नाहि रोप ।
ये विक्र रित में हो जी, किरी नोपरी भोवा ।
ये दिक्र रित में हो जी, किरी नोपरी भोवा ।
ये दिक्र का जु विरुद्ध किर कर में साता ।
यह दिक्ष कहु विरुद्ध की दिक्ष दिक्ष मात्री है
यह निवार में तो री, करने दिक्ष निव मोत्री ।
यह दिक्ष की हो जी है आजन मंदी नाहि स्त्री है
यह निवार में ती है, हुनी है आजन मंदी नाहि स्त्री है
यह निवार में ती है
विकार मात्री स्त्री है
विकार मात्री स्त्री है
विकार मात्री स्त्री स्त्री है
विकार मात्री स्त्री है
विकार स्त्री स्त्री स्त्री है
विकार स्त्री स

भी चित्रवाधि पार्टेंग सेवस्त्र पद्मायक, की मर्विकारिक ताम शोरामाने दिल किया ॥१॥ गळाननावदुरपाकि स्वानंता कूमें वाहनः की वास्त्रीर मानात्तुः सेवस्त्रेयः सुकावः॥॥॥ कीवस्त्रीर मानात्तुः सेवस्त्रेयः सुकावः॥॥॥

कारवादाहुद्र मिक कोको भूत सुख भावन । सामर्ग विद्यालंगाचि समिनेस्टुसुवर्मयाम् ॥३॥ इति बसराज की सावि

श्री जिनलाभ सरि वारखडी कवित्त

बारसादी कविन स्र तमत सम्मान्ति, स्माप्तनीको लिए दीको । किरसर्ग तिर तेहरो. सी ल पातव सब गाँधी ॥

स मति द्वपति सद्ध भार, सार हुए तिल्ला सर्व। से वक्ष के श्रस दयक, सी ल मग बारग साथी हा स्ते में बदाव सीमान वर, सी व सबस सहया स्थित ।

सं कार पारु तारच सदा, स दगुद श्रीतिनसाम वर (ह इति भी जिन्छाससरि राष्ट्रानां सकार द्रावशाचरी गर्भिता रचनि विविद्या विपश्चित झानसारेगा ।

महैया तैतीसा

मलहसरो भाग किया, शारदा को चंद किया, स्लाह को गाज, मन अमान घनराज की। भूजन प्रवट किल्लं, सुमेरशिर दंड वंड ॥ सारस जिम्बंद कियं, सत्य स्थापन की

हाती की कपाट कियं, कपाट जंबदीय क की । राबर्डस चाल क्षियं, गमन गणराज की र सगुनिन की धागर वं, सागर रामाध्य सी.

सर की प्रताप किया, प्रशाप गणवराज की ॥१॥ ग्रविरित्रं पं० प्र० इसनासारगरेहः ॥

## श्रथ पूरव देश वर्णनम्

## षंत्—त्रिभङ्गी

फैर्ड मैं देख्या, देश विशेषा, जति रे श्रवका सब ही में। जिह रूप न रेखा, नारी पुरवा, फिर फिर देखा नगरी में ॥ जिह खोग्री चुचरी, श्रवरी बचरी, संगरी पगुरी है खाई। पूरम मिल जाव**ी, पश्छिम जावबी, दक्षिण क्लार हो माई** ।।पूरम०।।१।। ती करें सुद्देषि, बैठा सोवें पुरुषा जोवें नेनन सें। पति से नां पाले कांच खुकार्से, चैन निकार्से चैनन से ॥ सबरी धमकावै: सामी धार्वे. लाठो लोठी ले सामी ।।पाय०।।२।। थगु सटक्या थरके, केसां फरके अधर अरके व्यति शीस । ते रंगे काली है कंकालो, चरही काली क्यूं दीसे ॥ चाह जैंनी छोटी, पंडां मोदी, घाट घोटी क्यं पाई ॥प्रथ०॥३॥ पुंदां घट पाले, बाँहें माले, देही हालें जे हाले। सविर्धे घट पेलें सहदी ठेले पांधा मेलें खब ' चासी ।। फिर पाछो बसाती र, बातां करती, धम धम पसती घर आई ।।पुरव०।।श। घट घर निज घर में, गमधी करमें, दित दे सिरमैंले बल में। हित हतादी संगी. श्रंगो श्रंगी, सबही रंगे बिन सिरमें !! क्यडी कर बारे, मैल स्वारे, रगवा मारे लोगाई ।।परमा।।।। सरतारी मिल मिल. मेला भिल भिल, बोली किल बिल सह बोलै ।

झानसार परावती अंदि सूची काई, पूंचां ताईं, वाली में घोती खोले ॥ ा पुरुष नारी, वर्ष खुनारी, क्या बेटी खरू क्या माई ।।पूरव०।।६॥ उप विक्रि में हेर्ज़े. हेला हेर्ज़े, शब्द केरी इक इकरे ॥ इसी हम बांचे, मूठी बांचे, पुरसा बांचे राह करें। क्ष में इस देशें इस इक देख, पहती दुव्यों से आई ।।पूरवाशाशा ाट वाहिर काहै, सही रहाहै, क्या बहुवां चह क्या सास । हिंद बेचो लटके करदे पटके, पासी महस्ते केसां स् ॥ स्या होती मोटो, क्या व्यवहोटो, केस व बांधे लोगाई शपुरवशस्ता सिर परच सिन्दुरै, सांगन पूरै काज पूरै सब धारी । कड़ि घोती बन्धे आधी संधे. उद्यान डंके सिर नंगे॥ कर में संख यूरी, सांच न पूरो, सोद खपूरी वर्ति काई शपूरवाशशा इं कार्ने तोटी झोटो मोटी, नक्त्रेतर लें नाक घरें। बांचा पगरासी, बहुतां सांसी, चलतां सदका सहक करें ॥ क्यांची रीसें, निरमी दीसें, रूप न दीसें इचराई श्रूरवशाहिशा सकत्त्वावादे, की संबादे, राजनंत्र स्रोत वर्णाः क्या बरुता, बाँहजा, बरुधी पहिलां तिश्व श आधके रूप यशी। के नाई निरस्तवता सन्ता सन्ता, परसी परसी में स्वार्ड ।।पूर्वता११।। क्रम बाँचे तापह गोहां कापस ईस कहाई दान करें। पर गांमें, कार्य दिय नव कार्य, स्रोसी वापड़ संध धरे ॥ मादर की बाई, पसे लुगाई, पहिरे कांठे किर बाई ।।पूरवन।।१२।। क्रनव्द पत अच्छी, सारै मच्छी, क्या सोटा करू क्या होटा । क्या कोई शीवर, क्या प्रति शिवषर, खानै पीनै सब सोटा ॥ क्षा नहस्य दरशी, वनके सुरजी, क्या योथी व्यक्तव्या नाई ॥पुरव०॥१२॥ र्गना वस नाही, फिर मीता है, फिर कार्ष चाह फिर काहें ।।पूरद०।।१२।। प्रति रोगी देखें, चालु विशेष, कार्त्र सहिता चाय परें। पाणोमक चोपे, जल पालोपे, हरियोल हरियोल करें।।

व्यामोन् मरवे<sup>3</sup>, रोगी करवे<sup>3</sup> बोझ हरि कहि मां वाई ।श्रूरवशाश्का यूं करता मुक्षी, कारत हुन्दी, राजी संगी सब कार्या ।

कर पूजी जाते, झुदही बाले, पाछी कट है यस बांधी ।। जल मोहि डबीबें, फेर न लोवें, बोब न रोवें जल नाही गयुरवाशास्त्रा रोगी नहि मधी, खांटें सखी, बांधी स्वयंत्र कि वैसे ।

श्रम पुरव देश वर्णनम्

रागा नाह भूषा, काठ क्ष्या, बाजा क्ष्यकृत्वह वस । घर के पुरुवाये, बेठो साथे, मगरो मांहे नहीं पैसे ॥ महदापर ठावे. नाम धरावे. हसी रसी हिड हजसाई ॥परबागश्या

39 रहार का, भाज प्रश्नात, वह पर शायक कुलका गुरूवणात्मा भागक पर वाई. रहे हाणाई, अक्रमची माई आई। पर पोर्स पोर्म, जून समोपे, तरकारी दे समकाई!! सब काह देवें, ज्वेमन सेले, बात सिकारी हुकराई (त्र्रवशास्था) मुक्ती संपूर्त, जूंका कुके, बस्त सर पर दे बरलोई! स्वारण ऊकारी, वास काले, नाविर कारी वाणां मोई!!

२३२ श्रामधार क्यामसी श्रुप्त क्षायी कार्य, ज्युं पर कार्यों, सावक बासक वया पाये ॥ बासक कटि त्यावें, डेरें झाबें, पाली सावें पस स्वाई ॥पूर्वणारश॥ वद तुम-विवृत्तें, सीरां मुंडिंग, वीर्थें सासक पेट मरी ।

कति सिद्धाना कार्य, नात दिलाये, स्थाये, बातक मेत करी ।। विक्र पर में कार्य साथ सिकाये, किए हाये जाएंगे कार्य ।।११००।।१२॥ को कात म जागे, पांत पिदागों, किरती चार्य परदेशी । बाईकी राखे, रायन राखे, दरमायौ कम्या देसी ॥

काईकी दरके, रांचन रार्के, इत्त्याची कपड़ा देंगी। पर में जीवार्की कोई पायक, के महत्त की देरी काई प्रत्यकारका क्यान्वर्षी काई, क्या सीवार्डे, जनामें क्या गय चार्डे। स्व बाब सुसार्टे, पूर दिकार्डे, प्रतार उन्हें बेरिकार्डिं। । प्रतार उन्हें पितार्डें कुक्त पार्के, देवी हैं परकार्डिं। प्रत्यकारकार्डिं। दिन वस्त्र पार्टें काई प्रतार काई सीका पर्देश की हैं। विस्तारकार तार्टें, देवा मार्टें, सीचें देशिक प्रतार की

व्यय पृश्य देश वसातम्	२३३
सो इस्स देसे सं. नहीं दर्ज सं, बनवन माधी फ़्रामाई ।पुर्थ	112511
इक भीरी नांसे, विद्यु परवार्से, बोली बोली फिर वैसे ।	
मुख मित्री परस्त्री, व्यंने सरिस्ती, पंसी होये तिस देसी ॥	
नव बालक शबै, हाने आवै, प्रासें शहर सरआई ॥३१०	મારમા
रगवृ च्यो गाडा, श्रेकी आही, रस्से बांटी सटकार्य ।	
नर पीठ विश्वारी, कांटी दारी, होरी हुओ दिस साथै ॥	
चव इक्त (र) फेरे, खायौगेरे, क्याक्षी झांटा विश्वाई 1.पूरस	भाइला
जे कांश्रित कार्में, केई पासे, पीठ फहार्व के सूदी।	
हम निवरें दीठी, कियें न कुठी, देखी आं किय दी खांदी ॥	
चैतर बिख कीथी, तप पद सीथी, धरस बाग्र की बहिताई ।।पूर	11851109
बर कांठी चाले. मुहदा ल्याचे, मंत्री मंत्री बठावे।	
दह इद इस्ताये, पिगा पनाये चान्यों ने किर निगकाये ॥	
वक्षि दोय वठावे, राह करावें इक्क शर्वें सत्ता पाई' शपूरक	મારમા
को योती थीवें, पोत निकोवें, मार्ते भीट्या बाद गई।	
होकी नहीं पाने, ऊठ जीमाने, सगपग्र री ठी नात किहा ॥	
सब नात सुवाई, पर जीमाई, जात गई सो फिर बाई ।।पूरव	भारका
योहै में जाने, बेंगी फाने, इसकी में तो संक किही।	
को कोछी जातां, तिनकी शारां, वह कातां में रीत नहीं ॥	
पिया के कापिकाई, जिसरे आई, मुकी कहें हूं समस्तई । पूर्व	शाइक्षा
घर काही वैठो, विश्रर दीठी भोर वही कही कुछ तेंने ।	
इक तौ अविकाई कहो सुधाई, बीशी सुध ली जो जे न ॥	
सीहें कथि बीचे, पढड़ी मीचे, रस्मी वांचे मचवाई ।।पूरव	oligkii
र इच स्थि तता न रहाई ।	

जानसार पदावसी मूं को से जार्ने सादिव पाने क्यो बोलें को मुलबाई। मानवा इस चोरी, बांडी सोश बलबल इसके हैं ग्वादी ॥ साकी तह भासे हमरी साही, बांच्यी सीवें विश्व माई अपरवाश देवा वस्क्र तक कार्से, मूठ न दासें, इन मानुस हरमत वाले । इन हरभत सीवा, चोरी दीमा, इसती हैं इनके खाते । सब साहित बोबे, चोर न डोवे, ती समरे हैं सहाई ।।पुरव०।।३०। कोई व् बोली, इनकी भीती, चोरी करके को नाठी। हम सीर्वे बराए, नार बसाय, जोरी वे क्रहयो काठी ॥ धंदर अपु धासी, लाखें सामी, चोरी बाहर नहि काई ।।पुरव**ा** ३०॥ कोई इक बार्ट बार्स थारी, बाद बसावी न मुठी। पहिली सामाय इसके बावा पर में वैठां फिर बैठी ॥ हम कोती चोरी, बाढ़ां मोरी, और जुली जरकाई अपूरवाशीस्था कडि हरवव स्रोता, इसरे दीनां, पंचू मांहे सिर जुता । हम साहित देवें, शब शह सेवें, वशवल दूमरा क्या बूता ॥ तब तस्कर क्षार्थे, सादै माथे, पहले जूती पढ़ बाई तपूरमानाप्तना बासरे थाने, चोर दराव, ज्यानारी ने व कडिने । मांगी सो देखां. फेर न बहिस्सां, कीदी क्रेस्सां सब मिसने ॥ प्या कांचकी सेस्को, बुकी देस्को, समकी सेक्को समलाई शबूरब०॥४१॥ के चौडें बाडें बाड़ा पाईं, नाम किसानी दफ्तर में। बोरी जो बादै, बावो पानै, बावो साहित मिन्दर में ।। क्रव कोय व चिन्ता, इसा निचिन्ता, मौजां मांखे मन माई ॥पूरव०॥४२॥ बह शंबा सेवा, सेव पसंवा, रंग दर्शा सबु रोगा । भागीरथ साई इस दिशाचाई, दहमें भाई दम्मंगा ।

व्यथ पूरव देश वर्णनम्	२३४
विश्व नामै करबी, मानीररबी, शिव शासनकी सा माई ॥पूर	dolling it
जलवार पश्चें, इस दिशि बाहें, के देशन की सब तायी।	
गंबीबर सेती, जासा खेती, सातन अंसै को आसी।1	
पिए करा व्यतिक्षोरी, कोच्या मोटी, रस कोई मैं न भराई ।/पूर	do[8884
सब नीरस साधी, रस नहीं दायी दाउँ पायी में देखने।	
सम कीकी स.गै, स्वाद न जागै, परसा परस्री ने पेक्सी ।।	
इक मांबा मनहर, स्वार्थ, माधुर साक्षे बोड़े व किसाई ॥पूर	この はなが
जीशों में मारे, मुददा वारे किछ मुददा विरता दीसी।	
व्यु' मीर्ड्यक्ती, बिल पल मसी, कब्बा सिक्स खित रीखेँ।	
इक पुंचा चारें, इकें पक्तरें, निवसा पंक्षी वह आई ।सूर	वशास्त्रभ
अब पूर्णा गारे, बहर दिहारें, मांसाहारें व्यवि रचा 1	
संबी मुख योधर, बातु कोबर, पत गटकारे अवसा ।।	
चय जीदह उसे, विरे न बूढे, भाठी मुहदा भस बाई ॥पूर	बराउका
दोन् तट र्तर्रे, नीर्रे सोर्रे, पन बनसई पसराई।	
क्तिया बरको आर्थे, पार न पार्थे, रावपसेकी अनु गाई ॥	
् खु देखी नैनां, मास्त्री चैनां, वर्चेन कर नहीं वरयाई ॥पूर	वनाडना
गास्त्रं क्षित्र मिन्दर, मोटा सुन्दर, श्रवि क्रंचा पर श्रावासी।	
तिह बैठा खदिरी मोत्री सहिरो, निसं मौतुस न्युं सुर नासी	11
कींना वर पर घर, मानु सुरपुर गंगा दर्शन कर ब्याई ॥पूर	delikfil
जस मन बाबारें, तिस परवारें, देव विमाने वर्ति देवा ।	
तिम नाया लांगा, देव विमाता, पुरवर सम सहिरी सेवा ॥ से वेकिय सगते, चार्ल पुगते, वह डांडू में देही ॥पूर	
त बोकव सगत, चाल चुगत, वह ठाडू म दहा॥पूर् मेजी बर डारै, मीका थारे, फतर व्यवणे घर वसी।	sensell.
dan at with attention and and and attention to	

235 तिस वह पामेले. बाधरा चाले. सस विमार्वे वह बेसे ॥ इह कोसी जती, भरती हुँती, कृषा पिया तिया रहि वाई Hरस्य oliken य सह परदेशी, नहीं इस देसी, जांग्यी बंगालें जिनहीं । किर बाड़ी पवरी, शब्दी गर्नरी, पत्रन शिखा क्यू' पट फरके ॥ नस शिक्षतं गडियौ. नाम न कडियौं. इक घोती से उत्तराई ॥परव०॥५२॥ भेसा जब वेसे, श्रेसा दीसे, जैसी करकां की माला। क्या वरी क्रवारी, बह दो नारी, कारी त्यें ही नर कासा ॥ क्या शोभा क्षीजै, देख्यां रीमै, इक जीसेंगुरा न कहाई ।।पुरव०।।१३॥ हर्षे कर नारी, वरवान भारी, तन सावत री तारण पर्यो । क्या पराच तारी, रंगे चारी, रूपाली सक गोर पत्नी ॥ कों बर्ब प्रवार्ती, इस दिस सार , की बांड्रे दिस सो कोई ।।पूरव०।।५५॥ भय भवती थार्टे, मौका थार्टे, के गण सक्त्री लिख वस्त्री। के बारासियी, केव करंबी, के रोजी के सवसकतो ॥ के बत्तकरको, खिद्दानुकको, के पुनृशीती नियमाई सपूरवशास्त्रा हुव बाबू भेजा, सह समेका, विश्वसस मेला में आहे । विमीदी नाती, नरपाकासी, यह गंवा कक्ष भ्रष्ट कारी ॥ पण पळन जातें, मोटे वार्तें वर्तने परमक्ष पसराई ।।पुरस्का।।द्रशा वेश्वा सँग सबे, जान कराई, चवि स्वाही के करें। वचा वय घेई. घेई बेई. साथ बताबै सब संग्री ॥ व्यति मीठी गावै, नाच बटाये, यस आवे बद्धर थाई ॥परव०॥३७॥ करण कर नापण, लावज रीवण, नावां उपर ही होते । चंदनि जब ज़िटकें कीवानि चिटकें, के जामें प्यू के कीवें ॥ कीवें बोलावें मसरों झावें, संग करें वांत वीवाई ॥वरवताक्रता।

भाग पूरव देश पर्योगम्	२३७
दिनकर दिन चारै, बाद दचारे, कींडा मार्थ सो मुठी ।	
पःपद के संगें, कांगे कांगें, रसवी रंगें, इस दीठी ॥	
कींतन बस बार्से, रीवें मांचे, कींत्रनि नेना भरि बाई 1)पूर	Helixali
तिह प्रदूत गारी, से श्रयारी, वस्ति से से सि सुन्होड़ा।	
के नारी वरसें, भारत फरसें, ते ठामें रहिस्काोडा ॥	
भक्षधर री बाये, बहदे आहे, विद्या पश्ची में ठमगाई ॥पूर	वनाइना
इक्सीका साथै हुआ। क्याये, बांधे इक में इक सेवी।	
के जारे स्थाये, धारण वाये, १ स करे नर स केती ॥	
यु रहित मेला केती बेसा, स्वारी नावां कर लाई ॥पूर	<b>अ</b> ०॥६१॥
डाडायी वाचे, भाडी काचे, सहसा श्राही सिंस गाये।	
सह साडी वार्ले, बैठा चाले, सममत्युवाया भर २०१वे ॥	
सपका भरगवित्या ढांडा चक्रिया, ब्यागी सद सुंबे जाई ।।पूर	(का) दिशा
तिरता नी सोडे, तन मन मोडे, गाँडे बैठा सब सहिरी ।	
जल उपर मिन्दर, मोद्दे सुस्पर, मांगू मासी सुरगपुरी ॥	
क्या शोभा कीते, देख्यां रीमें, दरखन स् दरखोगाई ॥पू	(बार्गा देशा
बरखायौ बाब नदी मरावे, तथते पाछी विस्तरे ।	
मचांख बंधाने तेथ रहावे, इक इक मौका घर द्वारे ॥	
तिय ऊस बाबी, दियम जावी, बल्ल जल भासी बनशहैं ॥पू	(4011881)
नहीं बाबी पड़ा, बावल पड़ा, मोटी छंड़ा सुं बरसें ।	
वर्डि बोर किनोरा, दाहर सोरा, दपिहा पिव विव वो तरसं ।।	
विन परसा काली, क्या मीवाली, कमाली यन वरशाही 119	स्याधिक
बहु की बढ़ अपने, सवा विच्ये. लगतम बरती तामकाये ।	
१—चंकिया । २—केचरवारी ।	

ज्ञानसार पदावशी 215 को भोजें भावें, पांच परावें, कर तर सभी थस असे ॥ बर मध्ये मान्' निगती जांन्', व्यवतारे कर क्यमाई ॥परव०॥६६॥ सबड़ी क्यं घर पर खं अल ऊपर, नीका चाली अल बेंडे । को संक न ब्रानी, सब किर जानी, पर आशी किस में बैठे ।। देक वर्ष पाये. नीश्री वार्षे, पठि ब्यावे किर थस जाई ।।पुरवन।।६०।। नीका सं काणी, नीका जाणी, बाद पर री काव पर्यो । गोडारे वेसे. जन सविशेषे. ठीक न राखें भार तसी।। धारा में बावें वकी साने, के हुनी के विरक्षई ।।पुरव०।।३६।। तब मौक्ष न काई, जीव सराई, करना न काई बरि धार्ष । शहा कर रोचे, सब जन बोचे, कोच निकाससा नाचे ॥ क्या काश बेटा, काके घोटा, गंताबाई गिलकाई ।।परव०।।६३।। बाने क्याने, साथै राते, फिर टक राखे के पाती। दसी दिन जादै, बच वश बाबे, कार्चे श्रप्त शासी जानी ।। श्चन कीत मरोक्सो, हांस न बीक्यो, मनती चरै विरचाई ।।यरव०।।५०।। को भौत्री बढ़ोया, भौते बढ़ोया, ब्याइरक कथू माठां में । भीव नोपोध, सूर्य देवे, भाव बसास कर नामें ॥ देखवा थिए बाले, स्तारी साथे, सुव न लागे इक राई ॥पुरवा।।धा इस बिख विस सामी, भारी आसी, वास उसरी बरहर की । को पून न सामै, भोती भाषे, पेट दुसावे भरदूं की ॥ चक्की नहीं पाने, बेरी गार्में, डीकी कर करा कुटाई ॥१११व०॥७३॥ की भोलें जाबी, रोटी बाबी, उपर आबी फिर खाबी । ती पटर वीडा है, रह बरावें, जोड़ि क्वावें डॉ ब्याधी ॥ तिस कोई न खारे, देख दराये, सिकी सामां गरवाड़ी 1/पूरववावदेश

अथ पूरव देश बखनम् 355 सब देस मसेरी, चौड़िस चेरी, विच सार्टें बर सो जाये । जी चौड़ी पौड़ी, बस्र न ब्रोड़ी, सण्डर चटका चटकावें II यू' रथशी जावै, नींह न कावै, दुसमा परवट दरसाई ligetollusii ए समझर खोटा, इन सु' मोटा, भवि डांसा विख तिया देसे । व चां विक लम्बी, पांड क्लम्बी, पन बन क्रांडी दब बैसे।। रैली जब कार्त, तब प्रदाई घरवर मांडे यस बाई ।।परव०।। अशा व्यक्ति जोर सचार्य, जोक सरावी, शीबी साथे के इंचा । के पटने पैसे, चीड़े वैसे, मार्र जम बोड पर चंचा॥ तब बाज सताबै असल सराबै, फेरो सपद्धर मरखाई ।।परव०।।७६।। परभातें देखें, न्यारी पेसे ठाम ठाम कपहें छूंती। क्या सम राती. हरी न पाती कोस बन्ध नहीं व्यक्तिहरी ॥ मा मनुसी दीठी, ठिखें न मुठी, बीतक करवी बठताई ॥पूर्वनाका विदा देश न ज्ञान, धोती हका, पट देखवां नहिं पाने। दमही इक बारण माखै वारण, सोशी बिन बग्रा विपनाचे ॥ सव रंगे पोता, अंगे सीता, प्रथम जारी गर्डि गार्ड ।।परव०।।ज्ञा राजी कहि गाउँ, बेरबा बाई जी करें रांचक लाई। वस सायौ भासे. पूरी चाले. बीबी वाले बात बाई ॥ वैसे कविराजा, बोल महत्त्वा, मुंखां कहि गंगा पाई ।।११व०।।७६।। जुरुवा कहि नारी, घर कु'बारी, पनरस भारते पुन्यू' कु'। बहुत के शंबी, मोन्या रही, गाळ कहे सब क्रम के । पानल कर्डि गहिली, महिली महिली, खारी सीवि सुबवलाई ॥पूरमणादण। बहियों कुं समग्री, हेकग्र विरयी, टाक हाक कुं बोलावें।

जिह नाम भरावे, गोली वाबे, पाटो साही जोग वे।।

अंद्रसार पदापती कतरती पाणी, भाटी वादी, चढ विवास सु वहिकाई ।।पुरचः।।पः।। करियारै नालस, पंचां सालस रखड़ हमरा कहि नामें। . डांडाक बैठका पर काठ का, गमला रूमाले गावे ।। लल्या के हरमस, विद्वा दक्षर, भारी सासी के व्याही । पूर्वशादशा नहि नर चाकारी, इसा नारी पुरुषा भाषे सहतेने । बयका कहि होटे, बायु मोटे. पुत्र न गासे को जैने ॥ मेळा है साकी, साकी होक, इतनी बोली देखाई ।।परवानका पित बैठी जोने, जारी होने मारी सोने, आरां सं वति कोश स पाली, भीशी मासे, खोर न श्वली दारा सं ॥ ब्स इस ही देखें, रीति विशेषे, विज्य ठामें निवरे नाई ।।पुरवाशावशा पति नादि सुद्दावे, तृतो त्यावे, व्यदासत में को नावे। को कोई मन्द<sup>े</sup>, टांग रगड़े, कबड़ो साहित तौ पाने ।। जोक्ष की नाजस, आसे साजस, इन कीमी के इमराई । पुरव । स्था स् न्याव निवेदी, तिथी न छेद्रे, पद्दीन केदी को रही। िया करि सहसाती, जारें राती, गिर्फें न राती क्या मंत्री H तिस बारी कीयो, जंबी सीथी, सीबी जंबीनर ताई ॥पूरमका.मदा। धर वेसे पारे कर्ले बबारें, पोइर जेनी सो नारी। पीटर किस सेती. सासर हैंती ओर्से रोजी केवारी ।। मारी संकेतें, घर पीहर ते, बोझावया चाई दाई ॥पूरदशायश शाई बाताई सेवी थाई, हम बहुबार सेने छ । सार्वे केमार्थे. स्थाने स्थापे, वादो फेर्ट स्थान कुं।।

सब दक्षी न्यार्थे, तिह से जारे, तिह पर चारे बतलाई ।।पूरब०।।प्या। तिह रहिनें रातें, बढ़ि परभाते, भीहर पर में क्षय जाडें ।

व्यथं पूरल देश नर्यानम्	२४१
प्तम नांदी जुजाई, इसवी काई, मजी इमक्ट्र' न सुदाई । वीहर न रिक्कारी, जीव निद्द जार्जे, क्रींप विष जारी करि काई।तृ कुट्ट विधी वसति, जारी सस्त्री, जार्र यन्त्री को जार्जे । को कक्की कोले, वोई कोर्ले, इस तुमरे पर में कार्जे ।	
श्वहताई तीमां, स्पीयां दोनां, तुंहै पर में पस जाई ॥द्र्र क्या मर श्वह नारी, जामै जारी, जो हुए देखें मुखे रहो । को राज न सका, किसे निसंबद, मन माने को सुखी बदी॥ इ.स. जोरी जारी, क्यों शब्बरी, देखी परमत दरसाई ॥द्रुर	
इड माट भराचे, बड़ी भराचे, नित्त की ते में ते ठाये । पिल, पढ़ खाबे, चांठवां काचे, चंकी चांठे ठड़ जाये ॥ इस बच्छर पाने, ठाड़ी ठाने काछ रही सो चठि काई ॥सूर	
को पादी पीदें, राजी जीदें, पात दुरांधी बांत लहीं । वस मस्ती बांदें, शुद्ध नमादें, किह प्यश्ते किह दुप्पहें ॥ स्क्षी हुं नोंदी खुं क्बोरी, कही लाखी शुद्ध खाई ॥पूद पूद्ध बांति रोगी, युक्ष न बोधी, युक्त देखी नैजो सुं ।	વબાદરેલ
बो रोग सक्षीने, हो बोबीने, पिए कारण है तीनां सूं ॥ जुड़रा जब पेस्त्री, बाबू सुस्त्री, तक्की रेगें उपनाई ॥सूर द्विकों के दाके, पदन पदली, सिस्ट सरदी कर सिस्त्र सीजी ।	ज•॥स् <i>र</i> ॥
लिए। में चोदी में, दूरी कोसे, पंजी सोने ठर्दरीये। य बाहिर ताई, रहितां वाई, सम्बन्ध नहीं सममाई। पूर् सिए पूर्व समीनी, चिर पच्छीये, यह पूर्व चक्र प्रस्त मारी। जी विचाही विरोध, पर छल मरियो, साथ दर्शियां क्या सारी। चुंक्ति कुमोरी, यह के सारी, मूच्छी कर धर पहचार। पिर्	

क्यूं भूरे कीथी, त्यूं ही सीबी, यरगु न तायी विक वार्ते । . पिया ते अधिकाई, दिन में पाई, भी वामीरी दिन रातें ॥ विश इक व्यविकाई, वांर्ते पाई. व्यव पात्री वारी वाई ।।पूरवाधाध्या सुतां नही राते रव परधातें, उनकी खाकी किया बार्ल । पाछी भी पीपें, मरें न जीयें, विश्व रोशी हैं सल्कारों ॥ क्छाडी बेखा. निरुपै पेजा, निस्संपेडा वक बाई ।।पूर्वनाकः।। के सेर दसेरी, केशी देरी, भी पत्र सेर्थ के केई। के सावा काठा. शिथिला काठा, प्रचरा सवरा केलेई ॥

व्ययमञ्जीया केते, मगुश्रर तेते, के दो मखिया ब्यडाई ।।पुरस्कारकां के संघ पठाने, कविया जाते, भावर पक्ष के बागे । तब पीड़ी पासे, नहीं नदि हाती, चक्रता दीसी यू मार्गे ॥ इत वत लड़ बहता, पटका पहता, टांग घर दक्तिम बाई ।।पूरवान,१००। सम्या के रक्षा, गोल गिरहा, के सदर्भता के उत्पा। के खांचा तक गोल सांहै, वीडवां वांहे, केशीचा ॥

कोई जब बैठे, बोता हेठें, घर तिया क्रवर बैसाई ॥पुरवन॥१०१॥ केड वैसंता, सास मरंता, सब बारी वोतः मेली। बातक तम बार्चे, शेली पार्चे, नत का करें के लेले ॥ के हार्टे भावे, वही घरावे, सेसी मांडे सरमाई ॥पुरवा।१०२॥ को कीमें परसी, पार्च मधनी फील पांच तिस होगी की । नामें कर बोली, राज पथ तोली, पांध हुनी सब कोई की अ

क्या कोई घन धर, क्या निर्धंत नर, खु नारी विश का कोई ।।पूरव०।।१०३।। यूं कोई हाये, बोहा साथे, श्रंथा माथे गत पूछी। के बातो पेटें जुड़ी मेटें, पेडु आसी त्यूं कूछी।

व्यथ पूरव देश वर्शनम् २४३
वृ` जोश वावे, डीचग्र जाये, कल सब काँगे स्वराई ॥पूरव०॥१०४॥
न्युं नर स्युं भारे एक विचारे, सब कांगें कल सम होई।
भिग्र गुर्में और, कत न किछोर युद्धा होटी क्या कोई छ
नर एक नवाई, पोर्ते पाई, भौर नहीं को ब्लोडाई ।।पूरव०।।१०४।।
कविराजा ब्यापै. नाइ दिलापै, सरंशुं सरसी इगा गोसी ।
देखेतः देखी, पय सुंहोसी, स्नान पोन नहिंपय मेशो ॥
इक सूच विज्ञाने, दुध क्षिताने, दूस बड़ी विख कहिलाई ॥प्रव०॥१०६॥
पासी नहिं याने, ल्या न आये, दूचे मार्थे ब्युंगये।
यूं सेर दुसेरी, पड़ी दुसेरी, के दक्ष हुँबी कब जाये।।
जे दूचे चडसी, रोनें पटसी दूच बडें, बिरा: बर काई शपूरव <sup>-</sup> ॥१००॥
इक सूच बड़ी जिस, दही बड़ी इस, इच्छा बटिका तिस ऐसे ।
विकारें क्यार्वे, गुढ़ी बखावें, जहिर मिलावें किर तेसें ॥
कंडे क्या बावे, तीलुं साथे, सर जावे के वय जाई ॥पूरकः॥१०=॥
बीतुं ही नार्में, त्युं परियामें, इच्छा वंतिका के माली।
िय बन्दा थाने, सोई आहे, इच्छा वटिका विद्य दानी H
सब शोब बतारे, बांग समारे, बिगरे देही विगग्रई ॥पूरब०॥१०६॥
इस तेल वसाबै, ब्याग पदार्वे, ब्यति उत्साले जब कार्ये ।
तब ब्रागुरी दीजै, अलै न सीजै, परसें शीकत फरसावै ॥
यू पेती जारी, न्यारी मारी, पाक तेल सब कहिलाई ॥पूरवाशी १०॥
किलक्ष बांनो, लूसी पासी, लूनी नामु किरवाये।
क्षिय तेल लगावे, के मरदाये, पीकी कार्य सब जाये।।
की पाक न पाने, सरस् स्थाने, तेल बिना को न रहाई ॥पूरव०॥१११॥ इक मार्क पोड़ी, दोने गोड़ी, नवसादर की नास (देने।

भाका करवार्वे. दिन दो जाने तीजी दिन कळ नाज सिन्दै ॥ जी अवर न वर्षे. ही विवसाद, बाद बारोगे सह पाई ॥परव०॥११२॥ इंड बंसी पेरी, पोली केरी, नामी भूगी बोलाये। ते व्यक्त राते. हार्वे साले पाँचे विद्यारं पय पाने ॥ पय सब यर देवें. फिरती केवें, मच्छी चूंगे अरताई ॥पूरव०॥११३॥ इक सिया करें, मिटी कारें, बैठक महितो करें। हय उभी देती. मैंबी तैंडी, घडी घडा फर सं कटें ॥ पट कारो आने, पेट सकाने, विश्व महिनत मझ न भकाई।(पु०)।११४।। वियमर बारायें, मंत्री साथें, देशी सबसन दे वासी। प्रवासित सेवा, गैंसा बीचा, मात्रे सीचा विवा द्वावी ॥ तिया जंगल जांचे तिहां रहांचे क्याचारी संगे त्याई ।।पूरव+।।११था। देशी धरमाओं, बोन' पाओं, कार करी विद्य बीच रहें। मादिर पग चारें, गेंदा मारें, मादें रहितां क्यूं न कड़े ॥ क्रम जात सुवाचे, फिरचर बाचे, घेडी वर बल वरठाई ।।पुरव०।।११६।। बल मुंचन बिरियां, दाह भरियां, मारे गोली मख चारे । तय व्यांतां वेथे, पर्ते लेवें, व्योहेडी गैंडा मारे॥ च्यव चाम बढाई, ढाल वयाई, सिलाइट रगे रंगाई ।।पुरव०।।११७।। सट रेसम कामें, तत विकारी, मसदी पाने घर मंहें। पर मांडे पैठें. विश में बैठें. पक्के घर कब तब अंडे ॥ विख सेवी पहिला, पाणी मेली, उत्पाल जब उद्धाई ।।पूर्वण।११वा। कम रेसम पाल, स्टि डमासे, सीसे जब वब भरकी थे। वारे विस्तापे, चरस फिएमें, सबस पटावें विस्तृही में ।। य कीटक कोचें, रेसम होचें, जीवी सट कल सीमाई ।।पूरपा। ११६।।

श्रम पुरव देश वर्धनम्	२४४
चारी कम जाये, काम स काथे, धरेवो निकमी कटिसाये ।	
बीवां सीवाबें, कार्ने व्यापें, मूंची सो बामें नायें॥	
व्यति दुष्ट बमाई, करें सदाई, निरसी नैया दिसलाई,।।पूरक	भारदशा
संम के शटकाये, केते ल्यामें, पात पात कर कीसाये।	
सब कुं स्कावे, फेर जज़ावे, असनी वासी मीजावें।।	
पायो वतारे, कपड़ी डारे, बाद ककारी वकताई।।पूरप	ગારરશા
यो व्यस्य मुखली, ठामै भ्याली, कपड़ी पाक्षी ऋषाती ।	
वु मत छोवाचे, कांठे जाये, भोई कपदी वजवाते॥	
स्रो निर्धन होचे, इस विथ योथे, यन घर रजके योताई ॥५०	गरस्य
वो सावस योपै, सावस होनै, नरवी चूनी नेलाई।	
व्यव थाग चढ़ाई, व्यति भीटाई, सावण् किरिया बतलाई ॥	
को द्रव्य दुरांबी अस्त्र सुरांची, होवें कैसे कहिलाई ॥पूरक	GHERRH
वनराय बसास्ट्रं, नाम न जास्ट्रं, दीठा तरु जे इक देशे ।	
जे किहान दीसे, किया वीसे, ते इस देशें सुविधीयें।।	
पय पंत्री माला, सुद्दूर बासा, सरस सुरे नम पूराई ।।पूरव	ાાક્ષ્મા
रीसे विकराता, मादी पाता, घन माता व्यु ततु काता ।	
किरता इंश्वला, टर्ले न टासा, मदपासा च्यु' भरत्रशाला ॥	
अंगल में दीसे, मरिया रीसें, यक पीसे मानुज भाई ॥पूरव	∘ઘ <b>શ્વસા</b>
च्युं ही सुंबाला, त्युं पूंबरता, मूंबासा व्यवि सबरासा।	
चस चंचत चाला, बीतसवासा, दे बाफासा दाघाला ॥	
नञ्ज क्रंस विदारि, गेंदा मारे, मायस री नचा व्यविकाई ॥पूरव	भारद्शा
में ब्राह्म क्रूड़ी, कारवा स्पृद्धी, टोकी टोकी फिर चीवा। फिगी में बेसे, मायस दीसे, पकड़ी रीस सुपदीया॥	
मिली में बेसे, मायस दंशी,परूर्व शेख सुवदीया॥	

शानसार पदावसी विदार, मूखा सावज भक्त आई ॥पूरव०॥१

मानुज कुं मार्रे, पेट विदारे, भूजा सायज भरा आई ।।पूरव०।।१२०॥ देखें चति अंडी, क्षेकें सूटी, क्षोकें मूं ही नहीं हवा। पर चीर न ब्हार्से, हश्त्रह लाखे, बडिया मारी रावा हमा ॥ वार्गे क्वीर वसीवी जाव न शशियी इस्पे कमसा नहिकाई ॥प०॥१२०॥ बर्स्ट अति क्रोस्की, देश न सच्छी, बोली कावित सं मिताती । रूपें व्यक्ति निषक्षी, प्ररूप न स्वत्ती, दिसा नारक से मिसती ।। ब्याचारै दश्कत, चक्कणै बजल, सरशा वांति नहीं खाई ।।पूरबं०।।१२६॥ देहे व्यति दुक्ता, सुबी लुक्ता, पुत्रे सुक्त्री को दीसें। बसती वार्ति बहती, लंबी पहती, सब घर बाबी व्यं दोसे ॥ स्थानां सहस्रहिया, अपरो सुक्षिया, घर घर दीरी न नवाई ॥पू०॥ १६०॥ जो कोशी होवे, पूरव शाबे, लाग्रा चाहै सो कारी। तीचें चति बाह, दराँन साह, जन्मन्तर जिन करसावी ।। व्यावण नाकारी. रोगें सारी कीर रीत दिस दिससाई । पूर्वा १६६। निया नहीं कीची, सबढ़ी सीची होटी जैसे न्यू बरी। लुं ही मैं भाशी, बाग्र न रासी. भूठ न दासी इक करों । सनपद जिन देख्यो, तियाँ न पेथयी,साम भूठ तिख परशाई ।।वृ०।।१३२॥

१४६

अपन क्षेत्र में किया कोई। यह रोड़ी वब बहै, देव होड़ी नहिं जोई।। जावी जेड़ी बात तिड़ी, में अपट बलाड़ी। मुड़ी दक्ष बही कड़ी, बही दे वाच बहाड़ी।। (प्यूर्टीह्मूड क्ष्मात ही, दल हुए बादे देहपर। नारव परी बब क्या नहर, रहे जो हो हो हुए तर ।!१३३।।

।। इति पूरम देश क्षन्द सम्पूर्णम् ।। सं• १२७६ रे मिठी माथ शुक्त झदरशं तिथी गरुवारे । भी सीदी पार्शनाबार नवः
 भी साखा पिङ्गख छँदः ॥
 ॥ दोदा ॥

भी स्वरिद्धा सुविद्ध पर्, स्वाचारत कान्क्य । सरव तोक के सातु क्षं, प्रदाम् को गुरुशय ॥ १ ॥ मोक्य में मापा करं, शाह्या चिहुत्त नाम । सुवैं नोच काल्य तरे, परसम की नर्दि काम ॥ २ ॥ स्वर्थकात सागर करें, कपल केंद्र होता ।

सर्वयात सागर समें, वयस कैंदें होय। युत पूरव पनदें सकत, है कामन इह सोप॥ ३॥ वो विद्या सब मान की, इनमें रही मिलाय।

मरीजय के देट हैं, ज्यों सब बड़ी सबाब ॥ ३ ॥ चिक्रम है बिया बस बन्द , जागराय में बीज । स्रोव वर्षिए बुट्टें बहै, पुत्र विश्वार कांत्रि ब्हींज ॥ ६ ॥ केंद्र बाग बाड़ी रहिए, पुत्रि विश्व हैं होता । कहु दीपर अन्त्र सम्बद्ध है, संस्कृता किस कीज ॥ इ ॥

ल्लु सीरच त्या चतात्र की, संस्कृता किम कीन ॥ ६। वरपर दुविका जात में, तेष नतार है सुक्य । वर शाख रचना रचे, सो नॉई नियुद्ध बलुष्य ॥ ७ ॥ य तथ करिश्य नात हैं, विशा चवर नियास । पूर्व है अर्थतें मधो, यह वावा को क्रान ॥ या।

र सुंद मेर वन ही × सदनब-सडडडवडा। व ISI ब्रांगित 10 व ISSX5150551 मंद मती की रोप ने, को बंद के छेद । मार्थी सब की चाल पर, बाल छंब के चेड़ ॥ ६ ॥ क्रम क्रोब है साम है। निर्मे शंद किस्तेता। तास संद को योजना. बड़े जेट प्रतिकेट ॥ १० स सर्वे संदर्भ तास के. मेद प्रभेद सिस्तना। गहन कठिन क्रं कात्र के, देख मन्य क्षत्रसन्त ॥ ११ ॥ वारी कोरे संद के, क्लग करें समुद्र। गया चायर सत ताल वति, शोधो सकत निषुद्ध ॥ १२ ॥ वास बन्ध बिन श्रंत के. फैसे ह न कहाय । ताल जंग तें होड़ की, पाल भंग हो साथ ।। १३ ॥ बिन वाले सब भोव सु , चाल चली नहीं जाय। तास चन्द्र शिद्र पर घरे. तिया" प्राची चासवाय ॥ १४ ॥

बाइ पड़े जिल बात करी, तास मान संबेता दीमाधिक चति करति गति, शंग दोत इम देत ॥ १४ ॥ शरपर्धे परिवास की, भारूरी शास्त्र समाव।

हाय चंदरी आरसी, विद्या कारण सद्भाव ॥ १६ ॥ **पिक्रस** दक्षि स्रोरोधि सम. श्रंद भेद व्ययपार । सञ्ज दीरण है " गया समय दिवस सह दिनार ॥१ मा

menn gened

दिणको क्रमचन्द्र की भंदार प्रति-स्वान सहात वक्षि गुद्द किल्लु बनकारे मादि गुद्द छत बादि लहुदैः

चो शुरू मन्द्रोतच्य सपूरतो त शुरूपः विशेत संदर्भ द्वारा ॥

काला पिचल लंब श्रथ सपु सचर सच्या वर्शनम् यथाः — सपु व्यक्तर इ.स.ते मिली, त्यों इक्तर मिल बाय। पुन उ का सु सु रहस मिली, पांच सब कड़िबाब ॥ १८ ॥ भव गुरु श्रद्धर सद्य वर्शनम् यदाः --आ ई ऊ र इस मिसे, रे को बहर मिसाय। भी भांभा इस कंमिले. ए नव गरु कडिसाय॥ १६॥ संयोगी की बादि हैं, जो बचु बच्चर होय। राष्ट्र<sup>®</sup> ही शुर जाग्र के, मात्रा गियायी दोय ॥ ६० ॥ पद कार्दे अन्ते गुरू, तेसे दी बस दोव। द्योताविक साथा चडै. श्रम गरु मानी सोय ॥ २१ ॥ श्रथ बाठ गण सच्छा नाव वर्णनम् यथा :-(वोटक बंद-एकाळ मगर्थे गर तीन भगरा कहै, गर वक पूरें बच्च दोय पहें। बनवें सपु दो कर मध्य गुरू, सनवीं सपु दो पुन बांच गुरु॥ २२ ॥ समुतीन नहां नगर्से मधिये, अधु एक धुरै काची मुखिये। गुरू दो लग्न मध्य गयाँ रगर्थे, गुर दो लग्न करो व गर्मे ॥ २३॥ भय गय भगा फल अफल वर्तानम् यथा:-(पुनःतोटक अंप) कक्ष्मी मार्गी जब हो भागी, स्त्र भे सार्गी सासेप भसे । मुख बाद करें, बगने नगरी, गमने बिनसे रगरी तगरी ॥ २४ ॥

॥ दोहरा छंद ॥

हरक के मारे व कर, राया कहर काठ।
इ.स. सरक स प पकर, पुरुष मोदे गठ।। २४॥
सम्मुम्मम समस्म मुद्दा सार्थनी (क्टमा) मुंद सहस्म करील करील

जामसार प्रशासन

मार्दे मार्टे वर्षे वरही, कार्दे दूनी कीर्य है। पार्दे पार्दे वर्षे होधां, कार्ये को ना कीर्मे है।। मीक्षी कोर्दे जावीं भेदर, सो वी इन में गांदी है। पांचे मम्मा सरदंगों में, माक्षी पूर्वे मांदी हैं।। २६।।

भाग नजा कारता के, आवशा पूर्व नाहा हूं।। यह 11 स्वयं द्वितीय भगायं सब्द हूं रीपक (इक्जाल) छेंदलक्ष्य यथा:-स्वयार सागन बसाव क स्वांतह क्षेत्रेश्वर तात वर्ष पढ़ उत्तरहुं। स्व<sup>र</sup>क विचार को तात्र साहत, तक्षय होवा कर्युद अपरहुं।।३०॥ सम्बद्धीय जगायं मद्भा हूं मेडीडीया (इक्जाल) नाम छेंद सवस्य प्रया

सम द्विती जनाय गया हूं जीहोदाश (स्वताक) ताथ हेर कथा प्रवास वर्षे पर नेर सनम्म विकास, करी दश हो निज क स बताय : सामस दूरत लोका सात, करी दश हो निज क स हाता । (स्वा) सम्बद्ध तराय मात्र करी दश मोतिकन्ता हाता । (स्वा) सम्बद्ध तराय मात्र हो निज क स्वत् स्वता स्वाः— सम्बद्ध देश सम्बद्ध हो नहीं देश दशे हो एक क स्वत् में।

सब कोइस मण क्रमिन्त गडी, कहि जारया ठोडक व्हंब कही ॥२६॥ ४ विचारक

280

माका विक्रस खेल व्यव पंचय नमसी हु' करुत नयन" नाम छंद सच्चा वर्धान क्या:-मति गति चवति भवि करहु, नगन चच गिन चतुर बहु । परकारवस साथ वह चर, तक्त्र सवन इस वर कर II Bo II व्यय प्रस्तव थगवा गया व असंग्रहाति(इकताल)मान संद सक्या वया:-परे प्यार बन्धर की साथ कीते. अभी कीस संगा सबै और शेरी । यही पूर्व में भेद बाह्य हिया है. भगी राम हांदा मर्जनप्रया है।(३०॥-भय सप्तर रगव गय द्व'कापिनी पोडन(इक्ताल)खंद नाम नगय यवाः वेद रागान की मेल वार्ने करें, बीब मत्ता वर्षे बर्ब मांड वरें । पूर्व वासी इसी भारके लोजिये, कामिती मोड्नों संद वीं कीजिये।।३२॥

स्त्र सच्छा तथात् पात्रु हैं नाश्मी(इडास)नाद घर क्याय वर्गनंक्याः श्राचे वर्ष पेत्र वनात्र इं. चात्र, श्रीधू 'सत्री तथ मेत्री वर्ष साथ । साथी दश्ची पेत्र वेश्वी कंत्र तथात्री साथा मेत्र दश्ची साथात्रश् स्त्र क्युपुत प्रस्तित्र तारात्र (इडास) प्रद क्याय वर्गन्य व्याप्त क्याय त्रीय तथि तथि साथा हुए स्त्र वर्षात्र विवाद में कुली तथित हुए स्त्र कोल्यू साथा। इंक्ष मां कर्म के इन्द्र काल्यात्र

ब्दी जु पूर्व बीच में बराय वंद ज्ञानिये ॥३४॥

कथ सुधु पुरु सम्बन्धित प्रवाशका हुँद स्वयंत्र वर्ष्टनम् यथाः— हु एक एक कांवरे, तहु गुरु वस् (०) करे । कुछ म कारते भी, प्रमाण सुध में कडे ॥३०॥

कव गुरुशपु सम्बन्धित विन्सिक नाम छंद लक्षण वर्धेनव पद्याः----वाट क क ह विद्यान, रोह भी शपु विसाय। पूर्व केंद्र प्रक्रिजान, मस्त्रिकाय व्ये वर्धान (१५६॥

अप कमल नाम छंद छत्त्व वर्धनम् ययाः— पहिल वसस्ति क्रिके, पुतिस समर्थे दिये। फिर तहु गुरु क्लिं, क्यल क्ष्ट्रिशीलये॥रुआ

चिर वह गुरु किंगे, काल किंदू शीवने ॥१०॥ वय यगव मुंबाई हुनेगी संख नारी नाम खूंद सम्बद्ध वथाः---मरी शेष करें, गुरु किल निल्ने । दर्शे नच सारी भवी संख नारे॥१०॥

क्षय कर्रुं सोडीदान बांस्त्रीं नाव हंद स्वयस्य वर्षेत्रम यथाः— होहः— स्वयत्र होय स्ट ए० वर्, ऐसे दह स्ट चार । स्व काठ दृष्ट एक में, सामित छंद निहार ॥३६॥

क्षण काठ इक पक में, मातांत कंद्र, निहार 11इ६।। प्रसन्त्रह होप बड़ो पड़ जोदि । व्हें मिरवार करों अब पार 11४०।। क्षय प्रथम समझ मझ स कंद्र नीटक निस्नका नाम कंद्र सन्दर्शययहा

रोहा— सगय दोध सबमें बरी, वह अंबे पद होय । सन आठ.इक एक में, विज्ञका नामें छोप ॥५८॥



सोरटा भेदः— पदिसै श्रीजै म्यार, तेरै व्यारे दुविय पद । चीरी मात्रा स्थार, सोदी \*\*\* 1 ॥৮१॥ सोरहा सीडो--- वहन्या निय बरतार, बग सगझी संपै सुबस । बार सकी ही हार. नहीं ही सर्वो ... । ।।४२।। व्यथ गाहा खंद सवय वर्णनम् यथाः — मार्दे हो इस कीथे, महारह करह उसे तीसे । वद वब चौरी गाई, पुर्व्य गाहा भारती नाम ॥ १३।। श्रव उन्माहा नाम हुद शत्तव वर्शनम् ययाः---भठ सात दसा विश्वमें परश्, समकी इस दस मान । मधी पूर्व कवि नारख सुनहू, चन्नाहा पहिचान ॥१४॥ व्यव मुद्रिका नाम संद सत्त्व वर्धानय वधाः--र्वासे पर तेर धरी, दर्ज में सोसे बर क्रीजें। सर्वे पुरुवका सद की, गिन कहाबन मत कर दीने ॥: ४॥ भव चौनाई नाव छंद सच्या वर्शनम यथाः ---पुर बाठ मचा किर कर सात, सब पह बांडें पनरे खात। मठ सरा बचा वति विति वरी, संय चौवर्ड ऐसी करो।(KSI) भय महिल्ल नाम खंद खचेवा बर्चनम् यथाः---दीमधिक अबूर पर कीचे, ये यट वस मचा शिव सीचे ।

कत दौरम की नियम न बरिये, ऐसे संद क्राहिन्से कांग्से ।।।।

यही लक्षित गति खलित वर नाम, खँदैं पूर्व रकार्ते ॥१३॥ अस अनुकूला खंद लक्षण वर्षनम् यवाः----आर् क्यारी अगन विकार्ते, हो गुरु आर्ते लहु चट सामें। अत गुरु हो किर चर कीर्ते, मूं अनुकूला समय अहीत्रे ॥१४॥ 325 श्रम हाकल छंद सच्च वर्सनम् यथाः —

इतमें मत चौरस मेल, ये से स्वार पर बर भेल । भी जत एक पछ तत दोय. विरणी समय डावल होय ॥६४॥

ष्यथ चित्रपदा नाय छंद सचग्र वर्श्वन यथाः--होब भगवण करीचे, ज्यों गुरु दी घर दीचें।

पूर्व कता रवि कार्ये, चित्र परा कदि नार्मे ॥६६॥ क्या कदिये हुम ही सुं, तूं सब जाया सबे सूं। हो ब्रह्मशानिधि तारी. मो भव पर बतारी ॥१९०।

अथ पर्वगम नाम छंद गरोनम् यथाः— पहिसे कर भूग्यार, और इसह घरी। पर्में नत इस्बोस, रगण व्यंत करी।

बर कवि घर मति क्षित्, सरम कति की पदे। र्खंद प्रयंगम नाम, **मारख इसी क**ड्डे ॥६मा। क्षय रक्षांचल नाम संद लख्या नर्यानम् ययाः —

कृरिये इंड इस व्यक्ति, बहुर इस तीन विश्वाचे । संब गया चौदीस. कही वा मेख निवाप ॥ यति सति कर संभार, नांग कहि छंद रसावस । इद सक्त्य पूर्वेकि, जुनदि बीठी चति वी



श्रव हरवरानाव छंद सदास वर्धनं यथाः--विश्वे इस दो इक वरें, दस दूवे दोने ।

इय क्लब स्ं इटपट, नारय कहि कीने ॥५४॥ स्वयं सहटा नाम खंद सचय वर्शनम् यथाः—

पुर तें इस क्षेत्रे कठ घर चेले, तीले इक इस ठाम । गुरुवीस् मच्चा सब संजुचा, कांव गृह कडू चाम ॥ यह मत्र जुत साथे कहत कराये, स्रति " वाति कर विसराम ॥ जरसा कडू करिये चास कपरिये, स्रंत मरहटा नाम ॥७५॥

नारण कर्द्र करिये चाव क्यारिये, तर्द्र मरहटा नाम ।। ७५॥ स्वयं लीकावती नाथ खंद स्वच्यं वर्धनम् यथा — पुर तें वर्तत एक मरे सहारें, दूनो वया नव कर करें स्वयं दे बत्तीस स्वज्ञा हरू पड़ में, सेंसे च्यक हैं माहि घरें ॥ स्वयं दे बत्तीस स्वज्ञा हरू पड़ में, सेंसे च्यक हैं माहि घरें ॥

सन है बर्जास क्या एक पर में, क्या च्या मारा घर स इनमें मही नियत को को गया की, दक गुरु हुए को व गई स अवस्य द मांक्यो पूर्व भावयों, वो बीकावित को बदे स्थाप्त क्या पीमावती नाव केंद्र सम्बद्ध वर्णमम् यथाः—

क्षय पीपावती बाव छंद समय वर्णनम् यथाः— पुरती विरत सोस को कीसे, तूनी बोह इसी पर शीती। सर वसीस कहा माझीते, सेटे स्थास सम राक्षति। क्षयर गांव की विकाद माने, संते हो गुरु खिली स्पारी।

माका विञ्चल होंद	33,5
वहि नारख द पूर्वे गाये, स्रो वीमावति छंद बदाये ॥	59 II
अय गीया नाम छंद लच्च वर्णनम् यथाः—	
हुर सोलें कीचें एक वित में, फेर दो दस में किये । कर काठ बोर्सु मात दर्* में, ब्यार देलें में लिये ॥	
नहिं सह गुरू का भेद इसमें, राग्य कांते राक्षियें।	
में कर् पूरव कथन सेती, छंद गोवा भासिये॥ 🖛 ॥	
श्रथ पैकी नाग इंद लवस वर्शनम् वधाः—	
इस दस दो पूर्रे मरिये, व्यी परा दस संस्था क्रेडिये।	

न गुरु कह का मेर सामें, तब बात शिक वर क्रीनिये। भा के विश्व ने दस्ती में, इस राह्य कर है बक्का विदेश पूर्व बक की जुलन पूर्व में, वहरें की बार्तियों। 10 सा क्षम कह कुंदर सामग्र वर्षान्य पर्या:— क्षमण नवसे साम वार्थि, प्रकारस पूर्वसे, तीले बात सता मर क्रीने। भीमें कर दब पर, भीमट चार पोर्मिन डोड़ी।

रावा सवस्य क्षत्र कही, ककी पूरव पाम। जब वार्में दोडा किसे, रूव संद स्ट्रिंगाम।। ८०॥

11 E

280 श्रद क्र'टिसमा नाप छंद लचल वर्षेनस् यथाः---आहें होड़ा लंब बर, शेडक वार्गे देय। की काम कर ज़िली, मो हो देर करेव II को को हेर **कहेय.** पाय प्रश्न करी हैं । इक तक में चौदीस कहा गिया गिया मेहीये ।। माकरी सम्रम्म थह, पूर्व के मत संबादे । gg कुंबलिया नाम, किसे ग़ुरू का ते काहै ॥ वर ॥ क्रम हु'बलिया छंद,हुनि स्तरिर्येषाः---एंकी बारु हानि बनन की, शैत एक नहि दोय । के चित्र फिर चेको चरी, फिरै गोचरी सोय II किरी तीकरी सोच, शत दिन वन में पासा। एक विकस सथ विरक्ष, वहें तर पंच प्रवासा ॥ पन निह्नपे नहीं रहे. उन्हों दिस विन मंत्री। **बहै** नारस कवि मींत, मुनी जे ब्यावस कंसी II पर II मध इंडलिनी खंद सच्च वर्णनम् यथाः---विसमें करें क्या बीते बढ़ार पंच दस चीये रोडक आर्गे दीजे । भयों पूर्व कंश्वनी संद एक ब्रह्मनी संद पहें है केर प्रशानि ।। इक्सी तेपनं सात सबै पर में कर बीजी।।

माना विशव छंड और नहीं बहु भेद, खंत बाईं तुब इसमें। किसे वही है रहिस, पदम ते गाहा विसमें ॥ =3 ॥ ध्यय रंगिका नाग छंद अचल वर्णनम् यथाः---ष्ट्रट हो कीजै प्रथम साथ, इसै में बाठ विसाय : ती ही कार पर कर बक्का विचार ॥ वोंडी बर्त <sup>१२</sup> समस कच्छन,सोई शाहु विश्वपद्धन पूर्व दशान प्रसान, करी हैंदें करार ह श्रीर गण की गिरहत जोड़ि,स्पेंडी मात कीठ<sup>\*६</sup>ठांडि. बरन ' "बरबचीस एक तुक बार कते तुक क्रम क्ष**ड़ घर और** नांडि भे*र फि*र वेशी पाल बडी छंद रंगिका उपार ॥ 🖘 ॥ श्रय रंगी नाम छंद सचय वर्षनम् वदाः---प्रक्रिये भी बांच जानिये. इसे साह ठांनिये. तीवी पते भानियं भार पांच है। बरन अठाशीस घरी, मूं च्यार तुक भरी, याकी चाल में करी का जुलत है। बढ़ गुरू च त रासिये, फबकड़ी भासिये,मति बत दासिये व्या एकत है। गरु बह गिरात नहीं, यही जानजी सही, पूर्व संदि एक ही रंगियों कहें।। प्रः

१२ जिंद १६ कीन १४ करन

चाव पनावा नाव छंद र वण वर्शनम् यथाः---धर हैं सवार कर भरी बरन पोडस वार्ते भागे भरे जाठ फेर सात कोक्रि सर्वे इसतीस की प्रमाश्य वान एके पर. ऐसे प्रति उद्धति तें स्वार पास् क्रीकिये । क्षांत्रें क्षव दीरप त्यं गया गया भेद नांदि श्रंत मांहि दोय सीय सह गरू पहिंचे। फ्रेड केंद्र वर्ष देख, दशो ' सो चरोप तेल जारश बात याझ प्रसादरी बहिरी ।। यह ।। काब दर्पेका खंद नाम सञ्चल वर्शनम यथाः--बर ब्याड समझ निकाय भरें, यद भेद वही बढि जान करी। इस एक तर्कें सब अंक प्रमाया, बीस रू बार विकार धरी।।

इस एक तुर्के सब भंक पनायहु, गीस रु बार विश्वार परी।। इनमें कहु और क्ट्रें निंह मेर, कहा दुग तीस नहीं विसरी। कहि नारण सब्य सुनी इस बाहाहे, दुर्मक बंद सही उपरी।।(24)।

काय बचापंद हंद समय बचैनम् यथाः — बाद गुरुव भागन बहै, सा यह पर्दे गुरु हो किर होते । तेन सभा निवास कु कपर,मात प्राचित को गित कोते ॥ सम्बन्ध अने मुख्यन बना हु, मेरू हती हम सुरं सबस्थे ।

क्षत देशका नाम हो सबस पर्योत्स प्रयाः— क्षत्र भूक्षण नाम हो सबस पर्योत्स प्रयाः— क्षिते बाठ बनाम्न की साथ याई बहु, और तो भेद बाकी नहीं हैं। सबै बल बाडीस बाडीस पुरी परी, मां क पीरीस नामें सही है।

ब्रह्म च्यार ऐसी मरी, पात्र नाहो करी, नाहके मुख्या भी मुहाये। दुर तात्र होने, हसी गण सोले, रही हात्र ती मुहत्या प्रंत नाने ILLON स्त्रम स्वेपा खुद स्थाया नर्शनम् यवाः— भुर से विरत मरी इत पर हुं पय इस की दूजी कर नेता।

धुर तें विरत भरी दश घट धुं पश दश की दशी कर सेख । खब यत तीश पठ कर पद में, मां क गुरू वह भावें भेता ॥ भीर न कोई गया की शिवान, मां क न नियशी पार्में कोच । मेराक्षे सें चात दसी की, नारव धंद धनदश सोच ॥ २१॥ १६४ शामधार प्रभावकी अथ स्टपरी चाल यूं अप्यप नाम संदेश सच्चा वर्षोनम् स्वा: — निहं शहु दीरच निका, चाठ शीर सह करिये। स्वारे तेरे अच्च आस. चाठ तक अधि ।

यह रक्षाव्य तम्म, दूसरे तसुष्ट बहिये। बर्जे से बी दिला, रंथ दस रेल्ड प्यस्थे। व्यस पर पर वार्जे डी रहे, दस्में पर फटलीस महि समी पर्ण पूर्व पांच पर, दूसप्य वह वहिशा कि है। है। सम्ब सार्ज दूसे देशीय रामधी सम्बन्धित साटक नाव वह बाय वर्ष नेम प्यामें

मादि हो दस व द निसंद की में दूनी दरे सातह ।

पंदियं कर ने साथ साथ सीचे से प्राप्त पार्य कर देश पार्य पार्य प्राप्त कर सार्थ, न ने हुए राविष्टे पर में नी नी पर वच्च पार्य प्राप्त ने के साथ कर मिर्ट में प्राप्त कर पार्ट में प्राप्त कर पार्ट में ने मान कर पार्ट में प्राप्त कर मान कर मान

रगन घर चांत ते, कमक इस मंत ते ॥ ६४ ॥

मासा पिंगस खंद श्रम मीना कोड़ नाम छंद लच्छ वर्धनस प्रधाः---च्यान प्राणां करिये चेदा कराती प्रारिते । वैक कहतें गुरु है, नामदु मीनाकिङ्ग है।। १६।। मय वहा रूपनी नाम खंद सचय वर्जनम् यथाः-तीन मेळी रगवस भता,यक में पन्नरे ह कता । बा तरे बबार इंडो करी, यूं महा अधिन गण्यों नरी ॥ ६७ ॥ श्चम पाइच छंद सम्मा वर्णनम् यथाः --चार्दे लाडे ज्यान बरे, ताके चारी भगन भरे । बाबी कारी <sup>१६</sup>सतन गडी, वीं पाईची समक्रिकडी ॥ ६८ ॥ क्रम इन्द्रकता नाम छंद सचय नर्शनम पथाः-कार्ने साम्मी कर दोध कीते. यां ते जगरते किर एक दीजे । कारत हो गढ पार शब्दे, सो इन्द्र बका बिसुपेश भारते॥ ६६ ॥ बाध उपनात उपेन्द्र दव्या गुरु एकताल हंद्र सचन वर्शनम् यथाः-बरंड प्रकेश अगव्या कीरी, विश्वे विशे एक कारण दीवें । बहुत हो बीड विचार शसी. वर्षेन्द्र वसा वितुषेन्द्र भासी ॥१००॥ बार पण्डतात्र कप (हक्रतास) संद सच्या वर्णनम यथा:-नमरव विश्वमें पर्द सुवारे, नवर' एक ग्रह समें वधारे। इस विश्व संद्यु धारके करीजे,इन रचना वर पुण्यितामहीजे "॥१०१ भाग ह त विलंबित गुरु 'ताल लंद सचन वर्षनम् यथाः-त्रान<sup>्र</sup>ंदक सरान्त हुए करी, तिनदि संतर गसकिती परी।

१६, करी १७ नजर, १म मधिने, १६ एक, २० नगन।

255 इस विधे साम सच्छन सीविये, द्रव पिसंबित संद करीविये।१०० क्षत्र इतुव विचित्रा छंद असल वर्धनम् यथाः---प्रवास जावार्णे बनाय करोजें, लगाए बनावर्गे फिर घर दीजें । इस विवसमें विरण्ड जारी, इसम विचित्रा रहिस विचारी ॥१०३ अथ पुरु एक तास स्रान्त्रशी खूंद स्वचल वर्शनम् यथाः -स्थ्य सार्में क्षयु लोव रगण्या है, च्यार ऐसे मरि एक पर्दें कहै। और वार्षे मही भेद को जानिहै,संशिक्षी संद की नाम वसानिये।।१०४। श्रथ सपु दोय तास मखिमाता नाम छंद सचय वर्शनम् यथाः-हो हो किर तीथो गण्यी समझील बच्चे पर कांची च्याक पर बीती। वर्ती बाद सीरें भेद नहीं जानी ऐसें मशिमासा संदी पहिशानी॥tok क्षत्र सच दीय ताल सस्तिता संद क्षत्रम्य वर्णनम् यथाः a में meru and करोड़िये, सहो रही सगया के परीक्षिये। चौदो जनन्या रत्यांच धरिये, मासे सुमुद्धि सक्तित उत्पारिये ॥१०६॥ प्रयम क्षेत्र गुरू काल दीने, बहै बहु दीय काल (दी दी)रीने, था ते गुरु बाख दो एक एवं में दीने विज्यदेशी नाम खंद सञ्चल वर्ष नम् यथाः-्यक्षे असी जेलादेवी प्रयोजी, यूं पूर्वे भारती तक मुझे स्थाजी।१००मा

भक्ता विकास खेल इसी नवपासिनो छंद सच्छ वर्छन्छ यथाः—

इस विय की बिये सुगन घोरी, नगन बगन्त दो तथ विचारी । धरान्त यगन्त यं समग्र क्रीते. यह तब मालिसी लहत क्रीती।१०८॥

श्रम चना नान खंद लचना नर्शनत यथाः — . जनक दब करें बगम्या दोव है, प्रथम सग वसे फेर दो चीवडें । इस विधि वति सुं ऋ'त दीर्थे गहै हह सक्षन भरे सो समा नाम है।।१०६।।

बाध वक्त बयुर नाव छंद सच्छ वर्धनम् यदाः — कोनी बादि प्यामगर्ज फेर अनवी,ताने बाने दोव नवी मेख सनवी। च्यारे नवे क्या घरी ने पहपूरे आते दोले एक गुरु(पद)मण सपूरे।११०

क्रम मंत्र भावणी साथ खंड सक्तम वर्गनम वर्गाः — धरें करी वक जगकें तमस्य कंबिरी घरीजे सगण्य में सनव्य कं

परंत दीवे गुर सु शुद्ध रासची,क्दो व नामें प्रवर मंजू मायखी॥१११॥ ष्मथ पाया नाम छड क्षप्रस वर्षा नम यथाः---कारें दीतें यांच गुढ़ समग्र सीजें. तेसें ही कीके मनवीं को गुढ़ दीजें ऐसे बार प्यार पर असर हैरे,वसा सवीसं भरमावा प्रति देरें॥११२॥

बाब प्रहरण कलिका नाम संद लक्षण नग नग यथा-प्रथम करह दो दतगन मगन हुं, फिर दिह परिने नगन सगुरुहुं। पन कर<sup>ा र</sup>िमीके क्या पट स्थिता, सर वर मदि हैं तहरता स्थिता ॥१०३ ष्मय वनन्त विसका नाम क्षेत्र सच्छ वर्षा नम् यदाः-आहे करे तथन फेर मगरमा कीमें, तैनें किये करन दोध गुरु दू दीनें

ste	क्षका विशव व द
ामें सुमार बरिने वर का'क मेसी,कार्मी व	सन्त तिक्रका कवि सुद्धि मेची॥११४
प्रव सिंहोद्दता नाम छंद श्रन्य वर्षा	नम् यथाः
	(चने कटल एक सम विवे <b>द</b>
वारी प्रवस्य कार्यों "फिर दो भगव्या, व ब्रीमें सम्राट करिये कति वक्त वार,वसर्विर	१ दशक्षयं समग्र दश्द क्रमूच चन्छ। होय कहिये करिये निष्पारशश्यकः।
क्या का प्राप्तकी जाब संद लयमा व	वृत्तव वधाः —
क्षेत्र काव्य पुर केर भगवा देव. तही अन्य काव्य प्रतिवेश को प्रशंक में हैं	वही करतु दीय अगव्या सेय । तमु कर क्रिये तथु साधवीय ।?१०
श्रव इन्दुबदना नाम झंद छत्तव वस	नव यथाः—
	।स <sup>ा</sup> '(द्य संगन हु नगन भ <b>र</b> ग)
होय तुरु क'त परने सु पर प्रे.र-ड व	(ना इस किथे कर सन्देशशृहन।
कार क्रमोबा नाव संद सच्छ दर्श	न्द यथाः —
कार्त बार मगरवाँ दीवी, फेर सगरवाँ	, सः बागै मगर्वे न्युं खुं
A केन प्रशासम्बद्धी ।	
वा रीत करिये दो करते दीह परीक्षे,	राची नाम बस्रोसा सार्वे वच
करोक्षे ॥११६॥	
सय शशिकता नाग छंद स्वय व	ह्यान्य यथाः
पुर बढ नगन किर इक सगन है, इस	विवयरकर पतुर पर गर्दै।
२४ दोच २४ सम्बद्ध	२१ वस

पाका पिगक क र शिन पर दसहि वर इसमहि कहा, पण दस वरस विष्ट<sup>२</sup>ण्डह शक्ति itees it man क्रथ पश्चित्रस् निकर नाम छंद समस्य नर्शानम यथाः प्रथम चन्न समित सगम सुं. चतुर चतुर वर करत समित सं बाबर स्थाहि सह गुरु परम भरे, बाठ सग बाति हुव बावि गुरु तिकरें ॥ १२१ ॥ श्रथ मालिनी नाम छंद लच्छ पर्य नम यथा। जराज इस करोजें फेर सन्ने परीजें, बनन बगन दोजें कब पूरी अरोजें द्या दिय रचनार्वे साथिये भेद यामें, बढ़ हव तह कार्ये साविती क्रंट नामें ॥ १२२ ॥ श्रद प्रसद्धक नाव होंद सचय वर्षा नन यथा----मारा करें प्रथमन कराई वरोजिये,बगवा जगरून बार रण कांद्रोजिये। करह सुबार बात पर तीन चहुके, हह विच बंद कात कहिये प्रसारक ध्या कता नाम छंद सध्य वर्षांनम पथाः---

काय कहा जान और समझ वर्ण नम मना:— काई के हुरे बाग जगन पर होजें, उनते दुर नमन बगन वर बोर्ज पता कोलें ते मन नम रस कर मेक्ष, उनते कहें तुम वर किन तर एका 11 529 11

भय पाद्रसेखा नाग हंद श्रवत वस नव यथाः— सार्वे वारे भगवत तही राजको राजको र स्वीमे,

बारी सरक्या राजी त्यू बगण्या दोव दोवी । su Basks २५ क चीले

शक्षी संभार असे पूर्वे कदि सात शेया। ताक' बार्ड समार' य' होब है चन्द्र जेका ४१२४। काश प्रावस साम विज्ञानित नाय लंद रूपसा वस नय पथा:---यार समार के भगन धर करहे कहा ताहि तस पर वर रगन शवि नरह । पेर विचे नगरक तिव गुरु इक घरने । नाम कड़ें बिश्च अपम गळ विज्ञसरी ११२६ छ क्रम ब्रमाओं साह लंद सलस वर्गानव यथा-धर वरिवे नगरस जगर्वे भगरस कावै, अगरा रगवरा देश पद व्यात दीह कामें , पत्तर विभार बीस दय मात सर्व दीते । इस विष परवें दक्षित वातानीय दोते । १२० ।। श्रथ शिक्षाची नाथ इंद्र लचना वर्षा नम यथाः ह्रवामी साधीओं यगक शगकों गगान्त करे. फिर बड़ेंद्र होजी सगय भगकों हु मुख वरी । वदन्ते हो थारे इक सह ग्रुक्तक्षवा मधी. रसें रहें वर्ष वनर्क रहे नामें शिक्षरकी ॥१९८॥ काब पृथ्वी नाम हांद्र सचाय गर्शनस यथा — पुरें बगव दे किरी समय मूं अगरवें बरे, पक्षी बगग्र कीहरी याज पार शंचे भरे ।

माता विनल खंड (दर्वे बहुव कांत में गुर इवेक वेड स्पे.

दन कहुक सत्य गुर इक्क देह रथ, यही सद्धन क्या है मठ वर्षे पुष्यक्षी रूपे ॥ १२६ ॥ वर्ष यस प्रतिष्ठ नाव केंद्र समझ सर्वोच्या गया

भाव पन पत्र पांतर नान हंद सच्च वर्धनम् प्रया-बाद दिये भावता राजी नाम पिर क्रिके, कांद्र वर्ती भावता स्वर्णी क्रम पराम विथे।

वादि विभे करोजन करें व्यक्ति कक्षीत करी, वाद्य येवण्य पतितें दस सम संपति ॥ १३० ॥ क्षम्य दश्यिते नाम ह्यंद संद्रया वर्षानक् स्था-

क्षम इस्ति नान वह ताव्य वंशन वंशा— पुर भर दिने नगरों हैं आप्य स्वेस्त्र, मन्य रमने मूं ही तोने प्राच्या विशे बहु ! पदम दस्ति रोटें वर्डे यूर्ण पत्र व गहै, पद पद वर्ड क्षों क्षेत्रें क्षेत्रीं हसिसी बहै ॥ १२१ ॥

चरम शरे दे देवें के हैं हैं की हर बहै, बट पर को कई देहें हैं हैं होरे हो कहें ॥ १११ ॥ इसम मन्द्राकांता नाम कंट समझ दर्कने पर नाम-कर रोजे सामग्र ' सामी समझ देवाने देव सामी,

अर राज बनवा '' बनवा बनावा कर काक, पांडे कीजे तत्त्व वस्त्रे मां व दो दोह ठायी । स्रोतं भारे सत्त्व त्या कुं पार पूरी कहायी, सन्दान्त्राना भड यह संगे वच्च बाढी बहायी ॥ १३२ ॥

साथा नहुं दक्ष नाव छह साथ वर्ष बाध बहुत्व । साथा नहुं दक्ष नाव छह सच्च वर्धनम् यथा — अयम परे साध्य क्षाची मनचै वरिने,

⇔का विगम खंद प्रसंद रही सगरम् सगरी स गुरु भरिये । इस विथ क्षेत्रिये पन्द दो इक म क तुर्के, दस दस दोव मात पर में कर नहीं रहे ॥ १६३ ॥ स्रव इसमितल्ला वेद्विता नाग संद लचकाम् यया — कार बारीने समक तसयी फेर की ने नगण्यी ता आगे सीमें बगय यगरी और शरी बगवरी ॥ या चाले इंडा इसुमित कता वेकिता नांग जांगी, वी वसे कोजे वया पर सरी सक्ती ह रिवासी ॥ १३४॥ अथ मेचनिस्प्रतिता नाम छंद सच्छ बेर्छतम् यमा-क्रीजं बादें वं कास सम्मी तमार्थे लं सगण्डें. किरि पाने दोने राग्य राग्दी स त में दोह भण्यें । इसी शीर्त यारे तिमदि बदिये मेच विस्कृतिता है. भनी कहें की जे यह पढ़ समें अस बाकी बहा है ।। ११६ ॥ भव सार् हिम्कीदित नाम छंद सदासम गया-बार्वे पार बाण्य केर सगरी अरण्य पाई धरे, ब्यानं वादि समयम् मेस राजी दणम्य दुत्री करें । ऐहे शुद्ध विचार पाय भरिने दीहंक दे च त है, बारे वच्छ मुधार जन करिये सार् कविकीविते॥ १६६॥ seu सबदना नाम स्टेट सच्च वर्धनम यथा---कार्दे क्रेजे विचारी मगदा रगवाह मगण्या करिये,

माबा विगत बांब ताचे मारी करीचे नवस बतस के अवस्थ परिये। पत्तें दोव दीलें सद गुर वरती पूर्वेक वचना. वादी रीते सवारी छ। सम् अतिर्वे नामें सुबद्धा ॥ १३०॥ बाध सुरवरा नाम छंट साचवान यथा ---अन्दें होते सनकरी किर राजा वरे सनकर सेव्य होती. रवोंडी सीम मनवरी शक्तिय (तक) तब बतनवी पेर कीने । बीमों को लांड भेदा सब सक व्यक्ति वार संभार राखे. भेंसे अंडे समारि कत्रिवर करिये सगवरा पूर्व भारते ॥१३०॥

व्यथ प्रसदक मान संद सत्त्वा वर्शनम यदा-बाद करीतिये सगग्रह राज्य नजरी राज्य करिये, तादि तही दिये नगरा के पिरि राया व नमन्या परिने ।

वा विकि मारके गया परे इकेड गुरु वर्गत दे पर भरे, दो बाद बादरें बढ़ि गर्दें बढ़ी बादन सु' प्रमद्रह करें ॥१२६॥ ध्यय कर्पलसिंह नाम क्रंद सचय नर्सनम् नथा--

परि परिये नवाच्या बाजि बाज्या किर दीतिने अपि परे, वित्रक्षि कर्जे बगस्या बगसी दिय दक्षि बगस्य बगस्य भरे । इस विपर्ते सब तता और शह तुरुप व त में तुन करे.

इक दश दो दसे वहि करें बदारवशकितास्य चाल पश्चित्रे धरप्रशा

धारों घर है। समस्ती नांत बतित नहि बरहु पर तमती, वा गाई रोजें नगरणे सरब बहु जदन नगन तिब धने। कों से कोंके जन्मरं जा यह बहुद गुरुव बरह दिस परे, गामस्ति । तो बंदा अवस्त्रण यब इस बति युक्त करें। १६६१। अस्य तमी नांव बहुं सुक्षय करोजन यथा—

व्यथ समाजीया नाम छंड जवाबा वर्णवय वथा ---

कार करीमें साम किर करें करण और नाम्ह पर होते, केर समये करहें समय केंगारि वर्षे 32 समझ करेंग्रें। दोव "- माम्बी किर समय केंग्रें पार मुख्य कर हमती, होच होते के बित पड़ कर समय केंग्रें कर कर कमी गाइश्स अब क्रेंग्रें करा नाम करेंग्रें समुख्य कर्मान

सब कार पर गांग कर विश्व प्रचान न पराशादिक की सम्मी दन करहा नकत कर पर के,
विद्व वर्ष में एक कारणे पण क्या कर क्षार कर कि के
व्हा वर्ष में में एक कारणे पण क्या कर क्षार कर मित्र के
व्हा के कोई के समाची करना चुट एहं इक क्षार गई,
भी परा के नाम नावीने किन समय कारण करने क्षार कहीं, शाहि स्थार
सम्भावित कि नी मान कर कारण करने कर कार्य करीं

सम्र इत्तव विजु मित्र नाथ स्ट्र सम्मा ब्याम् यमा— सम्दे पारे दो म्हण्ये तिहर तथ्य ब्याम्य यमा— सम्दे पारे दो म्हण्ये त्रिक मन्या मनुष्ठ पुर वश्वति वीकिने, पार्वे पारे दो म्हण्ये त्रिक मन्या भनुष्ठ प्रते राजियाह सीहिये। साहे स्थाने समस्यों के स्टर करत साहित्य से भन्नी पर कोड़ते. वाता दिक्त संद पूर्वे भावनी ऐसी बंदा ग्रामतर सुरश्चि नवरे मुखंग दिव मिनी॥१४४ बाध सन्ध परिसमाप्ति प्रशंसा कथना --डोहर १ आद मध्य मध्य घरन, सपुरन के हेव। स्मन्तिम यञ्चल हर्ष की. बारन कवि संबेश ॥ १०० ॥ को दक्षि संधन की किया, शको बीज केट। गांकन निकरी मधन की. ज्यान खेद निवेध ॥ १५६॥ परिसंपाणि मध्ये महे, इह छण कावास । भीका बिन कपि विरम को, को करि सके प्रयास मा १५७ ॥ जब दोपे मेर सम. और नको उठांच। स्यू शरीर सब गण्ड सबस्क करतर गण्ड उत्तरंत ॥ १४८ ॥ तीर्वाम बाबी सारश, सल तै गई प्रवट । बाते सरवर यथव में, विदा की कार्यात ॥ ३५० ॥ ताबै शिक्षा समान निम, भी जिन साम सरीता। ज्ञानसार भाषा रचरे, रत्नराव वयो शीरा ॥ १४० ॥



San	माका विशवः स्रंव
कोरके माम छंदः २०	त्रिमंगी नाम इद्द ४१
सोरठा भेदः २१	द्ररपटा नाम स द ४१
सेशठा बोड़ीः २२	मरहरा माम छ द ४३
गाद्वासम्बद्धाः २३	कोबामधी नाम स द ४४
बन्गाहा सम छदः २४	पौनावती नाम छ द ४४
पुलिकका नाम संय: २४	गीवा साम छांदः ४६
पोर्स्स सम हदः २६	पैक्षे नाम सदः ४०
पश्चित्व नात संय २०	सह समर्थंदः ४=
बोमर <b>हरसा</b> ,पाख जंदः २८	कु दक्षिया माम खंदा ११
मञ्जर क्रार नाम ध्येष; २६	कुं उक्तमी छंदः २०
विकोदा नाम छंदः ३०	रंगिका नाम खंद ४१
हरिपद नाम खंद ३१	रंगीः सम्बद्धः ४२:
शकित पद् नास छंद ३२	धनाकर नाम छद ४३
चानुकूता नाम संद ३३	दुर्मका नाम इदेर ५४
इन्डल नाम व्यव ३४	मत्तग्यंद नाम छंद ३३
चित्र पदा नाम छ्दं ३४	कर्या नाम और ४६
वर्ग नाम खंद ३६	स्ववा नाम संद १७
रसावक माम झ्य २०	संबद्धा नामां छ वे ४५
पदकी नाम क्षेत्र ३८	- यटपदी चा <b>स स्</b> अप्
दुषदिया नाम संद ३६	नाम क्षेत्र अस्ति
संबद्ध नाम कर ४०	·· सक्षी-पूर्वः लेखीयः <b>एएयी</b>

मांबा पिनर्स स्वा	şec
संसीत करन करें नु क्रम्य कर करें में क्रम्य कर क	स्वका किया ना संस्था मिरिका ना संस्था स्वित्ती ना स्वती स्वतीतिन के संस्था स्वतीतिन के संस्था स्वतीतिन के संस्था स्वतीतिन के संस्था मिरिका किया मिरिका सर्वेत को संस्था सर्वेत को संस्था सर्वेत की संस्था सर्वेत को संस्था
मणः सबूर आग हो र ४६ संजु आवारी नास हो र ४४ गास भाग हो र ४८ जिल्ला कालका सम्बद्ध	पुरुषी नाम स्पंत ६४४ बस्तत पुत्र प्रतित शाम स्पर्द्द इरिस्मी आमः स्पंत ६५ सन्ता कान्ता प्राप्त स्पंत ६५

ર•દ	माला पिंगल छंद
नकुटक नाम छंद् ६६	चारवसस्तित नाम छंद १०६
कुसुमित लता वेश्लिता नाम इदंद१००	मत्ताकोड़ानाम छंद १००
मेघ विस्कृतिता नाम छ द १०१	तन्वीनाम छंद १०८
शादू बिकोड़िमा नाम इदं १०२	कौंच पदानाम छ द १०६
सुबदना नाम छंद १०३	सुजंग विजृंभित नाम इदंद११०
स्राचरा नाम छ द १०४	
प्रभद्रक दाम छंद १०४	—इति छ दावि—
।। इति मास्तापिङ्गल छ्रं	इः सूची संपूर्णम् ॥



# वरिशिष्ट (१)

## अवतरण संग्रह

क्रम्ड पंक्रि ३४ २४ "अक्सरस्स अणंतमो भागो निक्क्यादिको चिटह।" 88 88F

३६ १६ वत्सन्ते वत्सत्त्व मत्त्वयः राज्ञाचे राज्ञाचो स्वातिकेः ।

. ४१ ७ 'तिसार्ण वास्याणे'। ( नमोखणं से ) ४१ १४ अन्वय सक्षणमाह—बत्सले वत्सन्वयन्त्रयः स्वरूप

सले परमात्मता सर्ल स् अथ व्यक्तिरेक सक्षण माड-तदाने तदासो व्यक्तिकः स्वस्त्याभावे प्रवस्तानामान ८१ ६ न रंगिळान घोइळा। (आचाराक्टे)

\* 39 348

८१ १३ "आरंभे नत्य वया" वयामुळे धम्मे पत्नते । · 0 34£ २१८ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ८१२० हियाए भुद्दाए निस्सेसाए अञ्जूनामित्ताए अनिस्स्रड

3 246 . ८२ १० पूरानिरारंभिया। ८३ ई मदुक्तिः--मारे मत के समत के करे इसई घोर।

जे आपण मत में नहीं, कई जिनागम चोर ॥ ( मतिप्रयोषद्धवीसी प्र० १७% )

( 884 ) ८४ १ असमं सुपत्तदाणं, अयुक्तपा चित्र कितिदाणं च। द्रमवि प्रक्तो समिश्री, तिन्तवि भोगाइवा इंति। ८४ ४ सन एव सनुष्याणां कारणं वंध मोक्स्योः। ( जानक्यनीति, पार्श्व नाय चरित्र ) ८४ ६ आसम आसमचर में हाये नाने किन विश्व आंकुं। कियां किणे तो इठकरिने इटकं वी ज्यास तजी पर वाकु हो।( आनन्द्यन कुंधुजिनस्तरन) ८६ ६ विवहारो विद्यालयं कं झरमत्वंच वंदए अरिहा--षावस्यक-नियुक्ती ८६ १२ किरिया बहुपत्त समा १८४ १६, ३६७-४, ३७६-८, ४१७ ३ (स्थानांगे) ८० ७ आसंद्रधन **वर्ड**—"निहरू एक आनंदो" पुनः निहचै सरम अनंत (पद नं०) ८८ १७ मदुक्तिः – बातम शुद्ध सरूप की, कारण जिनसत एक। हमसे मैंसे भेषपर कीच कियी एक मेक श ( सति-प्रयोध ऋतीसी वेख्ने प्र० १७६) १५१ १५ व्यक्त विद्यायवेत्ति अन्तं विना ग्ळायति ग्लानो अवति अल्ल कावक प्रताम करावि निष्पत्ति याच्य वस्रधातर तथावतीक्षितु महास्तुवह यः पयुत सूरादि प्रातरेव भुंखे कुरनहुष प्राय इसर्यः िभगवती सन् है १४१ २० सल्बेस पि तथेस कसाय निम्बद समें तथी नरिव

वं तेज नागक्यो सिद्धो बहसोबि अंवंती।। [ पुष्पमाद्या शक्रको ] १४२ १८ वर्षति मेच कुमासायाः, दिनानि इस पणा छ। मुसलमार प्रमाणेन क्या राष्ट्री तथा दिवा। १। १४३ १४ "बहा छाहो सहा लोहो, लाहा लोहोय बहुद दोय सास कणव कळ कोदीपवि न नवडा।" ( उत्तराम्बयन सत्र क० ८ गा०१७) १४४ १० अनुतं साहसं भाषा मुर्खत्यमति छोभता। अशीचं निर्देशनं च स्त्रीमां होना स्वभावता ॥ १४४ १४ "विवहार नयच्छेग तित्वच्छेओ तको भविको।" 1G 2 1G 2 188 8 ... १४५ १६ "ऋतेकानाम मुक्ति" अनुभूतिस्वरूपाचार्व इत व्याक्रस्य १४८ ६ १८६ ३ ३६८ ६ झान कियाम्या सोखः १४८ ३ हमें लागे कियादीणें हमा सल्यामिको किया १८६ पासंतो पंगलोवको बाबसाओय संबक्षो 285 So .. १५० १ कालो सहाय नियह पुष्पक्यं पुरसकारने पश्च २७१ समयाए सम्मतं एर्गते होइमिच्छर्यं ॥१॥ १६१ १६, १८६ १६, १८६ ६, ३६६-२२ वर्गते द्वीर मिण्डसं ( व्यवंश्व काको० स्रोक का पतुर्व ) १५० १३ जानंदचन—काळळनमि ळदि पंचनिद्वासस्यं ( अक्रिक स्तवन )

#### (189) १६२ १६ "जोसूं घट में प्राम है, तीसूं बीण बजाव"

१६८ २२"वेत की की पुरी, मधु केरी की छुटी" वहुं समयसार बास्ते कड़े से किया ने

१६० १६ जीवी जास सरण थय विष्यपुरुषे ।

१६१ १६ कालमानु पुष्कर पत्रवन्निक्पक्षेप। १६१ २० "सिद्ध सतातन जो कहुं, तो उपने विनसे कीन"

पुनरपि—सुद्ध स्वरूपी जो कई बंधन बोध विचार

न पटे संसारी दशा पुरुष पाप जीतार

» " (आमान्यन पेर् २१) **244** <. १६२ १६ कनकोपत्रवर पवह पुरुष तली, जोड़ी श्रनादि सुभाव

(आनन्द्रपन पद्मप्रम स्व०)

१६२ १८ ईकार प्रेरितो राज्येत स्वर्ग वा प्रवक्षमेयमा

१३३ १४ स्वरी करूं तो कल्ल नहीं, (आनन्द्यन पद नं०८१) १४''बट ब्रस्सय जिल और मनीजें' ( " नमिनावस्तवन)

१६७ १३ अणे समया बहुवे हु ता १६८ १२ वंशी पर धानास

१६ जिब कोहा बिबमामा

१६६ १७ सहते भिन्म झलगलुभव yor १४ आसमा ने परीसमा, परिसक्तते आसमा (आचाराने)

स्थिर १२ बाह्य कह बी कंत्रुं चहुत्रुं, से तो कहनो भाव । संबंध श्रेलिशिकर पर चढ्छ ते निज थातम भाव ॥

२८८ १४ ॥ ७ ॥ क्रोण किलाबसि टेड—गडवं १२ बादनामें क्स्

( 254 ) १७२ १६ दूरत हारी रे. सुनियत याह्र गाम । दे० । जिन देश्या विन पाइबीरे, गहिरे पानी चैठ हुं भूं बी कूबत करों, रहिय किनारे वेंठ। हुं०। १८६ ६ नमुकारसी वस नहीं, करतो कुर आदार भाषाबुद्ध ते सिद्ध हैं: कुरगह अणगार भाव शहरा जी महं, तो बहाविया की बार · टड्महार सुगते गयी, इता कीमी च्यार ( बोमद्कुत भावपदतिशिका ) १८६ २३ पढमें पीर सिक्सायं वीए मार्ग तीए गोबरि कार्य ३८३ च अधेपुणरचि सिक्सार्थरात्रे पहने पोरसि सिक्सार्थ वोए आमं तीए सवणकार्त चलते पुगरवि तिकार्त्य-१८७ २० सदस्ति—पर्वेकोटि देशोगताः जिया कठिन जिन कीन चलर बकरत नवक गति, अहार भाव में कीया। है। ( भाव ह्रतीसी ) १८८ १ ये: कियापान सः पन्तितः १६ आर्नदशन भूनि कड़े—जबलग आर्ने शही मन ठाम. तब लग कष्ट किया सब निष्मल, क्यूं गगने चित्राम । जोट---बास्तव में यहां क्षित्रने में नाम अब प्रतीत होता है। इस बद के रचविता व्याप्याव बशोविजय है। (देव गुर्करसाहित

1८३ हे नापेल जागर भावं इंसपेल च सहा

संबद्ध ६० १(४)





भाव स्तप्न तत्र पदार्वत्वाभावेतिराद्वान्तः ...



करना नियमको तत परपकार्थ यथा देवदानेन पटः क्रियते तथ यह निद्दौरपरवस्कृता स्पिकः कुतान चक चीवराविका या किया सा घट निष्टोत्परोः कारणं कार्य पटोत्पत्तिः कारणं वृत्यिष्यातिः कार्य पटोत्पत्तिः कार्यता पटोरपत्ती इतानेन कार्य कारण भाषता दर्शितेति

२८२ १८ असत की इक मूर्व तें, अजर,होत सब अङ्ग ।

रंटर ७ "द्वरी छरी क्रपामिका" इति हेमकोवे॥ २८४ ४ आनंदपनोक्ति—मीद अज्ञान अनादि की मेट गारी

निजंशीय।

(पद नं० ४) । (यद न०४) ११ वानक्रिमीत्सारण समर्थ मङ्गळल्वेन कारणता समाप्ति

वित ।





( 142 ) ३४२-२० आनंद्यन है ज्योति समझै, अस्त्र काले सोई ( सार्वेड्यन पह नं० २३ ) २६६ 🗜 :--- औषु नटनागर की वासी, सळी व वासव कार्जी विरता एक समय में ठाणे, व्यक्ते विनसी तकती ज्लट पल्ट भूव सत्तारासे, बाइस सूनी न रु**वा**डी जी∘शा(पद कं ८) ८ एगे समेए एगा फिरिया (स्वानाय) ३०१ ६ आनंद्रपतीति-आतम् यहं कावादिक स्थाः, बक्रि-रातम अवस्य । (सुमतिनाम सा॰) १६ , कहा निगोटी मोहनी हो, मोहकसास गिंबार । (पद नंब्द्र ८०) १६ एवा मदुक्ति—मोहनीय के उरका उरकी, इस इस गोव सिसावै। ( grec se ) ३०२ १२ कर्ममन्य कर्ताए क्कां—कीर्य निएम हेळाँ नेपकी सन्मय कर्मा १८ करता परिणामी परिकामो, कर्म के वीचे करियेंगे। एक अनेक रूप नवबादें, निवते नर अनुसरियेरे : ३१४ ७ " (धानंदपन वासुपूर्ण सावन) ३०४ १ नामं च इसलं चैव चरितं च तवो तहा । वीरियं ज्व-

जोगोय एवं जीवस्स स्वस्तां (त्रवः अ० २८ गा० ११) ३०६ १ थया आनंदगनोन्धि-कनकोपक्तम् पद्ध पुरस तनी जोबी अनादि प्रभाव (पद्मम स्तः)

-( 986 ) जोबवि प्राणान् भारयतिजीव —जीवेन किवतेयत् ततृक्तेः १० मतुष्टि - तीय करम जाड़, है अनादि सुमावस ( 90 84R ) ३०८ ३ - चेदनता परिणासी चेतन, शान करम फल भावीरे ३१४ १७ ॥ झान बरम फल चेवन कदिए, तेण्योतेह मनावीरे

( आनंद्धन वासुरूव स्तवन ) ३२१ १ ॥ ॥ » ३०८ ६ विशेषावस्यक-जड्सो निसेसचन्सो चेवणं तह सवा

किरिया

१७ भाष्ये – बतु गुणस्वभावयोर भेद एवं तदभेर निकंपक धर्मनेवा भाषात

· १८ तर्वसंबद्धे—शुग शुणिनो किया कियानतो । ३०३ १ सगवि मरोरे जीव को. उट्टे महा बळवान ३१० १० जानंदघनोकि--आभातम जे वस्तु विचारी

... साव अध्यातम निकानसायै, तो रोहयी रह ( क्रेंग्रांस सक् ) **संसोरे** 

३३१ है अस्य भासद सरिक्षा, सर्व गंबंशि गण्डरा निरूप्त ।

१३ आनंदधनोकि-चित्र रंकत सोजै सो चीने स्मक वानंद भौरा (पद नं० २७)

ं २० डेमंकोश — सोझो पायो चोगो झाल

**१९२६ जानसभर गुरू समंदिती, किया संब**रसार रे

			(844)	
		संपद्धं अवंचक	सदा, सुचि	अनुसन्ताचार रे। १
		पुनः—भजे सुर	हर संवान रे. (	आर्लेड्यन शांति स्तबन
		पुनः—परिचय	पावक मातक	सामुसुं रे, (संभव स्ट
444	२२	,,		अनुरात अपचव च
282	22			एक चेतना पार रे
89.6	*	अवर सवि स	ाथ संयोग बी,	ए निज परिकर सार

348 3

३२७ वै " " ( शांविनाम स्ट० ) ३१४ ४ ,, दीपक घट मंदिर कियी, सहित सजीत सकत आप पराई आपनी, सानत बस्तु अनुस ं निज सरूप मालक नोई बाजे पर संगति रति साजै।

भवें सरूप बान में भगती. अपने पर परिचानी।। ( देखो झानसार पद नं० १३ प्र० ४२

१७ जानंद्यन—निराकार अभेद संबद्धः भेद सद्यक ass ४ वत्तराज्यको—सम्रागी राण नासेवं ३६३ १२ ३४३ ११ % नालेण स सुधी होई

३१६ ६ ॥ एवं पंचविद् नागं दल्यालय ग्रामालय प्रवासांच महोमि तार्च समिति हैसिये

( अ० २७ गा० १ ) नायं नाणेग विमान हीते चरणगुणा

३२० १८ आर्नदश्वतीफि—चेतनवा परिणाम न चुकै चेतन **स्टि** निनर्पदी। (वासपुत्र्य स्तवन) 599 98 ... वंध मोस्र निहर्षे नहीं हो. विवहारे सम्ब होस। काळ केम अनादि ही हो, निता अवाधित सोब (पड् कं ८८) ३२२ १२ भवे मोक्षे च सर्वत्र निस्त्रहो ग्रनि सत्तमः। ३२२ १<sup>२</sup>, ३६२ ८ अभवदेवस्**रि**—समे सक्से भवे**त**हा. ३२२ १८ मदक्ति:-क्वेन कार्ग कर्म, क्वे आसमारामस् क्र मिध्यामति भर्म, र्थय मोल है आतमा । ( आसामबोध क्रतीसी प्र० १६१ ) ३२३ १६ जानंदयन – पंतन भारा चैसे सहोई पं० सचा पक अलंड अवाधित हा सिद्धंत पक्षतीई ह अन्यव अरू व्यविरेक हेत कं, समझ रूप भागतोई आरोपित सब पर्मे और है. आलंबचन तत सोई २

२८०-१०, २६४-२, २६४-६, ११७-१६, ६४६-१, (यद लं० ६४) १२४ १७ साला जब गोय मणु हुए दुग पॉचिद जाय । यांच सरीर लाग मति सरीर कॉल-कहारा ॥ ३२५ ११ जांन्द्रपनीकि— जांन्द्रपन देकनुष्टे योगी बहुर न किंक में जाऊ रें। बालहा से योगीचना स्वास्त (यद नं० ३०)

३२७ २१ अप्पा क्**या विक्**ताय

( Sto )

( 844 ) 38१ १६ आनंद्यनोफि- इसना रांड भाडधी जाई. यहा पर ( यद तंब १४ ) जावत तच्या मोड है। तमई तावत सिम्या भावो

३३३ ११ मुत्ता निर्माधिया दुदा १५ शाक्षा-अहा सत्य बस्ह्र ए हवार हम्मए ताडी तह कम्माण हम्मंति मोहणिश्ने सर्वपए t

२० आर्नदश्रनोकि-सत्ता थस में मोह विदारत,एए सरिजन मह निसरी (पद नं० ११)

"बहिरातम अपरूप" "कापादिक नो साखी भर रह्यो ( समितनाथ स्वयन )

३३६ १६ »

३३६ ११ , आरोपित सब यमें और है, आनंहचन का सोई। (यह सं०२८)

. २० , निरविकास रस पीतिये, तौ सुद्ध निरंजन एक 353 १ पुन:--गई पुतशी शीन की, बाह सिन्धु की लेन आपा गढ़ इससिक भई, सिद्ध गमन की सेन १

axi हं आनंदचनोक्ति- व्यविद्धिय गुण गण मणि आगरू. इस परमातम साथ . (सुमतिनाथ सावन )

३४८ १६ सदुष्टि – स्वादवाद जिन मत कवन, अस्ति नास्तिता रूप ता विसको केसे सबी आतम सद सबप १ (१० १६६)

३४६ ६ सासंबनो माणो

3ko k — प्रत्न विसंवाद जेह सो नहीं, शब्द वे नर्थ संवन्त रे

सकत नववाद ज्यापी रह्यों ते शिव साधन संदि है ( आनंदपन-शांति स्तवन ) १४ भाव अभ्यासम निजनाण साथै तो तेहची रह मंदो रे ( आनंदचन-श्रेवांसजिन स्तवन ) .३५१ १३ पात्रिसी-- अस्य परं परोक्षं ३६२ १० सद्दक्ति—"पै वंपक करणी जिती, तेती सरव असिद्ध" कियाँ सिक्स व्योगों सभी, विश्वास में जिल्ला केला। जोलं पियपरसे नहीं, तब गृहिया सं केल । १ । जीवं भाने न बुद्रता, तीवं किरिया क्षेत्र । यानी जीडों पीडवें, तीडों निकसे तेड । २ । जीलों कारज सिद्ध नहीं, तीलों ज्यम सेद। घट कारज की सिद्ध में, ज्यम केंद्र निषेध । ३ । ( सावष्ट विशिका प्र०१४२ ) 35१ ६ न देवो विश्वते काण्डे. ं ( चाजिक्य नीति ) ३६२ ६ रतन जड़ित मंदिर तजे, सब सक्रियन की साथ विश मन भोले लासके, वर्चों पीक पर हाथ । (मर्छ हरि) ३६५ ११ सदा घडो मडो. सदा भदास वस्थि निज्यागं। चरण रहिआ सिक्स्क, सदा भदा न सिक्संति ॥ १ ॥ ( पाठान्तर इंसण भद्रो० ) २० मंद्र मसिए, द्रसमा कारले जैनिए-झानसार बहुत्तरि

.36¢ २१ किंद्र समाज सवा पर मेरी-समयसार

( 284 )



( ५०१ ) १७८ १ , निन्न सरूप गर्रे किन जाराये, ते सही निमन्द होत्रे १ ( निमन्ग स्वयन्) १८१ १० अधिहोत्रे महोत्रोत, जावजीत हुससूच्ये १९११ विकासको तमे इस सम्मी स्थापियों ( अवस्यकारस्य

३८६ 'समझ्य सामाङ्गं होत्र' ३८४ ३ कुकाड़ि पान वसारन, जतरंत पमजरमूमी । संकोशिय संशास, शबद तेन कावपड़िलेद (संपारापोरसी)

संबासः, वन्द्रं तेव कायपहिलेदः (संवारापीरसी) १० कम्मनिकरणति । १३ वारसः विद्यो तय शिकराव ।

१३ बारस विश्वो तथ विकारण । ३८५ १ हेचा नंधा तथ पुण पावा । १८ बाळ बरणेज पंतिय सरवेथं सेकिंते माससरणे २ दवा-

१८ बाळ सरलेच वेडिच सरक्षये सेकिट मालसरणे २ हुवा-स्त्राविद्दे पत्त्वते—भावतरी ३८६ १ पॅडिच मरणे हुविद्दे पत्त्वते पाओपकामणे च भावपद-

मक्कानेय से कि तं पालोपगालने प्रति स्थापने तंत्रहा मक्कानेय से कि तं पालोपगालने दुनिहे परगते तंत्रहा मीहारिनेय जनिहारिनेय नियमा अपविकास सक प्रकारको दुनिहे परगते तंत्र। निहारिनेय जनिहारिनेय

निवस सम्बद्धिको हुनिहे पंडिय सरवेण सरसामे जीवे अमंत्रीहि नेरहर भनमाहर्गीहै अप्पान वि संबोध ह बीची नयति — समावती जी १० सताव ० १६ सामेरी समावासीय सर्वा समावती अस्त स्वीवं कोरी

इ बीबी बबारी — सावती जी १० एउट ३८० ११ सण्डेंसं सामाइयमिड् पढमें सामाञ्डे जला नक्षितं जोगे समयाणं होड्स समोदेशेगं देसविरओवि ॥ ज्या०॥ इड्स सामाविष्टं नाम्प्रध्यमं शिक्षाल्ड स्वति समितना-

### (844)

साविके छतेसति देशविस्तोवि सावधान्यनो बाबाव आपारान वर्जवित्वा सर्वविस्तानां स्ट्राो स्वति क्षमाताह देशेन देशोपमधा यथा चन्त्रस्ती अस्ता समावकादाग इति इतरका तु अस्तेव सामु बाह्यदोर्म-डान भेरः तथाडि साधुसत्स्वेतो द्वादशांनी मध्यपीते माहरा पद्यीपनिकान्यदन मेव पुनः सावस्त्रकेत सर्वार्थसिद्धि विमानेष्युत्पवाते बाद्दस्तु द्वाव्से कस्पे एव तथा साथोर्च तस्य सुरगतिः सिद्धिगतिर्वास्थात् ब्राह्व-स्थत सरगति देव पनः साथोकस्थारः संबद्धानः क्या-वापन कपाय नर्तितो वाउसीस्यात शादस्थत अस्ती प्रजास्थाना वरणाः ४ संस्थलना ४ अस्यः प्रनः साधोः पंचानां करानां समहितानामेव परिवर्ताः सादस्य त व्यस्तानां समस्तानां वा इच्छालुसारेण स्थान् तथा साधोरेकमारमपि प्रतिपक्षं सामाविकं कावानीय क्रव-विद्वते बादस्य पुनः पुनस्तकविषयते पुनः साथीरेध प्रदर्भरी सर्वे वदर्भगः स्थात् अस्योत्यं सामेक्षायात् बाद-स्त न सर्वेत्यावि

३८८ १४ आसवा ते परिसवा परीक्षवा हो आसवा—अ 358. 226 ३६६. १६ ॥ ॥ ६ ३८६. ३ जो बंघो सुक्स्तो सुग्रै, तौ बंघो निष्णंत (

बाप सहावै गिरमको, सह जिल्लाम सहंत । समयसार

( ४०६ ) ६८६ १६ तहास्त्रेमं भेरी समनं वा माहणं वा पञ्चवासमायस्य कि प्रकापण्यकासमा गोयमा स्वयण्डकासेणं संदे स्वयों कि यात्रे सामा यहें सेणे भेरी नाणे कि प्रके

दिन्ताय को वर्ष विकाशिय प्रकाशन को प्रकाशन वर्ष संदय को संकोश आपक को अग्योगी प्रवक्के तर्स बेदान को बोजोगी अधिताय को तोने भी अधितार कि कहा गी। विद्या प्रकाश प्रकाश का मीत अपकारी हैं अपने प्रकाश मिलावा साथ सहसे वह साथ हैं अपने प्रकाश मिलावा साथ साथ प्रकाश की साथ साथ पर्यु प्रकाशन साथ की प्रकाश की साथ साथ साथ पर्यु प्रकाशन साथ की पर्यु प्रकाश की साथ साथ साथ साथ साथ की पर्यु कर प्रवचनी अब्दें विकाशन अमेर्स गीवास

करण फोसि पिद्धान्त स्वया का साँक फर्ड साक-द्वार कुमानकों स्वयादि शुक्कामकों कर स्वयादि शुक्कामकों कर प्रविद्धां सरकार्य सिनामा कर्योत पिद्धान कुम्बर्ग कृत क्रामदि हैपेपोपेच पिक्ष कार्रि शिक्षान कुम्बर्ग द्वार व्यवस्थातकोवित विश्वान कर्य विशेष क्रामीद एपंत्रसामानित संपंत्र मंत्रीत क्रान स्वयाद्वाराज्य हि संस्था मानसेन क्ष्यानु मुंगीन कामाब क्रान संस्थान मान क्रिन क्ष्यान्त्र मान क्ष्यान्त्र मान क्रान स्वयाद्वार

बाल किंद्र नर्व कर्मनोपादण तथ फड़ेलि जनामुन्तेष्ट्रि छपु कर्मस्वार्णपरवर्धीर्व बोदाण परहेलि स्वबद्धानं कर्म्सीर्वकंटण उपसादि पुरावनं कर्म निकलंदवि अविदेश करेंद्री बोतारियेष कर्ड क्रेमीरकर्स्य क्रिक्ट पोक्टिकोण करने विदि प्रस्तवस्था प्रकेशी विदि

(848.)
सक्षणं पर्ववसान कर्ते सक्त पर्वतवर्ति <del>वर्</del> व
यस्याः सा (भंगवंती शंतक २ वेदेशा ४ वर्ष )
३६१ १० स जमेणं भंते जीवा कि जगर—स्रांतनिकारेति
३६२ ं ६ समागे विद्वः कंपणे, समेपूजावमानेसु
१० खायकेमं य संतीर गुत्ती सुत्ती अणुकरे
संबरेनं वयेनंत्र संदर्भण मगुत्तरे
३६४ ११ निरचैसिद्ध जीठों नहीं, विवडारे किय मेछ।
क्षीओं पिय परसे नहीं, तब गुढिया सुं क्षेत्र ॥१॥
३६५ १ निक्चे हुभी सिय नहीं विव्हार दे छोड़।
इक पर्तन आकाश में, फिर दे दोरी तोड़ ॥
(प्र०११९) ३६५ ३ ठाणांगली में—"हेड चडविद्दे पण्यते अवाते स्थाते
ठनणाकामे पशुपल निवासी" अपाव वपाव स्थापना कर्म प्रसुरपल विशासी
१६ समणेनं तबसा बजानं भावेमांगे विद्युद
इंदेई १६ समयसार—दीन मयौत्रसुषदवर्षे, हुगति क <b>इसि हो</b> थ
२० अदेवे देव सच्या देवे अदेवसच्या वस्मे अवस्म सच्या
अधस्ये वस्य सन्ता प्रुगुरे कुगुर सन्ता कुगुरे प्रुगुर सन्ता
३६८ १४ "ब्राम कियाम्या मोधः" यथा—मदुकिः— -
क्षंथ किया अरु पंगु हान, इस्तै सिद्ध न होय निहान
सामचन्त जी करणी करें, मोख पदारम नि <b>हमें</b> वरें ।श-
सुद्ध शरूप भरी वंपकरो, झान कियार्ते शिक्गित वरी ।
एक क्षान में भाने मोख, सो अक्रन मिथ्यामेरि पोख ॥



#### 

त्या वर्षि वर्षि वर्षिपस्ति ओवस्ति तं सम्भ वषद्वात्याने समने निर्माये आगाए बाराह्य भवद्व। (भगवयी १० ८४०८) ४११ ३ निष्मय मागो प्रवर्त

४२२ १० सातवा भवंति नैगानात्यः कतं च—नातम्, संसद्द-स्वयः-दारः सद्धादुत्वः, राष्ट्रः सम्मित्स्तुः, व्यंत्रूतः क्याः वते च द्रव्यातिक पर्याचातिकः व्यक्तां नवः व्यक्तिस्तात्रीकः द्रव्यविक पर्याचातिः जिल्ला वर्षाचा हरुस्वुस्तात्रपरी द्रव्यातिकः पर्याचारिकः वर्षादाः संति न द्रस्य निरस्

इस्मर्थेच परमार्थेजो ऽस्तिः न पर्याचा इस्त्यानुकासपरो इस्त्रात्तिकः पर्याचासप्त कर्युतः संति ॥ इस्य सिस्त्य अपुरप्तात्तपराः पर्याचासिकः स्त्रात्तात्रात्रप्ते इस्त्रातिकाः रोपास्तु पर्याचासिकाः (अनुयोगकास्त्रप्ते) १८ पोषाणं भेते सिं सासया स्वसासया गोमसाः जीताः सिस्त सासया सिय असावस्त्रा से केन्द्रप्ते भेते स्

( state ) बुच्छ जीवा सिच सासचा सिच असासया गोयमा दम्बद्ध्याप सासया भावद्वयाप असासवा से तेवाहोतं गोयमा पर्व वर्षा जान सिय असासवा सगवनी ४१३ १२ निष्णवानी इत्लेखं की भावे करिम बहुए समाणो

वयहारो असीरह जो पञ्चरिको चरित्र मि ॥१॥ ( आवश्यक निर्वृत्ति ) Bty 3 वनहारो निह बसने जे सहमत्वं च बंदप अरिहा

का होड असा जिल्लो सामंत्री धम्मर्थ वर्ष ११९१ (आका) ४१४ रू विच्छन समी हुक्सो बबदारी पुस्त कारणी हुनी

पहलो संबरस्यो आसपदेओ तथो बीओं।। १ ॥ ४१४ दे जड़ जिल सर्व प्रवाह ता सा ववहार निच्छवे <u>स</u>यह

**इस**ेंग विष्या विर्थं दिखा अञ्चेषा ओ वरां॥ १॥ ४१६ १४ वाल प्रयासकं सोहगो तको संजमोय ग्रुचि करो तिष्टंपि समाओंने मोक्सो जिन सासणे भणिको ॥१॥

[भगवती ७० ८ श० १०]

४१० १ बांध कट देखाड़ी सुम संरिक्षा पणा, वेने सुका में है उपदेश सुद्दामगा। (५०१३७) £ वें वैषक करणी जिली, तेली सरव असिद्ध । (go १७४)

 झानाचन सम्बान है, किरिवा वह सम्बन्ध । वार्त किरिया आसमा, तीन काल खर्मकंश १९। ए० १४८

११ मधी अपने धर्म के न सबी तीन काछ।

भाग झन गुत्र ना तके, जह किरिया की चाल ।।

( No 188 )



## ( 3×E )

१८ व्हर्ण मंत्रे जीवा गरूचच हम्बमाग्य्वीत गो० वाका-इनारणं नुसावाणं जाति मेहुग परिगद कोद साल बाया कोम पेच्य दीस काळ ज्यम्बलाण पेतुस्त रति जरति परपिताथे मावामोसं मिच्याद्रंसणस्त्रकेषं एसं काळु गोवमा जीवा गरूबत्त हम्ब बाग्य्विति काळ्या मंत्रे जीवा ब्रह्मसं हम्ब बाग्य्विति काळ्या मंत्रे जीवा ब्रह्मसं हम्ब बाग्य्वित गोवमा पालवृत्ता काळ्या

बेरमचे जाब मिष्णादंसम् सङ्घ देरमच्यं एवं बहुद गोवया जीवा ड्यूचनं हत्य सागव्यति वर्षे संसर आडडी ब्रेटीत वर्षे परित्त करेंति एकंत्रीह वर्षे संसर आडडी ब्रेटीत एवं अनुपरियर्टे रि छां बीधी बर्चति पसस्या-चन्नारि अपस्रत्या चन्नारि (सगवती शुरू १०० १)

करेंति एवं अनुपरियारे शि एवं बीधी वर्षति पसत्था-चतारि अपसत्या चतारि (सगस्ती दः० १७० १) ४२२ १३ चचन सारोध व्यवहार साची बस्को, बचन निरोक्क स्ववहार सूनी (आर्त्यूचन, अर्गतनाथ स्ववन)

# शुद्धि-पत्रक

हुद | ६३ ११ वदास

পয়ুহ

	٧	संही	ब/स	६४ १६ विवर्णित	विश्वनित
u	4	प्रदिया	साहिता	६३ ९ विंदन	বিহন
	14	संबद	संपर्ध	७५ १४ स	परि
₹6	•	वृष्णा	पूरता	⊎પ ૧૬ મે <b>લ</b>	3 <sup>rd</sup>
₹4	15	थ्यसम्ब	धर्मकरत	७५ ९७ मान्	माम्(
34	34	<b>निषम्पक्ति</b>		⊎६ १६ विन	विन
			विश्वी	८३ ११ ईसा	रिमा
36	84	मत्त्रय:	मन्दर:	64 6 EC	सर्
\$8	39		+	८९ ८ दश्चर	चर्मन
35	31	+		९० १८ एकांतरण	एसतस्त्र
٧.	31	जना पड़े	वपायके	९० २२ निर्देशन	निर्योग
٧1	15	क्षण प	बार्ख	९२ १६ सम	सम
٧t	۹.	चेस	वेश	<b>९२.२१ इतिया</b>	बुंदिया
**	10	हुन्दर	हुचर	1•४ 1 इसे	देखे
46	31	सरहातु रि	हुं सरहद	१०४ १९ वरेमा	समाठा
			प्रशिक्	१९५ ८ जोश	. स्वरा
44	4	विश्वयादा	विद्यमारा "	१२२ १७ दोर्हे	बोवर्स

६३ ६ अस्पत् असस्ति १३१ ३ छल

	( )	ict )	
18v 1v परी	परी	555 × 888	Seat
1३० ३ वंचन	वया		वेष
1४९ १२ सम्बद्धा	काश मा	114 Y 897	ibu
1 শহ ৭ - বিক্	निर्म	२३९ १२ सई सह	गर्द
१७१ ८ क्रोम	श्रीय	९५१ ७ स्थापने	गवने
५५३ २३ सारमस्य	दमस्य	१५१ - दिवसीत	Rear
Jag 5 Sid	লয় "	२५१ १० विकासकी	नियमस्यो
रद्ध १४ वीर	वेशिव	२५५ १८ एएस	कारे
141 11 84		600 X B	8
15v १७ वसके	रक्षे	१६० ८ स्थापे	वागे
154 16 HAR	948	રળ પક્ષ	4
355 5 @KRC	वरियर	२७२ २ समुद्र	WHE
५०० १८ मूम	湖東	१७२ १- काल	478:
१०५ ९ शक्ते	भारे	२०२ १० जालः	¥IE;
4+4 34 <b>gap</b>	नुषम	२०२ १९ परमानं व	रिवसर्व
२०९ १८ ज्यापार	सम्बद	» , परणमस्यं वरि	रमगर्थ
313 13 mpr	454	, e ,	,
२२४ ६ मेधने	पेतन है	n n n	
२२५ ८ विष	fee	२०३ २ पर्यमग्रहेन वरित्रा	मनकेन
२२५ रह है	स्तृते	२०३ ३ स्थमावस्य स्थ	भ <b>ावत</b> ्रं
देरेक ७ सह	मरे	९०३ ५ सामस्याम को	क्यान
९९० ६ माहिती	योजिन	२७३ ८ मीपंक्ष	नीवते

	(:	BCS )	
» 1v स्वदस्य	(ALI)	्रं , १६ स्थापनी	नगरे
३५३ १ वरका	क्षकार	, १६ न्यायारी	व्यक्त
. ३५३ ४५ ब्लुबोधो	म्बुस्बोधी	,5 २१ <b>हो</b> वा	रिया
३५३ २ वश्वद	<b>ट</b> एपंड	१६० ४ वससम्बद्धाः	गयाराध्यम
<sub>छ</sub> ७१ व्युक्तेनो	भद्धरमोची	त्र ७ सम्बद्ध	MARK
» १६ मध्यो	वापत	» १२ <b>क</b> ोर्स	धारगै
, , काम्बहर व	मन्द्रमून	३६१ - १७ वर्षक	मीवस
३५४ ४ पत्रीज	प्रमीचे		gfa
,, ૧ જૂર્વ	, সুদি	२६२ २ हुई	हुद े
, ,, સિવુંજા	विश्वविक	» ₹ 56	,,
,, १० वस्यस्	वस्यासम्		वेसमी
ইপণ <b>গলিনী</b>	श्रीतम	, १६ प्रकाहे	अस्पन
₹५० ७ वो	''बो	<sub>स</sub> ीक प्रदाना	স্বাদ
,, प्रस्था	परसन्ता	२६४ १ <b>इ</b> त्यंदि	इसरे
, , , विद्या	विश्वना	<sub>19</sub> १२ सिपेम्स्स	হিক্সকৈ
p 90 98	नर	⊬ १३ सॉप	माद
३५० ४ विद्याई	Pett	ay १५ कड्ड	महा प
, १ वेगर्ड	वेषिके	n s+ 2000	264
» १० परनेक्सरी	परमेशनरे	३९५ ६ यासलमात	गलनात्र -
ક લેવ€ તે	वेरिकने	,, ११ जी	ती
, â	.8	१६६ ४ व्यक्त	व्यक्ति
£√2 ≤ 9apa	रोगीसे	३६८ ५७ विशेष	feith.



[8	ick]
<sub>स</sub> १९ संबर्गः समर्थे	। १० आए आपे
्र केहर पहुर	<sub>3</sub> , २१ व्यूतासन के व्यूतासन के
६१ तंत्रर वापस संस्थ स्वरण	
पात्रका पाल्का	.,
३८४ ३ <b>इक्ट</b> पत्रं इक्टूबि पाग	» १४ •स्टान •स्टब्स
, भतंत सहरंत	
, ४ विचने विद्या	, 1 1
क 1v विश्वेत विश्वेत	366 1 WG WE
n 3६ सर्वतन मोश वर्वनदे मोश	,, १ व्युरस्य ते व्युरस्य ते
a44 1 विकासे विकास	ं सक्स अवस्था
n silant iku	. ७ स्टो •च्यो
- # Std Stat	्रा १० वटा व्य
, 12 वर्षे ईपरी संबेई परी	, 19 da da
, १८ मानेच सस्त्रेथ	ग १४ वर्ग <b>सर्वे</b>
. 15 8 20	), 10 वींद्रव्यामी पहींचाली
हे4६ २ मा को समझे पाओप-	. 15 9099 gran
नको	३८९ ६ करणी करणी करणी
- 1 Pecani Paga	्र १९ वेदने स्वयं
्र प्रथमिको स्वतिकार	15 1 199 mm
, प्रशासका समावस्था , प्रशासको सम्बद्धियो	* als and
ा भूमाणी माने , अनेतीक स्वतिक्री	
1)	, १० दमी अर्थ



[ 40- ]				
n 15 W	100	¥33 35	सामग्रम	क्रमाल
n 15 + 880-	• स्पे:-	, 1	থাৰ	वरी
. 14 Regr	निष्ठप	. 17	NE	wet.
, २० व्यक्ती	च्यो	,,,	qR	dima
vit & Rifeper	निच्छमे		वानावस	क्षाक्षाम्
n 1v RAN	Alfre	, 1	विश्वस्थ	विश्वपुरा
v14 13 • mid	• <b>4</b> 85	٠,	पर	445
p 94 HIGHT	स्टाम	¥88.91	श्रामध्य	es.ed.lip.in
, 11 vientint		¥32 1	व्यक्तिकृत	भवसम्ब
¥15 ६ इससि	qui	· m 3	PROPER	4664
» 1v • Rea	• সিনার	YEY !	t when	क्ष
is 15 sezen	प्रशासन	.,	काका	व्राप्त्रह
		<b>*</b>		-
प्रष्ठ ६८ वर् वं	१३ व	टक हैं f	ससकी पूर्	च :—
नाची रक्तम और के सामी, कोई सूँ न सकते।				
नाची रक्तर ७	ीर के बा	ते. कोडी व		
नाची रक्तम व वैसावर आध	गैर के सा की संस्थी	ते, कोई स् स्टीको स	्नसङ्ग स्टब्स्क्टिस	SI NIN
देसावर आध	भी कंपी,	सी हो मृ	डन सुकी।।	হ্ম০ ।।३॥
देसावर आध वैसे काम <i>र्रा</i>	भी कंप्सी, मी इनकी	सी दो मु स्ते पक	डनसूकी।। वर्द्धसर्थ	क्ष० ॥३॥ व
देशावर आध वैसे काम रहे बानसार जो :	भी कंपी, मी इनकी (भी स्पे	सी थी मु रखे पके सो स्टब्स	ड न सूमी ॥ वर्द्धिकार्वे रहिज्यावै	क्ष० ॥३॥ व
देशावर आध वैसे काम र्या बानसार जो : नोट:—४० ४४ में क	भी काची, गो इनकी (बी सूर्य) जोड नं	सी सी मु स्ती पक्षे तो स्टब्स नियोक्त	ड न सूकी॥ वर्ष्ट्रिकार्व रहिज्यावै है:—	थ० ॥३॥ १। ॥ंथवांश्री
देशायर आध वैसे काम रहें बानसार ओ : नोट:—४० ४४ हें कु सब करें सको सम	भी काची, गो इनकी (बी सूचे, गोद गं० मिथा हो	सी सी मु रखे यक वी सक्व र निम्नोफ वर बीर व	ड न सूकी।। वर्षिकारी रहिज्यानी है:	क्ष०॥३॥ । ।(ज्ञांक्षी डे जलहरू
देशायर आध वेशे काम रहे हानसार जो न नोड:—४० ४४ में कु का करों सभी सम के प्रदेश रिक्ट-जिल	भी कंपी, मी इनकी (बी सूर्य) लोड नं मिश्रा हो स्टें। बोर	सी की मु , रखे पके , वो सक्व ( निम्नोक ( र बीर व वे मेक्स नि	ड न सूकी।। वर्ष्टिकार्वे रहिज्यावै है:— र डेले सब्दे म डेलीर से	क्ष । । । । । । । । जिल्लाही । जलस्स होसा किल
देशायर आध वेशे काम रहे हानसार जो न नोड:—४० ४४ में कु का करों सभी सम के प्रदेश रिक्ट-जिल	भी कंपी, मी इनकी (बी सूर्य) लोड नं मिश्रा हो स्टें। बोर	सी की मु , रखे पके , वो सक्व ( निम्नोक ( र बीर व वे मेक्स नि	ड न सूकी।। वर्ष्टिकार्वे रहिज्यावै है:— र डेले सब्दे म डेलीर से	क्ष । । । । । । । । जिल्लाही । जलस्स होसा किल
देशायर आध वैसे काम रहें बानसार ओ : नोट:—४० ४४ हें कु सब करें सको सम	मी कंप्पी, मी हमची (बी सूर्य) मोद्र मंध्र मिश्रा हो से। बोर सम फेस्स	सी दी मृ रखे वक यो सक्य र निम्नोक ज दीर व र बोर व र बंद करी	ड न सूमी।। वर्ष्ट्रिकार्वे रहिज्यावे है:— र छे ते सब्दे गड़िनार से शड़ी के म	क्ष । । । । । । । ज्यांकी वे क्षण्यस् वेद्या विल्या । व क्षण्या

1800]

साहरी की रायाद वीकानेर यस्थवासा के सते वकाशत रै, बीकानेर चैन सेसा संगद्ध (२६०० शिलाक्षेश्च, ६० चित्र, सजिल्द)

प्राप्तिस्थात (२)-भी भागय जैन प्रस्थानय

१२४ पेज की विस्तृत ऐतिहासिक भूमिका, बृहदुसंस नृत्य १०) २. समयसंदर इति इसमाञ्चली किवि की बीयमी व ४६३ रचनाकोंका मुद्द संग्रह, समित्रव, प्रष्टन००) गुल्य ४)

३, मीकानेर के दर्शनीय जैन संदिर

४. आरमसिकि हिन्दी पद्यानवारी प० सरकानंदकी

र मी मद वेषचन्द्र स्तय नावजी (जीवनीयत) मूल्य ()

न्य राजस्थान प्रेस, कलकर्चा भारतीय मुद्रण मंदिर, बीकानेर

